

વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
૫૧૬
૧૯૭૧-૭૨-૭૩

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

(ગુજરાત કોપીંગ્રંથ વિભાગ)

અનુક્રમાંક ૧૨૩૯ કિમ્મત

ગ્રંથનામ પતિફલ ૨૨૫

વગાક

प्रतिक्रमण सूत्र.

अर्थ सहित

तथा

बीजा केटलाएक ग्रंथोना संग्रह, साथे

शोधन करी

श्रीमुंबैमध्ये

“ निर्णयसागर ” प्रेसमां छपावी प्रसिद्ध करयुंछे.

संवत् १९३४ ना आषाढ वद्य ११ ने वार गरेउ.

ता० २५ मी जुलाई सने १८७८.

प्रस्तावना.

आ “प्रतिक्रमण सूत्र” नामक ग्रंथ प्रसिद्धता मां मुकतां सर्व जैनधर्मावलंबी सज्जनोने मारी विनयपूर्वक प्रार्थना ठे के.-एमां ठ आवश्यकनुं सामान्य विशेष, निश्चय व्यवहार, इव्य सुदि, क्षेत्रसुदि, कालसुदि अने जाव सुदि; तथा इ व्य, क्षेत्र, काल अने जाव आदीक तथा स्तवनो, सस्नाउ, चैत्यवंदनो अने थोयो जेवी बीजी केट लीक बाबत पृथक् पृथक् ठपावी प्रगट करवानो विचार हतो.-परंतु तेम न बनीशकवानुं कारण मात्र एटलुंज ठेके.-आ ग्रंथ ठपाववाना थारं नथीज तेनुं कद न्हानुं (रायल सोलपेची) क खुं. तेथी जो ग्रंथोना संग्रहथी विशेषता करीये तो तेनुं कद न्हानुं तेथी बराबर पुस्तक आकार मां आवी न शके तोपण योग्य यत्नथी, यता सा रोदारनी साथे गुणइ ग्रंथोना समावेशथी आ ग्रंथनी योजना करीठे.

કાઝસગ્ગના ઝંગણીશ દોષ, વાંદણાના બત્રી
શદોષ, આહારના સડતાલીશ દોષ તથા ગુરુ સં
બંધી તેત્રીશ આશાતના. એ વિષયો આ ગ્રંથમાં
દાખલ કરવા યોગ્ય તથા તેને લગતાઢે સ્વરા.
પણ તે સઘલા “ પ્રકરણરત્નાકર ” ના ત્રીજા જા
ગનેવિષે ‘ પ્રવચનસારોદ્ધાર ’ ગ્રંથમાં દાખલઢે.
જેથી તેનું વર્ણન આ ગ્રંથમાં કહ્યુંનથી પોસદ્દના
અઢાર દોષ બાર વ્રતની ટીપમાં ઢપાડ ગયેલાઢે.

સાત સ્મરણમાંના કેટલાક સ્મરણના અર્થ
આ ગ્રંથમાં નાખ્યા નથી તેનો વાસ્તવિક હેતુ એજ
ઢેકે.—નક્તામર, કલ્યાણમંદિર, અજિતશાન્તિસ્તવ
ન આદિક સ્મરણો આગલ અર્થ સુઢાં ઢપાડ ગયે
લાઢે. અને ડપસર્ગદ્ધરસ્તવ વિગેરે સ્મરણોના અ
ર્થ આ ગ્રંથમાં સ્થાપિતઢે. ઢેવટ વિઢ્જનોને મા
રી અતિ નમ્રતાપૂર્વક વિનંતી ઢે કે.— આ ગ્રંથનું
સોધનકરવામાં બુદ્ધિદોષથી, દૃષ્ટીદોષથી કિંવા અ
ન્ય કારણથી જે કાંડ અશુદ્ધતાનો દોષ દૃષ્ટી આ
વે તે સર્વ દ્ધમા કરી સુધારીવાંચશો. એવી આશાઢે.

अनुक्रमणिका.

अंक. ग्रंथोनानाम.

पृष्ठ.

१ नवकार मंगलीकरूप एमां पांचे परमेष्टीना
व्युत्पत्ति सहित अर्थ कखाणे.

| | |
|--|----|
| १ अरिहंत शब्दनो व्युत्पत्ति सहित अर्थ. | १ |
| २ सिद्ध शब्दनो व्युत्पत्ति सहित अर्थ. | ४ |
| ३ आचार्य शब्दनो व्युत्पत्ति सहित अर्थ. | ५ |
| ४ उपाध्यायशब्दनो व्युत्पत्तिसहितअर्थ. | ७ |
| ५ साधु शब्दनो व्युत्पत्ति सहित अर्थ. | ८ |
| ६ पंचपरमेष्टिने नमस्कार संबंधी आशंका | ११ |
| ७ एसो पंच नमुक्कारादि शब्दोना अर्थ.. | १३ |
| ८ अरिहंतना बार गुणनुं वरणन. .. | १४ |
| ए सिद्धना आव गुणो. | १९ |
| १० आचार्यना ठत्रीस गुणो. | २२ |
| ११ उपाध्यायना पचीश गुणो. | २९ |
| १२ नवकारनो महिमा | ३१ |

अंक. ग्रंथोनानाम.

पृष्ठ.

| | |
|--|----|
| १ पंचिंदिय. | ३१ |
| २ खमासमण अर्थ सहित... | ३२ |
| ४ सुगुरुने सातासुख पृढा अर्थ सहित. | ३३ |
| ५ इरिया वहिया अर्थ सहित. | ३४ |
| ६ तस्स उत्तरी अर्थ सहित, एमां अढा रलाख चौवीश हजार एकसोने वीश मिहामि डुकडंनो विबरो दर्शाव्याढे. | ४३ |
| ७ अन्नळ उससिएणं अर्थ सहित. ... | ४९ |
| ८ लोगस्स अर्थ सहित एमां चोवीश तीर्थकरनां मात पिता तथा नगरीउं विगेरनां नाम दर्शाव्याढे, तथा तीर्थक रोनां नाम पाडवाना हेतु दर्शाव्याढे. | ५२ |
| ९ सामायकनुं पच्चस्काण अर्थ सहित. | ६९ |
| १० सामायक पालवानुं अर्थ सहित .. | ७० |
| ११ जगचिंतामणी चैत्यवंदन अर्थसहित | ७२ |
| १२ जिंकिंचि अर्थ सहित. | ७८ |

अंक. ग्रंथोनानाम.

पृष्ठ.

- १३ नमुबुणं अर्थसहित एनां अंतरगत
 सात नयना अर्थ आवेलाढे... .. ७९
- १४ जावंति चेइआइं अर्थ सहित. .. ८८
- १५ जावंत केविसाहु अर्थ सहित.... ८९
- १६ नमस्कार... .. ९०
- १७ उपसर्ग हर स्तवन अर्थ सहित. .. ९०
- १८ जय वीरराय अर्थ सहित... .. ९४
- १९ अरिहंत चेइआणं अर्थ सहित. .. ९८
- २० कव्याणकंदं स्तुति अर्थ सहित. .. १०१
- २१ संसारदावानी स्तुति अर्थ सहित. १०४
- २२ पुस्कर वरदी अर्थ सहित १०९
- २३ सिद्धाणं बुद्धाणं अर्थ सहित. ११३
- २४ वेयावच्च गराणं अर्थ सहित. ११८
- २५ जगवानादि वंदन. ११९
- २६ देवसिअ प्रतिकमणे ठाउं अर्थ सहित ११९
- २७ इहामि ठामि अर्थ सहित. १२०

અંક. ગ્રંથોનાનામ.

પૃષ્ઠ.

- ૨૭ અતિચારની આઠ ગાથા અર્થે સહિ
ત, એમાં બાર પ્રકારના તપનો વિવરોઢે. ૧૨૫
- ૨૯ સુગુરુ વાંદણા અર્થે સહિત... ૧૩૫
- ૩૦ દેવસિંચં આલોઢં.. .. ૧૪૧
- ૩૧ સાત લાખ. ૧૪૨
- ૩૨ અઢાર પાપસ્થાનક. ૧૪૩
- ૩૩ સવસ્સવિ. ૧૪૪
- ૩૪ ડહામિ પઢિકમિઢં. ૧૪૪
- ૩૫ વંદિતાસૂત્ર અર્થે સહિત, એમાં શ્રાવ
કના એક સોને ચોવીઢે અતિચારનો
સવિસ્તર વિવરો કહ્યો ઢે, તથા સમ્ય
ક્ત્વનું માહાત્મ્ય અને ઢેઢ્ઢી ગાથાના
અર્થેમાં સામાયક અવશ્ય કરવું
એવું સ્પષ્ટ દર્શાવ્યુંઢે. ૧૪૫
- ૩૬ અપ્રુઢિઢહિં અર્થે સહિત... .. ૨૦૩
- ૩૭ આયરિય ડવક્ષાએ અર્થે સહિત. .. ૨૦૬
- ૩૭ નમોસ્તુ વર્ધમાનાય અર્થે સહિત... ૨૦૭

अंक. ग्रंथोनानाम.

पृष्ठ.

| | | |
|----|-------------------------------------|-----|
| ३९ | विशाल लोचन अर्थ सहित... | २१० |
| ४० | श्रुत देवता स्तुति अर्थ सहित. . . | २१२ |
| ४१ | क्षेत्र देवता स्तुति अर्थ सहित. . . | २१३ |
| ४२ | जवण देवता स्तुति अर्थ सहित... | २१४ |
| ४३ | कमलदल स्तुति अर्थ सहित... . | २१५ |
| ४४ | अष्टाङ्केषु मुनिवन्दन अर्थ सहितः | २१६ |
| ४५ | वरकनक अर्थ सहित. | २१७ |
| ४६ | चउक्कसाय अर्थ सहित. | २१७ |
| ४७ | पोसहनुं पञ्चस्काण अर्थ सहित. . . | २१० |
| ४८ | पोसह पारतां गाथा अर्थ सहित... | २१३ |
| ४९ | संधारा पोरिसी अर्थ सहित. | २१५ |
| ५० | माहावीर स्तुतिस्नातस्या अर्थसहित | २३४ |
| ५१ | पंचमि स्तुति अर्थ सहित... | २३९ |
| ५२ | शकलार्हत अर्थ सहित. | २४४ |
| ५३ | लघुशांति स्तव अर्थ सहित. | २६९ |
| ५४ | जरहेसरनी सज्ञाय. | २७२ |
| ५५ | मन्हजिणाणं सज्ञाय. | २७४ |

| अंक. ग्रंथोनानाम. | पृष्ठ. |
|---|--------|
| ५६ तीर्थवन्दना | २८५ |
| ५७ माहावीर जिन वंद | २८७ |
| ५८ गणधर स्तवन | २८९ |
| ५९ जक्तामर स्तोत्र | २९० |
| ६० अजितशान्ति स्तवन | २९८ |
| ६१ कल्याणमंदिर स्तोत्र | ३०५ |
| ६२ शान्तिकर स्तवन | ३१३ |
| ६३ तिजय पद्भुत स्तवन | ३१५ |
| ६४ नमिउण स्तवन | ३१६ |
| ६५ वृद्धशान्ति स्मरण | ३१७ |
| ६६ श्रावकना पाक्षिक अतिचार | ३२४ |
| ६७ सीमंधर जिननुं चैत्यवन्दन | ३४४ |
| ६८ सिद्धाचलजीनुं चैत्यवन्दन | ३४५ |
| ६९ पंचपरमेष्ठीनुं चैत्यवन्दन | ३४६ |
| ७० वीश स्थानकना नामनुं चैत्यवन्दन. | ३४६ |
| ७१ वीश स्थानकना तपना काउसगनुं चैत्यवन्दन | ३४७ |

| अंक. ग्रंथोनानाम. | पृष्ठ. |
|--|--------|
| ७१ बीजनुं चैत्यवंदन | ३४८ |
| ७२ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन | ३४८ |
| ७४ अष्टमीनुं चैत्यवंदन | ३५० |
| ७५ एकादशीनुं चैत्यवंदन | ३५० |
| ७६ तीर्थकर राशीनुं चैत्यवंदन | ३५१ |
| ७७ रोहिणी तपनुं चैत्यवंदन | ३५२ |
| ७८ बीज तिथिनी स्तुति | ३५३ |
| ७९ संखेश्वर पार्श्वजिननो वंद | ३५३ |
| ८० पंचमीनी स्तुति | ३५५ |
| ८१ अष्टमीनी स्तुति | ३५६ |
| ८२ एकादशीनी स्तुति | ३५७ |
| ८३ सिद्धनगवानुं स्तवन | ३५८ |
| ८४ बीजतिथी तपनुं स्तवन | ३५९ |
| ८५ पंचमीनुं जघु स्तवन | ३६१ |
| ८६ अष्टमीनुं स्तवन | ३६१ |
| ८७ एकादशीनुं स्तवन | ३६६ |
| ८८ श्रीवीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन | ३७१ |

अंक. ग्रंथोनानाम.

पृष्ठ.

| | |
|---|-----|
| ८९ सारबोलनी सद्याय | ३७३ |
| ९० सीमंधर जिननुंचैत्य वंदन | ३७५ |
| ९१ श्री पार्श्वनाथनुंचैत्यवंदन | ३७५ |
| ९२ सामायकना बत्रीस दोषनी सद्याय | ३७५ |
| ९३ मुहपतिना पचाश बोलनी सद्याय | ३७५ |
| ९४ काया उपर सझाय. | ३७८ |
| ९५ अगीअर गणधरनी सझाय. | ३७८ |
| ९६ सोल सतीजनी सझाय. | ३७८ |
| ९७ आत्मशिख सझाय. | ३७८ |
| ९८ पोसहनां चौवीश मंमल | ३७८ |
| ९९ नमुकार सहिनुं पञ्चस्काण अर्थसहित | ३७९ |
| १०० नमुकार सहियं मुठ सहिनुं पञ्चस्का ण अर्थ सहित | ३७९ |
| १०१ पोरिसिं साढ पोरिसिंनुं पञ्चस्काण अर्थसहित | ३८० |
| १०२ पुरिमह अवहनुं पञ्चस्काण अर्थसहित | ३८० |
| १०३ विगइउं निविगइनुं पञ्चस्काण अर्थसहित | ३८० |

अंक. ग्रंथोनानाम.

पृष्ठ.

- १०४ बेआसणा एकासणानुं पञ्चस्काण अर्थ सहित ए पञ्चस्काणमां पाणस्सना ठ आगारनो अर्थ आवी गयोढे .. ३९७
- १०५ एकलठाणानुं पञ्चस्काण ४०२
- १०६ आयंबिलनुं पञ्चस्काण अर्थसहित .. ४०२
- १०७ चउविहारउपवासनुं पञ्चस्काण अर्थ ०४०४
- १०८ तिविहारउपवासनुं पञ्चस्काण अर्थ सहित, एमां पण पाणीना ठ आगारनो अर्थ आव्यो ढे. ४०६
- १०९ चउउजत्तनुं पञ्चस्काण अर्थसहित .. ४०८
- ११० ठ जह् विगयना त्रीश निवीता .. ४०९
- १११ पाणहारनुं पञ्चस्काण ४१२
- ११२ देसावगासिकनुं पञ्चस्काण अर्थसहित ४१२
- ११३ चौदनियम धारवानी गाथा विस्तारित अर्थसहित ४१३
- ११४ पाणहारदिवशचरिमनुं पञ्चस्काण ४१६
- ११५ रात्रेचौविहारकरवानुं पञ्चस्काण अर्थ ० ४१६

अंक. ग्रंथोनानाम.

पृष्ठ.

| | |
|---|-----|
| ११६ रात्रे तिविहारनुं पञ्चस्काण | ४१७ |
| ११७ रात्रे डुविहारनुं पञ्चस्काण | ४१७ |
| ११८ पञ्चस्काणना आगारनी गाथा .. | ४१७ |
| ११९ ठ प्रकारे पञ्चस्काणनीसुद्धि अर्थसहित | ४१८ |
| १२० साधुजीने चौद प्रकारना दाननी निमंत्रणा करवी ते अर्थ सहित .. | ४१९ |
| १२१ पञ्चस्काण पारवानो विधि | ४२० |
| १२२ सामायक लेवानो विधि | ४२० |
| १२३ सामायक पारवानो विधि | ४२१ |
| १२४ पडिलेहण करवानो विधि | ४२३ |
| १२५ देववांदवानो विधि | ४२४ |
| १२६ देवसि प्रतिक्रमण विधि | ४२४ |
| १२७ राइ प्रतिक्रमण विधि | ४२९ |
| १२८ पस्कि प्रतिक्रमण विधि | ४३२ |
| १२९ चौमासी प्रतिक्रमण विधि..... .. | ४३५ |
| १३० संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि.... .. | ४३६ |
| १३१ सामायकना बत्रीशदोष | ४३६ |

अंक. ग्रंथोनानाम-

पृष्ठ.

- १३१ मुहपतिनी पचीश तथा शरीरनी प
चीश पडिलेहणा अर्थ सहित.... ४३७
- १३२ ठ आवश्यकनां नाम.. .. ४४२
- १३४ ठ आवश्यकना संक्षेपेअर्थ..... ४४३
- १३५ पडिकमणना बार अधिकारनां नाम ४४४
- १३६ ठ आवश्यकके सातनयनी फलामणी ४४५
- १३७ ठआवश्यक,उपरकाल,स्वभाव,नियतपू
र्वकृत,अनेउद्यम एपांचकारणउताखांठे ४५०
- १३८ ठ आवश्यकके उत्पाद, व्ययने ध्रौव्य ४५०
- १३९ ठ आवश्यकके हेय, ज्ञेयने उपादेय ४५१
- १४० ठ आवश्यकके षड्व्यनो व्यवहार
आत्मासाथे अगु ६ निश्चय नयमते. ४५१
- १४१ ठ आवश्यकमांहे कयो आवश्यक
कया तत्वमां ठे?.... ४५२
- १४२ ठ आवश्यकके सप्तजंगी ४५२
- १४३ ठ आवश्यकके चार निक्षेपा तथा हे
त्र, अने काल ए ठ बाबत दर्शावीठे. ४५४

॥ श्री गोडीपार्श्वनाथाय नमः ॥

अथ

श्रीप्रतिक्रमणसूत्र बालावबोध सहित
प्रारब्धते.



प्रथम नवकार मंगलिक रूप

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, न
मोआयरिआणं, नमो नुवज्जायाणं,
नमो लोए सबसाहूणं, एसो पंच
नमुक्कारो, सबपावप्पणासणो, मंग
लाणं च सब्बेसिं, पढमं हवइमंगलं॥१॥

नमो अरिहंताणं के० बार गुणो सहित विहर
मान तीर्थकर जे श्री अरहंत तेने नमस्कार होजो
तेमां नमः ए पदवडे डव्य अने नावथी अति न
अता सहित नमहुं एटले कर, चरण, तथा मस्त
के करी प्रणिधान रूप नमस्कार करवो एम कह्युं.

(૨)

એવો નમસ્કાર કોને કરવો? અરહંત જગવાનને
 નમસ્કાર કરવો. અરહંત કોને કહિયે? ઉત્તમ દે
 વતાડે કરી રચેલાં અશોકવૃક્ષ પ્રમુખ આઠ મ
 હા પ્રાતિહાર્ય, તડૂપ પૂજાને જે યોગ્ય છે તેને અર
 હંત કહિયે. એ વિષે આબું વચન છે.— અરહંતિ
 વંદણ નમંસણાણિ અરહંતિ પૂઅ સક્કારં; સિદ્ધિ
 ગમણં ચ અરહા, અરહંતા તેણ વુચ્છંતિ ॥ ૧ ॥ એ
 ગાથાનો જાવાર્થ:—જે વંદન તથા નમસ્કારને અર્હ
 એટલે યોગ્ય, જે પૂજા તથા સત્કાર કરવાને યો
 ગ્ય અને જે સિદ્ધિ ગમન કરવાને યોગ્ય હોય તેજ
 અરહંત કહેવાય છે. ક્યાંક નમો અરિહંતાણં એ
 વો પાઠ છે તેનો અર્થ આમ થાય છે:— કર્મરૂપ
 અરિ એટલે વેરીડને જેણે હણ્યા છે. એ વિષે આ
 બું વાક્ય છે:— ‘અઠ્ઠવિહં પિયકમ્મં, અરિનૂયં હો
 ૬ સવ્વ જીવાણં; તં કમ્મમરીહંતા, અરિહંતા તેણ
 વુચ્છંતિ’ એ ગાથાનો જાવાર્થ:— આઠ પ્રકારનાં જે
 કર્મ છે તે સર્વ જીવોના અરિનૂત એટલે વેરીરૂપ
 છે, એવા કર્મરૂપ વેરીને હણનાર છે તે માટે અરિ

હંત કહેવાયઢે. ક્યાંક નમો અરુહંતાણં એવો પા
 ઠે. એનો અર્થ આમ થાય ઢે:— કર્મરૂપ બીજ
 ફીણ થઈ જાવાથી જેની ફરી જગત્માં ઉત્પત્તિ થ
 વાની નથી. એ વિષે આમ કહ્યું ઢે:— ‘દગ્ધે બી
 જે યથાઽત્યંતં, પ્રાહુર્જવતિ નાંઽકુરઃ કર્મ બીજે ત
 થા દગ્ધે, નારોહતિ જવાંકુરઃ’ એ શ્લોકનો જા
 વાર્થ:— જે બીજ અત્યંત બલી ગયું હોય તેમાંથી
 અંકુર ફૂટે નહીં; તેમ કર્મરૂપ બીજ દગ્ધ થઈ ગ
 યાથી જવરૂપ અંકુરની ઉત્પત્તિ થતી નથી, ક્યાંક
 નમો અરહંતાણં એવો પદાંતર ઢે. એનો અર્થ આમ
 ઢે:— અરહ એટલે જે પદાર્થો પોતાની સન્મુખ ન હો
 ય તેને પણ જે સમ્યક્ પ્રકારે જાણી શકે તેને અર
 હાંતર કહેઢે. વળી ક્યાંક અરથાંત એવો પણ શબ્દાં
 તર થાય ઢે, એનો અર્થ આમ થાય ઢે:—જેને વિષે
 સમસ્ત પરિગ્રહના ઉપલક્ષણવાળા અતિ ક્રતાવલા
 ચાલનારા જે રથ તેનો અંત થયોઢે તથા જરા
 પ્રમુખ ઉપલક્ષણવાળા વિનાશનો અંત થયો ઢે
 તેને અરથાંત કહેઢે. એવા લક્ષણો વાળા જગવા

નને નમસ્કાર કરવાનો હેતુ શું? મહા જયંકર જે
 આ જવરૂપ વન, તેને વિષે જમવાને બીહીનારા જ
 નોને અનુપમ આનંદરૂપ જે પરમપદ તડૂપ જે
 નગર તેના માર્ગને દેશાડનારા છે તેથી પરમ ઉપ
 કારી છે માટે નમસ્કાર કરવા યોગ્ય છે.

નમો સિદ્ધાણં કે ૦ સર્વ સિદ્ધો આઠ ગુણો
 એ કરી સહિત તેઓને નમસ્કાર હોજો. જેણે
 આઠ પ્રકારના કર્મોરૂપ ઇંધનને શુદ્ધધ્યાનરૂપ
 અતિ તેજવંત અગ્નિવડે બાલી નાખ્યા છે તેને
 નિરુક્તિની વિધિ પ્રમાણે સિદ્ધ કહિયે. અથવા
 જે અપુનરાવૃત્તિયે ઇટલે પાઠા ન અવાય એવી રીતે
 મોહ નગરી પ્રત્યે ગમન કરે છે તેને સિદ્ધ કહે છે;
 અથવા જે મોહને વિષે અચલ યાય છે તેને સિદ્ધ
 જાણવા. અથવા જે શાસનને પ્રવૃત્તાવનાર થઈને
 મંગલ્યરૂપ સિદ્ધતાને અનુજવે તેને સિદ્ધ કહે છે.
 અથવા જેનો કોઈ અંત નથી એવી અનંતતા સ્થિતિ
 વાળા હોય અથવા જેના ગુણોના સમૂહ જવ્ય
 જીવોને મલે છે તેને સિદ્ધ કહિયે. એ વિષે આ

વચન પ્રમાણ છે:- ‘ધ્માતં સિતં યેન પુરાણકર્મ,
 યોવા ગતો નિર્વૃત્તિસૌધમૂર્ધ્નિ, સ્ખ્યાતોઽનુશાસ્તા પ
 રિનિષ્ઠિતાર્થોયઃ સોસ્તુ સિદ્ધઃ કૃતમંગલો મે.’ ‘ એ
 શ્લોકનો જાવાર્થ તે ઊપર જેટલાં સિદ્ધનાં લક્ષણો
 કહી આવ્યાં તેટલાંનો સમુચ્ચય વર્ણનરૂપે જાણ
 વો. સિદ્ધ પરમાત્માને નમસ્કાર કરવાનો હેતુ શું?
 એ વિનાશરહિત જ્ઞાન દર્શન ચારિત્ર તથા વીર્ય
 દિક ગુણોએ કરી સહિત છે તેથી પોતાના વિષ
 યનેવિષે પ્રકરે કરી આનંદ ઉત્પાદન કરવાને લી
 ધે જવ્યજીવોને અતિ ઉપકારી છે માટે નમસ્કાર
 કરવા યોગ્ય છે.

નમો આચરિત્રાણં કે० જે પાંચ પ્રકારના
 આચારને પાલનાર હોય અને ઠટ્ટીશ ગુણોએક
 રી સહિત હોય એવા આચાર્યને નમસ્કાર હોજો.
 આ એટલે મર્યાદા તે મર્યાદાને વિનયરૂપેકરી
 જિનશાસનના અર્થના ઉપદેશકતાયે કરીને તે
 ની આકાંક્ષા કરનારાં સેવે છે તેને આચાર્ય
 કહિયે.’ આચાર્યનાં લક્ષણવિષે આ વચન છે:-

સુત્તહવિચ્છો લક્ષણજુત્તો ગહ્લસ્સ મેઢિનૂચ્છો
 ય, ગણતત્તિ વિપ્પમુક્કો, અહંવાણ્સ આયરિચ્છો
 ત્તિ' । જ્ઞાનાચારાદિક પાંચ પ્રકારના આચાર
 ઢે:- આ એટલે મર્યાદા અને ચાર એટલે વિ
 હાર તે આચાર કહેવાય ઢે. તેવિષે સાધુવો પોતે
 આચાર પાલે બીજાને આચાર પાલવાનું મુખ
 થી જાણ કરે તથા પ્રદર્શાવે તેથી આચાર્ય
 કહેવાય ઢે. એ વિષે આહું વાક્ય ઢે:- ‘પંચવિ
 હં આચારં, આયરમાણા તહા પયાસંતા; આ
 ચારં દંસંતા, આયરિયા તેણ વુચ્છંતિ’ એનો જાવા
 ર્થ ઉપર કહ્યા પ્રમાણે ઢે. અથવા આ એટલે ઈ
 શ્વત્ તે અપૂર્ણ અથવા અધુરું, ચાર એટલે જે દૂત
 તે ચાર કલ્પ કહેવાય ઢે એવા યુક્તાયુક્ત વિજાગ
 નિરૂપણ કરવાને નિપુણ અને વિનય વાળા જનોને
 સાધવોકે ० યથાવત્ શાસ્ત્રોપદેશ કરનારા હોવાથી
 તેને આચાર્ય કહિયે. આચાર્ય ને નમસ્કાર કરવાનો
 હેતુ શું? આચારનો ઉપદેશ કરનારા હોવાથી પ
 રોપકારી પણાને લીધે નમસ્કાર કરવા યોગ્ય ઢે.

નમો ઉવજ્જાયાણં કે ૦ પચીશ ગુણોને ધારણ
 કરનાર. ૧૧ ઉપાધ્યાયોને નમસ્કાર હોજો. જેની સ
 મીપે આવીને નણે છે તેથી અધિકપણે આવવું થાય
 છે, અને સૂત્રવડેજિનપ્રવચન; જેની સમીપે જઈને
 સ્મરણ કરાય છે તે ઉપાધ્યાય કહેવાય છે. એ વિષે
 આતું પ્રમાણ છે:— વારસંગોજિણસ્કાઉં સજ્ઞાઉં
 કહિંઉંબુદ્ધે; હિતં વસંતિ જમ્માઉં, વજ્જાયા તેણ
 બુદ્ધંતિ' અથવા ઉપાધાન એટલે ઉપાધિ અથવા સ
 ન્નિધિ તે પાસે વસવું; તે ઉપાધિએ કરી અથવા
 ઉપાધિનેવિષે આય એટલે લાન છે શ્રુતનો જેતને
 તે ઉપાધ્યાય જાણવા. વા ઉપાધી એટલે વિશેષ
 ણાદિક પ્રક્રમેકરી શોનાને પમાડે એવા પદાર્થો
 નો આય એટલે લાન છે જેતથી તેતને ઉપાધ્યા
 ય કહિયે. અથવા ઉપાધિ તેજ સન્નિધિ, અને
 આય એટલે ઇષ્ટફલ. એટલે જેનેવિષે દૈવજનિત
 પણે જે આય એટલે ઇષ્ટફલો તેતના સમૂહનું
 એક હેતુપણું છે. તેને ઉપાધ્યાય કહિયે; અથવા
 આધી એટલે મનની પીડા તેનો આય એટલે લા

જ તેને કહિયે આધ્યાય, વા અધિય એટલે ટૂંકી
 બુદ્ધિ અર્થાત્ કુબુદ્ધિ, તેનો આય એટલે લાને તે
 ને કહિયે અધ્યાય અથવા ધ્યૈ ધાતુ ચિંતાને અર્થે
 છે, એ ધાતુનો પ્રયોગ તથા નર્જનો અર્થે કુત્સિ
 ત એટલે સ્વરાબ એવો થાય છે; એ બે મળી દુ
 ધ્યાનિ એવો અર્થ સિદ્ધ થાય છે; એનેજ અધ્યાય
 પણ કહે છે. એ અધ્યાયવા આધ્યાય તથા બન્ને જેઝં
 કરી ઉપહત એટલે હણાયલા છે તેને ઉપાધ્યાય
 કહિયે. ઉપાધ્યાયને નમસ્કાર કરવાનો હેતુ શું?
 સંપ્રદાયે કરી આવેલું, જે જિનવચનનું અધ્યાપન
 તેના યોગે વિનયે કરી નવ્ય જીવોની ઉપર ઉપ
 કારી હોવાથી નમસ્કાર કરવા યોગ્ય છે.

નમો લોએ સઘસાહૂણં કેળ અડી દીપપ્રમા
 એ લોકમાંના સર્વ સાધુઝ જે સત્યાવીશ ગુણોએ
 કરી સહિત હોય તેમને નમસ્કાર હોજો. તત્રજે
 જ્ઞાનાદિક શક્તિએ કરી મોહને સાથે છે તેને સા
 ધુ કહિયે; અને નિરુક્તિ ન્યાયેકરી સર્વ પ્રાણીમા
 ત્રનેવિષે સમતાને ધ્યાએ તેને સાધુ કહે છે; એવિ

(૯)

ષે આ વચન છે:- નિવાણ સાદ્દા જો જમ્હાસા
હંતિ સાદ્દાણો ; સમાયે સવ્વ જૂણેસું, તમ્હા તે જા
વ સાદ્દાણો. ' એનો જાવાર્થ ઉપર પ્રમાણે છે. અ
થવા સંયમકારિઓને સહાયતા કરવાને જે
ધારણ કરે તેને સાધુ કહિયે; નિરુક્તિને વિષે સ
ર્વ તે સામાયકાદિક વિશેષણોવાળા પ્રમત્તાદિક
પુલાકાદિક જિનકલ્પિક પ્રતિમાકલ્પિક યથા
લંદકકલ્પિક પરિહારવિશુદ્ધિકલ્પિક, સ્થવિરક
લ્પિક સ્થિતાસ્થિતકલ્પિક તથા કલ્પાતીત જે
દોવાળા પ્રત્યેકબુદ્ધસ્વયંબુદ્ધ તથા બુદ્ધ બોધિત જે
દોવાળા અને જારતાદિ જેદોવાળા સુષમઅસુષમા
દિક વિશેષતાએ કરી યુક્ત તે સર્વ સાધુડ જાણવા.
સર્વ ગુણવાળાને અવિશેષ પણાથી નમન કરવા
માં પ્રતિપાદનને અર્થે સર્વ પદનું ગ્રહણ કહ્યું છે
એવી રીતે અર્હત પ્રમુખ પદોને વિષે પણ જાણી
લેવું. કેમકે, ન્યાયનું સમાનપણું છે. અથવા જે
સર્વ જીવોને હિતના કરનારા સાધુડ છે તે સાધુ જા
ણવા. એ સર્વ શબ્દે અરહંત ધર્મ અંગીકાર કરનાર

સાધુડ જાણવા, પણ સર્વ શબ્દે બુદ્ધાદિક સાધુડનું
 ગ્રહણ ન કરવું. અથવા જે સર્વ શુચ યોગોને સાધે,
 સર્વઅર્હતોને સાધે; એટલે તેડની આજ્ઞા કરણે કરી
 આરાધે પ્રતિષ્ઠાપના કરે અથવા ડુર્નયનું નિરાકરણ
 પ્રમુખ કરે તેડને સર્વ સાધુડ અથવા સર્વ સાધુડ
 કહિયે. અથવા શ્રવ્ય એટલે શ્રવણ કરવા યોગ્ય
 જે વાક્યો તેડનેવિષે અથવા સવ્ય એટલે દક્ષિણ
 અર્થાત્ જે પોતાને અનુકૂળ કાર્યો ઢે તેનેવિષેસા
 ધુડ નિપુણ હોય ઢે માટે શ્રવ્યસાધુડ અથવા
 સવ્યસાધુડ પણ સવ શબ્દવડે જાણી લેવા. અ
 ને સર્વ શબ્દની દેશથી પણ સર્વતા દીઠામાં આવે
 ઢે માટે અપરિણેપ સર્વતા દર્શાવવાને અર્થે લોક
 એવો શબ્દ નામવામાં આવ્યો ઢે. લોક શબ્દ વડે
 મનુષ્યલોકમાં જાણવું; પણ ગહ્વાદિકનેવિષે સર્વ
 સાધુડને નમસ્કાર કયો ઢે એમ ન સમજવું. સાધુ
 ડને નમસ્કાર કરવાનો હેતુ શું? મોક્ષ માર્ગનેવિ
 ષે સહાયતા કરનાર હોવાથી તે ઉપકારી પણ
 ને લીધે નમસ્કાર કરવાયોગ્ય ઢે. એવિષે આવું વ

चन ठे:- असहाय सहायत्तं, करेति मे संजमंकरं
तस्स ; एएण कारणेणं, एमामहं सब साहूणंति

आशंका:- पंचपरमेष्ठीने नमस्कार करवो ते
संक्षेपे के विस्तारे? तेमां जो संक्षेपे कहेशो तो
सिद्ध थएला जे साधुओ तेओनेज नमस्कार क
रवो योग्य कहेशो ; केम के, तेओनुं गृहण
कखायी बीजा बधा अर्हत प्रमुखोनुं गृहण था
यठे. केम के, अर्हतो साधुपणेज रहेठे. अने जो
कहेशो के विस्तारे नमस्कार कराय ठे तो कृपणा
दिक जुडं जुडं नाम लईने नमस्कार करवो जोये.

समाधान:- साधु मात्रने नमस्कार कखायी
अर्हतादिकने नमस्कार कखानुं फल प्राप्त थतुं
नथी. जेम मनुष्यमात्रने नमस्कार कखायी रा
जादिकने नमस्कार कखानुं फल मजतुं नथी
तेनी पठे जाएवुं. माटे ए विशेषता कर्तव्य ठे
अने जुदां जुदां नाम लईने नमस्कार करिये तो
केटलानां नाम लईये माटे एम करवुं अशक्यठे

आशंका:- जे सर्वथी मुख्य होय तेनुं प्रथम

ગૃહણ કરવું એ યોગ્ય છે. માટે અહીં પંચ પરમેષ્ઠીમાં સિદ્ધ મુખ્ય છે. કેમ કે, તે સર્વથા કૃતકૃત્ય છે તેથી પ્રથમ સિદ્ધને નમસ્કાર કરવો જોઈએ.

સમાધાન:— સિદ્ધ પણ અર્હતના ઉપદેશવડે જાણ્યામાં આવે છે, અને તીર્થ પ્રવચનોએકરી અત્યંત ઉપકારી છે; માટે અર્હતનેજ પ્રથમ નમસ્કાર કરવો યોગ્ય છે.

આશંકા:—ત્યારે આચાર્યાદિકને પણ પ્રથમ નમસ્કાર કરવો યોગ્ય યજ્ઞ કેમ કે, કોઈક સમયે એનાથી પણ અર્હત પ્રમુખ સર્વ પદાર્થો જાણ્યામાં આવે છે. માટે આચાર્ય પણ મોટા ઉપકારી છે.

સમાધાન:— આચાર્યોને ઉપદેશ દેવાનું સામર્થ્ય અર્હત પરમાત્માના ઉપદેશ થકીજ હોય છે પણ સ્વતંત્ર આચાર્યાદિક ઉપદેશ કરી અર્થને જણાવવા વાળા કહેવાતા નથી. માટે અર્હતો જ પરમાર્થ કરી સર્વ અર્થને જણાવવા વાળા છે તેથી પ્રથમ નમસ્કાર કરવા યોગ્ય છે. વળી આચાર્યાદિક તો અર્હતની પર્યાદામાં બેશનારા છે તે

थी तेअणेने प्रथम नमस्कार करीने पढी अर्हत ने नमस्कार करवो ए योग्य न कहेवाय. एविषे आम कह्युं ठे:- एय कोइ वि परिसाए, पण मित्ता पणमए रणोत्ति. माटे पंच परमेष्ठीने नमस्कार करवानो ए योग्य अनुक्रम ठे.

एसो पंच नमुक्कारो के० ए जे पंच परमेष्ठी ने नमस्कार ठे ते केहेवो ठे? सब पावप्पणास एो के० सर्व पापनो विनाश एटले निवारण करनारो ठे. वली कहेवो ठे:- मंगलाणं च सब्बे सिं पढमं हवइ मंगलं के० सर्व मंगलोमां ए प्रथम मंगल ठे. एटले मंगल बे प्रकारनुं ठे:- एक लौकिक अने बीजुं लोकोत्तर तेमां दधि, अरुत तथा चंदन लौकिक मंगल ठे अने जप तथा नियम प्रमुख लोकोत्तर मंगल ठे. ए बनेयकी अति उत्कृष्ट मंगल ए पंच परमेष्ठो नमस्काररूप ठे. केम के, ए यकी मोक्षरूप सुख नी प्राप्ति आय ठे अहीं सुधी बधा मली पद न व ठे; संपदा आठ ठे, केम के आत्मा अने न

वमा पदनी एक संपदा गणेली ठे. सर्व लघु अक्षरो एकसठ ठे, गुरु अक्षरो सात ठे; सर्व अक्षरो अडसठ ठे. ए प्रथम मंगलीक जाणवुं.

हवे ए पंच परमेष्टीने नमस्कार करीने एअो ना एकशोने आठ गुणरूप मंत्रनो जाप करिये ते गुणो आ प्रमाणे ठे:- बारस गुण अरिहंता सिद्धा अष्टेवसूरि ठत्तीसं; उवज्ञाया पणवीसं, साहु सगवीस अठसयं. ए गाथानो अर्थ आ प्रमाणे ठे:- बारस गुण अरिहंता के० अरिहंत ना बार गुण; सिद्धा अष्टेव के० सिद्धोना आठ गुण; सूरि ठत्तीसं के० आचार्यना ठत्तीश गुणो उवजाया पण पणवीसं के० उपाध्यायना पची उ गुणो; अने साहु सगवीस के० साधुना स त्यावीस गुणो, ए सर्व मलीने अठसयं के० एक शो ने आठ गुणो थाय.

श्री अरिहंतना बार गुणोनुं विवरण करेठे:- आठ प्रातिहार्य तथा चार मूलातिशय मली अरिहंतना बार गुण जाणवा. तेमां प्रथम आठ प्रा

તિહાર્ય આ પ્રમાણે:- ઝપજાતિ વૃત્તમ્:- અશોક
 વૃદ્ધઃ સુરપુષ્પવૃષ્ટિઃ દિવ્યધ્વનિશ્રામરમાસનંચ ॥
 નામંદલં હુંડનિરાતપત્રં, સત્પ્રાતિહાર્યાણિ જિને
 શ્વરાણાં ॥ ૧ ॥ એનો અર્થ:- પહેલું અશોકવૃદ્ધ
 તે જ્યાં શ્રી નગવાન વિરાજમાન થાય છે ત્યાં અ
 શોક વૃદ્ધની નીચે બેશીને બાર પર્પદાઓને ધર્મ દે
 શના દિયે છે. બીજું સુરપુષ્પવૃષ્ટિ એટલે જલ તથા
 સ્થલને વિષે ઉત્પન્ન થયેલા જેવા શ્વેત, રક્ત, પીત,
 નીલ, તથા શ્યામ એ પાંચે વર્ણોના સરસ સુગંધી
 ફૂલોની દેવતાઓએ કરેલી વૃષ્ટિ ચોફેરે એક યોજ
 ન સુધી પૃથ્વીના ઊપર ગૂઠણપ્રમાણ હોય છે, ત્રીજું
 દિવ્યધ્વનિ એટલે નગવાન જ્યારે ડુધ સાકરથી મી
 ઠાસવાલા અત્યંત મધુર સ્વરવડે ધર્મદેશના દિયે છે
 ત્યારે દેવતાઓ તે નગવંતના સ્વરને પોતાની ધ્વ
 નિવડે અસ્વંદ પૂરે છે. ચોથું ચામર એટલે રત્નેકરી
 જડિત સુવર્ણની દાંડી સહિત શ્વેત ચામરો નગ
 વંતને વિંજાય છે. પાંચમું આસન એટલે અમૂલ્ય
 મણિજડિત સુવર્ણમય સિંહાસન, તેની ઊપર બે

સીને જગવાન દેશના દિયેઢે તે સદા કાલ સહ
 ચારી હોય ઢે. ઠતું નામંમલ એટલે સૂર્યના તેજ
 થી પણ અધિક પ્રકાશ વાલું દેવઠત નામંમલ
 જગવાનની પૂઠે સહચારી હોયઢે; સાતમું ડુંડુજિ
 એટલે આકાશનેવિષે કોડીગમે દેવતાના વાજિંત્રો
 દિવ્યાનુજાવે વાજે. અને આઠમું આતપત્ર એટલે
 જગવંતના મસ્તકની ડપર મુક્તાફલેકરી વિરાજ
 માન રત્નજડિત ત્રણ ઠત્રો ધરાય ઢે સમવસરણ
 ની અપેક્ષાએ ચાર જોડી ચામર અને બાર ઠત્રો હોય
 ઢે એ સત્ એટલે પ્રધાન પ્રાતિહાર્યાણિ એટલે આ
 ઠ મહાપ્રાતિહાર્ય જિનેશ્વરાણં એટલે શ્રી વીતરાગને
 ચિન્હરૂપે હોય ઢે. એ અર્હતના આઠ ગુણો પણ
 કહેવાય ઢે તેમજ ચાર મૂલઅતિશય ઢે તે આપ્ર
 માણે:—પહેલો અપાયાગમાતિશય, બીજો જ્ઞાનાતિ
 શય, ત્રીજો પૂજાતિશય તથા ચોથો વચનાતિશય.

તત્ર પ્રથમ અપાયાગમાતિશયનું વિવરણ ક
 રેઢે:— તે બે પ્રકારે ઢે:— એક સ્વાશ્રયી ને બી
 જો પરઆશ્રયી તેમાં સ્વાશ્રયી બે પ્રકારે ઢે:—

अपाय कहेतां उपडव ते डव्य अने नाव ए बे प्रकारे ठे:- तेमां डव्यथी जेमने सर्व रोगो द्यथई गयाठे अने नावथी अंतरायादि अठार दो षथकी रहित थयाठे ते आ प्रमाणे:- १ दानांतराय, २ लानांतराय; ३ वीर्यांतराय; ४ जोगंतराय; ५ उपजोगांतराय, ६ हास्य, ७ रति, ८ अरति, ९ जय, १० शोक, ११ जुगुप्सा एटले निंदा, १२ काम, १३ मिथ्यात्व, १४ अज्ञान, १५ निडा, १६ अविरति. १७ राग, १८ द्वेष, ए अठार दोषो वीतरागना द्यथई गया ठे. ए स्वाश्रयी अपायागमातिशय कह्यो; हवे पर आ श्रयी आ प्रमाणे:- ज्यां जगवंत विहारकरे त्यां आसमंतातजागे सवा शो योजन सुधी प्राये करी १ रोग, २ वैर, ३ ऊंदर, प्रमुख, सातइति ४ मारी मरगी, ५ अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ६ (डर्जिह), ७ पोताना सैन्यनो जय तथा परना सैन्यनो जय. एटला वाना थाय नही, ए पर आ श्री अपायागमातिशय जाणवो.

બીજો જ્ઞાનાતિશય તે આવી રીતે જાણવો. જગવાન કેવલ જ્ઞાને કરી લોકાલોકનું સ્વરૂપ સર્વ પ્રકારે જાણે છે. સર્વ પ્રકારે દેખે છે; કોઈ પ્રકારે કાંઈ જગવાનથી અજ્ઞાત રહેતું નથી તેથી જગવાન જ્ઞાનાતિશયવંત જાણવા.

ત્રીજો પૂજાતિશય આ પ્રમાણે:— જગવંતને રાજા, બલદેવ, વાસુદેવ, ચક્રવર્તિ, જવનપતિ દેવ, વ્યંતરદેવ, જ્યોતિષ્કદેવ, તથા વૈમાનિક દેવ તા પ્રમુખ જગત્રયવાસી નવ્ય જીવો પૂજા કરવા ની અજિલાયા કરે છે. અર્થાત્ શ્રીતીર્થેકર સર્વ પૂજ્ય છે માટે એ ત્રીજો પૂજાતિશય જાણવો.

ચોથો વચનાતિશય આમ જાણવો:— જગવંતની વાણી સંસ્કારાદિક ગુણે કરી સહિત હોય છે. માટે મનુષ્ય, તિર્થેચ તથા દેવતાએને અનુયાયે એવી રીતે સંસ્કારને પામે છે કે, સર્વ નવ્ય જીવો પોતપોતાની જાણના અનુસારે તેનો અર્થ સમજી જાય છે. જેમ એક નિદ્રા પોતાની ત્રણ સ્ત્રી સહિત એ કદા પ્રસ્તાવે વનમાં જતો હતો, માર્ગમાં એક સ્ત્રી

(१९)

ये कह्युं मुकुने हरण हणीने आणी आपो. बीजी ये कह्युं मने अत्यंत तृषा लागी ठे माटे पाणी लावीआपो. त्रीजीये कह्युं के गीत गायन कही संजलावो. ए त्रणेने जिल्ले कह्युं के सरो नथी ए म एक उत्तर कह्यो. ल्यारे पहेली समजी के सरो एटले बाण नथी. बीजी समजी के सरो एटले सरोवर नथी. त्रीजी समजी के सरो एटले मधुरस्वर नथी. एम एक उत्तरथी त्रणे स्त्री समजी गई. ए दृष्टांते प्रद्युनो वचनातिशयपण जाणवो. ए जिनेंई नी वाणीना पांत्रीश गुणो ठे ते विस्तारना नयथी लख्या नथी ए तीर्थकरना बार गुणो थया.

हवे सिद्धना आठ गुणो विवरीने कहे ठे:-
गाथा:- 'नाणं च दंसणं चिय , अद्वाबाहं तहे व सम्मत्तं; अरकयच्छिं अरूवी, अगुरु लहु वो रियं हवहि , ए गाथानो अर्थ:- प्रथम नाणंच के० ज्ञानावरणीय कर्म क्य थई जवाने लीधे ज्ञाननी उत्पत्ति थयार्थी तेना प्रजावे लोकालोक तुं स्वरूप जे विशेष प्रकारे जाणो ठे: बीजो दंस

एंचिय के० दर्शनावरणीय कर्मनो कृत्य थई ज
 वाथी केवल दर्शननी उत्पत्ति थवाने लीधे तेना
 योगे लोकालोकनुं स्वरूप नली प्रकारे देखेढे, त्री
 जो अवावाहं के० सर्व प्रकारनी बाधा पीडा थकी
 रहित, एटले वेदनीय कर्म कृत्य थई जवाथी नि
 रुपाधिक अनंत सुखनी उत्पत्ति आयढे. ते सुख
 आबुं ठे. व्यवहारीआना सुख, राजाना सुख, ब
 लदेवना सुख, वासुदेवना सुख, चक्रवर्तिना सुख,
 असंख्याता जवनपति, व्यंतर, तथा ज्योतिष्क दे
 वोना सुख, बार देवलोकना देवताना सुख, नव
 ग्रैवेयकना देवताना सुख, पांच अनुत्तर विमानवा
 सी देव ए सर्वना सुख थकी अनंतगुणु अधिक
 सुख सिद्धना जीवने ठे. ते सुखनो अनुभव सि
 ष्टविना बीजा कोईने पण थई शके नही. जेम
 मुगो साकर खाय तेनो स्वाद पोते जाणे पण
 बीजाने कही शके नही. तेम सिद्धना सुखने के
 वल ज्ञानी जाणे ठे पण ते सुख वचनातीत ठे
 माटे सुखथी कही शके नही. चोथो तहेव सम्म

(૨૧)

તં કે ૦ તેમજ મોહનીય કર્મનો ક્ષય થઈ જવાને લીધે
હાયક સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ થાય છે તે સિદ્ધને વિ
ષે યથાવસ્થિત હોય છે. પાંચમો અસ્કયષ્ટિ કે ૦
આયુ કર્મનો ક્ષય થયાથી અક્ષયસ્થિતિ થાય છે
સિદ્ધના જીવને પર્યાયવડે સાદિ અનંત સ્થિતિ
છે માટે અક્ષય સ્થિતિ કહેવાય છે. ઊગો અરૂ
વી કે ૦ રૂપ થકી રહિત છે ઉપલક્ષણથી વર્ણ,
ગંધ, રસ, તથા ફરસ થકી પણ રહિત જા
ણિયે. એટલે સિદ્ધ પાંચ વર્ણમાના એકે વર્ણે કહે
વાય નહીં; બે ગંધમાં કોઈ ગંધનો સિદ્ધમાં સંજવ
નથી; પાંચ રસમાં એકે રસ સિદ્ધને વિષે ન હોય;
અને આઠ સ્પર્શમાંનો એકે સ્પર્શ સિદ્ધને ન હોય.
એટલે એડનો તાદાત્મ્ય સંબંધ સિદ્ધને વિષે નહીં હો
વાને લીધે એ અરૂપી ગુણ કહ્યો છે. સાતમો અગુ
રુ લઘુ કે ૦ સિદ્ધ કાર્મિક સન્માન તથા સત્કાર
રહિત હોય છે, એટલે વિષયતા સંબંધે કરી સ્વાજ્ઞા
વિક પૂજા સત્કારે કરી સહિત છે પણ કૃતકૃત્ય
થયા છે માટે તાદૃશ વીર્યને ફોરવે નહીં. અને

आठमो वीरियं के० सिद्धने स्वान्नाविक अनंत बल होय ठे ते बल एवुं के लोकने अलोकमां तथा अलोकने लोकमां करी नाखे पण सिद्ध ते बलने फोरवे नही. ए आठ सिद्धना गुण थया.

आचार्यना ठत्रीश गुणो आवी रीतेः— पंचेंदिय संवरणो, ‘तद् नव विद् बंजचेर गुत्तिधरो; चउ विद् कसाय मुक्को, इअ अछारस गुणेहि संजुत्तो ॥१॥ पंच महवय जुत्तो, पंचविहायार पालण समञ्जो; पंच समिउ तिगुत्तो, ठत्तीस गुणेहि गुरु मञ्ज. ॥ २ ॥ अर्थः— पंचेंदिय संवरणो के० स्पर्शनेंदिय प्रमुख पांच इंद्रियो, तेउंना स्पर्शादिक मुख्य पांच विषयो तथा ते विषयोना अवांतर त्रेवीश जेदो थाय तेमां जे पोताने अजुकूल होय तेउंनी ऊपर राग न धरे अने जे प्रतिकूल होय तेउंनी ऊपर द्वेष न करे ते माटे पंचेंद्रियना संवरयुक्त एम कह्युं. एम प्रत्येक इंद्रियना विषयनेविषे राग तथा द्वेषना अजावे ए प्रमाणे पांचे इंद्रियना विषयोविषे करतां पांच गु

ए० यथा. तद् के० तथा नवविद् बंजचेर के०
 नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी गुत्तिधरो के० गुत्तिनेधा
 रण करनार. तेमां प्रथम पद्य नपुंसक तथा स्त्री
 यकी रहित स्थानकनेविषे रहे; बीजुं स्त्रीनी क
 था वार्त्ता प्रीतियुक्त करे नही; त्रीजुं जे आसने
 स्त्री बेठी होय ते ठेकाणे बे घमनी बेज्ञे नही; चो
 थुं स्त्रीना अंगोपांग रागसहित निरखवा नही.
 पांचमुं नीत प्रमुखने आंतरे स्त्री पुरुष बन्ने सूतां
 होय अथवा कामविषे वातो करतां होय त्यां बे
 शी न रहेवुं. ठतुं पूर्वावस्थामां स्त्रीनी साथे का
 मक्रीडा कीधी होय तेनुं स्मरण न करवुं. सातमुं
 सरसस्निग्ध आहार न लेवुं; आठमुं निरस आ
 हार पण अति मात्राए वजन ऊपरांत न लेवुं; न
 वमुं शरीरनी शोना विनूषा न करवी. ए नव प्रकारे
 ब्रह्मचर्य मन वचन कायारूप त्रिकरण शुद्धपणे
 पाले. ए नव गुणो अने प्रथम कहेला पांच मली
 चौद गुणो यथा. तथा चार कषायो ते चारित्र
 ना घातिक परिणाम विशेष जाणवा. चार कषा

य ते क्रोध, मान, माया, ने लोन ए जाणवा. एअोना नेदोनुं विस्तारे करी विवरण कखुं न थी. ए चार मली अठार थया. इय अठार स गुणेहि संजुत्तो के० ए अठार गुणोए करी संयुक्त जाणवा. हवे बीजा अठार कहे ठे:-पंच महवय जुत्तो के० पांच महाव्रते करी युक्त. ते मां ? ठ निकायना जीवोने पोते हणे नही, बीजा नीपाणे हणावे नही तथा हणनाराने अनुमोदना दिये नही ते प्रथम महाव्रत. १ क्रोध, लोन, न य, तथा हास्यादिकथी इव्य क्षेत्र काल तथा जा व संबंधे मन वचन तथा कायाए करी पोते जु तुं बोले नही, बीजाने जुतुं बोलावे नही तथा जुतुं बोलनाराने अनुमोदे नही ए बीजुं महाव्र त. २ पारकुं अदत्त पोते तृण मात्र लिये नही, परने लेवरावे नही; तथा लेताने अनुमोदे नही. ते तीर्थीकर अदत्त, गुरुअदत्त, स्वामी अदत्त तथा जीव अदत्त ए चार प्रकारनो अदत्त ठे ते लिये नही लेवरावे नही तथा लेताने अनुमोदे नही ते

ત્રીહું મહાવ્રત ૪ અઢાર જેદે બ્રહ્મચર્ય પાલે. તે
 આ પ્રમાણે:—ઔદારિક કામ તે મનુષ્ય તથા તિ
 ર્યંચની સ્ત્રી સંબંધી મન વચન તથા કાયાએ કરી
 સેવના કરે નહી, પરને કરાવે નહી તથા કરતા
 ને અનુમોદના ન દિયે. એમજ નવ જેદ વૈક્રિયના તે
 દેવતાઝની સ્ત્રી વિષે જાણી લેવા. એ અઢાર જેદે
 બ્રહ્મચર્ય પાલે અને કોઈ પ્રકારની સ્ત્રી જાતની
 સાથે આલાપ, સંલાપ, તથા અતિ પરિચય ન કરે
 કેમકે એમ કસ્યાથી વ્રતનો જંગ યાયઢે અને બી
 જો કોઈ દેખે તો જિનશાસનની હીલના થાય. અ
 ને ઘણો દેષી હોયતો ગામમાં બકવાદ કરે મા
 ઢે એ સર્વનો લ્યાગ કરવો તે ચોથું મહાવ્રત જાણ
 વું ૫ નવ વિધ પરિગ્રહ તથા ધાતુમાત્ર મૂર્ઠારૂપે
 રાખે નહી. ધર્મ સહાયક ઉપકરણોથી અધિક ઉ
 પકરણો રાખે નહી. બીજાને રચાવે નહી. ને
 રાખતાને અનુમોદન દિયે નહી; એ પાંચમું મહા
 વ્રત જાણવું. એ પાંચ અને પેલા અઢાર મહી ત્રે
 વીશ ગુણો થયા. હવે પંચવિદ્યાયાર પાલણ સમ

હો. કે૦ પાંચ પ્રકારનો આચાર પાલવાને સમર્થ હોય. તેમાં પ્રથમ જ્ઞાનાચાર એટલે જ્ઞાન પોતે જ એ, પરને જણાવે; પોતે લખે, બીજાની પાણેથી લખાવે. પોતે જ્ઞાનના જંઘારા કરે, પરની પાણેથી કરાવે, અને જે જ્ઞાનનું પઠન પ્રમુખ સારો ઉપયોગ કરતો હોય. તેની ઊપર રાગ ધરે એમ કાલે વિણે ઇત્યાદિ ગાથાવડે કહ્યું છે તે જાણી લેવું. બીજું દર્શનાચાર તે પોતે સમ્યક્ત્વ પાલે બીજાને સમ્યક્ત્વ પમાડે અને સમ્યક્ત્વથી પડતો હોય તેને સ્થિર કરે એ નિસ્સંકિય નિકંસકિય ઇત્યાદિ કંઠે ગાથાયેં કરી જાણવું. ત્રીજું ચારિત્રાચાર તે પોતે ચારિત્ર પાલે બીજાને ચારિત્ર પલાવે શુદ્ધ ચારિત્રને અનુમોદે તે પાણિહાણ જોગ જુતો ઇત્યાદિક કંઠે ગાથાએ કરી સમજવો. ચોથું તપાચાર તે પોતે બાર જેદે તપ કરે બીજાને તપ કરાવે બાર જેદના તપને અનુમોદે તે અણસણ મૂળો અરિયા એ ગાથાવડે જાણવો. અને પાંચમું વીર્યાચાર તે પંચાચારને વિષે શક્તિ ફોરવે પડિકમણું પડિલેહ

ए धर्मानुष्ठाननेविषे बलवीर्य गोपवे नही ए अ
 णिगूहिय बल वीरिउ ए गाथायकी समजी ले
 बुं. ए पांच आचाररूप पांच गुणो अने ऊपर
 कहेला त्रेवीश मली अठ्यावीश थया. पंच स
 मिउ के० पांच समितिउ एटले ईर्यासमिति,
 जाषासमिति, एषणा समिति, आदाननिक्षेपण
 समिति, तथा पारिष्ठापनिका समिति ए पांच म
 ली तेत्रीश थया. ति गुत्तो के० त्रण गुप्तिउ एटले
 देशथी अथवा सर्वथी जे योगनी निवृत्ति तेने गु
 प्ति कहिये. ते त्रण प्रकारे ठेः— मनोगुप्ति, वचन
 गुप्ति तथा कायगुप्ति. तेमां वली मनोगुप्ति त्रण
 प्रकारे ठेः—असत्कल्पना वियोजिनी, समता ना
 विनी, तथा आत्मारामता. तेमां आर्त्त तथा सै
 ५ ध्यानने अनुयायी शत्रु तथा रोगादिक माठी
 वस्तुनी अपेक्षाए हिंसादिक आरंज संबंधी जे मनो
 योगनी निवृत्ति ते असत्कल्पना वियोजनी मनो
 गुप्ति कहिये. ए गुप्ति प्रसन्नचंदादिक साधु
 नी पठे अशुन ध्यान तथा अशुन जावना

श्री मनने निवर्त्ताविवाने प्रस्तावे थाय ठे बीजी
 सिद्धांतने अनुसारे धर्म ध्यानना अनुयाये जा
 वनाए करी सहित परलोक साधक एवी समता
 परिणामरूप जे मनोयोगनी निवृत्ति ते समता
 जाविनी मनोगुप्ति कहिये ए गुप्तिनो अवकाशशु
 न जावना तथा शुन ध्यानना अजिमुख काले हो
 य. त्रीजी शैलेशीकरण काले सकल मनोयोगनी
 निवृत्ति ते आत्मारामता मनोगुप्ति जाणवी.
 हवे बीजी वचन गुप्ति बे जेदे ठे:- एक मौनाव
 लंबिनी ने बीजी वाग्नियमिनी. तेमां पहेत्ती सं
 झा होकारो, खुंकारो, पाषाण तथा काष्ठनुं फेक
 वुं, नेत्र पल्लवी तथा करपल्लवी प्रमुखने ठामवे
 करी मौन करवुं, अथवा सकल नाषायोगनुं रूंध
 वुं ते मौनावलंबिनी नाषागुप्ति कहिये. ए गुप्ति
 ध्यान तथा पूजाना काले होय ठे. बीजी नणवुं
 नणाववुं, पूठवुं, प्रश्ननो उत्तर देवो, धर्मोपदेश
 देवो, परावर्त्तना प्रमुखने काले यतना पूर्वक लो
 कने तथा शास्त्रने अनुसारे मुखे वस्त्रादिक देईने

(१९)

बोलतां सावद्य योगनी निवृत्ति ते वाग्‍नियमिनी
 जाषागुप्ति कहिये. त्रीजी कायगुप्ति ते बे चेदे
 ठे:- चेष्टा निवृत्तिरूप तथा यथासूत्रचेष्टा नि
 यमिनी. तेमां प्रथम कायोत्सर्गावस्थाए काययो
 गनी स्थिरता अथवा सकल काय योगनुं रूंधवुं
 ते चेष्टा निवृत्ति रूप कायगुप्ति कहिये; बीजी
 शास्त्रना अनुसारे सूबुं, बेशबुं, मूकबुं, लेबुं, जबुं
 आवबुं, ऊबुं रहेबुं. इत्यादिक ठामे कायाए करी
 पोताने ठंदे प्रवत्ततां चेष्टाथी निवर्त्ते तेने यथासूत्र
 चेष्टा नियमिनी कायगुप्ति कहिये. इहां गुप्तिने काले
 जे शुद्धोपयोग ते जावगुप्ति कहिये, ए त्रण गुप्तिउ
 अने प्रथमना ते त्रीश मली ठत्तीस गुणोहि गुरुमज्ञ
 के ० ए ठत्तीश गुणे करी सहित गुरु मऊप्रते थाअ्यो.

उपाध्यायना पचीस गुणो कहे ठे:- अग्यार
 अंग तथा बार उपांग ए मली त्रेवीसने जणेतथा
 जणावे; अने चरण सित्तरी, तथा करण सित्तरी
 शुद्ध पाले ए सर्व मली पचीस गुणो जाणवा
 साधुना सत्यावीश गुणो कहे ठे:- ठवय ठका

य रक्ता, पंचिंदियलोहनिग्गहो खंती; जाववि सोहि पडिले,हणाइ करणे विसुद्धीय. ॥१॥ संयम जोए जुत्तो, अकुसल मण वयण काय संरोहो; सीयाइ पीड सहणं, मरणं ऊवसग्ग सहणं च. ॥ २ ॥ एनो अर्थः— ठव्वय के० पांच महाव्रत तथा ठुं रात्रिनोजनविरमण ए ठ व्रत पा ले; ६ ठकायरक्ता के० पोताना आत्मानी पठे ठकायनी रक्ता करे; १२ पंचिंदियलोहनिग्गह के० पांच इंद्रियो तथा ठवा लोननो निग्रह रे; १७ खंती के० कृमा करे; १८ जावविसो हि के० गुण परिणामनी वृद्धि करे, २० पडिले हणाइ करणे विसुद्धी य के० बाह्य उपकरणादि कनी पडिलेहण उपयोग सहित करे; २१ संयम जोएजुत्तो के० संयमनायोग तेणेकरी सहित, एटले संयमने अनुकूल समिति गुह्यादिरूप यो गने आदरे; २२ अकुसल मण वयण काय संरोहो के० अविवेक विकथा निडादिक प्रमाद यो गने ठामे; एटले माठे ठामे मन वचन तथा का

(३१)

या प्रवर्त्तता होय तेउने रोकी राखे. ३५ सीश्चा
 ६ पीड सहणं के० शीतादिक बावीस पीडा एट
 ले परिसहने सहे, ३६ मरणं उवस्सग्ग सहणं
 च के० मरणांत उपसर्ग सहे पण धैर्य मूके नही.
 ३७ ए साधुना सत्यावीश गुणो जाणवा. ए सर्व पां
 च परमेष्ठीना मलीने एकशो ने आठ गुणो थया.

हवे श्री नवकारनो महिमा कहे ठे:- गाथा
 नवकार इक्क अस्कर, पावं फेडेइ सत्त अयराइं; प
 न्नासं च पएणं, सागर पणसय मग्गेणं ॥ १॥
 जो गुणइ लस्क मेगं, पूएइ विहीइं जिण नमुक्कारं;
 तिष्ठयर नाम गोअं, सो बंधइ नळि संदेहो ॥ २॥
 अछेव य अठसया, अठसहस्सं च अठकोडीओ;
 जो गुणइ नत्तिजुत्तो, सो पावइ सासयं ठाणं ॥ ३॥

॥ अथ पंचिंदिय. ॥

पंचिंदियसंवरणो, तह नव विह बं
 नचेर गुत्ति धरो । चउ विह कसा
 य मुक्को, इय अठारस गुणेहि सं

(३१)

युत्तो॥१॥पंच महवय जुत्तो, पंच वि
हायार पालण समढो । पंच समिउ
तिगुत्तो,उत्तीस गुणेहि गुरु मञ्ज ॥१॥

एनो अर्थ उपर पंचपरमेष्ठीना अर्थना विवरण
प्रसंगे यथानुक्रमे एज गाथाओना वर्णनरूपे क
खोले, माटे अही फरी अर्थ करता नथी. एमां पद
व्यावढे गाथा बे ढे जारी अक्षरो दशढे; हलवा अ
क्षर सित्तेरढे सर्वमली एशी अक्षरो ढे एम जाणवुं.

॥ अथ खमासमण. ॥

इहामि खमासमणो वंदिउं जावणि

ज्जाए निसिहिआए मढएण वंदामि॥३॥

अर्थ:- इहामि के० इबुबुं (वांबुबुं) खमासम
णो के० हे कृमाश्रमण, एटले कृमासहित साधु
जी तुमनेवंदिउं के० वांदवाने हुं जावणिज्जाए के०
शरीरनी शक्तिसहित निसिहिआय के० पाप व्या
पारनो निषेध करीने एटलुं उजा ठतां कहीने पढी
उजा ठतां निचो वली बे जानु बे हाथ अने ल

(३३)

लाट ए पंचांगेकरी तमने मडएण वंदामि के०
मस्तके करी वांडुबुं. इहां जावणिषायनो अर्थ या
वत् निर्झरा एटले यावत् अशुच कर्मोनी निर्झ
रा यवाने अर्थ एवो अर्थ उतां टबानी त्रण प्रतो
मां शक्तियेकरी सहित लख्युं ठे माटे वांचनारे
विचारी अर्थ कहेवो. एमां त्रण गुरु तथा पचीश
लघु ए सर्व मली अठ्यावीश अक्षरो ठे. पढी फ
री उनो थई बे हाथ जोडी कहे.

॥ अथ सुगुरुने साता सुख पढा. ॥

इहाकार, सुहराइ, सुहदेवसि, सुख
तप, शरीर निराबाध, सुख संयम जा
त्रा, निरवहोगे जी, स्वामी साता ठे
जी, ज्ञात पाणीनो लाज देजोजी॥४॥

अर्थ:- इहाकारके० इहा करुं सुहराइके०
सुखेरात्री सुहदेवसिके० सुखेदिवस सुखतपके०
सुखेतपस्या शरीरनिराबाधके० शरीरसंबंधी रोग
रहित पणे सुखसंयमयात्राके० सुखे संयमयात्रा

(૩૪)

ને નિરવહોઠોજા। ઇટલે સંયમયાત્રામાં પ્રવર્તોઠો
જી સ્વામિજીસાતાઠેજી એવી સુખસાતા પૂઠીને પઠી

॥ અથ શ્રિયા વિહિયા. ॥

ઇઞ્ઞાકારેણ સંદિસહ જગવન્ શ્રિયા
વિહિયં, પઢિક્કમામિ, ઇઞ્ઞં, ઇઞ્ઞામિ, પ
ઢિક્કમિતં ॥ ૧ ॥ શ્રિયા વહિયાએ,
વિરાહણાએ, ગમણાગમણે, પાણક
મણે, બીજાક્રમણે, હરિયક્રમણે,
ઝસાઝતિંગ પણગદગ, મટ્ટી મક્કડા
સંતાણા, સંકમણે, જે મેં જીવા વિ
રાહિયા, અગિંદિઆ, વેઈંદિયા, તેઈં
દિઆ, ચઝરિંદિઆ, પંચિંદિઆ,
અજિહઆ, વત્તિઆ, લેસિઆ,
સંઘાઈઆ, સંઘટ્ટિઆ, પરિઆવિ
આ, કિલ્લામિઆ, ઝહવિઆ, ઝાણાઝ

(३५)

ठाणं, संकामिआ, जीविआउ, वव
रोविआ, तस्स मिआमि डुक्कडं. ॥५॥

अर्थ:- इच्छा कारेण के० तमारी इच्छा पूर्वक
एटले मारा बजात्कारे करी नही, तथा दाहिण
पणाथी नहीपण जो तमारी इच्छा होय तो न
गवन् के० हे ज्ञानवंत संदिसह के० आदेश द्यो
इरिया पथिक एटले चालवानो मार्ग तेहनै
विषे थता पापथी पडिक्कमामि एटले निवृत्तवानो
जे साधु तथा श्रावकनो आचार ठे तेथी हुं निवृ
त्तुं ल्यारे गुरु कहे के, पडिक्कमेह के० निवर्त्तो पाप
टालो ल्यारे शिष्य कहे के, इहं एटले जेम तमे आ
ज्ञा दीधीठे तेमज हुं इआमि के० वाबुंबुं पडिक्क
मिउ के० पापथकी पडिक्कमवा एटले निवर्त्तवा वा
बुंबुं ए अन्युपगम संपदा पडिक्कमवाने अति उज
मालथयो तेमाटे ए पदनी पहेली संपदा थई:

इरिया वहियाए एटले चालवाना मार्गमां तथा
साधु अने श्रावकना आचारनेविषे जे कांई जीवो

नी विराहणाएके० विराधना थई तेहथी पम्कि
मवाने वांढयो ए बे पदनी बीजी संपदा जाणवी:

गमण एटले अन्य स्थानके जातां अने आग
मणे एटले पाठा आवतां जे विराधना लागी होय
एम विशेष न कह्युं ते माटे ए एक पदनी संप
दा बीजी ते सामान्य हेतु संपदा जाणवी.

पाण एटले बेंडिय, तेंडिय, अने चउरिंडिय जी
वोने क्रमणे के० आक्रमण एटले पगेकरी चांप
वाथी; तथा बीय के० बीज एटले जे धान्य वा
व्युं ठतां ऊगी आवे तेने क्रमणे के० पगे करी चां
पवाथी; हरियक्रमणे के० हरित एटले नीलव
र्णवाली जे वनस्पति तेने पगे करी चांपवाथी; ए
बे पदे करी सर्व वनस्पतिने जीवपणुं कह्युं. ते
जीवनां लक्षण सर्व एउमां दीठामां आवेढे ते
आ प्रमाणे:—मनुष्यना शरीरनीपेठे वनस्पतिनुं श
रीर कोमल, तरुण, तथा वृद्धता प्रमुख सहित
दीठामां आवे ठे. तथा जेम हाथ तथा पगादिक
अवयवोए करी मनुष्यनो देह वृद्धिने पामे ठे ते

મ શાસ્ત્રાદિક અવયવોએકરી વૃદ્ધની વૃદ્ધિ થાય છે. તથા જેમ મનુષ્યાદિક પ્રાણીકમાં જાયત તથા નિદ્રા અવસ્થા દીઠામાં આવે છે તેમ પુંઆત્મ તથા આમલી પ્રમુખ વૃદ્ધ, ચંદ્રવિકાસિક તથા સૂર્યવિકાસિકાદિક કમલ, અને અંબાડી પુષ્પાદિકમાં નિદ્રા તથા જાયત્ અવસ્થા દીઠામાં આવે છે તથા લોન, હર્ષ, લજ્જા, જય, મૈથુન, ક્રોધ માન, માયા, આહાર, ઓઘસંજ્ઞા, ઇત્યાદિક સર્વ વિકાર વૃદ્ધોને પણ મનુષ્યની પેઠે અતઃ દીઠામાં આવે છે. જેમ કે, શ્વેત આકડાનું વૃદ્ધ પલાશાદિક, વૃદ્ધ જૂમિગત નિધાનને પોતાના મૂલને જડેકરી વીટી લિયે છે તે લોનનો જાવ જાણવો; વર્ષાકાલનેવિપે મેઘની ગર્જના સાંજલીને શીતલ વાયુના ફરસેકરી અંકુર વત્પન્ન થાય છે તે હર્ષનો જાવ જાણવો. લજ્જાજૂ વેલ મનુષ્યના હાથ વિગેરે અંગનાસ્પર્શથી સંકોચાઈ જાય છે; એ લજ્જા તથા જયનો જાવ કહેવાય; અશોકવૃદ્ધ બકુલવૃદ્ધ તથા તિલકવૃદ્ધાદિક નવયૌવનસ્વરૂપ

सालंकार कामिनीना पगनी पान्हिना प्रहारेकरी;
 मुखनुं तांबूलठांमवाथी; सस्नेहालिंगन वढे तथा
 हावनाव कटाक्षेकरी तत्काल फलता दीसे ठे; ए
 मैथुन संज्ञा जाणवी. कोकनदवृद्धनो कंद मनु
 ष्यनो पग लाग्याथी हुंकारा मूकेठे; ए क्रोधनो जा
 व जाणवो. रुदंती वेल, अहो हुं ठतां आ लो
 को दुःखी कां थायठे? एवा अहंकारेकरी निरंत
 र अश्रुपात करे ठे केम के, तेनाथी सुवर्णनी
 सिद्धि थाय ठे; माटे ए माननो जाव जाणवो.
 घणु करीने बधी वेलीउं पोतपोतानां फलोने पां
 दमांएकरी ढांकी लियेठे ए मायानो जाव जाण
 वो. तथा जूमिका जलादिक आहारना योगे वृद्धो
 नी वृद्धि थायठे; अने ते विना कुमलाई जायठे. म
 नुष्यनी पठे नागरवेलि प्रमुखने निलवट गोमय
 तथा दुग्धादिकना मोहलाउपजेठे ते परिपूर्ण थ
 या पढी पत्र, फल, फूल, तथा रसनी वृद्धि था
 य ठे; ए पण आहारसंज्ञा जाणवी. वृद्धने पां
 डू, गांव, सोजो तथा दुर्बलपणु प्रमुख रोगेकरी

(३९)

फूल, फल, पान, त्वचानेविकार दीसे ठे. सर्व व
नस्पतिना आउखा पोत पोताना नियतज होय
ठे; इष्ट तथा अनिष्टआहारनी प्राप्तिएकरी वृद्धो
अपुष्ट तथा पुष्ट आयठे; वेलीउ मार्गने मूकीने वृ
द्धनी ऊपरज चढेठे; ए उधसंज्ञानो जाव जाणवो
इत्यादिक युक्तिएकरी श्री आचारांगना पहेलाश्रुत
स्कंधे पहेला अध्ययनमां सविस्तर जीवपणुं थायुं
ठे. अर्हीं कोई पूठे के, जो वनस्पति जीवरूप हो
य तो ठेदन तथा जेदनप्रमुख करतां कां रोदन
करता नथी अथवा नाशी जता नथी? एनो उक्त
र ए ठे के, मनुष्यनी पेठे वनस्पतिने मुख, पग,
तथा हाथ प्रमुख अवयवोनो अजाव ठे. अने
स्थावर कर्मना उदयथी नासवाने बनतुं नथी. तो
पण तेउने अव्यक्त वेदना होयज ठे. जेम कोई
एक आंधलो, बहेरो, बोंबमो, टुंटो, पांगलो, तथा
सर्व अंगोपांग रहित पुरुष होय तेने कोई ताडना
प्रमुख करें तो तेथी ते सहन थाय नही पण सु
खादिकना अजावे रोई शके नही तथापि तेने वे

दना तो थायज ठे. ते माटे कोई मोटा अवश्य प्रयोजन विना वनस्पतिनी विराधना करवी नही

तथा उंसा एटले सर्व त्रेह ते ठार एथी सूक्ष्म अ
प्पकायनु पण ग्रहण करवुं तेने चांपवे करी
तथा उत्तिंग एटले जे गर्दनाकारजीवो जूमिनेविषे
वृताकार घर करी रहे जेनुं चुईया एवुं नाम हो
य ठे ते जाणवा, तथा उत्तिंग शब्देकरी कीमीउनां
नागरां पण जाणवां. पण एटले पांच वर्णना
नीलफूलने तथा दग एटले पाणीने अने मट्टी के
माटीने, मक्कडा एटले कोलीयावडानी जाल ए स
र्व जातीना जीवोने संताणा संक्रमणे एटले संत्रा
णा संक्रमण ते पगेकरी पीड्याथी अथवा चांप्या
थी विराधना थायठे. एइत्वर हेतु संपदा चोथी
जाणवी; पाणक्रमणे बीयक्रमणे एम विशेषेकहुं;
ते माटे ए चार पदनी विशेषसंपदा जाणवी.

जे मे जीवाविराहियाके० यणुं शुं कहेवुं! ए
कज पदेकरी सर्व जीवोनी विराधना कहिये ठैए:
एटले जे कोए जीव विराध्या होय ए संग्रहसंपदा

पांचमी, एक पदनी जाणवी इहां जीव विराध्या ए म कह्युं पण एगिंदि बेंदि एम विस्तार न कह्यो माटे ए संग्रह संपदा जाणवी.

हवे जे जीव विराध्या ते कहे ठे. एगिंदिआ के० जेने शरीर रूप एकज इंडिय होय ते पृथ्वी, पाणी, तेज, वात तथा वनस्पतिकाय जाणीये; बेइंदिआ के० शरीर अने मुख ए बेइंडिउ जेने होय, एवा शंख तथा जलो प्रमुख जीवो जाणवा; तेइंदिआ एटले जेने शरीर, मुख तथा नाशिका ए त्रण इंडियो होय ते कीडी तथा माकण प्रमुख जीवो जाणवा. चउरिंदिआ ए टले शरीर, मुख, नासिका तथा आंख ए चार इंडियो जेने होय ते एवा नमरा प्रमुखजीव जाणवा. पंचिंदिआ एटले शरीर, मुख, नाशिका, आंख, अने कान ए पांच इंडिउ जे जीवोने होय ते एवा देवता मनुष्य नारकी तथा तिर्येच जाणवा. अहीं एगेइंदिअ बेइंदिअ, तेइंदिअ एम जीवनां नाम कह्यां तेथी पांच पदनी नाम संपदा ठी जाणवी;

हवे ए जीव केम विराध्या ते कहेढे:-अजिह
या एटले सामा आवता हएया; तथा ऊपाडी
नाख्या; वत्तिआ एटले पुंजीने एकठा कीधा; ले
सिआ एटले जूमि तथा नीत साथे घस्या; संघा
इआ एटले मांहोमांहे शरीरने मेलवेकरी पिंम
कीधा; एकठा मेलव्या. संघट्टिआ एटले थोडे फ
रसवेकरी दूहव्या शरीर फरस्या, हाथे करी घस्या.
परिआविआ एटले सर्व प्रकारे पीड्या परिताप
उपजाव्या; चांपीजाव्या. किलामिआ एटले गाढी
किलामणा उपजावी निस्तेज कीधा; मृतप्राय
कीधा; उद्विआ एटले उपड्व पमाड्या अथ
वा त्रास प्रमाड्या; ठाणाउठाणं एटले एक स्था
नकथी उपाडीने बीजे स्थानके संकामिआ के०
संक्रमाव्या अथवा मूक्या; जीविआओ ववरोवि
आ एटले जीवितव्यथकी विपरीत किधा; चूका
व्या अथवा माखा इत्यादिके करी जे विराधना
थइ होय. तस्स मिह्वामि दुःकडं एटले तेनुं दु
ष्कृत जे पाप ते मारुं मन वचन कायाए करी

(૪૩)

મિથ્યા એટલે નિષ્ફલ હોજો. એમાં અનિહ્યા ૬
ત્યાદિક વિરાધનાનાં નામ દીધાં તેમાટે એ અગ્યા
ર પદની વિરાધના સંપદા સાતમી થઈ.

હવે એની વિશેષ શુદ્ધિને અર્થે કાઠસગ્ગ કર
વા વાંઠતો થકો તસ્સ ઉત્તરિ કહે છે ॥

॥ અથ તસ્સઉત્તરી ॥

તસ્સ ઉત્તરી કરણેણં, પાયઞ્ચિત્ત કર
ણેણં, વિસોદ્ધી કરણેણં, વિસદ્ધી કર
ણેણં, પાવાણં કમ્માણં, નિગ્ધાયણ
ઢાણ, ઠામિ કાઠસગ્ગં ॥ ૬ ॥

અર્થ:-તસ્સ ઉત્તરી કરણેણં એટલે જે પાપ પાઠ
લ આલોચ્યો પમિક્કમ્થો તેને ઉત્તરીકરણેણં કે
તેની વિશેષ શુદ્ધિ કરવા સારુ કાઠસગ્ગ કરું બું
તે શુદ્ધિ શાથી થાય તે કહે છે. પાયઞ્ચિત્ત કર
ણેણં એટલે ગુરુપાસે પ્રાયશ્ચિત્ત કહ્યાથી ગુરુચે દીધો
જે આલોચણાનો તપ તે કરિયે તેને પ્રાયશ્ચિત્ત કહિ
યે અને કાઠસગ્ગ તે પણ અંતરંગ તપ છે તે મા

टे काउस्सगने करवे करीने आत्मा पापरहित
 थाय, तथा विसोही करणेणं एटले विशोधी कर
 वाथी एटले पापरूप मलने टालवाथी; विसह्नी
 करणेणं एटले माया शब्द, नियाण शब्द, अने
 मिथ्यात्व शब्द ए अंतरंग त्रण शब्दने टालवा
 थकी अथवा एथी रहित थवा माटे; काउसग्ग
 करुं तुं; पावाणं कम्माणं एटले संसार हेतुं झा
 नावरणी आदिक जे पाप कर्मो ठे, तेउने निघा
 यणछाए एटले निर्घातन अथवा फेदवाने अर्थे
 ठामिकाउसग्गं एटले एक ठामे रही काउसग्ग
 करुं. ए पम्मिकमण संपदा आठमी अई तस्स उत्त
 रीकरणेणं इत्यादिकमां पम्मिकमवाना शब्दो कह्या
 तेमाटे ए ठ पदनी संपदा आठमी ठे ए सूत्रोनो
 गद्य पाठ ठे, गाथा बंध नथी. एमां संपदा आठ,
 पद बत्तीश, गुरु चोवीश लघु एकशो ने पचोतेर,
 सर्व मली एक शो नवाणु अह्करो ठे.

ए इरियावही मन सुखे पम्मिकमतां अठार ला
 ख चोवीश हजार एक शो ने वीश मिहामिडुक्क

ङं देवाय ठे; त्यां प्रथम पांच शो ने त्रेशठ स्था
 नके जीव उपजे ठे ते जेदोनुं विवरण करे ठे:—
 पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय तथा वाउकाय. ए
 चारने सूक्ष्म तथा बादर करतां आठ जेद थाय अने
 वनस्पतिकायना त्रण जेद ठे:—एक सूक्ष्म निगोद
 रूप तथा बे प्रकारनी बादर एक प्रत्येक ने बी
 जी साधारण. ए पांच स्थावरना मलीने अग्यार
 जेद थाय; तथा बेइंडिय तेइंडिय ने चउरिंडिय
 ए विकलेइंडिय कहेवाय ठे. ए समुर्द्धमज होय ठे.
 ए त्रण पेला अग्यारनी साथे मेलवीए एटले चौद
 जेद थाय; ते चउदपर्याप्ता तथा चउद अपर्याप्ता
 मली अठावीश जेद थाय. हवे पंचेंडिय तिर्यच
 ना दश जेद कहेठे:— तेमांसर्व प्रकारना मत्स्यादि
 जलचरनो एक जेद, थलचरना त्रण जेद तेमां
 एक घोडा प्रमुख चतुर्पाद; आशीविष प्रमुख उर
 परि सर्प, अने गोह प्रमुख जुजपरिसर्प ए थल
 चरना त्रण जेद अने चार प्रकारना खेचरनो
 एक जेद ए मलीने ए पांच गर्जज अने पांच स

मुष्ठम मली दश जेद थाय. ए दशने पर्याप्ता तथा
 अपर्याप्ता गणीए ल्यारे वीश जेद थाय. ए वी
 शमां पेला अठ्यावीश मेलवीए ल्यारे अडताली
 श थाय. ए तिर्यचना जेद जाणवा. हवे नारकी
 ना जेद, रत्नप्रजा, शर्कराप्रजा, बालुकप्रजा, पं
 कप्रजा, धूमप्रजा, तमप्रजा, तथा तमतमप्रजा,
 ए सात नरकना नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता
 मली चौद जेद थाय; तेमां पाठला अडतालीश
 मेलीए ल्यारे बासठ थाय. हवे मनुष्यना जेदआ
 प्रमाणेः— पांच जरत, पांच ऐरवत, तथा पां
 च महाविदेह ए कर्मनूमिना पंदर जेद; पांच
 हैमवंत, पांच हिरण्यवत, पांच हरिवर्ष, पांच र
 म्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तर कुरु ए अ
 कर्मनूमिना त्रीशजेद; अने ठपन्न अंतर द्वीपो क
 हेवाय ठे. ए ठपन्ननी साथे पेला कर्मनूमिनां पंदर
 तथा अकर्मनूमिना त्रीश मेलवीए ल्यारे एकशो ने
 एक जेद मनुष्य जातिना थाय. एमां गर्जज मनु
 ष्यना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली बशे ने बे जेद

थाय अने तेनी साथे एकशोने एक समुर्द्धम म
नुष्यना जेद मेलवीए त्यारे त्रण शेने त्रण जेद
थाय. अने बासठ प्रथम तिर्यचना कल्या ते सर्व
एकठा कल्याथी त्रण शेने पांसठ जेद थाय.

हवे देवताना एक शो ने अठाणु जेद कहि
ये ठैए:- प्रथम परमाधामीना पंदर, दश लुवन
पति; आठ व्यंतर, आठ वाण व्यंतर; दश ज्यो
तिषी तेमां पांच चर ने पांच स्थिर जाणवा. त्र
ण कित्विषिया, दश तिर्यकृजृञक, नवलोकांतिक,
बार देव लोकना, नव ग्रैवेयकना, पांच अनुत्तर
वेमानना ए सर्वमलीने नवाणु थया; ते पर्याप्ता
तथा अपर्याप्ता ए बे मली एक शो ने अठाणु
जेद थाय. ते पाठला त्रण शो ने पांसठमां जेलीए
त्यारे पांच शो ने त्रेसठ सर्व जीवोना उत्पत्ति
स्थान थाय. तेने अजिहया इत्यादिक दश पद
वमे दशगुणाकार करिये त्यारे पांचहजार ठ शे
ने त्रीश थाय; ते वली रागने षेपथी बमणा क
रिये त्यारे अग्यार हजार ब शे ने साठ थाय;

ते मन वचन ने कायाए करी त्रण गुणा करिये
 त्यारे तेत्रीश हजार सात शो ने ऐसी थाय; ते
 करवा कराववा तथा अनुमोदनथी त्रण गुणा क
 रिये त्यारे एक लाख एक हजार त्रण शो ने चाली
 श थाय. ते अतीत अनागत तथा वर्तमान काले
 करी त्रण गुणा करिये त्यारे त्रण लाख चार ह
 जार ने बीश थाय. ते अरिहंतनी साखे सिद्धनी
 साखे, साधुनी साखे, देवनी साखे गुरुनी साखे
 तथा आत्मानी साखे ए ठनी साथे ठ गुणा क
 रिये त्यारे अठार लाख चोवीश हजार एक शो
 ने बीश मिहामि डक्कम थाय. एवी रीते जीवने
 खमत खामणां कीजे इरियावही पम्किमतां गुन
 ध्याने करी अनेक घोर पाप विलय जाय.

हवे पाठल कह्युं जे एकठामे काउसग्ग करुं
 ए पदेकरी बीजो शरीरनो कोईपण व्यापार क
 खाथी प्रतिज्ञानो जंग थाय; ते माटे काउसग्गमां
 नीचें कहेला आगार मोकला राख्याठे ए आगा
 रे करी काउसग्गनो जंग थाय नही ते कहे ठे.

(४९)

॥ अथ अन्नञ्च उससिएणं. ॥

अन्नञ्च उससिएणं, नीससिएणं, खा
सिएणं, ठीएणं, जंजाइएणं, उड्डुए
णं, वायनीसग्गेणं, जमलिएपित्तमुच्चा
ए, सुदुमेहिं अंग संचालेहिं, सुदुमेहिं
खेल संचालेहिं, सुदुमेहिंदिठि संचा
लेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अन्न
गोअविराहिउ, हज्जिमे काउस्सग्गो,
जावअरिहंताणं, जगवंताणं, नमुक्का
रेणं, नपारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मो
णेणं, जाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि, ॥७॥

अर्थः—अन्नञ्च उससिएणं के० मुखे नासिकाए
उंचो श्वासलेतां महारो काउस्सग्ग अन्यथानथाय
एटले जांगे नही. नीससिएणं के० नीचोस्वास मूक
तां, खासिएणं के० उदरसआवे, ठीएणंके० ठीक
आवे, जंजाइएणं के० बगासुंआवे, उड्डुएणंके०

उमकार आवे, वायनिसग्गेणके० अधो द्वारे वायुने निसरवे, नमलिए के० त्रमरीआवे, फेरआवे, पित्त मुञ्चाएके० पित्तने प्रकोपे मूर्च्छाआवे, एटलां वानां थयेथी काउस्सग्ग न जांगे; इहां अन्नञ्जससिएणं थी आंहीसुधीमां एकेका आगारनां नाम दीधां ते माटे एनवपदनी प्रथम आगारसंपदा थई.

सुदुमेहिंअंगसंचालेहिं के० सुद्धशरीरने हलाव वेकरी सीतादिक वेदनाए कांटाप्रमुखे काउस्सग्ग न जांगे, सुदुमेहिं खेलसंचालेहिंके० सुद्धश्लेष्म चलाववे कफगलवादिके करी काउस्सग्ग न जांगे सुदुमेहिंदिठिसंचालेहिंके० सूद्धदृष्टीचलाववे करी मेषोन्मेषादिके करी काउस्सग्ग न जांगे एमां सुदु मेहिं अंग संचालेहिं प्रमुख मांहे बहुआगारनां नाम दीधां तेमाटे एबहुआगार संपदा बीजी जाणवी.

एवमाइएहिं आगारेहिं एनो अर्थ एवमाइके० ए पूर्वोक्त बार आगार आदे देइने आदि शब्दवडे बीजापण आगारेहिंके० आगार लेवा ते कहे ठेः— वीजलीनुं अथवा दीपकनुं अजवाजुं याते तथा

उठवाने वस्त्र लेतां अने उंदर बिछाडी आडीथ
 वाथी आगल पाठल थवुं पडे तथा चोर अथवा
 राजाना नयथी आघापाठाथतां अग्निलागे अथ
 वा जींतपडते तथा सर्पमंषमारे तेथी आघोपाठो
 थतां काउसग्ग पालतां थोडी विराधनाथतां अज
 ग्गो अविराहिउ के० काउसग्गजागे नही, अण वि
 राथ्यो रहे, एरीते दुक्कमेकाउसग्गोके० एवो मुज्ज
 ते काउसग्ग होजो; इहां एवमाइ इत्यादिकमां आ
 गार कहा माटे ए त्रीजी आगार संपदा जाणवी.

हवे काउसग्गनो वखत आंके ठे एटले एवो
 काउसग्ग केटलीवारसुधी होय तेकहेठे जाव अरि
 हंताणंके० ज्यांलगे अरिहंत जगवंताणं के० ज
 गवंतने नमुक्कारेणं के० नमस्कारे सहित एटले
 नमोअरिहंताणं नो उच्चार करी काउसग्गने नपा
 रेमिके० नपालुं समाप्त नकरुं त्यांसुधी जाणवुं इ
 हां जावअरिहंताणं इत्यादिकमां काउसग्गनो मा
 न कह्यो ए कायोत्सर्गविधि नामे चोथीसंपदा थई.

ताव कार्य के० त्यांलगे शरीरने ठाणेणंके० ए

(५३)

कठामे उच्च राखवुं, मोणेणंके ० मौनपणेरहेवेकरी,
जाणेणंके ० धर्मध्यान सहितरहेवेकरी, मनने स्थिर
पणे राखी अण्णाणं वोसिरामिके ० काउसग्गरहित
पणाथकी अने सावद्य व्यापारपणा थकी आत्माने
वोसिरावुंहुं ए स्वरूप संपदा पांचमी जाणवी ताव
कार्य इत्यादिकमां शरीर स्थिर राखवुं कह्युं माटे.

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स नुज्जोअगरे ॥ धम्म तिष्ठ
यरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥
चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न म
जिअंच वंदे ॥ संजव मज्झिणंदणंच
सुमइंच ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं
च चंदप्पहंवंदे ॥ २ ॥ सुविहिंच पु
प्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं
च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं
संतिंच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरंच

(५३)

मद्धिं ॥ वंदे मुणिसुवयं नमिजिणंचा ॥
वंदामिरिद्धनेमिं ॥ पासं तह वद्धमा
णंच ॥ ४ ॥ एवं मए अज्जियुआ ॥
विद्ध्य रय मला पहीण जर मरणा ॥
चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिह्यरामे
पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्ति य वंदिय म
हिया ॥ जेए लोगस्स उत्तमासि
द्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाचं ॥ समा
हिवर मुत्तमं दितुं ॥ ६ ॥ चंदेसु नि
म्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं प
या सयरा ॥ सागरवर गंचीरा ॥ सि
द्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलो
ए ॥ ॥ इति ॥ ८ ॥

अर्थः— लोगस्स के० पंचास्तिकायात्मक लो
कमांहे केवलज्ञानेकरी उज्जोयगरे के० उद्योतना

करनार, धम्मतिष्ठयरे के० धर्मतीर्थना करनार,
चतुर्विधसंघना प्रवर्त्ताविणहार, जिणोके० रागद्वे
षनाजीपनार एहवा अरिहंतके० श्री अरिहंतजग
वंत प्रते नामलेइने कित्तइस्संके० कीर्त्तना स्तवना
करीसुं. चउवीसंपि केवलीके० चउवीसे जिनव
र जे केवलीढे ते इहां अपिशब्दे ऐरवतद्धेत्रे तथा
महाविदेहद्धेत्रे जे केवलीढे तेउनेपण स्तवुं॥१॥

हवेचोवीश तीर्थकरनां नाम अनुक्रमेकरीकहे
ढे प्रथम उसजके० श्रीरूपजदेव. विनतानगरी,
नाजीराजा पिता, मरुदेवीमाता, बधातीर्थकरोनी,
माताओ प्रथम स्वप्ने हस्तिदेखे अने श्रीमरुदेवी
जीये प्रथम स्वप्ने वृषजदीठो एवो गर्जनो महि
माजाणी श्रीरूपजनामदीधुं तथा धर्मेनी आदि
ना प्रवर्त्ताविनार तेथी बीजो आदिनाथ नामक
हिये पांचसंधनुष्य प्रमाणशरीर, चोरासीलक्षपूर्व
नु आयु, सुवर्णवर्ण, वृषजलांठन.

बीजा मजियंचके० श्रीअजितनाथ, अयोध्या
नगरी, जितशत्रुराजापिता, विजयाराणीमाता, प्र

थम राजा राणी सारिपासे रमतां त्यारे राणी
हारीजती अने राजानी जीतयतीहती अने नग
वंतगर्जे आव्यापढी राणीजीते अने राजाहारे एवो
गर्जनो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं
शाढाचारसे धनुष्यप्रमाण शरीर, बहोत्तेरलक्ष पूर्वे
आयु, सुवर्णवर्ण हस्तिलांढन तेने वंदेके ० वांडुबुं.

त्रीजा संजवके ० श्रीसंजवनाथ. श्रावस्तिनग
री जीतारीराजापिता, शेनाराणीमाता, देशमांडु
र्जिहू हतो ते नगवंत गर्जे आव्याथी अणचिंत
व्यो पृथ्वीमां धाननो संजवथयो तेथी संजवना
थ नामदीधुं चारसे धनुष्य प्रमाण शरीर, साठला
खपूर्वायु, सुवर्णवर्ण, अश्वलांढन.

चोथा मजिनंदणचके ० श्रीअजिनंदनस्वामि.
अयोध्यानगरी, संवरराजापिता, सिद्धार्थाराणीमा
ता, नगवंत गर्जे आव्यापढी इंदमहाराजआवीने
नगवंतनीमाताने घणीवारस्तविने जताहता; तेवा
रे राजाप्रमुखे जाण्युंजे ए गर्जनोज महिमाढे माटे
अजिनंदन नामदीधुं साढात्रणसे धनुष्यप्रमाण

(५६)

शरीर, पचासलाखपूर्वायु, सुवर्णवर्ण, वानरलांठन.

पांचमा सुमंश्चके० श्रीसुमतिनाथ. अयोध्या नगरी, मेघरथराजापिता, सुमंगलामाता, प्रभु गर्जनां रक्षापढी ते गाममां एक वणिकनी बेस्त्रीउहती उ तेमां न्हानीने पुत्रहतो अने महोटी वंध्याहती पण ते ठोकरानुं प्रतिपालन बन्ने माताओ कर तीहतीउ एमकरतां ते वणीके काल कस्यो त्यारे महोटीस्त्री धननीलालचे कहेवालागीजे पुत्रमहाराजे, माटे जेनो पुत्र तेनुं धनयायढे एवोचाल ढे तेमज न्हानीनोतोदीकरोहतो तेथी तेणेकस्युंके ए पुत्रमहाराजे अने धनपणमहारुंढे; एम बंने सोक्योनो टंटोथयो. ते वढतीवढती दरबारमां आवी तेवारे गर्जनामहिमांथी राणीने चुकादो करवानी जली बुद्धि उत्पन्नथइ तेथी राणीयेकस्युं जे बन्ने मलीने धन अर्धोअर्धवेंचीलो अने ठोकराना पण बे जाग करो अर्धोअर्ध वेंचीलो ते सांजली न्हानीस्त्री बोलीके मारे इव्यजोइतुंनथी अने ठोकराना कांइबेविजागथायनहीमाटे एठोकरो एनो

ढेतेमहारोजढे. ते सांजली राणीबोलीके ए ठोकरो
 न्हानीस्त्रीनोढे केमके पुत्रनुं मृत्युआय त्यांसुधी
 पण महोटीस्त्रीथी ना कहेवाणी नही अने न्हा
 नीस्त्रीये मारवानी मनाइकरी; माटे एने पुत्र अ
 ने धन ह्वालेकरो अने महोटी स्त्रीने घरथी
 बाहेरकाढो. ए गर्जना महिमाथी जगवंतनी मा
 ताने एवी बुद्धिउपनी तेमाटे सुमति नामदीधुं.
 त्रणसेंधनुष्यप्रमाण शरीर, चालीसलाख पूर्वायु,
 सुवर्णवर्ण, कौंचलाढन.

ढठा पद्मपङ्कके० श्री पद्मप्रजस्वामि. को
 शंबीनगरी, धरराजापिता, सुसीमाराणीमाता, जग
 वंत गर्जे आवा पढी माताने कमलनी सध्याए
 सुवानो मोहोलोकपन्यो ते देवताए पूरणकखो
 अने जगवंतनुं शरीर पद्म सरखुं रक्तवर्णे हतुं
 माटे पद्मप्रज नाम दीधुं अढीसें धनुष्य प्रमाण
 शरीर, त्रीसलाख पूर्वायु, रक्तवर्ण, पद्मलाढन.

सातमा सुपासंके० श्रीसुपार्श्वनाथ. वणारसी
 नगरी, सुप्रतिष्ठराजापिता, पृथ्वीराणीमाता माता

नां बन्ने पासां रोगेकरी कोढीयांहतां ते जगवंत ग
र्जे आब्या पढी बन्ने पासां सुवर्णवर्णे घणां सु
कोमलथयां माटे सुपार्श्वनामदीधुं. एकप्रतमां ज
गवंतनापितानां बे पासां लख्यां ठे तेने जगवंत
नी माताये हाथ फेरव्याथी सुकमाल निरोगी
थया एम पण लख्युं ठे. बर्षोधनुष्य प्रमाण शरीर,
वीस लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण, स्वस्तिक लांढन.

आठमा जिणंचके० जिनवीतराग चंदप्पहंके०
श्रीचंडप्रजस्वामी. चंडपुरीनगरी, महैसेनराजा पि
ता, लक्ष्मणा राणीमाता, जगवंत गर्जेआब्यापढी
माताने चंडमा ने पानकरवानो मोहोलो ऊपन्यो
ते प्रधाने बुद्धियेकरी पूर्णकखो एवो गर्जनो प्र
जावजाणी चंडप्रजनामदीधुं, एकसोपचासधनु
ष्यप्रमाण शरीर, दशलाखपूर्वायु, श्वेतवर्ण, चंड
लांढन तेने वंदेके० हुं वांडुळुं.

नवमा सुविहिंच पुष्पदंतके० श्री सुविधिना
थ, अने बीजुंनाम पुष्पदंतठे. काकंमीनगरी सुग्री
वराजापिता, रामाराणीमाता, जगवंत गर्जे आ

(५९)

व्या पढी माता तथा पिता जलीविधिएकरी धर्म
करवा लाग्या. एवो गर्जनो प्रजावजाणी सुविधि
नाथ नामदीधुं, अने मुचकंदनाफूलनी कली सर
खा प्रछुना उज्ज्वल दांत हता. माटे बीजुं पुष्प
दंत नामदीधुं, एकशो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे
लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण, मगरमड्ड लांठन.

दसमा सीयलके० श्रीशीतलनाथ. नदिलपुर
नगर, दृढरथ राजापिता, नंदाराणीमाता, पिताना
शरीरे दाहज्वरहतो ते जगवंत गर्जे आव्या पढी
राजाना शरीरनी ऊपर राणीये हाथ फेरव्याथी
शरीर ने शीतलताथई. एवो गर्जनो महिमा जाणी
शीतलनाथ नामदीधुं. नेवुंधनुष्यप्रमाण शरीर,
एकलाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण, श्रीवड्ड लांठन.

अगियारमा सिद्धसंके० श्रीश्रेयांसजिन. सिंहपु
रनगर, विष्णुराजा पिता, विष्णुराणीमाता, देरास
रमांपरंपरागत देवताअधिष्ठित सय्यानी पूजायती
हती ते सय्याए जे बेसे अथवा सुवे तेने ऊप
ड्व ऊपजे ते जगवंत गर्जे आव्यापढी माताना

मनमां आब्युंजे देवगुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय
 ते तो खरुंढे, पण सय्यानीपूजा तोक्यांये सांज
 लीनथी. एम चिंतवी सय्यानी रक्षाकरनार पुरुषे
 मनाई कख्या ठतां पण प्रभुनी माता ते सय्या ऊ
 परबेठांतथासुतांतेठतांगर्जनाप्रनावथीअधिष्ठितदे
 वता सय्यामूकी जतोरह्यो. तेवारपठी राजाप्रमुखे
 ते सय्या वपरासमां लीधी. एवो गर्जनो महिमा
 जाणी श्रेयांस नामदीधुं, ऐंसीधनुष्यप्रमाण शरीर,
 चौरासी लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण, षडगी, लांठन.

बारमा वासुपुळंचके० श्रीवासुपूज्यस्वामि. चं
 पानगरी, वसुपुज्यराजापिता, जयाराणीमाता, जग
 वंत गर्जे आब्यापठी इंदूमहाराज वारंवार आवी
 वसु एटले रत्ननी वृष्टीकरी मातापितानी पूजाकर
 ता, तेथी वासुपूज्य नामदीधुं, सित्तेरधनुष्यप्रमाण
 शरीर, बहोतेरलाख वर्षायु, रक्तवर्ण, महिषलांठन.

तेरमा विमलके० श्रीविमलनाथ. कांपिल
 पुरनगर, कृतवर्मराजापिता, श्यामाराणीमाता, ज
 गवंत गर्जेआब्यापठी तेमना नगरमां कोइ स्त्री

जत्तारिदहरेआवी उतस्यां त्यांकोइ व्यंतरिदेवी रहे
 ती, तेणे ते पुरुषनुंसुंदररूप दीतुं तेथीकामक्रीमा
 करवानी अजिलाषायइ पढी तेनीस्त्रीनाजेवुं व्यं
 तरिए पोतानुंरूपविकूर्वि तेनीपासेसुती. प्रजाते
 बन्नेस्त्री समान देखी ते पुरुषे कह्युं जे, एमां महारी
 स्त्रीकोणठे त्यारे पैलीबोलीके ए महारोजत्तारि अ
 ने बीजी बोलीके ए महारो जत्तारिठे एम वढतां
 वढतां सर्व राजापासे आव्यां, राजा तथा प्रधान
 बन्ने बेदुस्त्रीने समानदेखी कोइरीते निवेडो करी
 शक्यानही पण राणीये पुरुषने दूरउजोरारव्यो
 अने बन्ने स्त्रीओने पण दूरउजी राखी ने बोलीके
 जे पोताना सत्यवचनना प्रजावथी जत्तारिने स्पर्श
 करे तेनो ए जत्तारिजाणवो. ते सांजली व्यंतरीए दे
 वशक्तिना प्रजावे पोतानो हाथलांबोकरी जत्तारिने
 स्पर्शकर्यो. तेवोज राणीये तेनो हाथ पकडीलइने
 कह्युंके तुंतो व्यंतरीठे माटे ताहरे स्थानके जती
 रहे. एवीरीते चूकाइथवाथी विमलमति वाली रा
 णी कहेवाणी ते गर्जनोज प्रजावजाणी विमलना

अनामदीधुं, शाठधनुष्यप्रमाणशरीर, शाठलाखव
र्षायु, सुवर्णवर्ण, सूकरलांढन.

चक्रदमा मणंतचके० श्री अनंतनाथ. अयो
ध्यानगरी, सिंहसेनराजापिता, सुयशाराणीमाता,
स्वप्नमां जेहनो अंतनआवे एवुं एक महोदुं चक्र
जमतु राणीएआकाशनेविषे दीतुं अने अनंत
रत्ननी मालादीठी तथा अनंत गांठनादोराकरी बां
ध्या तेथी ताप गया एवो गर्जनो प्रजावजाणी
अनंतनाथ नामदीधुं, पचास धनुष्य शरीर, त्री
स लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण, सिंचाणानुं लांढन.

पंदरमा ज्जिणंके० वीतराग धम्मंके० श्रीधर्म
नाथस्वामि. रत्नपुरनगर, जानुराजापिता, सुव्रतारा
णीमाता, राजाराणीने पूर्वे धर्मकपर अल्परागह
तो ते जगवंत गर्जे आव्या पढी बन्नेने धर्म क
पर अत्यंतरागथयो एवो गर्जनो महिमाजाणी
धर्मनाथ नामदीधुं, पिस्तालीस धनुष्य प्रमाण श
रीर, दशलखवर्षायु, सुवर्णवर्ण, वज्र लांढन.

सोलमा संतिंचके० श्रीसांतिनाथ. गयपुर

नगर, विश्वसेनराजापिता, अचिराराणीमाता, ते दे
शमां मरकीनो ऋषयः घणोहतो ते जगवंत ग
र्जे आख्या पत्नी माताए अमृत ठांटुं तेथी मर
कीनी शांतिथई एवा प्रजावथी शांतिनाथनाम दी
धुं. चालीस धनुष्य प्रमाण शरीर, एकलाखवर्षायु,
सुवर्णवर्ण, मृगलांठन, तेने वंदामिके० वांडुं.

सतरमां कुंधुंके० श्रीकुंधुनाथ. हस्तिनागपुरन
गर, सूरराजापिता, श्रीराणीमाता. जगवंत गर्जे
आख्यापत्नी माताजीए स्वप्नमांरत्ननो युज पृथ्वीने
विषे दीठो तथा शत्रुहता ते कुंधुआनीपेरे न्हा
नाथया अश्रवा कुंधुआ प्रमुखन्हाना महोटा
जीवोनी जयणा देशमां प्रवत्ति तेथी कुंधुनाथ
नाम दीधुं, पांत्रीस धनुष्य शरीर, पंचाणु ह
जार वर्षायु, सुवर्णवर्ण, ठागलांठन.

अठारमा अरंचके० श्रीअरनाथ. गयपूरनगर,
शुदर्शनराजापिता, देवीराणीमाता, जगवंतगर्जे
आख्या पत्नीराणीए स्वप्नमांहे रत्नमय आरो तथा
युज दीठो एवो गर्जनो महिमा जाणी अरनाथ

नामदीधुं, त्रीस धनुष्य शरीरनो मान, चोरासी हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण, निदावर्त्तलांढन.

उंगणीसमा मल्लिके० श्रीमल्लीनाथ. मिथिला नगरी, कुंजराजापिता, प्रजावतिराणीमाता, जग वंत गर्जेआव्या पढी माताने एक रात्रीये, ठएकु तुना फूलनी सय्याए सुवानो दोहोलोउपनो ते देवताए पूख्यो. एवो गर्जनो प्रजाव जाणी, श्रीमल्लीनाथ नाम दीधुं, पचीश धनुष्य शरीरनो मान, पंचावन हजार वर्षायु, नीलवर्ण, कुंजलांढन.

वीसमा वंदेके० वांडुहुं मुणिसुवयंके० श्रीमुनिसुव्रत स्वामिप्रते. राजगृहनगर, सुमित्रराजा पिता, पद्माराणीमाता, जगवंत गर्जे आव्या पढी मातापिता मुनिराजनीपेरे सुव्रत के० जलां बारव्रत श्रावकनांसाचववालाग्या. एवो गर्जनो प्रजाव जाणी, मुनि सुव्रत नामदीधुं, वीशधनुष्य शरीरमान, त्रीशहजार वर्षायु, रुक्मवर्ण, काठवानुं लांढन.

एकवीसमा नमिजिणंचके० श्रीनमिजिनेश्वर ने. वंदामिके० वांडुहुं मिथिलानगरी, विजयराजा

पिता, विप्राराणी माता, जगवंत गर्जे आव्या पढी
सीमाडिआराजा जगवंतना पिताना शत्रु हता,
ते चढी आव्या गामना किछ्त्राने चारे बाजु लशक
रनो पडाव नाखी विंटीलीधुं. राजाने घणी बीक
लागी पण राणीयें किछ्त्राउपर चढोने शत्रुउने वां
कीनजरे जोयुं ते राणीनुं तेज वयरी राजाउथी
खमायुं नहो तेथी सर्व आवीने जगवंतनी माता
ने नमस्कारकरी कहेवालागाके अमारा उपर सो
म्यदृष्टीयेजूउ. राणीये तेना उपर सोम्यनजरे जा
ई माथे हाथ राख्यो. सर्व राजाउ राणीने पगेलागी
आझामागी पोतपोताने नगरे गया. एवो प्रनावजा
णी नमिनाथ नामदीधुं, पन्नरधनुष्य शरीरनुं मान,
दश हजार वर्ष आयु, सुवर्णवर्ण नीलोत्पललांढन.

बावीसमा अरिष्ठनेमिके ० श्रीअरिष्ठनेमिप्रभु, सो
रीपुरनगर, समुद्रविजयराजापिता, शिवादेवीराणी
माता, प्रभुगर्जे आव्या पढी मातायें स्वप्नमां अ
रिष्ठ एटले कालारत्ननी रेलदीठी तथा आकाशमां
चक्रकठलतुं दीतुं एवो प्रनावजाणी अरिष्ठनेमिना

मदीधुं. बीजुं नाम श्री नेमिनाथ. दसधनुष्य शरीर
मान. एकहजारवर्षायु. श्यामवर्ण. शंख लांठन.

त्रेवीशमा पासंके० श्रीपार्श्वनाथस्वामि, वणा
रसीनगरी, अश्वसेनराजापिता, वामाराणी माता,
नगवंत गर्ने आव्या पढी मातायें अंधारी रात्रे
पोतानी पासे सर्प जतो दीतो ते सर्पना जवाना
मार्गनी वचमां राजानो हाथ देखी राणीयें कुंचो
कीधो तेथो राजाजागी ऊठयो ने बोव्योके शामाटे
हाथ कुंचो कीधो राणिये सर्प दीतो कह्युं. राजा
बोव्यो, तमे जुतुं बोलोवो. पढी दीपकमंगावी
जोयुं तो सर्पदीतो. तेवारे विस्मय पामि राजायें वि
चाखुं जेमे न दीतोने राणीये दीतो ए गर्जनो प्रनाव
ठे. एम जाणी श्रीपार्श्वनाथनामदीधुं. नवहस्त प्रमा
णशरीर. एकशोवर्ष आयु, नीलवर्ण, सर्पलांठन.

चोवीशमा तहके० तेमजवद्धमाणचके० श्री
वर्द्धमानस्वामी, कृत्रियकुंभ नगर, सिद्धार्थराजा
पिता, त्रिसलाराणी माता, नगवंत गर्ने आव्या
पढी मातापिता समस्त रुद्धियें वृद्धिपाम्यां. धन

धान्यादिकना जंमार तथा देश नगरादिकनी वृद्धि
थई, सर्वराजा आझामां वर्तवा लाग्या. एवो प्रना
वजाणी वर्द्धमान नामदीधुं. वली बालावस्थामां
मेरुपर्वत अंगुठे चांप्यो, तथा आंबली क्रीडाकरतां
देवताहास्यो माटे इंदमहाराजे श्री महावीर एवुं
बीजुं नाम दीधुं. सात हाथ शरीर, बहुतेरवर्ष
आयु, सुवर्णवर्ण, सिंह लांढन. ॥ १ ॥ ३ ॥ ४ ॥

एवमएके० ए रीते में चोवीशे तीर्थकरने वि
शेषे जुदेजुदे नामेकरी अणिशुआक्रे० संस्तव्या.
विदुअ रथ मलाके० टाढ्याढे पापरूप रज अने
मलजेणे तेमां रज ते तत्काल आनवनां बांध्यां
कर्म, अने मलतेघणाकालनां पूर्वजवना बांध्यांकर्म
जाणवां. वली पहीणके० क्य गयाढे जरमरणा
के० जरा रोग अने मरण जेना एवा चउवीसंपि
जिणवराके० चौवीश जिनवर वर्तमानकाले थया
ते अपिशब्दथकी महाविदेह तथा ऐरवत हेत्रोने
विषे जे तीर्थकरोढे तेपण लेवा. एवा तिन्नयराके०
तीर्थकरते मेके० मुजने पसियंतुके० प्रसन्नथाउ॥५

ए तीर्थकरोने नामेकरी कित्तियके० स्तव्या वं
 दियके० वांद्या महिआके० पूज्या जे ए लोगस्सके०
 जे तीर्थकर ए लोकनेविषे उत्तम सिद्धाके० उत्तम
 सिद्ध थया ते मुजने आरुग्गके० आरोग्यता एटले
 निरोग्यता आपो केमके निरोगताहोयतो धर्म सा
 धन थाय. वली बोहिलाजंके० बोधबीजनो लान ए
 टले नवांतरे सम्यकत्व रूप धर्मनी प्राप्ति. थाय अने
 समाहिवरके० प्रधान समाधि ते मननुं स्वस्थपणु
 उत्तमंके० उत्तम ते मुऊप्रते दिंतुके० द्यो आपो ॥६॥

चंदेसुनिम्मज्जरके० चंडमाथकी अत्यंत
 निर्मल. वली आइच्चेसुके० आदित्य जे सूर्य तेथ
 कीपण अहियंके० अधिक पयासगराके० प्रका
 शना करनारहे. सागरवरगंजिराके० स्वयंचुरमण
 समुद्धी पण अत्यंत गंजीरहे एवा सिद्धाके० सि
 द्ध ते सिद्धिके० मोद्धप्रते ममदिसंतुके० मुजनेद्यो.
 संपदा अछावीस पद अछावीस गुरु अद्धर अछा
 वीस लघु अद्धर बरोने बत्रीस सर्वमली सबलो
 ए सहित लोगस्सना बरों शाठ अद्धरोहे ॥ ७ ॥

(६९)

॥ अथ सामायकनुं पञ्चखाण ॥
करेमि चंते सामाइयं, सावज्जं जो
गं, पच्चस्कामि, जाव निअमं, पज्जु
वासामि, डविहं, तिविहेणं, मणेणं,
वायाए, काएणं, नकरेमि, नका
रवेमि, तरुसचंते, पप्पिकमामि, नि
दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोप्पि
रामि, इति ॥ ९ ॥

अर्थः— करेमिचंते सामाइयंके० करूतुं हे न
गवंत बे घडीनुं सामायक व्रत जीवने समता
परिणाममां राखवुं तेने सामायक कहियें ते सा
मायकमां सावज्जंके० जेणेकरी पापलागे तेने सा
वद्य कहिये तेनो जे जोगंके० व्यापार तेने पच्चस्का
मिके० पचखुतुं एटले निपेधुंतुं. जावनियमंके० ज्यां
लगे नियमठे पळुवासामिके० सामयकसेववानो
ल्यांलगें. ते जघन्य तो बे घडीनो काल जाणवो. ड
विहंके० बे प्रकारनो सावद्य व्यापार ते तिविहेणं

के० त्रणप्रकारे न करवो. ते त्रण प्रकार कहेढे एक
मणेणंके० मनेकरी बीजो वायाएके० वचनेकरी
त्रीजो काएणंके० कायायेंकरी. हवे पूर्वोक्त बे प्र
कार नो सावद्य व्यापारजे कह्यो तेनो अर्थ करे
ढे नकरेमिके० बे घडी पर्यंत पोते सावद्य व्यापार
हुंनकरुं नकारवेमिके० बीजा पासं सावद्य व्यापार
करावुंनही पण पुत्र स्त्री वाणोतर प्रमुख जे सावद्य
व्यापार करेढे तेमाटे अनुमति मोकलीढे ए
द्विविध त्रिविध कहिये तस्सके० ते सावद्य व्या
पारथी जंतके० हे जगवन हुं पडिक्कमामिके०
पडिक्कमुहुं निवर्त्तुहुं केवीरीते जे निंदामिके० निंहु
हुं अने आत्मानीसांखे गरिहामिके० गरहुंहुं गुरुनी
साखें पापनोकरनार एहवो जे महारो अप्पाणके०
आत्मा तेने पापथकी वीसिरामिके० वीसिरावुंहुंइति

॥ अथ सामायक पालवानुं ॥

सामाइअ वयज्जुत्तो ॥ जाव मणे हो
इ नियम संजुत्तो ॥ विन्नइ असुहं

कम्मं ॥ सामाइअ जत्तिआवारा ॥१॥
 सामाइअं मिउकए ॥ समणोइव सा
 वने हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं॥
 बहुसो सामाइअं कुळा ॥ २ ॥ सा
 मायिक विधिं लीधूं, विधिं पारिनुं॥
 विधिकरतां ॥ जेकोइ अविधि दुउ
 होए ॥ तेसबिहुं मन वचन कायार्थेक
 री ॥ मिहामिडुकडं ॥ इति ॥ १०॥

अर्थः—सामाइयवयजुतोके० बे घडीनुं जे सा
 मायकव्रत तेणेकरीने युक्त जावमाणेके० ज्यांल
 गें मनमांहे नियमसंजुतोके० ए नियमयुक्त होय
 त्यांलगे विन्नई असुहंकम्मंके० अशुजकर्मने ठेवे
 ते सामाइजत्तिआवाराके० सामायक जेटलीवा
 रकीधी तेटलीवार अशुजकर्मने टाले ॥ १ ॥

वली सामाइअंमिउकएके० सामायक करतो
 ठतो समणोइवके० साधुनीपरे सावउहवइके०

श्रावकपण निष्पापीहोय जम्हाके० जे माटे सामा
यक करवाथी एवा परिणाम थायठे तो एएण का
रणेणंके० एकहुंजेकारण ते कारणे करी बहुसो
सामाइअंकुळाके० घणा सामायक करियें ॥ १ ॥

१ सामाइके० सामायक अने पोसहके० पो
सह तेनेविषे संतिअके० रह्यो थको जीवस्सके०
जीवनो जाईजोकालोके० जे कालजायठे सोसफ
लोके० तेकालने सफल बोधवोके० जाणवो अ
ने सामायक तथा पोसहविना शेष जे कालठे ते
संसार फलहेऊके० संसारना फलनो हेतु जणवो
॥ ३ ॥ ए गाथा उपर मूलपाठमां नाखी नथी.

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्य वंदन. ॥

इडाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवं
दन करूं, इहं ॥ जग चिंतामणि ज
गनाह ॥ जग गुरू जगरक्षण ॥
जग बंधवजग सबवाह ॥ जगजाव
विअरक्षण॥अधावय संघविअरूवा॥

कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपिजिण
वर जयंतु ॥ अप्पदिहय सासाणं॥१॥

अर्थः— हेवीतराग तमे जगचिंतामणिके०
त्रणजगतमां चिंतामणि रत्न समानढो एटढे चिं
तामणि जेम मनोवांढित पूरणकरेढे तेम तमेप
ण आश्रित प्राणिउनी सर्ववांढा पूरणकरोढो व
ली जगनाहके० त्रण जगतना नाथढो जगगुरु
के० त्रण जगतना गुरुढो जगरस्कणके० त्रणज
गतनी रक्षाना करनारढो जगबंधवके० जगतमां
बांधव (जाई) समानढो, जगसञ्जवाह के० जग
तमां सार्थवाह समानढो. जेम सार्थवाह थकी
विकट अटवीनो पारपामिये तेम जगवंतथी सं
साररूप विकट अटवीनो पारपमायढे माटे, व
ली जगजावके० जगतनापदार्थ जाणवाने विअ
स्कणके० विचह्णढो अछावयके० अष्टापद पर्व
तनेविषे संठविअके० स्थाप्याढे रूवके० रूप जे
मना कम्मठके० आठकर्मना विणासणके० विना

सना करनारठो एहवा चउवीसंपिके० चोवीसजि
नवर ते जयंतुके० जयवंता वर्त्तो जेनो अपमिहय
सासणके० अप्रतिहतशासन एटले कोईथी जी
त्युं जायनही एवो सासन ठे. ॥ १ ॥

कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं ॥ पढम
संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय ॥
जिणवराण विहरंतलप्रइ ॥ नव
कोडिहिं केवल्लिण ॥ कोडिसहस्स
नव साहुगम्मई ॥ संपइ जिणवर
वीसमुणि ॥ बिहुकोडिहिं वरनाण ॥
समणह कोडि सहसइअ ॥ थुणि
जिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥

अर्थः— कम्मजूमिहिंके० ज्यां असी मसीने कसी
एत्रणेकरीआजीविकाचाले तेने कर्मजूमिका कहियें
एवा जरतादिक पन्नर क्षेत्रनेविषे पढमसंघयिणके०
पहेला वज्ररुषननाराच संघयणवाला उक्कोसय

के० उत्कष्टेकालें सत्तरिके० सीतेर अने सयके०
 एकशो एम एकशोने सीतेर जिणवराणके० जि
 नवर ते तीर्थकर विहरंतलप्पइ के० विचरतालाजे
 एटले विचरता होय ते श्रीअजितनाथनेवारें एट
 ला लाजे वली नवकोडीहिंकेवलीणके० नवक्रोड
 केवली जगवान होय अने कोडिसहस्सनवसाधु
 गम्मइ के० नवहजारक्रोडसाधु होय अने संपइ
 के० हमणा सांप्रतकाले जिणवरवीसमुणिके०
 बीस तीर्थकर विचरता पामियें वली बिहुकोडि
 हिंवरनाणके० बे क्रोड वरप्रधान केवलज्ञानना
 धरनार पामियें तथा समणा के० श्रमण ते सा
 धु मुनिराज कोमीसहस्सडुअ के० बे हजार क्रो
 ढपामियें तेमने शुणिके० स्तवियें निच्चके० नि
 त्यप्रतेविहाणके० प्रजातसमय निरंतरस्तविये॥१॥

जयउ सामीअ जयउ सामीअ ॥ रि
 सह सत्तुंजि उज्जित पढु नेमिजिण॥
 जयउ वीर सच्चउरि मंढण ॥ नरुअ

ङ्हिं मुणिसुवय ॥ मुहरिपास ड्ह
 डुरिअ खंमण ॥ अवर विदेहिं तिह
 यरा॥चिहुं दिसि विदिसि जिंकेवि॥ती
 आणागय संपइअ॥वंडुजिण सवेवि॥३॥

अर्थः—जयउंसामीअ जयउंसामीअके० जयवं
 तावत्तो जयवंतावत्तो स्वामि रिसहसेतुंजिके० श्री
 रुषनदेव ते शत्रुंजय तीर्थनेविषे वली उज्झितके०
 गिरनारपर्वतनेविषे पट्टुके० प्रभु नेमिजिणके० श्रीने
 मिजिनेश्वरस्वामि ते जयवंतावत्तो तथा जयउं
 के० जयवंताप्रवत्तो वीरके० श्रीमहावीरपरमेश्व
 र ते सञ्चउरके० श्रीसाचोरनगरने विषे मंमणके०
 आचरणरूप वली नरूअङ्गहिंके० श्री नरूचन
 गरने विषे मुणिसुवयके० मुनिसुव्रतस्वामि मधुरिपा
 सके० श्रीमधुरिनगरनेविषे श्रीपार्श्वनाथस्वामि ते
 ड्हडुरिअखंमण के० डुखडुरितना खंमन करना
 रढे. अवरविदेहिंके० बीजा महाविदेहने विषे जे ति
 ड्यराके० तीर्थकर ठे ते तथा चिहुंदिसिके० पू

र्व, पश्चिम, उत्तर, ने दक्षिण ए चार दिसानेविषे अ
 ने विदिसिके० अग्निकुण, नैऋतकुण, वायुकुण,
 ने ईशानकुण ए चारविदिसि नेविषे जंकेविके० जे
 कोई तीर्थंकरठे तीआणागय संपइअके० अतीत
 अनागत, ने वर्त्तमान कालना जे तीर्थंकर ते वं
 डुजिण सवेविके० ते सर्वजिनप्रते वांडुबुं ॥ ३ ॥

सत्तावणइ सहस्सा ॥ लस्का ढप्पन्न

अठकोडीउ ॥ बत्तीसय बासिआइं ॥

तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥

अर्थः—हवे निरंतर स्मरणनिमित्ते सास्वता जिन
 प्रासादनी संख्या कहे ठे सत्ताणवइसहस्स के० स
 ताणुहजार अने लस्काढप्पन्नके० ढप्पन्नलाख त
 था अठकोडीउके० आठकोड बत्तीसयबासिआ
 इंके० बत्तीसशे ने व्यासी एटला तिअलोएके०
 त्रणलोकनेविषे चेइएवंदेके० चैत्यठे तेने वांडुबुं ॥४

पनरस कोडि सयाइं ॥ कोडीबाया

ल लस्क अडवन्ना ॥ ठत्तीस सह

रुस असिइ ॥ सासय बिंबाइं पण
मामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

अर्थ:-ए प्रासादोनेविषे एकंदर प्रतिमानी संख्या
कहेते. पनरसकोडिसयाइंके० पन्नरशेकोड वली
कोडी बायालके० बेतालीश कोडउपर तथा लस्क
अमवन्नाके० अछावन्नलाख अने ठत्तीससहस्रके०
ठत्रीस हजार ने असिइके० ऐसी एटला सास
यबिंबाइंके० साश्वता जिनबिंबने पणमामिके०
हुंप्रणमुहुं, इतिचैत्यवंदन समाप्तः

॥ अथ जंकिंचि. ॥

जंकिंचि नाम तिहुं ॥ सग्गे पाया
ले माणुसेलोए ॥ जाइं जिणबिंबा
इं ॥ ताइं सवाइं वंदामि॥१॥इति ॥१२॥

अर्थ:-जंकिंचिनामतिहुंके० जेकोई नामेकरी
तीर्थते सग्गेके० स्वर्गनेविषे पायालेके० पातालने
विषे माणुसेलोएके० मनुष्यलोकनेविषे जाइं जिन

(७९)

बिंबाङ्के० जेकाई जिन तीर्थकरना बिंबणे ताई
सवाई वंदामिके० ते सर्व बिंबने हुंवांडुं. इति

॥ अथ नमुबुणं वा सकस्तव ॥

नमुबुणं, अरिहंताणं, जगवंताणं,
आईगराणं, तिष्ठयराणं, सयं सं
बुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहा
णं, पुरिसवरपुंढरीआणं, पुरिसवर
गंधहवीणं, लोगुत्तमाणं, लोग ना
हाणं, लोग हिआणं, लोग पई
वाणं, लोग पज्जोअ गराणं, अ
जय दयाणं, चखुदयाणं, मग्ग
दयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं,
धम्म दयाणं, धम्मदेसयाणं, ध
म्म नायग्गाणं, धम्म सारहीणं,
धम्म वर चानुरंत चक्कवट्टीणं, अ

(८०)

पडिह्य वर नाणं, दंसण धरा
णं, विअट्ट उमाणं, जिणाणं जा
वयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं
बोद्धयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, स
वन्नूणं, सब दरसिणं, सिव मय
ल मरुअ मणंत मस्कय मवावा
ह, मपुणराविति सिद्धिगई, नाम
धेयं, ठाणंसं पत्ताणं नमो जिणा
णं, जिय नयाणं, जेअ अईआ
सिद्धा ॥ जेअ नविस्संत णागए
काले ॥ संपइअ वट्टमाणा ॥ स
वे तिविहेण वंदामि॥१॥इति॥१३॥

अर्थः—नमुत्तुणंके० नमोस्तु नमस्कारहो अरिहं
ताणंके० आठकर्मरूपवैरीनेहएया तेअरिहंतने तथा
अरहंताणंके० चोशठ इंडनी करेली पूजाने योग्य
तथा अरुहंताणंके० फरी संसारमां अबतरबुंनथी

ઈહાં એંકારબે તે પદના અલંકારનેઅર્થે બે. અલંકારેકરી જેમ સ્ત્રી શોને તેમ એંકારેકરી પદ શોને બે. જગવંતાણંકે૦ જ્ઞાનવંત તેને નમસ્કારકરીને અરિહંતની સ્તુતિકરશે. એમ એમાં વિવેકીને સ્તવ વાયોગ્ય અરિહંતકહ્યા તેમાટે એ બે પદની પ્રથમ સ્તોતવ્ય સંપદા જાણવી.

આડગરાણંકે૦ ધર્મની આદિના કરનાર શ્રુત ધર્મ ને ચારિત્ર ધર્મના દાતારબે, તિલ્લયરાણંકે૦ ચતુર્વિધસંઘરૂપ તીર્થનાકરનારબે. સયંસબુદ્ધાણંકે૦ સ્વમેવ પોતાનીમેલે પ્રતિબોધપામ્યા. ઈહાં ધર્મની આદિના કરનાર તે સામાન્યે કહ્યા. એ ત્રણ પદની ઉઘહેતુ સંપદા બીજી જાણવી.

પુરિસુત્તમાણંકે૦ પુરુષમાંહે ઉત્તમબે વલી સિંહજેમ હસ્તિનો મર્દનકરેબે તેમ જગવંત પરદર્શનરૂપ વાદીના મદરૂપ હસ્તિનું મર્દનકરેબે માટે પુરિસસીદ્ધાણંકે૦ પુરુષમાંહે સિંહસમાન કહ્યાબે. પુરિસવરપુંમરિયાણંકે૦ પુરુષમાંહે વરપ્રધાન પુંમરિક કમલ સમાન બે કેમકે માતાનુરુધિર

ને પિતાનુંવીર્ય એને કામરૂપ કાદવકહિયે તેમાં પરમેશ્વર આવી ઉત્પન્ન થયા અને પાચેંડિયના નો ગરૂપ પાણિયેકરી વૃદ્ધિપામ્યા ઠતાં પણ તે કામરૂપ કાદવથી કમલનીપેરે વેગજારહ્યા માટે. વલી પુરિ સ વરગંધહૃત્તીણંકે૦ પુરુષમાંહે પ્રધાન ગંધહસ્તિસ માનહે. જેમ ગંધહસ્તિ મદના ગંધેકરી બીજા હસ્તિ ના મદ ગલીજાયહે તેમ પરમેશ્વર સાતર્થિતરૂપ હ સ્તિના ઉપડવ રૂપ મદને ગલીજાયહે. ફંહાં પુરિસુ ત્તમાણં ઇત્યાદિકમાં પુરુષમાંહે ઉત્તમહે એમકહ્યું તેમાટે એ ઇતર હેતુ ચારપદનીત્રીજીસંપદાજાણવી.

લોગુત્તમાણંકે૦ સમસ્ત લોકમાંહે ઉત્તમહે. અ ને જ્ઞાનાદિકગુણ અણપામ્યાને પમાડે અને જે જ્ય જીવો જ્ઞાનાદિક ગુણને પામ્યાહોય તેની રક્ષા કરે, માટે લોકનાહાણંકે૦ લોકના નાથહે. ઇચ્છ થકી ઇહલોકની સંપદાઆપે અને જાવથકી પરલો કનાં સુખઆપે; માટે લોગહિયાણંકે૦ લોકનાહિત ના કરનારહે. જ્યજીવોના સમૂહને મિથ્યાત્વરૂપ અંધકારના ટાલવાથી લોગપર્શવાણંકે૦ લોકપ્રતે

दीपक समानढे. नव्यजीवोना समूहनेविषे जगवं
त सूर्यनीपरे उद्योतना करनारढे जेम सूर्य सर्वव
स्तुनो प्रकाशकरेढे तेम जगवंत जीवाजीवादि प
दार्थना प्रकाशकरनार होवार्थी लोगपङ्कोयगराणं
के० लोकनेविषे प्रद्योत एटले विशेष प्रकाशना कर
नारढे. ईहां लोगुत्तमाणं इत्यादिकेकरी लोकमां उत्त
मकह्या. ए पांचपदेकरी चौथी विशेषहेतु संपदा:

जगवंतना दर्शनथी नव्यजीवोने संसारमां
जमवारूप जयनो नाशथाय, माटे सर्वजीवोने अ
जयदयाणंके० अजयदानना देवावाला जाणवा.
जेम आंखनेविषे आवेला पमलोने वैद्य औषध
लगाडी साजां करेढे, तेम जगवंत नव्यजीवोना
मिथ्यात्वरूप पमलो उतारी सम्यक्त्वरूप चहु
नी प्राप्तिकरी देखताकरेढे. माटे चक्रुदयाणंके०
ज्ञानरूप चहुना दातारढे. जेम नूलापडेला वटे
मार्गुनुं धन चोर लोकोये लुंटीने तेने उन्मार्गे पा
ड्यो होय, तेने कोई सत्पुरुष वस्त्र धन प्रमुख आपी
खरो मार्गदेखाडी तेना स्थानके पहोचाडे. तेम

जगवंत मिथ्यात्व कथारूप चोरोथी लुटायलाज नोने कुमार्गथी मूकावी झानादिक रत्नत्रयरूप ल द्द्रीआपी मोक्षमार्ग देखाडेढे माटे मग्गदयाणंके० मोक्षमार्गना दातारढे. जेम वयरीथी बीकपामेला पुरुषने कोई उत्तम पुरुष शरण राखे, तेम दुर्ग तीथी बीकपामेला पुरुषने जगवंत शरणना देवा वाला ढे ; माटे सरणदयाणं कहिये. बोधबीज रूप सम्यक्त्वना दातारढे ; माटे बोहिदयाणंके हिये ईहां अजयदयाणं इत्यादिकमां जे वस्तु कहिढे तेना दातारढे ते माटे ए पांच पदनी तढे तु संपदा पांचमी जाणवी.

धम्मदयाणंके० चारित्ररूप धर्मना आपनारढे. धम्मदेसिआणंके० सर्वविरति देशविरतिरूप धर्म ना उपदेशकढे. धम्मनायगाणंके० चतुर्विध संघ ना प्रवर्त्तावनार माटे धर्मना नायक ढे. धम्मसार हीणंके० धर्मरूप रथना सारथीढे. केमके जे धर्मथी चूके तेने पाठा मेघकुमारनीपेरे धर्ममांस्थिर करे, माटे सारथीढे. धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं

के० धर्मेनेविषे वरप्रधान ठे. चाउरंत एटले चारग तीना अंतनुंकरनार एवुं जे धर्मरूप चक्र तेणेकरि धर्मेनी आज्ञा प्रवर्त्तविनारठे, अथवा धर्मेने विषे प्रधान चारगतिना अंतनो करनार चक्रवर्त्ति समानठे. इहां धम्मदयाणं इत्यादिकमां धर्मेना देवावाला एम विशेषउपयोग कह्युं तेमाटे ए पां चपदनी सविशेष उपयोग नामा ठवी संपदाथइ.

अप्पडिहयवरनाणदंसणाधराणं के० अप्रति हत वरप्रधान ज्ञान दर्शन एटले पर्वतादिके करि नेद्योजाय नही, लोकालोकसुधी विस्तारने पा मे, एवुंवरप्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शन ना धरनारठे. विअट्टठउमाणंके० व्यावृत्त एटले गयाठे ठद्वके० घनघातीआंकर्म तथा कामक्रोधादिक ठ अंतरंग वयरी जेना. इहां अप्पडिहयवरनाणं इत्यादिकमां अस्खलित प्रधान केवल ज्ञान तथा केवल दर्शनना धरनार कह्या तेमाटे ए बे पदनी स्वरूप हेतुनामे सातमी संपदा थई.

जिणाणंके० पोते रागद्वेषथी रहित जिन थ

યાટે, તથા જવ્યજીવોના રાગદેપરૂપ વયરીને
 ઝીપાવે, માટે જાવયાણં કહિયે. તિન્નાણંકે ૦ પો
 તે સંસારસમુદ્ધ ચકી તસ્યા અને બીજાને તારયા
 ણંકે ૦ સંસારસમુદ્ધ ચકી તારવાને સમર્થઢે. બુદ્ધાણં
 કે ૦ સર્વતત્ત્વના પોતે જાણથયા અને બોદ્યાણંકે ૦
 પરને તત્ત્વ સમજાવવાને સમર્થઢે મુત્તાણંકે ૦ પોતે
 આઠકર્મરૂપ બંધનથી મૂકાણા અને બીજા જવ્ય
 જીવોને મોયગાણંકે ૦ આઠકર્મરૂપ શત્રુથી મૂકાવ
 વાને સમર્થઢે. ઇહાં જિણાણં ઇત્યાદિકમાં બીજાને
 પોતા સરસા ફલના આપનાર કહ્યા, તેમાટે એ
 સ્વતુલ્ય ફલકારી ચારપદની આઠમી સંપદા થઈ.

સવન્નૂણંકે ૦ લોકાલોક સર્વને કેવલ જ્ઞાનેક
 રી જાણે. સવદરિસીણંકે ૦ સમસ્ત વસ્તુઝનું સામાન્ય
 સ્વરૂપ કેવલદર્શનેકરી દેસે. સિવકે ૦ ઉપદ્વરહિત.
 મયલકે ૦ અચલ એટલેજેને ચલાયમાન થવું નથી. મ
 રુચકે ૦ અરુજ, રોગરહિત. મણંતકે ૦ અનંતજ્ઞાનદર્શ
 ન સુખ વીર્ય સહિત. મસ્કયકે ૦ અદ્વય. એટલેજેનો
 દ્વય નથી. મવાબાહ કે ૦ અવ્યાબાધ. બાધાપીડા

रहित, मपुणरावित्तिके० अपुनरावर्त्ति एटले ज्यां
 थकी फरी आवुंनथी. ए साते गुणोकरि सिद्धि
 गइनामधेयंके० सिद्धगति एवुंठे नामजेहनूं. वा
 एंसंपत्ताणंक० एवा स्थानकने संप्राप्त थयाठे
 एटले मोहूनगरे पहाँच्याठे. एमोजिणाणं के०
 एवा जिनेश्वरने महारो नमस्कार होजो. जियन
 याणं के० १ इहलोकजय ते मनुष्यने मनुष्यनो
 जय. २ परलोकजयते मनुष्यने देवतादिकनोजय.
 ३ आदान जयते रखेने महारूकोई लेईले. ४ आ
 जीविकाजय ते रखेने महारी आजीविका हणाइ
 जाय. ५ अकस्मात् जयते नीतिप्रमुख पड्याने
 शब्दे बीक राखे. ६ मरणजयते रखेने मुऊने म
 रणआवे ७ अपयशजय ए सातजय जेणे जी
 त्याठे. इहां सबन्नूणं इत्यादिके करी मोहूमां
 तेवुं स्वरूपठे एम कहुं ए त्रणपदे करी मोहू सि
 द्धावस्था नामे नवमी संपदा थई.

हवे त्रिकालवर्त्ति देव वांदवाने पूर्वाचार्य कृ
 त गाथा कहेठे जेअथइथासिद्धाके० जे अतीत

કાલે તીર્થંકર થઈ સિદ્ધપર્યાયપણુ પામ્યા. જે અ
 નવિસ્સંતણાગેકાલેકે० જે અનાગતકાલે તી
 ર્થંકર પર્યાય પામી સિદ્ધપણુ પામશે અને સંપદ
 અવટ્ટમાણા કે० સંપ્રતિ તે હમણાં વર્તમાનકાલે
 જે સિદ્ધથાય છે. એટલે વર્તમાને જે મહાવિદેહમાં
 ઘડ્ઘસ્થપણે વિચરે છે તે. સર્વેકે० સર્વતીર્થંકર પ્ર
 તે, તિવિદેહકે० મન વચન ને કાયા એ ત્રિવિધે
 કરી વંદામિકે० હું વાંડુબું એસર્વમંત્રી સંપદાનવ
 થઈ. ગાથા એક. પદ તેત્રીસ. ગુરુઅક્ષર ૩૩ લઘુ
 અક્ષર ૨૬૪ સર્વાક્ષર ૨૯૭ इति शक्रस्तवसमाप्तः

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

जावंति चेइआइं ॥ नुहुँअ अहेअ

तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे॥

इहसंतो तव संताइं ॥१॥ इति॥१४॥

અર્થ:- જાવંતિકે० જેટલા ચેઈઆઈંકે० ચૈ
 ત્ય અને પ્રતિમાઠે, તેમ્યાંઠે નુહુંઅકે० નુહુંલોક
 નેવિષે, અહેઅકે० અધોલોકનેવિષે, અને તિરિઅ

(૬૯)

જોઈએકે ॥ તિહીલોકનેવિષે, એ ત્રણ લોકમાં જે
જિનચૈત્યઢે, સઘાઈતાઈ વંદેકે ॥ તે સર્વને હું વાંહુ
હું. હહસંતોકે ॥ હું હહાં રહ્યો થકો પણ તહસંતાઈ
કે ॥ તીર્થકરોનાચૈત્ય ત્યારહ્યાથકા ઢે તો પણ તે
પ્રત્યે હું વાંહુહું. પઠી હહામિશ્વમાસમણો કહી:

॥ અથ જાવંતિ કેવિસાહુ ॥

જાવંત કેવિ સાહુ ॥ જરહેરવય મ

હાવિદેહેઅ ॥ સઘેસિ તેસિ પણતી ॥

તિવિહેણ તિદંઢ વિરયાણં ॥૧॥ઈતિ ॥૧૫

અર્થ:- જાવંતકેવિસાહુકે ॥ જે કોઈ સાધુ
શુદ્ધ ચારિત્રના પાલનાર, ચારિત્રના સ્વપકરનાર,
જરહેરવયમહાવિદેહેઅકે ॥ પાંચ જરત, પાંચ ઐર
વત, પાંચ મહાવિદેહ એ પન્નરકર્મ જૂમિનેવિષે
ઢે. સઘેસિતેસિકે ॥ તે સર્વ સાધુને હું, પણતીકે ॥
પ્રણમુહું, નમસ્કાર કરુહું, તિવિહેણકે ॥ મનવચન
અનેકાયાયેકરી નમસ્કારકરુહું, અથવા તેસાધુ ક
હેવાઢે કે મન વચન અને કાયાયેકરીને જે તિ

(९०)

दंढविरयाणंके० मनोदंढ, वचनदंढ अने कायदं
ढ ए त्रण दंढथी विरम्याढे. इति ॥ १ ॥

॥ अथ नमस्कार. ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु
न्यः ॥ इति ॥ १६ ॥ अर्थसुगमढे

॥ अथउपसर्ग हर स्तवन. ॥

उवसग्ग हरं पासं ॥ पासं वंदामि
कम्म घण मुक्कं ॥ विसहर विस नि

न्नासं ॥ मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥

अर्थः— उवसग्गहरंपासंके० जेना शासनने
विषे उपसर्गनो हरनार पार्श्वनामा यद्धढे एहवां
पासंवंदामिके० श्री पार्श्वनाथस्वामिने हुं वांडुं. प
ण ते श्री पार्श्वनाथ कहेवाढे कम्मगणमुक्कंके०
आठकर्मना गण जे समूह, तेथकी मूकाणाढे, मुक्त
थयाढे, वली विसहरविसके० विषधरजे सर्प एट
ले इव्ययकी तिर्यंच जातिनो सर्प अने जावथ

(९१)

की। मिथ्यात्वरूपसर्प तेनुं जे विष तेने, निन्नासं
के० नाशना करनारहे. वली मंगलके० वर्त्तमान
सुख अने कछ्वाणके० परंपराये जे स्वर्गमोक्षादि
सुख तेना आवासंके० स्थानकरूपहे. ॥ १ ॥

विसहर फुलिंग मंतं ॥ कंठे धारेइ
जो सया मणुठे ॥ तस्स गह रोगमा
री ॥ दुष्ट जरा जंति उवसामं ॥२॥

अर्थः—विसहरफुलिंगमंतंके० विषधर स्फुलिंग
नामेमंत्र जे एजस्तोत्रमांथीनिकलेहे, ते मंत्रने कंठे
धारईजो सयामणुठेके० जे मनुष्य सदैव कंठने
विषे धारणकरे, तस्सगहके० ते मनुष्यना ग्रहने
विषे रोगमारीके० अनेकजातना रोग अने मर
कीनाविकार तथा दुष्टजराके० दुष्ट एवीजे जराव
स्था ते जंतिके० जाय नाशपामे, उवसामंके०
उपशांत आय. ॥ २ ॥

(૯૨)

ચિઠ્ઠ દૂરે મંતો ॥ તુપ્રપ્પણામો વિ બ .
હુ ફલોહોફ ॥ નરતિરિણ્ણુવિ જી
વા ॥ પાવંતિ ન હુસ્કદો ગચ્છં ॥ ૩ ॥

અર્થ:—ચિઠ્ઠ હુરેમંતોકે ૦ તે પાઠજી ગાથામાં
કહ્યોજે મંત્ર તેતો ચિઠ્ઠ એટલેતિષ્ટતુરહોદૂરે અથવા
વેગલો રહ્યો, પણ તુપ્રપ્પણામોવિકે ૦ તુજને પ્રણા
મજે નમસ્કાર કરવો તેથી પણ બહુફલોહોફકે ૦
ઘણાં એવાંજે મોક્ષ પ્રમુખનાં ફલ તેનો દેનાર
હોયઠે. નરતિરિણ્ણુવિજીવાકે ૦ નરતે મનુષ્યનેવિ
ષે તથા તીર્થચનેવિષેપણ જીવા જે જીવ તે પાવં
તિ ન હુસ્કદોગચ્છંકે ૦ હુઃસ્વ તે રોગનાં તથા વદ્ધ
જના વિયોગનાં ઈત્યાદિક હુઃસ્વ જાણવાં. અને
દોગચ્છં તે દારિદ્ર્યપણુ તે નપાવંતિ એટલે નપામે.

તુહ સમ્મત્તે લદ્ધે ॥ ચિંતામણિકપ્પ
પાયવપ્પહિણ્ણુ ॥ પાવંતિ અવિગ્ધેણાં ॥
જીવા અયરામરં ઠાણં ॥ ૪ ॥

અર્થ:—તુહકે ૦ તાહરા ધર્મની જે આસ્થા તેને સ

(९३)

म्मत्तेके० सम्यक्त्व कहिये. ते लदेके० पामे थके ते
ताहरू सम्यक्त केवुंछे चिंतामणिकप्पपायवप्प
हिये के० चिंतामणिरत्न अने कल्पपाद ते कल्प
वृक्ष तेथकी पण अधिकछे, एथी पावंतिके० पामे
अविग्घेणंके० विघ्नरहितपणु ते जीवाके० नव्य
जीव अयरामरंताणंके० अजरामर स्थानक जे
मोक्ष स्थानक ते प्रतेपामेछे. ॥ ४ ॥

इअ संश्रुतं महायस ॥ नत्तिप्रर नि
प्ररेण हिअएण ॥ ता देवदिऊबोहिं ॥
नवे नवे पास जिणचंद ॥ १७ ॥

अर्थ:-इअके० एरीते संश्रुअके० संस्तव्यो, महा
यसके० त्रण जगतमां व्याप्त एवा महोटा यशनो
धणी एवो जे श्री पार्श्वनाथ नगवंत ते प्रते केवी
रीते स्तव्यो ते कहेछे:- नत्तिनरके० नत्तिनो
नरजे समुदाय तेणेकरी निप्ररेणके० पूरीत
एटले परिपूर्ण नशुं एवोजे हिअएणके० रुद
य तेणेकरी स्तव्यो तादेवके० तेमाटे हे देव हे

नगवंत, दिक्क बोहिके० यो मुऊने, बोधबीज एट
ले धर्मनुं पामबुं ते, नवेनवेके० नवनवनेविषे
यो, पासजिएचंदके० हे पार्श्वनाथ तमे केवा ठो?
सामान्य केवलीउमा चंडमासमानठो. ॥ ५ ॥ इ
ति श्री नडबाहु स्वामिविरचितां उपसर्ग हरस्तो
त्रंसमाप्तं. एमांपदवीस, संपदावीस, गुरुअक्षरवीस,
लघुअक्षर एकसोपांसठ सर्वाक्षर १०५, ठे.

॥ अथ जयविअराय. ॥

जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं
तुहप्यजावउं जयवं ॥ नवतिव्वेउ मग्ग
णु॥ सा रिअ ५४ फलसिद्धी ॥ १ ॥

अर्थः— जयके० जयवंतावर्त्ता वीअरायके०
श्रीवीतराग राग वेषरहित. जगगुरुके० त्रणजगत
ना गुरु. ए नगवंतने आशीयदीधी. हवे पोताना
मननो अजिप्राय कहेठे. होउममंके० होजोमु
जने तुहप्यजावउंके० तहाराप्रजावथी जयवंके०
हेनगवनू नवनिव्वेउंके० नवनोनिर्वेद एटले नव

रूप बंदीखानाथी विरक्तपणु मग्गाणुसारियाके०
कदाग्रहनो त्यागकरी ताहरा मार्गने अनुसारे
चालवुं. तथा इष्टफलसिद्धिके० इष्टफल वांछितफ
लनी सिद्धि एटले प्राप्तिथाउं. ॥ १ ॥

लोगविरुद्धचाउं ॥ गुरुजणपूआ
परहकरणंच ॥ सहगुरुजोगातव
य॥एण सेवणा आजव मखंमा ॥१॥

अर्थ:-लोगविरुद्धके० लोकविरुद्ध कर्त्तव्य एवी
जे परनिंदा, चोरी, परस्त्रीगमनादिक तेनो चाउंके०
त्याग एटले ठामवुंथाओ, वली गुरुजणपूआके० मा
तापिता तथा धर्मना दातारजे सजुरु तेमनी पूजा
नक्तिकरवी अने परहकरणंचके० परोपकारकरवो
तथा परना अर्थनुंकरवुं सहगुरुजोगोके० सजुरु जे
शुद्धपरूपक कालानुसारे शुद्धक्रियाना खपकरना
रा गुरु तेनो जोग एटले समागम. थाउं अने तव्वय
एसेवा० तेज रुडागुरुना वचननी सेवा एटलांवा
नां ते आजवमखंमाके० आ नवजे संसार एटले

(६६)

संसारावस्थालगे ज्यांसुधी संसारमां रहुं त्यांसुधी
मुऊने अखंम परिपूर्णहोजो. ॥ १ ॥ ए प्रणिधा
न मननी समाधिनी याचनाकरी. ए बे गाथा ग
एधरजीनी करेलीढे. हवे आगली त्रणगाथा पूर्वा
चार्यकृतढे. तेनो अर्थ लखियेढैये.

वारिऊइ जइवि नि, आण बंधणं वी
अराय तुह समए ॥ तहवि ममहुऊ
सेवा ॥ नवे नवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥

अर्थ:- वारिऊइके० वाच्योढे एटले निवारणक
खोढे जइविके० यद्यपि नियाणानुं बांधवुं वीयर
यके० हे वीतराग तुहसमएके० ताहारा सिद्धांतने
विषे एटले हे वीतराग तारा सिद्धांतोमां नियाणनो
बांधवो निषेध्युंढे तहविके० तथापि एटले तोपण
एटलुं मांगुबुं के ममके० मुऊने हुऊसेवाके०
होजो सेवा नवेनवेके० नवनवनेविषे तुम्हचल
णाणंके० तमारा चरणकमलनी सेवा ते मने
नवनवमां होजो एटलुं मांगुबुं. ॥ ३ ॥

(९७)

दुःखखण्डे कम्मखण्डे ॥ समाहि मर
एंच बोहिलानोअ ॥ संपज्जणं मह
एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥४॥

अर्थ:-दुःखखण्डके० मननांदुःख तथा शरीरसंबं
धी जे संसारादिक दुःख तेनो ह्य, कम्मखण्डके०
अगुणकर्मनोह्य, समाहिमरणंचके० समाधिम
रण, बोहिलानोअके० बोधबीजनो लान. ते न
वांतरे जिनधर्मनी प्राप्तिनुं थावुं ते संपज्जणंके०
संपजो प्राप्त थाउं. महके० मुज्जे एअंके ए पाठ
ल कह्याजे बोल ते, तुहके० तुजने नाहके० हेना
अ, पणामकरणेणंके० प्रणामकरवेकरीने. ॥ ४ ॥

सर्व मंगल मांगल्यं ॥ सर्व कल्या
ण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां ॥
जैनं जयति शासनं ॥५॥इति॥१८॥

अर्थ:-ह्वेजिनशासने मंगलिकनेअर्थे संस्कृत
श्लोकेकरी आशीर्वाद आपेठे.सर्वमंगलमांगल्यंके०
सर्वमंगलिकमां उत्कृष्टमंगलिक अने सर्व कल्याण

(९८)

नुं कारणढे, अने जेमां जीवदयानी मुख्यताढे.
माटे सर्वधर्मोमां प्रधानढे एवं जिनेश्वरनुं शासन
जयवन्ते वर्त्तो॥५॥ एमां पद सोल श्लोक एक गुरुअ
द्दर बावीस लघु अद्दर १४० सर्वाद्दर १६३.

॥ अथ अरिहंत चेइआणं. ॥

अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि कानुस्स
ग्गं ॥ १ ॥ वंदण वत्तिआए ॥ पूअ
ए वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए ॥
सम्माण वत्तिआए ॥ बोहिलान व
त्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए ॥
सद्धाए, मेहाए, धिईए ॥ धारणाए,
अणुप्पेहाए ॥ वडुमाणीए, ठामि का
नुस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥ १९ ॥ अन्नवण ॥

अर्थः—अरिहंत चेइआणंके० श्री अरिहंत ती
र्थकरना जे चैत्य प्रतिमा ढे. ते निमित्ते, करेमि
कानुस्सग्गंके० हुंकाऊसग्ग करुंहुं, ते वास्ते तेना

(૬૬)

કારણ કહેહે. ફેંદાં અરિહંત ચૈત્યવાંદવા નિમિત્ત
કાકસગ્ગ કરજો. તે માટે અન્યુપગમ સંપદા અંગી
કાર સંપદા બે પદની પ્રથમ સંપદાથઈ.

વંદણવત્તિઆએકે૦ મનશુદ્ધે પ્રણામનું કરવું
તે નિમિત્તે એટલે તીર્થીકરના ચૈત્યને વાંદતાં જે ફ
લ હોય તે ફલ કાકસગ્ગ કહ્યાથી થજો. પૂજા
ણવત્તિઆએકે૦ ફૂલચંદનાદિકે કરી પૂજા કહ્યા
થીજેફલ હોય તેને અર્થે, સત્કારવત્તિઆએકે૦ વસ્ત્ર
આનરણાદિકેકરી સત્કાર કરવાથી જે નિર્ક્લરા
થાય તેને અર્થે. સમ્માણવત્તિઆએકે૦ સન્માન તે
સ્તવન સ્તોત્રાદિક ગુણવર્ણવ્યાથી જે ફલ થાય
તેને અર્થે. બોહિલાનવત્તિઆએકે૦ શ્વજવે તથા
પરજવે શ્રી જિનધર્મની પ્રાપ્તિ સુખે થાય તેને અ
ર્થે, નિરુવસગ્ગવત્તિઆએકે૦ જ્યાં જન્મ જરા ને
મરણરૂપ ઉપસર્ગનો નાશ થઈ ગયોહે એવોજે મોક્ષ
તે પામવાને અર્થે કાકસગ્ગ કરું. એમાં વંદણવત્તિઆ
એ ઇત્યાદિક કાકસગ્ગ કરવાના નિમિત્ત કહ્યાં તે
માટે એ બીજી નિમિત્તસંપદા ૪ પદની જાણવી.

હવે કાઝસગ્ગ જે રીતે સફલ થાય તે રીત
 કહેઁ. એ કાઝસગ્ગ હું સદાએકે ० શ્રદ્ધાએકરી
 સહિત જાવે કરું, પણ કોઈના બલાત્કારે ન કરું.
 મેહાએકે ० મેધા તે રુડીબુદ્ધિએકરી જાનાલાન જાણી
 કરું પણ માઠી બુદ્ધિએ નહીં કરું. ધિર્દાએકે ० ધૃતિતે
 મનની સમાધિએકરું પણ રાગ દેષે કરી કરું નહીં,
 ધારણાએકે ० અરિહંતના ગુણ હૃદયમાં ધારણ ક
 રતો ઠતો કાઝસગ્ગ કરું. અણુપ્પેહાએકે ० અરિહં
 તના ગુણ મનને વિષે વારંવાર સંજારતો થકો કા
 ઝસગ્ગ કરું. એમ વડૂમાણીએકે ० એ શ્રદ્ધા, મેધા, સં
 તોષ, ધારણા ને અનુપ્રેક્ષા એ પાંચ બોલ વૃદ્ધિવંત
 થાય એમ જાવની વિશેષે વૃદ્ધિ, કરવાને અર્થે. ા
 મિકાઝસગ્ગકે ० હું કાઝસગ્ગ કરુંબું. ઈહાં શ્રદ્ધાદિક
 પાંચ બોલ વૃદ્ધિવંત થવાને અર્થે કાઝસગ્ગ કરું.
 તે માટે એ સાત પદની હેતુ સંપદા ત્રીજીયઈ. બ
 ધાં મલી પદ ૧૫, સંપદા ૩, ગુરુઅક્ષર ૧૬, લઘુ
 અક્ષર ૭૩, સર્વાક્ષર ૮૯. ઈહાં અનન્ન ઝસસિણં ૬
 ત્યાદિક કેવા તેના અર્થે આગલ કહ્યાઁ. તેની

(१०१)

पांच संपदा एनी साथे मेलवीये त्यारे बधी मली
आठ संपदा थाय,नेतेतालीस पद थाय.गुरुअक्षर
१९ थाय लघुअक्षर १०० थाय.सर्वाक्षर ११९ थाय

॥ अथ कल्याणकंदं स्तुति. ॥

कल्याणकंदं पढमं जिणिंदं ॥ संतिं
तठ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पया
सं सुगुणिक्क ठाणं ॥ नत्तीय वंदे सि
रिवद्धमाणं ॥ १ ॥

अर्थः— कल्याणकंदंके० मंगलिकना कंदरूप
एवा प्रथम जिनेंइ श्रीरुपनदेव प्रत्ये तथा श्रीशां
तिनाथ तउके० तेवारपठी नेमिजिणंद मुनींइ प्र
त्ये वली श्री पार्श्वनाथ ते लोकालोकना पयासंके०
प्रकाशकरनार, तथा सुगुणिक्कठाणंके० नलाज्ञा
नादिक गुणना एक अद्वितीयस्थानकठे. तेप्रत्ये
अने शासनार्धीश्वर श्रीवद्धमान स्वामिप्रत्ये नत्ती
यवंदेके० नक्तियेकरीने वांडुबुं. ॥ १ ॥

अपार संसार समुद्वपारं ॥ पत्ता सि

(१०१)

वं दितु सुष्कसारं ॥ सवे जिणिंदा
सुरविंदवंदा ॥ कल्लाणवल्लीण वि
सालकंदो ॥ १ ॥

अर्थः—हवे समस्त तीर्थ करनी बीजी थोई कहेवे. अ
पारके० नथी जेहनो ठेडो एवोजे संसाररूप समुद्र
तेना पारने पत्ताके० पाम्यावे ते मुऊप्रते सुष्कसारं
के० जलोजे अनुष्ठाननो एक अद्वितीयफलरूप
सिवंके० मोहूवे ते दितुके० यो सवे जिणिंदाके०
हे समस्त जिनेंइो तमे कहेवाओ? सुरविंदवंदाके०
देवताओना वृंद तेने वांदवा योग्यओ. वली कल्या
णरूप वेलीना विसालके० महोटा कंदओ. ॥ १ ॥

निवाणमग्गे वर जाण कणं ॥ पणा
सिया सेसकुवायदणं ॥ मयं जिणा
णं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं ति
जगण्हाणं ॥ ३ ॥

अर्थः—हवे ज्ञान वर्णनरूप त्रीजीथोई कहेवे. जे
निवाणमग्गेके० मोहूमार्ग तेने विषे वरके० प्रधान,

जाणकप्यंके० यान एटले रथ सदसठे अने जे
 एो पणासिया सेस कुवायदप्यं के० अशेष सम
 स्त कुवादिक अन्यदर्शनीनो जे दर्प एटले अहं
 कार तेने पणासिया एटले नाशपमाडयोठे. एवो
 मयंके० ए श्रीसिद्धांत ते जिणाणंके० जिनश्रीवीत
 रागनो जापेलो ते सरणं बुहाणंके० पंढितोप्रत्ये आ
 धारनूत अने तिजगके० त्रणजगत ने विषे पहाणं
 के० प्रधान एवुजे ज्ञान तेने हुं निच्चंके० नित्यप्र
 त्ये सदैव नमामिके० नमस्कार करुबुं. ॥ ३ ॥

कुंदिंडु गोस्कीर तुसार वन्ना ॥ सरो
 ज हत्ता कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी

पुढय वग्गहत्ता ॥ सुहाय सा अ
 म्ह सयापसत्ता ॥ ४ ॥ इति ॥ २० ॥

अर्थः—हवे शासनना अधिष्ठायक देव देवीना व
 र्णननी चोयीयोइकहेठे. कुंदके० मचकुंदनुं फूल, इं
 डुके० चंडमा, गोखीरके० गायनुं डध अने तुसा
 रके० जलबिंडु. एना सरखो जेना स्त्रीरनो व

न्नाके० वर्णते जेना ह्नाके० हाथनेविषे सरोज
 के० कमलते, वली कमलेनिसन्नाके० कमलनेविषे
 बिराजमानते. जेना ह्नाके० हाथते पुढ्यवग्गके०
 पुस्तकेकरीने व्यग्रते एवी वाएसरीके० वागीश्वरी
 नामे देवी ते अम्हके० अमने सुहायके० सुख
 नेअर्थे सयाके० सदासर्वदा पसन्नाके० प्रशस्तते
 प्रधानते. इति पंचतीर्थिनी स्तुति समाप्त. ॥ ४ ॥

॥ अथ संसार दावानी स्तुति. ॥

संसारदावानलदाहनीरं ॥ संमोहधू
 लीहरणे समीरं ॥ मायारसादारणसा
 रसीरं ॥ नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥

अर्थः— संसाररूप दावानल तेमांजे दाहके०
 बलबुं. तेने उपशमाववाने नीरंके० मेघसमान. व
 ली मोह अज्ञानरूप धूलीना समूहने हरणकर
 वाने समीरंके० वायरासमान. वली माया जे कप
 ट तडूप रसाके० पृथ्वी तेने दारणके० विदारवा
 ने सारके० प्रधान. सीरंके० हल समान. एवा श्री

(૧૦૫)

વીરપરમાત્મા તેમને હું નમામિકે૦ નમસ્કારક
રુંબું. તે કેવાઢે ? તો કે ગિરિસારધીરંકે૦ મેરુપર્વત
નીપરે ધીરવંત સાહસીકઢે. ॥૧॥

ઝાવાવનામસુરદાનવમાનવેન ॥
ચૂલાવિલોલકમલાવલિમાલિ
તાનિ ॥ સંપૂરિતાઞ્જિનતલોક
સમીહિતાનિ ॥ કામંનમામિજિ
નરાજપદાનિ તાનિ ॥ ૨ ॥

અર્થ:-ઝાવાકે૦ ઝાવેકરી વનામકે૦ આનમતા એ
ટલે પગેલાગતા જે સુરકે૦ વૈમાનિક અને જ્યોતિ
ષી, તથા દાનવકે૦ પાતાલવાસી સુવનપતિ ત
થા વ્યંતરદેવતા, અને માનવકે૦ મનુષ્ય તેનાજે
ઠાકુર તેના, ચૂલાકે૦ મુકુટના અગ્રનાગ તેનેવિષે
વિલોલકે૦ ચપલ એવાજે કમલકે૦ કમલ તેની
આવલી તે શ્રેણી, તેણેકરી માલિતાનીકે૦ સહિ
ત એવા જગવંતના પદકમલ. વલી તે પદક
મલ કેવાઢે ? સંપૂરિતાકે૦ પૂર્યાઢે અજિનત

એટલે નમ્યાઢે જે જ્યજીવો તેના સમીહિતાની
 કે૦વાંઢિતના દેનાર ઢે. એવા જિનરાજપદાનિતાનિ
 કે૦ જિનરાજના જે પદકમલઢે તેપ્રત્યે કામંકે૦
 અત્યંતપણે નમામિકે૦ નમસ્કારકરુંબું. ॥ ૨ ॥

બોધાગાધં સુપદપદવીનીરપૂરા
 નિરામં ॥ જીવાહિંસાવિરલલહ
 રીસંગમાગાહદેહં॥ચૂલવેલં ગુરુ
 ગમમણીસંકુલં દૂરપારં॥ સારંવી
 રાગમજલનિધિં સાદરં સાધુ સેવે॥૩॥

અર્થ:—હવે આગમને સમુદ્ધની ડપમા આપેઢે.
 બોધકે૦ જ્ઞાનેકરી આગાધંકે૦ ગંજીર ડંઢોઢે. વલીજે
 માં સુપદકે૦ જલાજે પદ તેની પદવીકે૦ શ્રેણી
 તેરૂપ નીરપૂરાનિરામકે૦ પાણીના સમૂહેકરી મ
 નોહરઢે. વલી જીવાહિંસાકે૦ જીવોની અહિંસા
 એટલે જીવોની રક્ષાકરવી તેરૂપ અવિરલલહરી
 કે૦ નિરંતરકલ્પોલ તેનો જે સંગમકે૦ મલબું તેણે
 કરી અગાહદેહંકે૦ અગાધ એટલે મહાગંજીર એ

बुं जेनुं शरीरठे. वली चूलावेलेके० ते सिद्धांतो
 ने विषे जे चूलिकाठे तेरूपणी वेलीठे जेमां. वली
 गुरु के० महोटा एवा गमके० सरखापाठ तेरू
 प जे मणीके० रत्न तेणेकरी संकुलंके० नखोठे.
 तथा दूरपारंके० जेनो कांठो घणो दूरठे. केमके
 समुदनीपरे सिद्धांतोनो पारपामवो महा दूर्लभठे.
 संपूर्ण श्रुतज्ञानी अथवा केवलीजगवानविना बी
 जाथी जेनो पार पमाए नही एवो सारके० प्रधा
 न वीरागमजलनिधिं के० श्रीमहावीरस्वामिनो
 आगम सिद्धांतरूप समुद् तेप्रत्ये सादरंके० आ
 दरसहित साधुके० नलीरीते सेवेके० सेबुं ॥ ३ ॥

आमूलालोलधूलीबहुलपरिम
 लालीढलोलालिमाला ऊंका
 रारावसारामलदलकमलागार
 नूमीनिवासे ॥ गयासंनारसारे
 वरकमलकरेतारहारानिरामे ॥

वाणीसंदोहदेहे नवविरहवरं दे
हि मे देवि सारं ॥४॥ इति ॥२१॥

अर्थः—हवे आमूलाके० मूलजगे मोलतुं अने धू
लिके० परागतेनो जे बहुल परिमल के० घणोज
गंध तेणेकरी आलोढके० आश्रित एवी लोला
लिमालाके० चपल जे आलि एटले चमरनी श्रे
णी, तेना जे जंकारना आरावके० शब्देकरी सार
के० प्रधान एवा अमलके० निर्मल दलके० पां
नडांढे जेहनां एवां जे कमल तेरूप आगारके०
घर तेनी जे जूमि तेमां निवासढे जेनो. वली ठा
याके० शोना तेनो जे संनारके० समूह तेणे
करी सारेके० प्रधानढे वली जे वरके० प्रधान
एवुंजे कमल तेने करेके० हाथनेविषे धखुंढे
वली तारके० मनोहर जे हार तेणेकरी अनिरा
मके० शोनेढे. वली वाणीके० वचन तेना जे सं
दोहके० समूह तेरूपित जेनो देहके० शरीरढे.
एवी हे देविके० सिद्धांतनी अधिष्ठायिका देवि
ते नवविरहके० संसारनो जे वियोग तेने मोह

(१०९)

कहिये. एवो सारंके० प्रधान तेनुं जे वरदान
ते देहिमेके० मुज्जने द्यो. एमां पद शोल संपदा
शोल अद्धर बसेने बावनढे. ॥ ४ ॥

॥ अथ पुस्कर वरदी ॥

पुस्करवरदीवड्डे ॥ धायइ संमेअ

जंबुदीवेअ ॥ जरहे रवय विदेहे ॥

धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

अर्थः—पुस्करवरदीवड्डेके० पुष्करवर अर्द्ध द्वी
पनेविषे धायइसंमेअके० धातकीखंम अने जंबु
दीवेयके० जंबु द्वीपमां जरहेरवय विदेहेके० पांच
जर्त्त पांच ऐरवर्त्त अने पांच महाविदेह एटलानेवि
षे धम्माइगरेके० धर्मनी आदिनाकरनार एवाश्री
तीर्थकरदेव ने नमंसामिके० हुं नमस्कार करुंहुं.

तमतिमिरपद्मलविध्वंसणस्स सुरग

एनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स

वंदे ॥ पप्फोमिअ मोहजालस्स ॥२॥

अर्थः—तमके० अज्ञानरूप जे तिमिरपद्मलके० अं

धकारना समूह तेनो विध्वंसणके० विनाशनो कर
 नार. वली सुरंगणके० देवताना समूह अने नरिं
 दके० राजा तेणे महिअस्सके० पूज्यो. अने सी
 माधरस्सके० सीमा एटले नयनिहेपादिक मर्यादा
 नो धरनार एवो जे सिद्धांत ते प्रत्ये वंदेके० वांडुं.
 ते सिद्धांत केवोढे. पप्फोडियके० फेड्या ठे मोहजा
 लस्सके० मिथ्यात्वरूपीया जाल एटले समूह ॥१॥

जाइजरामरणसोगपणासणस्स ॥

कट्ठाणपुस्कलविसालसुहावहस्स॥

को देव दाणव नरिंद गण च्चि

अस्स ॥ धम्मस्स सार मुवल्ल

करेपमायं ॥ ३ ॥

अर्थः—जाईजरामरणसोगके० जन्म जरा मरण ने
 शोक तेनो पणासणस्सके० नाश करनार. वली
 कट्ठाण एटले मंगलीकनो करनार, अने पुस्क
 लके० संपूर्ण विसालके० विस्तीर्ण सुहके० ए
 वा आनंदरूप मोहसुख तेनो आवहस्सके० कर

(१११)

नारद्वे.वली देवदाणवके० वैमानिक देवो अने पाता
लवासी देवो तथा नरिंदके० राजा तेना गणके०
समूह तेणे अश्विन्यस्सके० अचर्यो, पूज्यो, स्तव्यो ए
वोजे धम्मसके० श्रुतधर्म जे श्री सिद्धांत तेनो सा
रमुवल्लभके० रहस्यपामिने कोके० कोण नव्यजी
व विवेकी पुरुष करेपमायके० प्रमाद करे. ॥३॥

सिद्धे जो पयउ नमो जिणमए नंदी
सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न कि
न्नरगण संपूअ जावच्चिए ॥ लोगो
जठ पइद्धिउ जगमिणं तेलुक्क म
च्चासुरं ॥ धम्मो वड्डुन सासउ विज
यउ धम्मुत्तरं वड्डुन ॥ ४ ॥
सुअस्स जगवउ इति ॥ ११ ॥
करेमि कानुसग्गवंदणवत्तिआए० ॥

अर्थ:-माटे सिद्धेके० प्रतिष्ठावंत एवा सिद्धांतने
विषे जोके० हे, नव्यो तमे पयउके० आदरवंतथ

का नमोके० नमस्कार करो. जिणमएके० जिन जे
 तीर्थकर तेनो प्रकास्यो जे सिद्धांत तेनी नंदि
 के० वृद्धिकरो ते शानेविषे वृद्धिकरो ? तेकहेढे. स
 याके० सदैव निरंतर संजमेके० चारित्रनेविषे
 सिद्धांतनी वृद्धिकरो एमकह्युं. वली सिद्धांत केवो
 ठे जे देवके० वैमानिकदेवता नागके० पाताल
 वासिनागेंड सुवन्नके० जेनो सुवर्णजेवो वर्णठे
 एवा ज्योतषी किन्नरके० व्यंतरविशेष तेना जे
 गणके० समूह तेणे सप्रूयजावके० सद्रूतजावे
 एटले साचाजावेकरीने अश्विणके० अर्च्यो (पूज्यो)
 एवो जे सिद्धांत, लोगोके० लोकालोकनुं त्रिकालवि
 षयि ज्ञान ते जहके० जे सिद्धांतनेविषे पइठिअोके०
 रह्योठे जगमिणंतेलुक्कके० त्रणे जग एटले उर्ध्वलो
 क, अधोलोक, अने तिर्होलोक तथा मच्चासुरके०
 मर्त्य ते मनुष्य, अने असुरते देव, तिर्यच, नारकी
 इत्यादिक सर्व सिद्धांतना बलेकरी जणायठे, एवो
 धम्मो बहुअोके० सिद्धांतरूप धर्म वृद्धिवंत था
 अो. सासअोके० अर्थथी शाश्वतो विजयउके०

(११३)

परवादीना जीपवाथी विजयवंतो थाउ. अने
धम्मोत्तरं वढउके० जेम चारित्र धर्मने घणुं उत्तरो
त्तर प्रधानपणुं थाय, तेम सिद्धांत ते वढउ एटले
वृद्धिने पामो. ॥ ४ ॥ सुअस्सके० ते वली श्रुतज्ञा
न ते केवुं ठे? जगवउके० महिमावंत ठे. तेने
आराधवाने अर्थे करेमिकाउसग्गंके० हुं काउसग्ग
प्रत्ये करुं तुं. वंदणवत्तिआए एनो अर्थे पूर्वकह्योठे.
एमां शोल पद, शोल संपदा, गुरु अद्धर के० लघु
अद्धर १०१ सर्व अद्धरो बशोने शोलठे. ॥ ११ ॥

अथ सिद्धाणंबुद्धाणं १३

सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ पारगयाणं परंपर
गयाणं ॥ लोअग्गमुवगयाणं ॥ न
मोसया सब सिद्धाणं ॥ १ ॥

अर्थ—सिद्धाणं के० आठ कर्मनो क्ह्य करी
जे सिद्ध थया ते. बुद्धाणं के० ज्ञानवडे समस्त
वस्तु तत्वना जाणनारा, पारगयाणं के० संसार
समुझना पारने पामेला; परंपरगयाणं के० पेहे

લા મિથ્યાત્વગુણઠાણાથી અનુક્રમે ચૌદમા અ
યોગી ગુણઠાણાસુધી ચઢવું, અથવા કૃપકશ્રેણી
થી શુદ્ધ જ્ઞાન દર્શન ચારિત્રને અનુક્રમે પામ્યા;
તેને કહિયે પરંપરા. તે પરંપરાએ કરી જે સિદ્ધ થયા
હે; તે અને લોચ્છગ્ગ મુવગયાણં કે૦ ચૌદરાજ લો
કના અગ્રજાગને વિષે એટલે સિદ્ધશિલાની ઉપર
ઝવગયાણં કે૦ યોજનને ચોવીશમે જાગે પહોતા
હે, એવા નમોસયા સર્વ સિદ્ધાણંકે૦ સર્વ સિદ્ધોને
સદા સર્વદા કે૦ નિરંતર નમસ્કાર હોજો. ॥૧॥

જો દેવાણવિ દેવો ॥ જંદેવા પંજલી
નમંસંતિ ॥ તં દેવ દેવ મહિચ્ચં ॥ સિ
રસા વંદે મહાવીરં ॥ ૨ ॥

અર્થ—જો દેવાણવિ દેવો કે૦ જે વૈમાનિક
પ્રમુખ ચાર નિકાયના દેવોનો પણ દેવ, એવા
શ્રી મહાવીર જં દેવા કે૦ જે શ્રીમહાવીર પ્રત્યે
દેવતાઉ પણ પંજલી કે૦ બે હાથની અંજલી મા
થે ચઢાવીને નમંસંતિકે૦ નમસ્કાર કરે હે તંકે૦

(११५)

ते श्रीमहावीरने देव देव के० देवतानो देव जे
इंद्र, तेणे महियं के० पूज्यो ठे, सिरसावंदे
महावीरं के० ते श्रीमहावीरने हुं पण मस्तकें
करी वंदना करुं हुं ॥ १ ॥

इक्कोवि नमुक्कारो ॥ जिणवर वसह
रुस वद्धमाणरुस ॥ संसारसागराउ ॥

तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे नमस्कारनुं फल कहे ठे. इक्कोवि
नमुक्कारो के० एकवार पण जो जावे करी नमस्का
र कखो होय; कोने तोके—जिण के० जिन जे केव
लीतेनेविपे, वरवसहस्स के० वर एटले प्रधान वृ
षज सरखा एवा वद्धमाण के० श्रीमहावीर, ते
हने घणा नमस्कार तो वेगला रहो, तथापि ए
क नमस्कार करवाथी पण संसार सागराउके०
संसाररूपी समुद्रथी तारेइ के० तारे ठे. एटले
मोक्षपदवी आपे. ते कोने आपे ठे?—नरंवके०
पुरुषोने अथवा नारिंवा के० स्त्रीउने. इहां जे

(११६)

दिगंबरो, स्त्रीने मोक्ष नथी एम कहे ठे ते जूठुं
कहे ठे. केमके ज्ञान दर्शन चारित्र आराधवा आ
श्री स्त्रीपण पुरुषनी पेरेजठे एम जाणवुं. ॥ ३ ॥

उज्जितसेलसिहरे ॥ दिस्का नाणंच
निसिहिआजस्स ॥ तंधम्म चक्रव
ट्ठिं ॥ अरिठनेमिं नमं सामि ॥ ४ ॥

अर्थ—उज्जितसेलसिहरे के० गिरिनारपर्व
तना शिखरनेविषे सहस्राश्ववनमांहे दिस्का के०
दीक्षा कल्याणक तथा नाणं के० ज्ञानकल्याणक
अने निसिहिया के० निर्वाण कल्याणक, ए त्र
णे कल्याणक जस्स के० जे स्वामिनां थयां ठे.
तं धम्म चक्रवट्ठिं के० ते धर्मनेविषे चक्रवर्त्ति स
मान जे अरिष्टनेमि जिनेश्वर तेने नमंसामि
के० हुं नमस्कार करुं ठुं ॥ ४ ॥

चत्तारिअठदसदोय वंदिया जिण
वरा चउवीसं ॥ परमठ निठिअद्वा ॥

સિદ્ધા સિદ્ધિ મમ દિસંતુ ॥૫ ॥૨૩॥

અર્થ-હવે અષ્ટાપદ તીર્થને નમવાને અર્થે કહે છે. ચત્તારિઅષ્ઠદસદોય વંદિયા કે૦ અષ્ટાપદ પર્વતનેવિષે નરત ચક્રવર્તિએ કરાવ્યો છે જે ચતુર્મુખ પ્રાસાદ, તેહનેવિષે આપ્યા છે ચત્તારિ કે૦ દક્ષિણદિશાનેવિષે ચાર, અષ્ઠ કે૦ પશ્ચિમ દિશાએ આઠ, દસ કે૦ ઉત્તરદિશિનેવિષે દશ, દોય કે૦ પૂર્વ દિશાનેવિષે બે; એ એકઠા મેલવીએ ત્યારે જિણવરા ચત્તરીસં કે૦ વર્તમાન સોવીશ જિન એટલે તીર્થકરો, તે પરમઠ નિઠિ કે૦ પર માર્થે કરી નિષ્ઠિતાર્થ થયા. અર્થાત્ સિદ્ધિ પામ્યા. એટલે જેના અર્થે પરિપૂર્ણ થયા છે; એવા જે સિદ્ધાકે૦ સિદ્ધા પરમેશ્વર, તે સિદ્ધિં મમ દિસંતુ કે૦ મને મોકૂં દિઉં. એ ગાથા જે પ્રકારે શ્રીગૌતમ સ્વામિએ અષ્ટાપદ પર્વતની ઉપર જડ્ને વેવની વંદના કરતાં કરી છે તે પ્રકારેજ નિબંધન થાણી છે. ॥ ૫ ॥ ૨૩ ॥

॥ અથ વેયાવચ્ચ ગરાણં ॥ ૨૪ ॥

વેયાવચ્ચગરાણં ॥ સંતિગરાણં ॥ સ
મ્મદિઠિ સમાહિ ગરાણં ॥ ઇતિ ॥૨૪॥
કરેમિ કાનુસ્સગ્ગં ॥ અન્નઠ ૦ ॥

અર્થ—સવ્વઠ ડચ્ચિઅ કરણં એમ નગવંતે ક
હું ઠે. તેમાટે ડચિત કરવા નણી શ્રીવીતરાગના
વેયાવચ્ચ કરનાર દેવતાના પ્રત્યયને અર્થે કાનુસગ્ગ
કરવા સારું આવીરીતે કહેવું. વેયાવચ્ચ ગરાણંકે ૦
વીતરાગના શાસનની નક્તિના કરનાર ગૌમુખ યદ્દ
આદે દેહને રદ્ધારૂપ જે વેયાવચ્ચ સાનિહના કરના
ર, સંતિગરાણં કે ૦ સર્વ સંઘને શાંતિના કરનાર, સ
મ્મદિઠિ સમાહિગરાણંકે ૦ સમ્યક્દૃષ્ટિ નવ્યજીવો
ને સમાધિના કરનાર, તે દેવોને આશ્રયીને તેને
નિમિત્તે, કરેમિ કાનુસગ્ગં કે ૦ હું કાનુસગ્ગ કરું
બું. ઇહાં અન્નઠ ડસ્સસિણં કહિએ. કેમકે દેવ
તા અવિરતિ ઠે, માટે વાંદવા પૂજવાયોગ્ય નથી.
માટે. એ ત્રેવીશમું અને ચોવીશમું એ બે સૂત્રો મ

(११९)

लीने तेमां पद वीश ठे. संपदा वीश ठे; सर्व
मली अक्षरो एकशोने अछाणु ठे तेमां एकत्रीश
गुरु ठे, अने एकसो सडशठ लघु ठे. इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जगवानादिवंदन ॥ १५ ॥

जगवानूहं ॥ आचार्यहं ॥ उपा
ध्यायहं ॥ सबसाधुहं ॥ इति ॥ १५ ॥

अथ देवसिअ प्रतिकमणे ठावुं ॥ १६ ॥

इडाकारेण संदिसह जगवन् ॥ दे
वसिअ पद्मिकमणे ठावुं ॥ इहं स
वस्सवि देवसिअ डुच्चिंतिअ डुप्रा
सिअ डुच्चिठिअ मिहामि डुकडं ॥

अर्थ—सवस्सवि के० सर्व पण देवसिअ के०
दिवस संबंधी डुच्चिंतिअ के० मने करी डुष्ट एट
ले मातुं चिंतव्युं, डुप्रासिअ के० वचने करी डुष्ट
एटले मातुं जाणुं डुच्चिठिअ के० कायाए करी

(१२०)

माठी चेष्टा कीधी मिहामिडुक्कडं के० ते डुष्कृत
मिथ्या होजो. इति समाप्तः ॥ २६ ॥

अथ इहामि ठामि ॥ २७ ॥

इहामि ठामि कानुस्सग्गं॥जोमे देव
सिउ॥अईआरोकउ॥काईउ॥वाईउ॥
माणसिउ॥उस्सुत्तो॥उम्मग्गो ॥ अ
कप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ डुप्पाउ ॥ ड
विचिंतिउ॥अणायारो ॥ अणिन्निअ
वो॥असावग पानुग्गो॥नाणं तह दं
सणे चरित्ता चरित्ते ॥ सुए सामाई
ए तिण्हं गुत्तीणं ॥ वण्हं कसाया
णं ॥ पंचण्हं मणुवयाणं॥ तिण्हं गुण
वयाणं चण्हं ॥ सिस्का वयाणं ॥
बारस विहस्स सावग धम्मस्स ॥
जं रवंदिअं जंविराहिअं ॥ तस्स
मिहामि डुक्कडं ॥ इति ॥ २७ ॥

अर्थ-इच्छाकारेण के० जो तमारी इच्छा हो
य तो, संदिसह के० आदेश आपो, जगवन् देव
सियं आलोएमि के० हे जगवन् जेथी दिवस सं
बंधी अतिचार लाग्या होय, ते प्रत्ये हुं आलोबुं.
प्रकाशुं, एम शिष्य कहे तेवारे गुरु कहे, आलोय
के० आलोवो. त्यारे शिष्य कहे. इहं के० वांबु
बुं, आलोएमि के० एमज आलोववाने. जो में
दिवसिउके० जे में दिवससंबंधी, अइआरोकउ
के० अतिचार कखा होय, ते अतिचार केवीरी
ते लाग्या? ते कहेढे. काईउ के० कायासंबंधी, वाई
उके० वचनसंबंधी, माणसिउ के० मनसंबंधी,
अतिचार लाग्या, ते अतिचार विगते करी कहेढे.-
उस्सुत्तो के० जे सिद्धांत विरुद्ध कांइ बोलायुं त
था समाचयुं, तेणे करी उत्पन्नययुं जे उम्मग्गो
के० धर्मेना मार्गेनुं कषायना उदये करी लोपबुं,
उन्मार्गेनु प्रवर्त्तावबुं. तेथी नीपनो अकप्पोके० जे
कल्पे नहि, एटले अकल्पनीयकार्य करवे करीने अक
रणिज्जोके० जे करवा योग्य नहीं, तेवा कार्यने कर

वे करीने, दुप्राउ के ंघणी वार दुध्यान धरवा थकी
 लाग्या जे अतिचार, दुव्विचिंतिउ के ंदुष्ट जे माठी
 चिंतवणा, तेने करवे करीने कीधो जे अणायारो के ं
 अनाचार. जे आचार विरुद्ध ठे, ते आचरवे करीने,
 अणिष्ठिअवो के ं जे इष्ठवा योग्य नही, ते करवा
 योग्य केम होय? एवं आर्त्तरौडादिक ध्यान, तेनी
 वांठना करवे करीने लाग्या जे अतिचार, असा
 वग पाउगो के ं अश्रावकने प्रायोग्य एटले जे
 श्रावकने करवा योग्य नही ते कीधुं, तेथी लाग्या
 जे अतिचारो, ते किया अतिचारो? तेकहे ठे. नाणं
 के ं ज्ञाननेविषे, तह के ं तेमज, दंसणे के ं
 दर्शन जे सम्यक्त्व तेनेविषे चरित्ताचरित्ते के ं कां
 इक चारित्रने कां इक अचारित्र एटले देशविरति
 चारित्रनेविषे, इहां श्रावकने चरित्ताचरित्ते ते शा
 सारुं कहिए? तोके श्रावकने केटला एक पापोनो
 नियम ठे, ते माटे चारित्र कहिए; अने के
 टला एक पाप मोकलां ठे, ते माटे अचारित्र कहिए.
 बन्ने चारित्र अने अचारित्र मेलवीए तेने चरित्ता

चरित्त एटले देशविरति चारित्र कहीए. तेना अति चार लाग्या होय, ते क्यां लाग्या होय? ते हवे क हेहे. सुए के० अकाले सिद्धांत नएवाथी सामाए के० सम्यक्त्व सामायक ते शंका, आकांक्षादिके करी विराधना थइ होय. तिएहं गुत्तिणं के० मनो गुप्ति, वचनगुप्ति, तथा कायगुप्ति ए त्रणे गुप्तिउ रूडी पेरे पाली न होय, चउएहं कसायाणं के० क्रोध, मान, माया, ने लोन ए चार कषायने करवे करी, पंचएहं अणुवयाणं के० साधुनी अ पेक्षाए न्हाना माटे अणुव्रत कहीए ते पांच अणु व्रत कहेहे. एक निरापराध, त्रस जीवने जाणीकरी, निरपेक्षपणे मारवानो नियम, बीजो महोडाथी जु तुं बोलवानो नियम, त्रीजुं जेणे चोरीनुं आल चढे ते न करवुं. एटले अदत्त लेवानो नियम, चोथुं स्वदा रा संतोषकरे; तथा परस्त्रीनो नियम, पांचमुं परिग्रह नुं परिमाण करे. ए पांच अणुव्रतनी विराधना कर्याथी तिएहं गुणवयाणं के० त्रणे गुणव्रत ते कियां? एक दिशिपरिमाणव्रत, बीजुं जोगोपजो

ग परिमाणव्रत, त्रीजुं अनर्थदंमविरमणव्रत,
 ए त्रण गुणव्रत ते पाठल कह्यां जे पांच अणुव्र
 त, तेने गुण करे, ते माटे ए गुणव्रत कहेवाय
 ठे. ए त्रण गुणव्रतनी विराधना कस्यार्थी, चउ
 एहं सिस्कावयाणं के० चार शिक्काव्रत ते कियां?
 एक जेवारें अवसर पामे तेवारे सामायक लेवुं;
 उन्नय काले पडिक्कमणुं करवुं, बीजुं देशावगासी
 उं दिन प्रते करवुं. त्रीजुं पर्व तिथिए पोसह क
 रवो. चोथुं न्यायोपार्जित सजतो आहार पा
 णी साधुने वहोरावे; ए चार शिक्काव्रत जेम
 गुरु प्रमुखनी शीख वारंवार संजारीए-अन्यासी
 ए, तेम ए चार व्रत दिन दिन प्रते सेवीए. ते
 माटे चार शिक्काव्रतने विराधवे करीने ए सर्व
 मली बारस्स विहस्स के० बारे प्रकारे जे साव
 ग धम्मस्स के० श्रावकनो धर्म, तेनी जंखंनियं
 के० जे थोडी पण खंमना कीधी होय, जं विरा
 हियं के० जे समस्त विराधना करी होय, तस्स
 मिहामि डुक्कडं के० ते डुक्कत जे पाप ते मिथ्या

के० फोकट याउ. एमां गुरुअक्षर अछावीश, जघु
अक्षर एकशोने पांत्रीश सर्वाक्षर. १६३ ॥ २७ ॥

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥ २८ ॥

नाणंमि दंसणंमिअ ॥ चरणंमि तवं
मि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आ
यारो ॥ इअ एसो पंचहा नणिउ ॥ १ ॥

अर्थ—नाणंमि के० ज्ञान, दंसणंमिअके० दर्शन,
चरणंमि के० चारित्र, तवंमि के० तप, तहय के० ते
मज विरियंमिअके० वीर्य—ए पांचनेविषे आयरणं
के० आचरबुं—तेने कहीए आयारोके० आचार. ६
अ के० एम, एसो के० ए आचार ते, पंचहा के०
पांच प्रकारे नणिउ के० ज्ञानीये कह्यो ठे. एटले
ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, ने
वीर्याचार—ए पांच प्रकारनो आचार ज्ञानीए क
ह्योठे ॥ १ ॥ तेमां प्रथम ज्ञानाचार कहेठे.

काले विणए बहुमाणे ॥ उवहाणे

(१२६)

तद्व्यनिष्कवणे ॥ वंजण अह तडुन
य ॥ अहविहो नाण मायारो ॥ २ ॥

अर्थ—कालेके० काल वेलाए ज्ञान नणवुं, वि
णएके० विनयपूर्वक ज्ञान नणवुं, बहुमाणेके०
ज्ञान तथा गुरुने बहु मान देऩे नणवुं; उव
हाणे के० श्रावके उपधान वहीने ज्ञान नणवुं,
तथा यतिए योग वहीने ज्ञान नणवुं, तद्व्यके०
तेमज अनिह्वणे के० नणावनार गुरुने उजव
वो नही. वंजणके० सूत्रनो अहूर खोटो बोलीए
नही. शुद्ध उच्चार करवो, अह के० अर्थ खोटो
करीए नही. शुद्ध अर्थ परुपवो, तडुनए के०
सूत्र अने अर्थ खोटा कहीए नहीं, बेहुशुद्धपरु
पवा. अहविहो नाण मायारो के० ए आठ प्र
कारना आचार ज्ञानना जेम कहा ठे, तेम क
रीए तो ज्ञानाचारना अतिचार न लागे. अने
तेथी विपरीत करीए तेवारे अतिचार लागे. ॥१॥

निस्संकिअ निक्कंखिअ ॥ निव्वितिगि

ढा अमूढ दिष्टीअ ॥ उववूह थिरी
करणे॥ वढ्ढ पप्रावणे अठ ॥ ३ ॥

अर्थ-हवे दर्शनाचार कहे ठे. निस्संकिय के० जगवंते कहेलां जे तत्व, तेनेविषे शंका करवी नहीं. एकांते साचुं मानवुं ते पेहेलो निः शंकित गुण, बीजो निक्कंखियके० बीजा दर्शननी वांढा करवी नहीं. लगारेक तप कृमादिकनो गुण देखी परदर्शननो अनिलाष करवो नहीं. त्रीजो निव्विति गिह्वा के० जिनधर्मनेविषे क्रियानुष्ठाना दिकना फलनेविषे संदेह करवो नही. अथवा साधु तथा साध्वीना मल मलीन शरीर तथा वस्त्र देखी ग्लानी करवी नही. चोथो अमूढ दिष्टि अके० मिथ्यात्वीना धर्मनो प्रजाव देखीने आज धर्म साचो हशे, एवुं मनमां चिंतवन करवुं नही. एटले एवा मूढदृष्टि न थवुं. पांचमो उववूहके० सम्यक्त्वधारी गुणवंतना थोडा गुणनी पण प्रशंसा करवी एटले मुखे करी प्रकाशवी. ढगो थिरी कर

(१२८)

ए के० जेनुं मन धर्म उपरथी खसीजतुं होय तेनु
मन धर्मनी उपर स्थिर करावुं. सातमुं वञ्चलके०
साधर्मिनी उपर एकांतपणे हित, अने नक्की
करवी. आठमुं प्रजावणेके० जेणेकरी, जिनशासन
दीपे, एवं जे काम तेना करवाथी, घणा लोक
बोधबीज पामे तेनुं करवुं, जे देखीने मिथ्यात्व
पण पुण्य उपार्जे तेने प्रजावना कहिए. ए अठ
के० आठ प्रकारे दर्शनाचार जाणवो. एवी
रीते प्रवर्त्ते तेवारे दर्शनाचारना अतिचार न ला
गे. पण एथी विपरीत चालतां अतिचार लागे ॥

पणिहाणजोगजुत्तो ॥ पंचहिं समीई
हिं तीहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्ताया
रो ॥ अठविहो होइ नायवो ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे चारित्राचार कहेने. पणिहाण
जोग के० प्रणिधान एटले एकाग्र सावधानपणे
करी मनवचन तथा कायाना योग, ते चारित्र पा
लवाने जुत्तो के० युक्त होय, एवो पंचहिं सीमई

(१३९)

हिं तीहिं गुत्तिहिं के० पांच समितिएकरी, अने
त्रण गुप्तिएकरी एसचरित्तायारो के० ए चारित्र
नो आचार, अछविहो होइ नायवो के० आठ
प्रकारे थाय ठे, एम जाणवुं. ए आठ बोले प्रव
र्ने ल्यारे चारित्राचारना अतिचार न लागे. अ
ने ए पांच समिति ने त्रण गुप्ति न पाले तो, चारि
त्राचारना अतिचार लागे. तेमाटे साधुने निरंत
र, अने श्रावकने सामायक पोसह जीधे अवश्य
पांच समिति, अने त्रण गुप्ति पालवी ॥ ४ ॥

बारस विहंमिवि तवे ॥ सप्रितर बा
हिरे कुसल दिछे ॥ अगिलाइ अ
णाजीवी ॥ नायवो सो तवायारो ॥ ५ ॥

अर्थ—बारस विहंमिवि तवे के० बार प्रकारनुं
तप ठे, तेमां अप्रितर के० ठ जेदे अच्यंतरतप
अने बाहिरे के० ठ जेदे ब्राह्मतप, ए बे मलीने
बार प्रकारनुं जे तप, ते कुसलदिछे के० तीर्थ
करे कहेजुं ठे. ते तपनेविषे अगिलाइ के० ग्ला

(१३०)

नी थाए नही, तप करतां जंग करे नहीं; अ
णाजीवी के० आजीविकाने अर्थे तप न करे,
अने हुं जो तप करूं तो तपी कहेवाउं, पेट न
राइ चाले, मने लोको तपसी जाणी धन प्रमुख
वडे मारी नक्ति करे; एवी बुद्धिथी तप न करवुं;
नायवोसोतवायारो के० ए प्रमाणे करे तेने तपा
चार जाणवो. एवी रीते प्रवर्त्ते तेवारे तपाचार
ना अतिचार लागे नही. ॥ ५ ॥

अणसण मूणो अरिया ॥ वित्ती संखे
वणं रसच्चाउ ॥ काय किलेसो संली
ण, याय बढो तवोहोइ ॥ ६ ॥

अर्थ—हवे बाह्यतपना ठ जेद विवरीने कहे ठे. पे
हेलुं अणसण के० अहारनो त्याग जे उपवासादिक
करवा ते बीछुं; मुणोयरियाके० पांच सात कोलीआ
उठा करवा तेने उणोदरि तप कहीए. त्रीछुं वित्ति
संखेवणं के० वोरवा जतां साधु घरनी संख्या करे,

જેમ કે પાંચ, સાત અથવા આટલાંજ ઘેરથી વો
 રવું; એટલા ઘરમાંથી જો સૂજતો આહાર મલ્યો
 તો લેવો, અને જો નહીં મલે તો ઉપવાસ કરવો,
 તેને વૃત્તિસંક્ષેપ કહીએ. અને શ્રાવકને તો સ
 વારે જે પચ્ચસ્કાણ કરતાં દશ, પંદર કે જેટલાં
 હવ્ય મોકલાં રાખ્યાં હોય, તેડમાંથી બે તથા ત્ર
 ણ હવ્ય જે ડાંઠાં કરીએ તેને વૃત્તિસંક્ષેપ કહીએ.
 રસચ્ચાઉં કે ૦ ઠ વિગયમાંથી એક બે વિગય તથા
 લીલોતરી પ્રમુખનો જે નિયમ લેયે, તેને રસત્યાગ
 તપ કહીએ. કાયકિલેસો કે ૦ ટાઢ અથવા તા
 પની જે આતાપના લેવી અથવા લોચ કરાવવું;
 ઝઘાડે પગે ચાલવું; જૂમિ ઉપર સૂવું; ઇત્યાદિક
 પ્રકારે શરીરને કષ્ટ દેવું, તેને કાયકેશ તપ ક
 હીએ. સંજીણયાય કે ૦ જેમ કૂકડી પોતાના પગ
 પસારેઢે, તેમ હાથ પગ પ્રમુખ અંગોપાંગ સંવરી
 રાખવાં, કષાય ન કરવો, તેને સંજીનિતા તપ ક
 હીએ. બબોતવો હોડકે ૦ એ ઠ પ્રકારનું બાહ્ય તપઢે

(१३१)

पायञ्चित्तं विणत ॥ वेयावच्चं तद्देव स
द्यात ॥ ऊणं उस्सग्गोविच्च ॥ अप्पि
तरतं तवो होई ॥ ७ ॥

अर्थ-हवे अन्यंतरतपना ठ जेद विवरीने कहे
ढे. पायञ्चित्तंके ० गुरुनी पासे सरल मनवडे पाप अ
पराधनुं प्रकाशवुं; ते निवारण करवाने अर्थे गुरुए
कहेवुं जे तप, ते करवुं तेने प्रायश्चित्ततप कहेढे.

विणत के ० विनयतप. तेना आठ जेद ढे. गु
रुने देखी ऊजा थवुं; गुरुने आवता देखी सांमे
जवुं, गुरुने देखीने हाथ जोडी मस्तके चढावीए,
गुरुने बेसवाने आसन नाखवुं, अने पोते आसने
बेसवानुं मूकी देवुं, ज्यां सुधी गुरु ऊजा होए त्यां
सुंधी बेसवुं नही, गुरुने वांदणां देवां; गुरुनी पर्यु
पासना; सेवा करवी, पग चांपवा, विसामण क
रवा, तथा गुरु जाए त्यारे तेनी पाठल बोलाव
वा जवुं. ए आठ जेद विनयना जाएवा.

वेयावच्चंके ० वैयावर्त्य तपना दश जेदढे. आ

चार्य, ग्लान, बाल, वृद्ध, तपस्वी, नवदीक्षित साधु, साधर्मी, कुल (एक आचार्यना संतानने कुल कहेढे) गह्व (घणा आचार्यना संतान एकठां थएला होय तेने गह्व कहिए) अने साधु साध्वी श्रावक तथा श्राविका एतद्रूप संघ—ए दशनुं जे वैयावर्त्य करवुं तेने वैयावच्च कहिए.

तहेवके० तेमज सप्पायतप पांच प्रकारेढे. ते आप्रमाणे—वाचना एटले जणवुं, पढना ते संशय टालवाने पूढवुं; परावर्त्तना एटले विसरेलुं संनारवुं; अनुप्रेक्षा एटले तत्त्वचिंतवना करवी, धर्म कथा एटले गुणीजननी कथा करवी. ए पांच जेद सप्पाय तपना जाणवा.

जाणंके० ध्यानतपना बे जेदढे. एटले एक धर्म ध्यान अने बीजुं शुक्कध्यान ए बे शुनध्यान ध्याइए.

उसग्गोविय के० कर्मना क्लयनिमित्ते काउ सग्ग करवुं. तेकायोत्सर्गतप. अप्रितरउ तवो दोइ के० ए ढ प्रकारे अन्यंतर तप थायढे. ॥ ७ ॥

(१३४)

अणगूहिअ बल विरिउ ॥ परिक्रम
इं जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइअ ज
हा यामं ॥ नायवो वीरिआयारो ॥८॥

अर्थ—हवे वीर्याचार कहेछे. अणगूहिय बल विरि
उके० शरीरनुं बल अने मननुं वीर्य गोपवे नही. ए
टले मनमां ऊत्साह धरतो थको अने वचने धर्म व्या
खान करतो ठतो खेद न पामे; एवो ठतो परकम्मइ
के० धर्मने विषे पराक्रम फोरवतो प्रवर्त्ते; जो जहुत्त
माउत्तोके० जे यथोक्त विधिये जे अवसरे जे क्रि
या करवानुं जेम जगवन्ते कह्युंछे, तेम करवाने उ
द्यमवन्त थयो थको प्रवर्त्ते, अने वली जुंजइअके०
जोडे, जहायामं के० बलने अनुसारे यथाशक्ति
ए धर्मने विषे मन वचन तथा कायानो व्यापार
प्रयुंजे, ए त्रण जेदे वीर्याचार कह्यो. नायवो वी
रियायारो के० ए प्रमाणे वीर्याचार जाणी लेवो.
एथी विपरीत जो धर्मने विषे बलवीर्य गोपवे तो
अतिचार लागे ॥ ८ ॥ एथाठगाथा कही. इहां पां

(१३५)

च आचारना अतिचार लाग्या होय ते संनारे.

॥ अथ सुगुरु वांदणां ॥ १ए ॥

इत्तामि खमासमणो वंदितं जाव
णिजाए निसीहिआए अणुजाण
ह मेमिउग्गहं निसिही अहो का
यं कायसंफासं खमणिज्जो ने कि
लामो अप्पकिलंताणं बहुसु ने
एजे दिवसो वइक्कंतो जत्ताजे ॥ ज
वणि ऊंचने खामेमि खमासमणो
देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए ॥
पण्हिक्कमामि खमासमणाणं देवसि
आए आसायणाए तित्तीसन्नयरा
ए जंकिंचि मिहाए ॥ मण्डुकडाए व
यडुकडाए कायडुकडाए कोहाए मा
णाए मायाए लोचाए सबकालिआ
ए सब मिहोवयाराए सब धम्माइक्क

(१३६)

मणाए आसायणाए जोमे अश्चा
रो कउं तरस खमासमणो पडिक्क
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ २९ ॥

बीजीवारने वांदणे आवसिआएपद
न कहेवुं राइ पस्कि चउमासी संवत्स
रीए आम पाठ कहेवो॥राश्वशंकता,
चउमासीवशंकता, पस्कोवशंकतो, सं
वत्तरोवशंकतो, एम कहेवुं

व्याख्या— इहामि के० इहुंहुं—वांहुंहुं. खमा
समणो के०हे क्कमा श्रमण तमने निसीहिआए
एटहुं उजां यकां कहेतो यको वंदन करवानी
इह्हा जणावे; पठी ते शिष्य लगारेक नीचो नमी
उजो रहे ल्यारे गुरु कहेके, ठंदेण के० तमारी इ
ह्हाथी वंदना करो पठी शिष्य कहे. अणुजाणह
के० अनुमति ते आझादीउं, मे के० मने मिउग
ह के० मव्यो जे अवग्रह साडात्रण हाथ रूप

तेमां आववानो. त्यारे गुरु कहेके अणुजाणामि
 के० आझा आपुं तुं. वली शिष्य कहे जे निसीहि
 के० पाप व्यापारनो निषेध करीने विधिए युक्त
 वांडु तुं. एम कह्नीने जूमिने पुंजतो थको आघो
 आवी संमासा पुंजीने बेसे. पठी शिष्य कहे के
 अहोकार्य के० अधःकाय एटले तमारां चरण रू
 प जे हेतेनी काय ठे ते, काय संमासं के० मारा
 मस्तकरूप कायायेकरी फरसुं; ते तमारे खमणि
 ज्जोने के० खमवुं. हे जगवन् जे के० तमने
 किलामो के० पग फरसतां जे किलामणा
 उपनी होय ते एम खमावी माये हाथ च
 ढावी कुशलता पूछे; अपकिलंताणंके० किलाम
 णारहित एवा तमने थोडा श्रम एटले थोडा प्र
 यासे करी बहुसुजेणं के० घणी निराबाध संयम
 क्रिया समाधीए करी, जे के० तमारो दिवसोवइ
 कंतो के० दिवस अतिक्रम्यो. तेवारे गुरु कहे,
 तद्वत्ति के० जेम तें कहुं तेमज अमारो दिवस
 अतिक्रम्यो ठे. वली शिष्य बे हाथ जोडी जत्ता

(१३७)

जे कहेतो थको त्रण आवर्त्त करे. ते केम-
दश आंगलीउ समी राखी गुरुना पगने हाथ
लगाडतो थको पहेलो(ज) अक्षर नीचे सादे क
हे अने बीजो(ता) अक्षर मध्यम सादे कहे. त्री
जो(जे)अक्षर निजाडे फरसतो उंचे सादे कहे.
एटले त्रणे अक्षरे पहेलो आवर्त्त जताने के०
सुखे संयमनी यात्रा ठे तमने ? तेवारे गुरु कहे
तुप्रांवि वट्टएके० तुजने पण यात्रा वर्त्ते. ए जेम
त्रणे अक्षरे पहेलो आवर्त्त कह्यो तेम बीजो अ
ने त्रीजो आवर्त्त पण शिष्येज कहेवो. ते आ प्रमा
णो-जवणिऊंचने के० तमारां पांच इंदिय अने
नोइंदिय एटले मन ए ठ वानां तमारे वश ठे ? अ
थवा तमारुं शरीर निराबाधठे ? तेवारे गुरु कहे ए
वं के० एमज निराबाधठे-वश ठे. वली शिष्य बे
हाथ अने मस्तक गुरुना पगने लगाडीने कहे स्वामे
मि स्वमासमणो के० स्वमावुं तुं हे कृमाश्रमण,
कृमाने विषे उद्यमवंत, देवसियं वइक्रमं के० दिवसवि
तिक्रम्योत्तेसंबंधी अपराध. त्यारे गुरु कहे अहमवि

(१३ए)

खामेमि तुमंके० हुं पण तमने खमावुं तुं. पत्ती
 शिष्य उनो थइ अवग्रहथी बाहेर नीकलतो क
 हे आवस्सियाए के० अवश्य क्रिया जे पडिलेह
 णादिकतेकरवाने अर्थे अवग्रह बाहेर नीकली उ
 नो थइ कहै पम्पिक्कमामि के० पडिक्कमुं तुं, निवर्तु
 तुं खमासमणाणं के० हेहमावंतयति तमने दे
 वसीयाए आसायणाए के० दिवस संबंधी आ
 शातना तिन्नीसन्नयराए के० तेत्रीशमांती अने
 री कोइ एके आशातना कीधी होय जंकिंचिमि
 ह्माए के० जे कांइ मिथ्यात्व एटले खोटा नावथी
 वेयावच्चविपे सर्व बल ठतां नही करवानी बुद्धि
 थी निर्वलपणुं देखाडतो मुखे खोटा उपचारे क
 री आशातना कीधी होय, मण डुक्कडाए के० शु
 रुनी उपर मने करी मातुं चिंतव्युं होय, वयडुक्क
 डाए के० वचन दुःप्लुत एटले असंबंधवचने करी
 ने, काय डुक्कडाएके० कायाएकरी मातु कसुं होय
 कोहाएके० क्रोधेकरी, माणाएके० मान अहंकारे
 करी, मायाएके० मायायेकरी, लोहाएके० लोनेक

री सब कालियाए के० सर्वकाल अतीत अनागत
 तथा वर्तमान कालनेविषे मिहोवयाराए के०
 सर्वे मिथ्या उपचार जे उपाय—तेणेकरी जे खोटा
 मने विनय साचव्यो होय, सबधम्माए क्रमणाए
 के० जेणेकरी सर्व जिनधर्मनो अतिक्रम थयो
 होय, एटले सर्व धर्मने अतिक्रमवे करी इत्यादिक
 आसायणाए के० आशातनाए करी जो मे अइ
 यारो कठ के० जे में अतिचार अपराध कीधो हो
 य तस्स खमासमणो के० पाठल कहा जेअति
 चार अपराध ते खमा समणोके० हे ह्माश्रमण,
 ह्मावंत गुरु पडिक्कमामि के० ते अपराधने डुं त
 मारी साखे पडिक्कमुंहुं. निंदामि के० ए पापोने
 आत्मानि साखे निंहुं. गरिहामि के० गुरुनी सा
 खे गरहा करुंहुं, अप्पाणं वोसिरामिके० पापनो
 करनारो एवो आत्मा तेने वोसिरावुंहुं. एटले आ
 सातनानिमित्त जे काले उपनी जे मति ते रूप आ
 त्माने ठांहुंहुं. बीजे वांदणे आवस्सीयाए न कहेहुं.
 पचीश आवश्यक ग्रंथातरनी गाथाशीलखीये

(૧૪૧)

ઠૈએ-દોવણય કે૦ બે વાર નમવું; યથાજાત કે૦
 નગ્ન જાવે થવું; આવત્તબાર કે૦ આવત્ત બાર
 કરવા. ચત્તસિર કે૦ ચાર મસ્તક મેલવવાં. ત્યાં
 શિષ્ય સ્વમાવે ત્યારે ગુરુ પણ સ્વમાવે. એમ બે મા
 થાં મેલવે. એમ બે વાર કરે ત્યારે ચાર મસ્તક
 યાય તિગુત્તં કે૦ ત્રણ ગુપ્તિઁ તે મન ગુપ્તિ, વચ
 ન ગુપ્તિ તથા કાયા ગુપ્તિ જાણવી. હ્રસ્વેસ કે૦
 બે વાર અવગ્રહમાં પેસવું. ઇગ નિસ્કમણંકે૦ એક
 વાર અવગ્રહમાંથી નીકલવું. એ પણ વીસાવસથ
 કે૦ પચીશ આવશ્યક કિંક્રમ્મે કે૦ કૃતકર્મ એ
 ટલ્લે વાંદણાને વિષે થાય છે. એમાં પચીશ આવશ્ય
 ક, બે અવગ્રહ, અષ્ટાવન પદ, બરોને ઠવીશ
 અદ્ધરો-તેમાં પચીશ ગુરુ ને બરો એક લઘુ છે

॥ અથ દેવસિઞ્ચંચાલોઁ ॥૩૦ ॥

શ્ઠાકારેણ સંદિસહ જગવન્ દેવસિ
 ઞ્ચં ચાલોઁ શ્ઠં ॥ ચાલોએમિ જો
 મે દેવસિઁ ॥ શ્તિ ॥ ૩૦ ॥

(१४१)

॥ अथसातलाख ॥ ३१ ॥

सातलाख पृथिविकाय ॥ सातला
ख अप्पकाय ॥ सातलाख तेनुकाय॥
सातलाख वाउकाय ॥ दशलाख प्र
त्येक वनस्पतिकाय॥चनुदलाख सा
धारणवनस्पतिकाय ॥ बेलाख बें
डी॥बेलाख तेरेंडी॥बेलाख चौरिंजी॥
चारलाख देवता॥चारलाख नारकी॥
चारलाख तिर्यंच पंचेंडी ॥ चौदला
ख मनुष्य एवंकारे ॥ चौरासीलाख
जीवायोनीमांहिं॥ माहरे जीवे जे को
इजीव ॥ हण्योहोय हणाव्योहोय ॥
हणताप्रत्ये अनुमोद्योहोय ॥ तेसवे
हुं मन वचन कायाए करी ॥ मिढा
मि दुक्कडं ॥ इति ॥ ३१ ॥

(१४३)

॥ अथ अठार पापस्थानक ॥ ३२ ॥
पेहेले प्राणातिपात॥बीजे मृपावाद,
त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुन, पां
चमे परिग्रह, षष्ठे क्रोध, सातमे मा
न, आठमे माया नवमे लोभ, द
शमे राग, इग्यारमे द्वेष, बारमे क
लह, तेरमे अन्यायान, चौदमे पै
शून, पन्नरमे रति अरति, सोलमे प
रपरिवाद, सत्तरमे माया मृपावाद
अठारमे मिथ्यात्व शल्य, ए अठा
र पापस्थानमांदि, मारेजीवे जेको
६ सेव्युंहोय ॥ सेवराव्युंहोय सेवतां
प्रते अनुमोद्युं होय, ते सबे हुं मन
वचन कायाएकरी ॥ तस्स मिहामि
डुक्कडं ॥ इति ॥ ३२ ॥

(१४४)

॥ अथ सवस्सवि ॥ ३३ ॥

सवस्सवि देवसिअ उच्चिंतिअ ॥ इ
प्रासिअ उच्चिठिअ ॥ इहाकारेणसं
दिसह जगवनइहं ॥ तस्स मिहामि
उक्कमं ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ इहामि पम्भिकमीउं ॥

जोमेदेवसिउं अइआरोकउं ॥ ३४ ॥

इहां वंदितानो पाठ कहेतां प्रथम बधा मली
ने एकशो चोवीश अतिचार जे ठे ते क्रमे देखा
डिये ठैये. तेमांज्ञानाचार दर्शनाचार तथा चारि
चारना पत्येके आठ आठ अतिचार ठे. ए चो
वीश यथा तेषा सम्यक्त्वना पांच अतिचार मे
लवतां उगणंत्रीश आय अने बारव्रतना प्रत्येके
पांच पांच अतिचार करतां साठ अतिचार आय
ठे. ए सर्व नेव्यासी यथा. तेमां पन्नरकर्मादानना
मेलवीए तेवारे एकशोने चार आय. तेमां संक्षेप

(१४५)

एाना पांच तथा तपाचारना बार, अने वीर्याचारना त्रण. ए त्रणेना मली वीश अतिचार मेल वीए, तेवारे बधा मली एकशोने चोवीश अतिचार आयढे. ते सर्व अतिचार विवरीने आलोविये ठैये.

॥ अथ श्रावकपडिकमणासूत्र ॥ ३५ ॥

अथवा वंदिता सूत्र.

वंदितु सव सिद्धे॥ धम्मायरिएअ स

वसादुअ ॥ इहामि पडिक्कमिउं ॥

सावगधम्मा इअारस्स ॥ १ ॥

अर्थ—वंदितुं सव के० सर्व तीर्थंकर अने सिद्धे के० सिद्ध जे कृत्य कृत्य थया, मोक्ष पोहोता ठे. धम्मा यरिएअ के० श्रुत चारित्ररूप धर्मेना पालक तथा धर्मेना दातार ते धर्माचार्यप्रते अने चशब्दथी श्रुताध्यापक उपाध्यायप्रते सादुअ के० स्थविर कल्पादिक जेद निन्न अथवा मोक्षना साधक ते सर्व साधुउं, ए पांच परमेष्ठिने वंदितु के० वांदीने इहामि पडिक्कमिउंके० पडिकमवाने वांबुबुं. एटले

(१४६)

निवर्त्तवाने वांबुबुं. शायकी निवर्त्तवाने? ते कहेढे.
सावग धम्माइ आरस्स के० श्रावक धर्मनेविषे जे
अतिचारो लाग्या होय ते निवर्त्तवाने अर्थे ॥१॥

जो मे वया इआरो ॥ नाणे तह दं
सणे चरित्तेअ ॥ सुहुमोअ बायरो
वा ॥ तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ २ ॥

अर्थ—हवे सामान्यप्रकारे सर्व अतिचार पडि
कमे ढे. जोमेवयाइआरो के० जे मुजने व
त आश्री अतिचार लाग्या होय, तह के० तेमज
नाणे तह दंसणे चरित्ते के० ज्ञानाचारनेविषे, द
र्शनाचारनेविषे तथा चारित्राचारनेविषे अने चश
ब्द थकी तपाचार तथा वीर्याचार तथा संलेशणा
संबंधी अतिचार पण कहेवा. सुहुमं वा बायरं
वा के० सूक्ष्म एटले थोडो अतिचार अथवा
बादर एटले महोडो अतिचार वा के० अथवा ए
कशो चोवीशो अतिचारमांहे जे अतिचार लाग्या
होय, तं निंदेतंच गरिहामि के० तेप्रते आत्मानि

(૧૪૭)

સાચે નિંડું, અને ગુરુની સાચે ગરદું હું ॥ ૧ ॥
હવિહે પરિગ્રહંમિ ॥ સાવજે બહુવિ
હેઅ આરંજે ॥ કારાવણેઅ કરણે ॥

પડિકમે દેસિઅં સવં ॥ ૩ ॥

અર્થ—હવિહે પરિગ્રહંમિ કે૦ પ્રાચે પરિગ્રહજ
પાપનું મૂલ છે, તે માટે પ્રથમ પરિગ્રહ આશ્રી
કહેછે. તે બે પ્રકારનો પરિગ્રહ છે. તે કિયો ? એક
સચિત્તપરિગ્રહ તે જાનવર જે દિપદ ચતુષ્પદરૂપ.
અને બીજો અચિત્તપરિગ્રહ તે દ્રવ્ય અને આનૂષણ
દિક જાણવાં. અથવા અન્યંતર અને બાહ્યપરિગ્ર
હનેવિષે સાવજી બહુવિહેઅઆરંજે કે૦ પાપ
સહિત અનેકપ્રકારે જીવહિંસાદિક આરંજ છે,
એવા પરિગ્રહનો આરંજ કારાવણેઅ કરણે કે૦
બીજાની પાસેથી કરાવતાં, અને પોતે કરતાં—
ચશ્વદ્ થકી અનુમોદન કરતાં જે અતિચાર લા
ગ્યા હોય તે પડિકમ્મે દેસિયં સવં કે૦ દિવસ
સંબંધી સઘળાં પાપથી પડિકમું—નિવર્તું હું. ॥ ૩ ॥

(१४८)

जं बद्ध मिंदिएहिं ॥ चउहिं कसाएहिं
अपसढेहिं ॥ रागेणव दोसेणव ॥
तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥

अर्थ—हवे ज्ञानाचारना अतिचार आलोवेढे.
जं के० जे अशुन ज्ञानावरणीकर्म, बद्धमिंदिएहिं
के० पांचेंडिये करी बांध्युं तथा चउहिंकसाएहिं
के० चार कपाये करी बांध्युं. ते कपाय केवाढे ?
तो के अपसढेहिं के० अप्रशस्त एटले घणा
माठाढे. ते क्रोधादिक कपाये करी ज्ञानवंतनी
निंदाकरी तथा रागेणव के० रागे करी, अने दो
सेणव के० ढेपेकरी ज्ञानाचारना जे अतिचार
लाग्या तं के० ते अतिचारप्रत्ये निंदे के० आत्मा
नी साखे निंडुबुं. च के० वली तं के० तेप्रत्ये गरि
हामि के० गुरुनी साखे गरहुं ॥ ४ ॥

आगमणे निग्गमणे ॥ ठाणे चंकम
णे अणानोगे ॥ अजितगेअ नित
गे पडिक्कमे० ॥ ५ ॥

अर्थ—हवे दर्शनाचारना अतिचार आलोवे ठे. मिथ्यात्वीना उत्सवादिक जोवाने आगमणे के० आवतां निगमणे के० जातां, तथा मिथ्यात्वीना ठाणे के० स्थानके उजा रहेतां चंकमणेके० फरतां एटले तिहांज अरहां परहां फरतां अणानोगे के० अनानोगे उपयोग रहित फरतां उजा रहेतां, तथा अनिउगे के० राजादिकने बलात्कारे, वली निउगे के० मंत्री अथवा श्रेष्ठी प्रमुखनी आज्ञा केलवतां एटले राजा प्रमुखना अधिकार केलव तां?—जोडतां जे पाप बांध्युं, ते पडिक्कमे के० प डिकमुंनुं. देसिअंसवंचे० दिवससंबंधी सम्यक्त्वना अतिचार लाग्या होय, ते आश्री सर्व. इहां सर्वत्र पन्तिकमे देसिअंसवंचे० एम कहिए, पण देवसि अंस वंचे० एम न कहिए. केमके प्राकृते वकारनो लोपथाय ठे. तेमाटे. इहां प्रजाते राइअंस कहिए, अने पांखि ए पस्किअंस कहिए, तथा चोमासिए चोमासिअंस संवळरिए संवळरिअंस वंचे० एम कहिए. इत्यर्थ॥५॥

(१५०)

संका कंख विगिह्वा ॥ पसंस तह सं
थवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इत्था
रे ॥ पम्भिकमे० ॥६ ॥

अर्थ-जिनवचननेविषे संदेह करवो ते संका
के० संका कहीए. कृमादिक गुण देखी अन्य दर्श
नीनो अनिलाप धरे ते, कंखके० आकांक्षा कहीए.
धर्म कखानुं फल ठे के नथी एहवो संदेह धरवो
ते विगिह्वाके० वचिकित्सा, अथवा साधुनां शरीर
तथा वस्त्र मलीन देखी निंदा करे ते वि० कुपत्सा
कहीए. तथा मिथ्यात्वीनी पसंसके० प्रशंसा एटले
अहो आ महोठो तपस्वी ठे!! इत्यादिक बोलवुं त
हके० तेमज संथवो कुलिंगीसु के० कुलिंगी जे
मिथ्यात्वी तेनी साथे संस्तव परिचय, करे ए दर्श
न मोहनीयकर्म कृत्योपशमादिके उपनुं जे जिनप्र
णिततत्व श्रद्धानरूप शुन आत्मपरिणामरूप
जे सम्मत्तस्स के० सम्यक्त्व, तेना ए पांच अइथा

રે કે૦ અતિચારઠે. તે આશ્રીને જે દિવસ સંબંધી
પાપ બાંધ્યું, તે સર્વ પડિકમુહું ॥ ૬ ॥

ઠક્કાય સમારંજે ॥ પયણેઅ પયાવ
ણેઅ જેદોસા ॥ અતઠાય પરઠા ॥
ઝનયઠા ચેવ તંનિંદે ॥ ૭ ॥

અર્થ—દ્વે ચારિત્રાચારના અતિચાર આણો
એઠે. ઠક્કાય સમારંજે કે૦ પૃથ્વીકાયાદિક ઠ
કાય જીવોનો સંઘટ, પરિતાપ, ઉપડ્વ તે સમારં
જ કહીએ. પયણે પયાવણે કે૦ પચતા એટલે પો
તે રાંધતાં—પચાવતાં તે બીજા કને રંધાવતાં
તેથી જે દોસા કે૦ જે દોષ એટલે અતિચાર જા
ગ્યા હોય તેમાં અતઠાય કે૦ આત્માર્થ, તે પોતાને
કાજે તથા પરઠા કે૦ પર જે પ્રાદુણાદિક, તેમને
અર્થે અને ઝનયઠા કે૦ ઝનયાર્થે એટલે પોતાને
તથા પરને એ બેદુને અર્થે પચતાં—પચાવતાં નિર
ર્થક રાગ દેપાદિકે કરી જે દોષ જાગ્યા તં કે૦
તે દોષને નિંદે કે૦ નિંડુ હું. ॥ ૭ ॥

(१५२)

पंचएह मणुवयाणं ॥ गुणवयाणंच
तिएह मइयारे ॥ सिस्काणंच चउएहं
पडिक्कमे० ॥ ८ ॥

अर्थ—हवे बारव्रतना अतिचार कहेगे. पंच
एहमणुवयाणं के० पांच अणुव्रतना, अने गुण व
याणंच तिन्हमइयारे के० त्रण गुणव्रत, तेना
जे अतिचार तथा सिस्काणं चउन्हं के० चार
शिक्काव्रतना. ए बारे व्रतना अतिचार आश्रीने
पाप बांध्युं ते दिवससंबंधी सर्व पापने पडिकमुंहुं.

पढमे अणुवयंमि ॥ थूलग पाणाइ
वाय विरईउं ॥ आयरिअ मप्पसत्ते ॥
इत्थ पमाय प्संगेणं ॥ ९ ॥

अर्थ—पढमे अणुवयंमी के० सर्वव्रतो मांहे
मुख्य एहवा पांच अणुव्रतनेविपे प्रथम अणुव्रत
ते थूलग के० महोटा बादर एटले प्रगटलिंग ए
वा, जे बैडियादिक जीवो तेनो प्राण ते गमन आ

(१५३)

गमन प्रमुखेकरी जे पाणाइवाय के० प्राणातिपात
एटले हिंसा, तेथी विरइउ के० विरति एटले नि
वृत्यो हुं, तेम ठतां जे कोइ प्राणातिपात आयरि
य के० आचखुं होय, एटले वदय वध बंधादिके
करी अप्सत्ते के० अप्रशस्त जे, माठा क्रोधादिक
उदयिक जाव ठते आचखुं, होय ते इउ के० इहां
पहेला व्रतनेविपे मद्यादिक पांच प्रकारनो प्य
माय के० प्रमाद, तेने प्यसंगेणं के० प्रसंगे करी
जे अतिचार लाग्या ते गाथाए करी कहेबे. ॥ए॥

वह बंध ठविठेए ॥ अइ जारे नत्त
पाण वुठेए ॥ पढम वयस्स इअारे॥
पडिक्कमे० ॥ १० ॥

अर्थ—क्रोधादिकने वश थको द्विपद चतुष्पदा
दिक जीवोने निर्दयपणे लाकडी पाटु प्रमुखेकरी
मारे ते वध कहिए. निर्दयपणे दोरडादिके आक
रा बंधने बांधवुं ते बंध कहिए. बजद समारवा
कर्ण नासिकानो ठेद तें ठविठेद कहिए. पोठीआ

गाडलां प्रमुख उपर जेटलो नार लोकप्रसिद्धे,
 ते प्रमाणथी उपरांत लोचने वश थको निर्दय
 पणे नरे ते अतिनारारोपण अतिचार कहीए.
 पांचमो नत्तपाण बुह्णए के०जात पाणीनो विह्वेद
 करे, निषेध करे. एटले बलदादिकने चारो पाणी
 न आपे अथवा आपे तोपण वेलासर आपे
 नहीं, ए पढमवयस्सअइआरे के० प्रथम अ
 णुव्रतना पांच अतिचारआश्री जे कांइ दिवस
 संबंधी अतिचार लाग्या ते सर्व पडिक्कमुंनुं॥१०॥

हवे बीजुं अणुव्रत कहेते.

बीए अणुव्रयंमि ॥ परियूलग अलि
 अ वयण विरईउ ॥ आयरिअ मप
 सते ॥ इउ पमाय प्संगेणं ॥११॥

अर्थ—बीए अणुव्रयंमीके०बीजा अणुव्रतनेवि
 पे परियूलगके० अति मोहोटका अलिअ के०अ
 लिक एटले जूठां,असत्य वयणके०वचन बोलवां,
 जेथकी अपयश आय. तेनी विरईउके०विरति क

રી છે. તે પાંચ અતિ મહોટકાં જૂઠ કહે છે. એક કન્યાલિક, જે નિર્દોષ કન્યાને સદોષ કહે, અને સદોષ કન્યાને નિર્દોષ કહે. એમાં દ્વિપદ સંબંધી જે જૂઠું બોલવું તે સર્વ જાણી લેવું. બીજું ગવાલિ ક તે થોડું ડુધ આપનાર ગાયને ઘણું ડુધ આપ નારી કહે, અને ઘણું ડુધ આપનારી ગાયને થોડું ડુધ આપનારી કહે; એટલે ચતુષ્પદ વિપચિક સ મસ્ત જે જૂઠ તે એમાં આવે છે. ત્રીજું નૂમ્યલિક તે પારકી જમીનને પોતાની કહે. અથવા ડ્વ્યાદિક સંબંધી જે જૂઠું બોલવું તે સર્વ એમાં આવે છે. ચોથું ન્યાસાપહાર એટલે સ્થાપણ મોસો, અને પાંચમું કુ ડીસાચ તે મત્સરને લીધે અથવા લાંચલેડને જૂઠી સાક્ષી આપે, તથા કુડા કરહાનું કાઢવું, વિશ્વાસઘાત કરવો. એ પાંચને વિષે અપ્પસભે કે ૦ અપ્રશસ્ત એટલે માઠાં એવાં જે ક્રોધાદિક—તેના વશ ચકી સ્વો ડું વચન આચરિય કે ૦ આચર્યું હોય. તે ઇશ્વ કે ૦ ઇહાં બીજા વ્રતને વિષે પમાય પસંગેણ કે ૦ પ્રમાદને પ્રસંગે કરી જે પાપ લાગ્યાં તે પડિક્કમુવું ॥ ૧૧ ॥

(१५६)

ते पापरूप पांच अतिचार ठे, ते नाम लेइ कहें ठे
सहसा रहस्स दारे ॥ मोसुवएसेअ
कूडलेहेअ ॥ बीअंवयस्स इअारे ॥
पडिक्कमे० ॥ १२ ॥

अर्थ—सहसा के० सहसात्कारे अणविचाखुं
कोइने जूतुं आलआपे; एटले कोइना उपर कलं
क चढावे, ते प्रथम सहसान्याख्यान. कोइने ठा
नी वात करतां देखी कहेंके, तमे अमुक अमुक
राज्यविरुद्ध वात करता हता, एम कहें; अथवा
पारका मर्म प्रकाश करे ते, बीजो रहोन्याख्यान
अतिचार जाणवो. सदारेके० पोतानी स्त्रीए अथ
वा मित्रादिके पोतानी कांइ ठानीवात कही होए,
तेवात बीजा आगल प्रगट करे; एटले साचुं वचन
पण परने पीडाकारी अवाथी जूतुं जाणवुं. ते त्री
जो स्वदारामंत्रनेइअतिचार जाणवो. मोसोवएसे
के० मृपोपदेश ते अज्ञान मंत्र, अज्ञान औपधादि
क शीखवाडे अथवा कोइने कंठमां पाडवाने अ

(१५७)

र्थे कूडी बुद्धि आपे ते, चोथो मृपोपदेशअतिचार
जाणवो. कूडलेहेअ के० कूडालेख एटले जुठा
कागल, लेख, खत, पत्र प्रमुख करवा इत्यादिक म
सिजेद सर्व एमां आवेढे. ए बीअंवयस्सइआरेके०
बीजा व्रतना पांच अतिचारढे, ते आश्रीने जे पा
प लाग्युं ते दिवससंबंधी सर्व पापने पढिक्कमुढुं
॥ १२ ॥ हवे त्रीजुं अणुव्रत कहेढे

तइए अणुवयंमि ॥ थूलग परदव
हरण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसढे
इउ पमाय प्पसंगेणं ॥ १३ ॥

अर्थ—तइएअणुवयंमि के० त्रीजा अणुव्रतने
विषे थूलग के० महोटा जेणेकरी चोरीपणु
चढे, एवा परदवहरण के० पारकुं इव्य लेवानी
जे विरईउ के० विरति करीढे ते वद्ध्यमाण सेना
हतादिक अपसढे के० अप्रशस्त नावेकरी आय
रिअ के० आचखुं, इउपमाय के० इहां त्रीजाव्रत

(૧૫૬)

નેવિષે પ્રમાદને પ્રસંગેકરી જે અતિચાર લાગ્યા
તે નામે કરી પ્રગટ કહેહે ॥ ૧૩ ॥

તેનાહડ પ્પતંગે ॥ તપ્પડિરૂવે વિરુ
ઘ ગમણેઅ ॥ કૂડ તુલ કૂડમાણે ॥
પડિક્કમે ॥ ૧૪ ॥

અર્થ—પ્રથમ તેનાહડ કે ૦ સ્તેનાહત એટલે
ચોરની આણેલી કેસર કસ્તુરિઆદિકા બહુમૂલ્ય વ
સ્તુ,તેને સોંધી જાણી લોએ. બીજું પ્પતંગે કે ૦ પ્રયો
ગે એટલે ચોરને ઝજમાલ કરી સઘાડ મેલવી આ
પે,સ્વરચાદિક સંબલ આપી ચોરી કરાવે. ત્રીજું ત
પ્પડિરૂવે કે ૦ તત્પ્રતિરૂપ એટલે જે વસ્તુ જેમાંહે
મલે તે વસ્તુ તેમાંહે સંજેલ કરે, જેમ ઘડુંના લોટ
માંહે જુવારનો લોટ, તથા ઘૂતમાંહે તૈલ, ગોલમાં
હે રાઘ, અને અર્ધજુનું વસ્ત્ર નિશ્વરાવી રંગાવી
નવાને મૂલે વેચે, અથવા કારમી સિંદૂર કપૂર અ
ફિણાદિક વસ્તુ હોય તે સ્વરાને મૂલ્યે વેચે, સૂત્ર
કપાસાદિક પાણીએ નીજાવીને વેચે,લવિંગ જાય

(१५९)

फलादिकमांहे डुधनुं पोतु दिए, ए सर्व तत्प्रतिरूप
 नामे त्रीजो अतिचार जाणवो चोथो विरुद्धगमणे
 अ के० विरुद्धराज्यातिक्रम एटले राजाना वयरी
 ना देशमांहे अथवा तेना कटकमांहे ज्यां राजाए
 निवायुंहोय ते स्थले धान्यादिकना आकरा नाव
 जाणीने लोननो वाह्यो राजाथी ठानो त्यां जइ
 वेचे, ए जो राजा जाणे तो अनर्थमां पडे, ते माटे
 राज्यविरोध न करवो. ए चोथो अतिचार जाणवो
 पांचमो कूडतुल्ले के० कूडां तोलां कूडमाणे एटले
 कूड मापां करे, उठे मापे आपे, अधिके मापे लीए, जे
 थकी राजदंम ऊपजे, ए त्रीजा व्रतना पांच अतिचा
 र आश्री जे कांइ दिवससंबंधी पाप लाग्युं ते सर्व
 पडिक्कसुंतुं ॥ १४ ॥ हवे चोथुं अणुव्रत कहेहे.

चउठे अणुव्रयंमि ॥ निच्चं परदार ग

मण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पस

हे ॥ इठ पमाय प्पसंगेणं ॥ १५ ॥

अर्थ—चउठेअणुव्रयंमी के० चोथा अणुव्रतने

(१६०)

विषे निचंके० नित्य-सदैव-निरंतर परदारगमण
 के० बीजाए परणेली अथवा बीजाए संग्रही जे
 स्त्री, तेनुं गमन एटले सेवबुं, तेथी विरडुंके० वि
 रति करीढे. एटले तेनो निषेध कस्योढे, तेने मण्य
 सत्तेके० अप्रशस्त जावेकरी अपरिगृहिता गमना
 दिक ने आयरिअके० आचखुं होय तेइछपमाय
 के० इहां चोथाव्रतने विषे प्रमादने प्रसंगेकरी जे
 अतिचार लाग्या ते नामेकरी प्रगट कहेढे ॥१५॥

अपरिगृहिआ इतर ॥ अणगं वी
 वाह तिघ अणुरागे ॥ चनुढं वयस्स
 इआरे ॥ पडिक्कमे० ॥ १६ ॥

अर्थ-प्रथम अपरिगृहिआके० अपरिगृहि
 तागमन ते जे स्त्री परणी नथी, एटले कुमारिका
 होय अथवा जे विधवा होय ते अपरिगृहिता
 कहीए, तेने सेवे. तेमज श्राविकाने पण कुंआरा
 अथवा रांम्या पुरूषनी वांढाकरतां पहेलो अति
 चार लागेढे. बीजुं इतर के० इतर परिगृहिताग

मन ते जे,कोइके कंटलाक कालसुधी जाहुं आपी
 ने वेस्यादिकने स्त्रीने स्थानके राखेली होय,ते स्त्रीनुं
 सेवन करे.तेमज स्त्री पोतानी सोक्यनो दिवस हो
 य तेनुं निवारण करी नर्त्तारने सेवे ते बीजो अ
 तिचार जाणवो.त्रीजो अणंगके० कामतेनी क्रीडा
 जे आलिंगन,गालप्रमुखे चुंबन,होठदंसे अने स्तन
 मर्दनादिक परस्त्रीने करे,अथवा कंदर्पनां चोराशी
 आसन सेवे,अथवा पुरुषचिन्ह टाली साथले-अं
 गुठादिके मैथुन सेवे, ते त्रीजो अनंगक्रीडा अति
 चार कहिए. चोथो विवाह के० परविवाहकरण
 अतिचार.ते पोतानां ठोरू टाली परना विवाह,य
 श लेवाने अर्थे जोडे ते परविवाहकरण अतिचार
 जाणवुं. पांचमो तिब्बअणुरागे के०तीव्रानुराग, ए
 टले पोतानी स्त्री उपर तीव्रानिलाष धरे, अथवा
 शरीर बलवंत करवाने अर्थे नांग.अफीण,पोस्त,
 चूर्ण,गोली,रसांगादिक आरोगे,दिवसे स्त्रीसेवा क
 रे, ते कामनोगतीव्रानिलाषअतिचार जाणवो. ए
 चौथाव्रतना पांच अतिचार आश्री जे कांइ दिवस

(१६१)

संबधी पाप लाग्युं होय ते सर्व पडिक्कमुंढुं.॥१६॥

हवे पांचमुं अणुव्रत कहेढे

इतो अणुवए पंच ॥ मंमि आयरि

अ मप्पसंढंमि ॥ परिमाण परिहेए ॥

इह पमाय प्संगेणं ॥ १७ ॥

अर्थ—इतो अणुव्रतपंचमंमि के० ए चोथा पढी पां
चमां अणुव्रतनेविषे अप्पसंढंमि के० अप्रशस्तना
वे करी धनधान्यातिक्रमादिकने आयरिअ के० आ
चखुं परिमाणा परिहेए के० परिग्रहना परिमाण
नुं जे कांइ परिहेद एटले उलंघन कखुं होय; ते
इहपमायप्पसंगे के० इहां पांचमे व्रते प्रमादने
प्रसंगेकरी जे अतिचार लाग्या ते कहेढे. ॥१७॥

धण धन्न खित्त वड्डू ॥ रुप्प सुवन्ने

अ कुविअ परिमाणे ॥ डुपए चउप्प

यंमि ॥ पडिक्कमे० ॥ १८ ॥

अर्थ—धणधन्न के० तेमां धन चार प्रकारे ठे

एक गणिम जे नंग गणीने वेचाय, ते नालीएरादिक
 कोडीबंध जाणवुं. बीजुं धरिम जे तोलीने वेचाय,
 ते गोल डाकू चोपड प्रमुख जाणवुं. त्रीजुं मेय जे
 मय्युं वेचाय, ते लूणादिक जाणवुं. चोथुं परिठेय
 जे परखोने वेचाय, ते नाणु-सुवर्ण, मोती, माणि
 क्य प्रमुख जाणवां, ए चार प्रकारे प्रथम धनप
 रिग्रह जाणवो. बीजुं धान्य ते गोधुम शालि मुगा
 दिक सर्व जातनुं, ते परिमाण ऊपरांत थयुं देखी
 ने ज्यांसुधी आगलुं वेचाय नही त्यांसुधी बीजाने
 घेर रखावे, अथवा संचकार आपी मूके, कोठा अथ
 वा मुडानुं परिमाण कीधुं होय तो ते न्हानाने बद
 ले महोटा बंधावे, ते प्रथम धनधान्यातिक्रमअ
 तिचार कहिए. बीजो खित्तवबु अतिचारठे. तेमां
 क्षेत्र त्रण प्रकारनांठे. एक शेतुक्षेत्र जे अरहट्टने
 पाणीए नीपजे. बीजुं केतुक्षेत्र जे वरसादने पा
 णीए नीपजे. त्रीजुं उजय क्षेत्रजे, बेहु पाणीए नी
 पजे. ए त्रण प्रकारनां क्षेत्र, तथा वस्तु के० घर,
 हाट, वखार प्रमुख ते पण त्रण प्रकारेठे. एक खात

जे नीचे जमीन खोदीने करीए ते जोंयरादिक जाणवां
बीजुं ऊहित ते मालिआदिक जे ऊंचा चणावीए ते जा
णवां. त्रीजुं खातोहित ते ज्यां खणवुं चणवुं एट
ले जोंयरूपण करीए, अने उपर मालपण चणावीए
एम बंने वानां करीए. गाम नगरादिक पण वास्तुमां
हेआवे, तेनुं परिमाण अतिक्रमे; ते आवीरीते जे,
एक क्षेत्र मोकलुं होय अने बीजुं लेवरावे, तेवारे
नियमनंगना जयथी पूर्वना क्षेत्रनी वाड जांगीने
बन्नेनु एक क्षेत्र करी मूके तथा घर हाट वखार
प्रमुख अधिकां यतां देखीनै वचमांनी नींत त
था मोन पाडीने एक करी मूके ए क्षेत्र वास्तुपरि
माणातिक्रम बीजो अतिचार जाणवो. त्रीजुं रूप्य
सोवन्नेय के० रूपा सोनानो नियम ऊल्लंघे. अधि
क यतुं देखीने जार्यादिकना नाम ऊपर करी मू
के; ते रूप सुवर्ण परिमाणातिक्रम त्रीजो अति
चार जाणवो. चोथुं कुविअपरिमाणे के० सोनु त
था रूपु टाली बाकीनी समस्त धातुना त्रांबडा,
थाली, कलसीआ, वाटकाइ, चरू खाटला पाटला

(૧૬૫)

પ્રમુખ સમસ્ત ઘર વાઘરો જે હોયઢે, તેને કુપ્પ કહી
ૡ.તેનું પરિમાણ અતિક્રમે, અથવા દશનાજન રાઘ
વાં; કપરાંત રાઘવાનો નિયમ હોય, અને તેથી વધ
તાં થાય, તેવારે તે નાજન નાંગી નંઘાવી મહોટાં કરી
ને સંઘ્યા ૡ દશજ રાઘે, તે કુપ્પ પરિમાણાતિક્રમચો
થો અતિચાર જાણવો. પાંચમો ડુપ્પ ૡ ચક્રપર્યંમિકે ૦
દ્વિપદ ચતુષ્પદ પરિમાણાતિક્રમ, તેમાં દ્વિપદ તે ગા
ડાં વહેલ. દાસ, દાસી, રાંધણી, વાણોતર પ્રમુખ; અને
ચતુષ્પદ તે ગાય નેંસ ડ્યાદિક જાણવાં. તેનું પરિમા
ણાતિક્રમે—તે નિયમ કપરાંત થતા જાણી ગર્ને ઘ
હણ ઘણું મોંઢું કરાવે, તથા વેચે, તે દ્વિપદ ચ
તુષ્પદ પ્રમાણાતિક્રમ પાંચમો અતિચાર જાણવો.
ૡ પાંચમા વ્રતના પાંચ અતિચાર આશ્રી જે દિવસ
સંબંધી પાપ જાગ્યું હોયતે સર્વ પડિકમુઢું ॥ ૧ જા

ગમણસસન પરિમાણે ॥ દિસા નુ ડહું
અહેઅ તિરિઅંચ ॥ વુઢ્ઢિસડ અંતર
ધ્વા ॥ પઢમંમિ ગુણવૡ નિંદે ॥ ૧ૡ ॥

अर्थ—हवे प्रथम दिग् विरमण व्रत कहेते चार दिशि, चार विदिशि, ऊर्ध्व ने अधो ए दशदिशाए गमणस्सयपरमाणो के० जावा आववानुं परिमाण करे, तेना पांच अतिचार कहेते. प्रथम दिसा सुउठके० ऊर्ध्वदिशिनुं परिमाण अतिक्रमे, बीजो अहेअ के० अधोदिशिनुं परिमाण अतिक्रमे त्री छुं तिरिअंचके० तिठरुं—ए पदथकी चारदिशि अ ने चारविदिशिनुं परिमाण अतिक्रमे, अथवा नियमजंग थवाना जयने लीधे वाणोतर प्रमुखने मोकले; ए त्रीजो अतिचारजाणवो. चोथो बुढिके० बे दिशिए शो शो योजन जवानुं परिमाण कखुं होय, तेमां एकदिशिए कामविशेषे दोढशो योजन तथा बीजी दिशिए पचाश योजनप्रमाण करे, सरवा ले सरखुं मेलवी लिए, ते चोथो क्षेत्रवृद्धिअतिचार जाणवो पांचमो सइअंतराके० स्मृतिनुं अंतर्का न एटले नियमजूमिका स्मरणमां न रहे, जे कइ दिशिए केटला योजन नियम ठे? एवो संदेह ठते आधो जाय. ए पांच अतिचार ते पढमंमिगुणवए

(१६४)

के० पहेला गुण व्रतनेविषे निंदे के० निंडुहुं-
॥ १९ ॥ हवे बीछुं ऊपनोग परिनोग परिमाण
गुणव्रत कहेढे

मसंमिअ मसंमिअ ॥ पुप्फेअ फ
लेअ गंधमल्लेअ ॥ नवन्नोगे परिन्नो
गे ॥ बीअमि गुणवए निंदे ॥ २० ॥

अर्थ-मसंमि के० मदिरा अके० बावीश अ
नदय मसंमि के० मांस अके० च शब्दे बत्रीश
अनंतकाय पुप्फ के० फूल महुडां कइरडां प्रमुख
ना जाणवा च शब्दथी जे त्रस जीवोए संसक्त ए
वां नागरवेलीनां पत्रादिक जाणवां. फलेके० फल
ते जांबु, बीलां, पीजूडां पीचू बोर, पाकां करमदां,
एमांहे त्रस जीव कुंशुआ प्रमुख होय; तेमाटे त्या
ज्यढे ए वस्तु खाधामांहे वपराय ते कही. हवे बाहेर
ना नोगमां आवे तेवी वस्तु कहेढे. गंधके० गंधद्रव्य
ते कस्तूरि, जवाधि, कर्पूरादिक जाणवां. मल्लेअ
के० मात्य ते केतकी चंपकादिकनां फूल, ते नोग

हेतुए वावरे तेमां जे फूलमां जेटली पांखडी होय ते
 फूले तेटला जीवो जाणवा.ऊपजोग परिजोगके०
 ए पूर्वोक्त वस्तुनो उपजोग परिजोग करतां थकां
 बीअंमिगुणवएनिंदे के० ए बीजा गुणव्रतनेविषे
 जे अतिचार लाग्या ते निंडुबुं ॥ २०॥ हवे ए सा
 तमा व्रतना पांच अतिचार कहेबे.

सच्चित्ते पडिबडे ॥ अण्णोल डुण्णो
 लिअंच आहारे ॥ तुढोसहि चरक
 णया ॥ पडिक्कमे० ॥ २१ ॥

अर्थ-सच्चित्तेके० समस्त सचित्तनो नियम हो
 य, अथवा सचित्तनुं परिमाण कखुं होय, तेथी
 अधिकुं सचित्त लिए ते सचित्ताहार नामा प्रथम
 अतिचार जाणवो. तथा पडिबडेके० सचित्तप्रतिबं
 ध एवा सचित्तनो नियम होय,अने वृद्धी उखेडी
 गुंदर अचित्तनीबुद्धिए वापरे,अथवा आंबा गोटली
 सहित,अने रायण कलीआसहितमुखमां घाले,ते
 सचित्तपडिबडेके० सचित्तप्रतिबंहाहारबीजो अति

(૧૬૯)

ચાર જાણવો તથા અપક્કકે ૦ અપક્કવાહાર એટલે જે
 ને અગ્નિનો સંસ્કાર કીધો નહોય, અથવા પીસ્યા પ
 ઢી કાચો લોટ કેટલાક દિવસ મિશ્ર રહે, પઢી અ
 ચિત્ત થાય. કેમકે સિદ્ધાંતમાં કહ્યું છે કે, અણચાલ્યો
 લોટ શ્રાવણ અને જાડવે માસે પાંચ દિવસ મિશ્ર
 રહે પઢી અચિત્ત, થાય આસો માસે ચારદિવસ મિશ્ર
 રહે, તથા કાર્તિક, માર્ગશીર્ષ અને પૌષ, એ ત્રણ માસે
 ત્રણ દિવસ મિશ્ર રહે, મહા તથા ફાલ્ગુને પાંચ પ્રહ
 ર મિશ્ર રહે, ચૈત્ર વૈશાખે ચાર પ્રહર મિશ્ર રહે. જ્યેષ્ઠ
 તથા આષાઢે ત્રણ પ્રહર મિશ્ર રહે, પઢી અચિત્ત થા
 ય. તે કાચો લોટ પીસવા નળી અચિત્ત બુદ્ધિ લીધે
 તે અપક્કૌષધિ નરૂણ ત્રીજો અતિચાર જાણવો. ડ
 પ્પોલિઅંચ કે ૦ ડુ:પક્કાહાર તે કાંડક પાકો અને
 કાંડક કાચો એવા ઝંલા, ઝંબી, પોંક પાપડી પ્રમુ
 ખ-તેનું જે નરૂણ તે ડુપ્પોલિઅંચ આહારે કે ૦ ડુપ
 ક્વૌષધિ નરૂણ ચોથો અતિચાર જાણવો. તુહોસ
 હિનસ્કણયા કે ૦ તુહૌષધિ નરૂણ તે તુહ, અસા
 ર, જે ઘણુ ઝાવાથી પણ તૃપ્તિ ન થાય, એવી જે ઔ

षधि कुंजी फली रूप ते तुह्य अचित्ते करी जो वा
 परे तो ए तुह्यौषधिनक्षत्र नामे पांचमो अतिचा
 र लागे. जेहने सचित्त खाधानो नियम होय तेने
 ए पांच अतिचार संजवे. ए अतिचार आश्री जे
 दिवस संबंधी पाप लाग्युं ते सर्व पडिक्कमुबुं॥२१॥

हवे जे गृहस्थ आजीविकाना हेतुए कुव्यापार
 करे, तेने पण जोगोपजोगज कहीए, ते पांच क
 र्म पांच वाणिज्य, अनेपांच सामान्य—एवं पन्नर
 कर्मादानढे; ते अत्यंत घणा कर्मो उपार्जन कर
 वानां कारणढे. तेमाटे एमने कर्मादान कहीए.
 ते गृहस्थे जाणवा पण आचरवा नहीं. तेना प
 न्नर अतिचार बे गाथाएकरी कहेढे.

इंगाली वण साडी ॥ जाडी फोडीसु
 वझए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दंत ॥
 लख रस केस विस विसयं ॥ २२ ॥

अर्थ—इंगालीके ० अंगारकर्म ते काष्ठ बाली अं
 गारा करीने वेचे. सोनार, कुंजार, लोहार, जाड्युं

જાનું કર્મ, ઇંટવાડોકરવો ઇત્યાદિક જેટલું અગ્નિ ને આરંજે નીપજે તે સર્વ અંગારકર્મ જાણવું.

બીજું વણકે ૦ વનકર્મ. તે ઢેયાં અથવા અણ ઢેયાં વન આશ્વાં વેચે. પાન ફલ ફૂલ લીલાં તૃણ કાષ્ઠ અને કંદ વેચે, વાડી વનસ્વંન કરાવે, આજીવિ કા હેતુએ કણ દલે, દલાવે, સ્વાંમે, સ્વંમાવે તે વનકર્મ.

ત્રીજું સાડીકે ૦ શકટકર્મ, તે શકટના અવયવ ધૂંસરી ધૂંસરા સમોલ પ્રમુખ ઘડે, ઘડાવે, ઘડાર્વીને વેચે વેચાવે તે શકટકર્મ જાણવું.

ચોથું નાડીકે ૦ નાડીકર્મ તે ગામાં, બલદ, ડેંટ જેંસ, સ્વર, વેસર ઘોડા એડ રાશ્વી પારકો નાર વ હાવે પોતે નાડું લીએ; એમ જે આજીવિકા નિમિત્તે કરે તે નાડીકર્મ જાણવું.

પાંચમું ફોડી સુવજ્ઞાન કર્મને ૦ ફોડીકર્મ. તે કુવા વાપિ તલાવ પ્રમુખ સ્વણે સ્વણાવે, ડેંડ લોકોનું અથવા શિલાટનું કામ કરે, હલ દંતાલીએ નૂમિસેડે, સ્વાણ ટાંકું સ્વણાવે ઇત્યાદિક જેટલો પૃથ્વીનો આરં જ તે સર્વ ફોડીકર્મ જાણવું એ પાંચકર્મ વર્જે ઢાંમે

હવે પાંચ કુવાણિજ્ય કહેઢે.ચેવ પદપૂર્ણાર્થઢે. તેમાં પહેલો દંતકે ૦દાંત કુવાણિજ્ય.તે હાથીદાંત ચમરી, ગાયના વાલના ચમર, મત્સ્યાદિકના નચ, સંચ, કોમા, ચીમ, પોડસા, કસ્તૂરિ મુક્તાફલ તથા વાઘ, ચિતરા, અને મૃગાદિકનાં ચર્મ નાથ ડીબઠ હિંગ હાંસરૂ પ્રમુખ રોમ ઇત્યાદિક ત્રસજી વોના અંગનું વાણિજ્ય એમાં આવેઢે તે જો આગરે જડ વહોરે તો ઘણો દોષ લાગે.

બીજો લક્ષકે ૦લાચ કુવાણિજ્ય,તે મણશિલ, ટંકણચારાદિક વસ્તુ. એચકી બાહેરના જીવોનું મૃત્યુ થાય તેમાટેએ સદોષઢે. ગુલી ઘણા જીવોના વધચકી નીપજેઢે, અને ધાવડી તથા મચ પ્રમુખનો વ્યાપાર તે સર્વલાચ કુવાણિજ્ય કહેવાયઢે.

ત્રીજો રસવાણિજ્યતેમાં ચાંદ ઘી તેલ ગોલ મચ પ્રમુખનો વ્યાપાર, તે સર્વ રસવાણિજ્ય કહેવાયઢે
ચોથો કેસકુવાણિજ્ય.તેમાં દ્વિપદ તે મોર સૂઢા પ્રમુખ,અને ચતુઃપદ તે ગાય, નેંસ,બલદ,ઘોડા, ઠાલી પ્રમુખનો વ્યાપાર,તે કેસવાણિજ્યમાંહે આવેઢે.

(१७३)

पांचमो विसविसयं के० विषवाणिज्य. विष ते सोमलखार, सींगीउ वहुनागादिक कटारी,बुरी,धनुष्य,बाण, कुहाडादिक शस्त्र,तथा सन्नाह पाखर प्रमुख. जेना बले करी संग्राममां घणा जीवोनो संहार थाय तथा हल,कोदाल घंरटी,ऊखलो, साबु हरिआल,जांग,अफीण, पोस्त इत्यादि समस्त कुवस्तुनो जे व्यापार,ते विषकुवाणिज्य कहोए.॥२१॥

एवं खु जंतपिह्ण ॥ कम्मं निह्णं

एंच दवदाणं ॥ सर दह तलाय सो

सं ॥ असई पोसंच वज्जिजा ॥ २३॥

अर्थ:-हवे पांच सामान्य कर्म कहेहे. एवंके० एमखुके० निश्चे जंतपिह्णकम्मं के० यंत्रपीलण कर्म, ते घाणी घंटी कोहोलु, चरखा करावे नीसा घंटी ऊखल मुसल कांकसी प्रमुख करीने वेचे, ते यंत्रपीलन कर्म कहोए.

बीजुं निह्णं के० निर्लीढन कर्म. ते घोडा बलदनां नाक वीधावे, आंक पडावे,समरावे,कर्ण

કંબલ પૂઢડાં ભેદાવે, કોટવાલપણુ કરે, ઈજારે ગા
મ એલિ આકરા કર કરે. ઇત્યાદિક જેટલું નિર્દ
યપણાનું કામભે તે સર્વ નિર્લાભન કર્મ કહીએ.

ત્રીજું દવદાણં કે० દવદાન કર્મ તે વ્યસનને
માટે, અથવા ધર્મની બુદ્ધિએ અથવા સુખે મોકલી
જૂમિએ સંગ્રામ થાય અથવા સ્વનાવે, અથવા
તૃણ બાલ્યા પઠી નવાં અંકુરા ગાયો ચરે, એવી
બુદ્ધિએ દવ આપે. અથવા ક્ષેત્રનાં તૃણ એકઠા
કરી બાલી નાખે તે દવદાનકર્મ કહેવાયઢે

ચોથું સરદહતલાડ્ સોસં કે० સરોવર. સ્વ
ણ્યાવિના જે જગ્યામાં જલ રહે તેવું ઠામ તે સર
કહીએ, અને દહ કે० ડહ, તલાવ, કુઆ, વાપિ
વિગેરે પાણીના સ્થાનકોને શોષવે. જલાશયનું શો
ષણ કરવો તેમાનું પાણી ઝલેચાવે તિહાં અનેક
જલચર પચેંડીજીવોની હિંસા થાયઢે. તથા નીલ
ફૂલ પ્રમુખ ઘણા જીવોનો વિનાશ થાયઢે

પાંચમું અસંપોસંચ કે० અસ્તિપોષક જે, કુ

शील हिंसक जीवो ठे,ते एवा के श्वान, मांजार, मोर, कूकडा, सूडा, सालही, डुष्ट नार्गा, डुष्ट पुत्रादिकनुं पोषण करे. अथवा डुष्टदास दा सीनुं नरण पोषण करे, तथा माढी, कसाइ, वाघरी, तेलीनी साथे व्यापार करे. एम जे अधर्मी जीवोनुं पोषण करवुं, ते सर्व अस्तिपोषण कर्म कहोए. ए पांच सामान्य कर्म कह्यां. ए पन्नर कर्मादानने वज्जिज्जा के० वर्जवा-ठांमवा १३ हवे त्रीजुं अनर्थदंमविरमण नामा गुणव्रतकहेठे.

जे थकी निरर्थक आत्मा दंमाय-पाप लागे तेने अनर्थदंम कहोए. ते चार प्रकारेठे. तेमां पहेलुं अपध्यानाचरित्त, ते बेगो बेगो मनमां चिंतवणा करे जे, वयरीने बांधुं, मारी नाखुं, अने राजा थाउं तो वयरीना गाम बाली नाखुं, विद्याधर थाउ तो खेह्वाए ज्यां जावे त्यां जाऊं, मनमानती स्त्रीनी साथे विलास करूं. इत्यादिक जे मातुं ध्यान करे, ते अपध्यानाचरित्त कहोए, बीजुं पापकर्मोपदेश, ते लोकोने माठा उपदेश देतो रहे. जेम के, आ वाढर

(१७६)

डानेसमारो एने दमोखेत्रे अग्नीयो हलखेडो इत्या
दिक ऊपदेश आपे ते पापोपदेश कहीए. त्रीजुं हिं
सक वस्तुनुं परने आपवुं ते गाथाये करी कहेछे.

सङ्गि मुसल जंतग ॥ तण कठे

मंत मुल जेसङ्गे ॥ दिने देवाविएवा

॥ पडि० ॥ २४ ॥

अर्थ—सङ्गी के० शस्त्र ते पाली प्रमुख, तथा
अग्नि, अने मुसल ऊखल, जंतग के० यंत्र ते घाणी
गामलां प्रमुख, तणके० सावरणी प्रमुख कठके०
काष्ठ ते अरहट्टनी लाति प्रमुख, मंतके० मंत्र ते
साप खिलवा प्रमुखना जाणवा, मूल के० गर्ज
शातन पासन प्रमुखना जाणवा, जेसङ्ग के० जै
पज्य ते उषधादिक वशीकरण ऊच्चाटनादिक हेतु.
इत्यादिक वस्तु दाक्षिणता टाली बीजाने दिनेके०
दीधां होय. वाके० अथवा देवाविएके० बीजाने
देवराव्यां होए तेनां जे दिवससंबंधी पाप लाग्या

होय ते सर्व पडिक्कमुवुं ॥ १४ ॥ हवे जे प्रमाद
थकी अनर्थदंम लागे ते कहेहे.

न्हाणु वट्टण वन्नग ॥ विलेवणे सह
रूव रस गंधे ॥ वत्ता सण आनर
णे ॥ पडि० ॥ १५ ॥

अर्थ—न्हाण के० स्नान, जे अन्यंगन करी
तेल चोपडीने नाहीए, त्यां अजयणाए जीवाकुल
नूमिकाए स्नान करे, अथवा अणगल पाणीए स्ना
न कीधुं होय, ऊवट्टण के० ऊवट्टण जे पीठीप्रमुखे
करी शरीरनो मेल ऊतारवो. वन्नग के० कस्तुरी
प्रमुखना मांमणां प्रमुख, विलेवणे के० विलेपन ते
सूखड केसर मज्जिआगरादि चंदन विगेरेनुं जाणवुं.
सह के० शब्द ते वंश वीणादिकना कौतुके सांजा
व्याहोय, रूवके० रूपस्त्रीना तथा नाटक जोयां होय,
रस गंधेके० रस—गंध वर्णवीने वांठा ऊपजावी होय,
वत्तासण के० वस्त्र तथा आसन जे मांचा, पाटला
दिक, आनरणे के० आनरण ते मुकुटादिक, तथा

बीजां पण कामशास्त्र, चोराशी कामासन, कोक वात्स्यायनादिक शास्त्र जोयां होय, शीख्या होय, द्यूतक्रीडा, मद्यपान, जलक्रीडा, हींचवुं, इत्यादिक छुष्ट वानां कीधां होय, जोयां होय तेनुं जे कांइ दि वससंबंधी पाप लाग्युं होय ते सर्व पडिक्कमुतुं २५ हवे एना पांच अतिचार कहेवे.

कंदप्पे कुक्कुइए ॥ मोहरि अहिगरण
 नोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अण्ठाए ॥
 तइअंमि गुणवए निंदे ॥ २६ ॥

अर्थ—कंदप्पेके० जे वचनथकी कंदर्पविकार उत्पन्न थाय, कुक्कुइएके० मुख, आंख अने नृकुटिए करी नांमचेष्टा एवी करे के, जे थकी हास्य उत्पन्न थाय, मुहरिअ के० मुखरीवचन ते वाचा लपणे मुखे करी असंबंध वचन घणां बोले. अहिगरण के० अधिकरण ते पापोपकरण सज्ज करी मूके; एटले कोश, कोदालो, ऊषल, मुसल, नीसा, लोटुं, घंटी प्रमुख सज्ज करी राखे; कोइ

(१७९)

मांगवा आवेतो तेने आपे. नोगअइरित्ते के० नोग
उपनोग योग्य वस्तुनां पोताना खपकरतां पण
अधिक अधिकरण करे; एटले नोगवस्तु ते तेज
कंकोडी, खयल पाणी, अधिकां करे, जे देखीने
बीजाने नहावानी वांढा उपजे. तेथी नोगाधिक
वस्तुनो दोष लागे. अने उपनोगवस्तु ते, जो एक
घरनो खप होय ने बे चार घर प्रमुख खपविना
सामटां करावे; तेथी उपनोग वस्तुनो अधिक दो
ष लागे. एरीते दंमंमिअणछाए के० अर्थविना जे
जीव दंमाय तेने अनर्थदंम कहोए तइअंमिगुण
वए के० ए त्रीजा गुणव्रतनेविषे जे अतिचार
लाग्या तेने निंदे के० निंडुं ॥ १६ ॥ हवे सा
मायक व्रतना पांच अतिचार आलोवे ठे.

तिविहे डुप्पणिहाणे ॥ अणवछाणे
तहासइ विहूणे ॥ सामाइअ वित
ह कए ॥ पढमैसिखावए निंदे ॥ १७ ॥

अर्थ—तिविहे के० त्रण प्रकारे डुप्पणिहाणे

(१८०)

के० दुःप्रणिधान, एटले मनेकरी कुब्यापार माठो
चिंतवे. बीजुं वचनदुःप्रणिधान ते सावय वचन
बोलवुं, त्रीजुं कायाए दुःप्रणिधान ते पूंज्याविना
शरीर हलाववुं, नींतनुं उठीगण करवुं. एत्रण थयां
हवे चोथुं अणवछाणेके० अनवस्था ते निरादरपणे
सामायिक लेइ तत्काल पाळुं होय, तथा थसूर
करीने पाळुं होय. पांचमुं तहासइविहूणेके० तथा
स्मृतिविहिन एटले सामायिक लीधुं के नथी ली
धुं? ए रीते स्मरण कखुं न होय. इत्यादिक सामा
इअ के० सामायिकव्रतनेविषे वितहकएके० वितह
एटले खोटुं कीधुं. तेथीजे अतिचार लाग्या होय,
तेने पढमे के० पहेले सिस्कावए के० शिद्दाव्रतने
विषेजे अतिचार लाग्या तेने निंदेके० निंडुं॥ १७॥

हवे बीजा शिद्दाव्रतना अतिचार कहेवे
आणवणे पेसवणे ॥ सहे रूवेअ
पुग्गलखेवे ॥ देसावगासिअंमि ॥
बीए सिस्कावए निंदे ॥ १८ ॥

अर्थ—आणवणेके० आनयन् ते निमेली नूमि
 काना बाहेरथी कांइ पोता पासे आणवबुं, ते अ
 नायतनामे पहेलो अतिचार जाणवो. बीजुं पेसव
 णेके० प्रेपण ते पोतानापासेनी वस्तुने निमेली नू
 मिकाथी बाहेर मोकले. त्रीजुं सदेके० कांइ कार्य
 उपने थके निमेली नूमिकाथी बाहार रह्या
 जे मनुष्य तेने साद खुंखारो करी आपण पुं ठतुं
 जणावे. चोथुं रूवे के० उंचो अइ पोतानुं रूप दे
 खाडे ने सांमाने तेडे. पांचमुं पुगलपस्केवेके० पुं
 ज्ञ प्रक्षेप ते निमेली नूमिकाथी बाहेर रहेलाने
 कांकरादिक नाखी आपण पुं ठतुं जणावे. ए देसा
 वगासियंमी के० देसावगासिक नामे बीए सिस्का
 वणेके० बीजे शिक्हाव्रते जे पाप लागुं तेने आ
 त्म साखे निंदेके० निंडुबुं ॥ १७ ॥ हवे त्रीजा
 पोषदनामा शिक्हाव्रतना पांच अतिचार कहेले.

संथारूच्चारविही ॥ पमाय तहचेव

नोअणानोए ॥ पोसह विहि विव
रीए ॥ तइए सिक्कावए निंदे ॥ २ए ॥

अर्थ-संथारके० पाटी कांबलादिक जे संथारे
होय, अने उच्चारके० वडीनीति लघुनीतिना ठं
मिल, तेनी विहिके० विधि तेनेविषे पमाय के०
प्रमाद करे. ते प्रमाद चार प्रकारेढे. एटले एक
बोले चार आगार जाणवा. ते आवीरीते. अप्प
डिलेहिअ दुप्पडिलेहिअ सिद्धासंथारे अप्पमयि
अदुप्पमयिअसद्धासंथारे ॥ अप्पडिलेहिअ दुप्प
डिलेहिअ उच्चारपासहवण नूमी॥अप्पमयिअदु
प्पमयिअउच्चारपासहवणनूमि एनोअर्थ-संथारो
तथा लघुनीति वडीनीतिना ठंमिलने दृष्टिएकरी जु
ए नही; तेमज चरवला तथा दंभासणादिकेकरी
प्रमार्जे नही, जुएतो अथवा पूंजेतो शून्यचित्ते
पूंजे, तहेवके० तेमज वली नोयणानोए के०पो
सह लीधा पढी निश्चे नोजनादिकनी चिंता करे.
एटले क्यारे पोसह पूरण थजे? अने क्यारे पार

एतुं करगुं ? अथवां पारणे अमुक नोजन करगुं.
पोसहविहिविवरिणके० ए पोसहविधिनेविषे पांचे
अतिचारे करी विपरीतपणे कांइ कीथुं होय ते त
इए सिस्कावए निंदे के० त्रीजे शिक्षाव्रते निंडुं
॥२९॥ हवे चोथा शिक्षाव्रतना अतिचार कहेने.

सच्चित्ते निस्किवणे ॥ पिहिणे ववएस
महरे चेव ॥ कालाइक्रम दाणे ॥ च
उहे सिस्कावए निंदे ॥ ३० ॥

अर्थ—सच्चित्ते निस्किवणेके० देवायोग्य वस्तु
ऊपरे अणदेवानी बुद्धिए सचित्त मूके ए पहेलो
अतिचार. तथा पिहिणेवके० देवायोग्य वस्तु ते स
चित्त फलादिके ठांके ए बीजो अतिचार जाणवो.
त्रीजो ववएसके० व्यपदेश ते पोतानी वस्तुने अ
णदेवानी बुद्धिए पारकी करीने कहे, अथवा देवा
नी बुद्धिए पारकी वस्तुने पोतानी करीने कहे ते
व्यपदेश, एटले वांकु बोलवुं; ए त्रीजो अतिचार
जाणवो. चोथो महरेचेवके० कोइने दान देतो दे

खीने तेनाथी अधिक यवा साहू मत्सर सहित
 दान आपे, ते चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो
 कालाश्कम्मदाणेके० काल ते वहोरवानी वेला
 अतिक्रमिने साधुने तेडे; अने मनमां जाणे जे
 साधु हमणां वहोरगे नही अने महारो नियम प
 ए जंग यगे नही, ए चकळे सिरकावए निंदे के०
 चोथे शिक्षाव्रते ए पांच अतिचार आश्री पाप
 लाग्युं होय ते निंडु बुं. ॥ ३० ॥

सुहिएसुअ डुहिएसुअ ॥ जामे अ
 संजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसे
 एव ॥ तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ३१ ॥

अर्थ—सुहिएसुअ के० ज्ञान दर्शन अने चा
 रित्रे करी सुखीआ अने डुहिएसुअ के० रोगेकरी
 अथवा तपेकरी डुखीआ, एवा जे साधु—ते सा
 धु केवाढे? तोके—अस्संजएके० स्वेच्छाए विचरना
 र नही, पण गुरुनी आज्ञाए विचरनार, तेने जा
 मेके० जे में अनुकंपाके० आहार पाणी वस्त्र

पात्र प्रमुख दाने करी नक्ति करीहोए, ते केवी री ते करी होय? ते कहेछे. रागेणवके० रागेकरी एट ले महारो पुत्र तथा जाइ प्रमुखछे, एवा रागथी दान दीधुं, पण गुणवंतनी बुद्धिए दान दीधुं न ही. वली दोसेणव के० ढेपे करी एटले ए बाप डाने आपणे आहार पाणी न आपीएतो बीजो कोण आपे? नही आपछुं तो जुखे मरजो, एवी निंदारूप जे ढेप, तेणे करी जे दान दीधुं होए तेने आत्मा साखे निंडुबुं; तथा गुरुनी साखे गरहुंबुं. एटले इहां रागढेपनी निंदा जाणवी पणदान दीधु ते निंदवुं नही.

तथा बीजो अर्थ सुहिएसु के० वस्त्र पात्र प्र मुखे करी सुखीआ, तथा रोग प्रमुखे करी दुखी आ, एवा जे असंजए के० असंजति पासबादि कने विषे जे अनुकंपा तेपण माहरा जाइ प्रमुखे, एवा रागे करी दान दीधुं; अथवा जगवंत नी आज्ञाविरुद्ध करतां देखीने ढेप उपन्यो तो पण घरे आव्या माटे दान आप्युं ते निंडुबुं.

ત્રીજો અર્થ આહાર પાળીએ કરી સુખી એવા
 જે કુલિંગી સન્યાસી પ્રમુખ અસંયતિને ગુણવંત
 જાણી નક્તિ કીધી હોય, તે એવા હેતુથી કે આ
 આપણા ઝંલિખાણના છે એક ગામના રહેવાસીએ,
 એવા રાગેકરી, અથવા ષટ્કાયની હિંસાના કરના
 ર ઇત્યાદિક દોષ દેખીને દેષ ડપન્યો પણ ઘરે
 આવ્યા માટે દાન દીધું હોય તે નિંદુબું. ઇહાં ગુ
 ણવંત સાધુને જે દાન દીધું તે નિંદવું નહીં પણ
 પૂર્વે કહ્યાં જે રાગ દેષ તેની નિંદા કરવી. અને
 પાસઢાદિક તથા કુલિંગી પ્રમુખને ગુણવંતની
 બુદ્ધિએ જે દાન દીધું હોય, તે નિંદવું પણ સેહેજ
 અનુકંપાએ દાન દીધું હોય, તે તો અનુકંપાં કહે
 વાય તેને નગવંતે નિપેધ્યું નથી. ॥ ૩૧ ॥

સાદુસુ સંવિજ્ઞાગો ॥ નકરં તવ ચર
 ણ કરણ જુત્તેસુ ॥ સંતે ફાસુઅદા
 ણે ॥ તં નિંદે તંચ ગરિહામિ ॥ ૩૨ ॥

અર્થ—હવે સાધુને દાન ન દીધું તે આલોચેઢે.

साधुसुके० सुसाधु प्रत्ये संविनागोके० ठती शक्तिए
संविनाग नकउ के० न कखुं होय. ते साधु केवा
ढे ? तो के-तवके० बार जेदे तप, चरणके० चरण
सितरीना सितेरबोल, करण के० करणसितरीना
सितेरबोल, तेणोकरी जुत्तेसु के० सहित तेने
संते के० ठते फासुदाणे के० प्रासुक दाने एटले
देवायोग्य वस्तु ठते पण में जे साधुनो संविनाग
न कखो होय तंके० ते आत्मसाखे निंडुबुं, अने
गुरुसाखे गरहुं ॥ ३२ ॥

हवे संलेपणाना पांच अतिचार कहेढे.

इहलोए परलोए ॥ जीविअ मरणे

अ आसंस पउगे ॥ पंचविहो अइ

आरो ॥ मामप्र दुऊ मरणंते ॥ ३३ ॥

अर्थ-इहलोएके० आ धर्मने प्रजावे आवते न
वे मनुष्यपणु पासुं, एवी चिंतवणा ते इहलोका
शंस प्रयोग पहेलो अतिचार जाणवो. परलोके
धर्मना प्रजावे देवपणानी वांछा करवी ते परलो

(१८८)

काशंस प्रयोग बीजो अतिचार जाणवो. त्रीजो जीविअ के० अनशनजीधे सत्कार सन्मान देखी जीवुं वांढे ते त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो मरणे के० अनशन जीधे कोइ पूजा अर्चा न करता होए, अने कुधादिके पीडयो थको मरणने वांढे, ते मरणाशंस प्रयोग चोथो अतिचार जाणवो. आसंसपउंगे के० आ धर्मने प्रनावे आव ते जवे रूढा शब्दरूप रसादिक जे कामनोग ठे तेनी वांढा करे. ते कामनोगाशंस प्रयोग पाचमो अतिचार जाणवो. ए पांच प्रकारना अतिचार ते मरणंतेके० मरणांते पण मामद्यहुङ्गके० मुज ने म होजो ॥ ३३ ॥ हवे प्राये ए सर्व अतिचार ते मन वचन काथाने कुब्यापारे होय ते कहेढे.

काएण काइअरुस ॥ पडिक्कमे वाइ
अरुस वायाए ॥ मणसा माणसिअ
रुस॥सवरुस वया इअररुस ॥ ३४॥

अर्थ—जेकाएणके० कायाएकरी जीववधादिक

(१७९)

पाप लाग्यां होय ते, काश्चिस्सके० कायाए तप
काकस्सग्ग अनुष्ठाने करी पडिक्कमेके० पडिक्कमुत्तुं-
निवर्त्तुत्तुं. वाश्चस्स वायाए के० वचने करी कर्क
श वचनादिक बोलतां पाप लाग्युं ते वचने मि
ह्वामि उक्कमादिकने देवे करी पडिक्कमुत्तुं. मणसा
के० मनेकरी जे सम्यक्त्वेनेविषे शंकादिक पाप ला
ग्युं ते माणसिस्सके० मनेकरी मात्तुं कखुं एम
चित्तवणा करतो थको पडिक्कमुत्तुं. एम सबस्सवय
के० सर्व व्रतोना अश्चरस्स के० अतिचार पडि
क्कमुत्तुं ॥ ३४ ॥ वली एहज वात विशेषे कहेले.

वंदणवय सिक्कागारवेसु सन्ना क
साय दंभेसु ॥ गुत्तीसुअ समिईसुअ ॥
जो अइअरौअ तं निंदे ॥ ३५ ॥

अर्थ—एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन. एरीते
वंदण के० वांदणा बे जेदेले. अने वयके० प्रा
णातिपातविरमणादिक व्रत बार जेदेले. सिक्का
के० शिक्षा बे जेदेले. एक ग्रहणाशिक्षा अने बीजी

आसेवनाशिक्षा. तेमां श्रावक. गुरुपासेथी नवक
 रथी मांमीने उत्कृष्ट दशवैकालिकना ब्रह्मीवण
 या अध्ययन लगे सूत्र अने अर्थ एबंने जणे-ग्रहे-
 धारे-शीखे. त्यां लगे ग्रहणाशिक्षा जाणवी. अने जे
 श्रावकनी दिवसादिक संबंधिनी जेटली समाचारी
 ठे, ते सर्व जाणे. एटले श्रावकनी समाचारी आम
 ठे के, पहेलो नवकार कहेतो अकोज सुतो उठे.
 पढी पोतानुं स्वरूप विचारे जे हुं श्रावकहुं. केटलां
 व्रत मुजने ठे? इत्यादिक वातो श्राधदिनकृत प्र
 करण तथा श्राधविधिमांहे जे सामाचारी कही
 ठे ते सर्व जाणे-आचरे-आसवे-तेने आसेवना
 शिक्षा कहीए. गारवेसु के० गारव ते त्रण प्रकार
 ना गारवठे. तेमां जे पोतापासे धन तथा कुटुंब
 परिवार प्रमुख घणुं देखी मननेविषे अहंकार
 आणे ते रुद्रिगारव कहीए. अने जे सरस अ
 न्नपाणी प्रमुखनेविषे लालचु आय, ते रसगार
 व कहीए. जे सुकुमाल वस्त्र सय्या घर प्रमुखने
 मोहे बांध्यो तेथी तेने मूकीशके नही, तेने सा

(१९१)

तागारव कहिए. ए त्रण प्रकारना गारव कहा. ते नुं सेवन करवाथी. तथा सन्ना के० आहार, जय, मैथुन, अने परिग्रह—ए चार संज्ञा उते ए केंद्रियादिक सर्व जीवोने होय ठे. कसायके० क्रोधादिक चार कषाय जाणवा. दंमेसु के० धर्मधनथी जेणे करी आत्मा दंमाय ते दंम, मनादिक त्रण नेदे ठे. गुत्तीसु के० मनादिक त्रण गुप्ति, समिर्सु के० इर्यादिक पांच समिति, च शब्द थकी श्रावकनी अगीअार प्रतिमा प्रमुख, सर्व धर्मकर्त्तव्य जे ठे, तेने विषे जे अतिचार लाग्या ते निंडुबुं ॥ ३५ ॥

हवे सम्यक्त्वनुं माहात्म्य कहे ठे.

सम्मदिठी जीवो ॥ जइविहु पावं
समायरे किंचि॥ अणोसि होइ बंधो॥
जेण न निबंध्य संकुणइ ॥ ३६ ॥

अर्थ—सम्मदिठी के० सम्यक्त्व दृष्टि यथावस्थित स्वरूपनो जाण, एहवो जीवो के० जीव ते जइविहु के० यद्यपि निर्वाह चलाववाने अ

(१९१)

र्थ कर्षणादिक आरंभरूप पावके० पापने किंचि
के० कांइक थोडुं पण समायरइ के० समाचरे, तो
पण ते आरंभनी ते श्रावकने अपोसिहोइबंधोके०
अल्प एटले थोडोशोकर्मबंध होय. जेणके० जेमा
टे ते ननिबंधसंकुणइ के० निबंधस एटले निर्दय
पणे न करे, पण शंका राखीने करे जे धिक्कार पडो
आ गृहस्थाश्रमने के जेनेविषे केटलां पापकरवां
पड़े ? एवी, बीक राखीने करे जे थकी तेने पा
प थोडुं लागे ॥ ३६ ॥ इहां शिष्य पूछे ठे के
हे जगवन् थोडुं पण विष खाधुं थकुं जेम मारे
ठे, तेम थोडुंपण पाप ते घणुं दोहिलुंठे ; माटे
तेनी शीगति आय ? ते गाथायेंकरी कहेठे.

तं पिदु सपडिक्कमणं ॥ सप्परिआ
वंसउत्तरगुणंच ॥ खिणं उवसामेई ॥
वाहिव सुसिक्किउ विज्जो ॥ ३७ ॥

अर्थ—तंपिदुसपडिक्कमणं के० ते अल्प पाप
लागुं ते पण पडिक्कमणाने करवे करी थने सं

(१९३)

परिआवंत के० पश्चात्तापने करवे करी, वली सउ
 उत्तरगुणंच के० गुरुदत्त प्रायश्चित्तने एटले आलो
 यण करवे करी एने उत्तर गुण कहेवे; एमकरतो
 खिण्णंउवसामेइके० ते श्रावक क्षिप्र एटले उतावळुं
 ते पापने उपशमावे. ते कोनीपेरे? तोके-वाहिब
 के० व्याधिवत् एटले रोगने जेम सुसिखउविद्योके०
 सुशिक्षित एटले माह्यो वैद्य उतावळे उपशमावे
 तेनीपेरे जाणवुं॥३७॥ वली बीजुं दृष्टांत कहेवे.

जहा विसं कुष्ठगयं ॥ मंत मूल विसा
 रया ॥ विज्ञा हणंति मंतेहिं ॥ तो तं
 हवइ निविसं ॥ ३८ ॥

अर्थ-जहाके० जेम विसंके० विष ते कुष्ठगयं
 के० कोठामांहे एटले शरीरमांहे गतं एटले प्राप्त
 थयुं; तेने मंतमूलविसारया के० मंत्रमूलनेविषे
 विसारद के० माह्या एवा विद्या के० वैद्य ते मंते
 हिं के० मंत्रे करीने हणंति के० हणे वे तो.के०

(१९४)

तेवार पढी तं के० ते निविसं के० निर्विष एट
विषरहित हवइ के० थाय ॥ ३७ ॥

एवं अछविहं कम्मं ॥ राग दोस स
मज्झिअं ॥ आलोअंतोअ निंदंतो ॥
खिण्णं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥

अर्थ—एवं के० ए पूर्वोक्त दृष्टान्ते जेम मं
प्रनाव थकी विष जायने, तेम राग दोससम
के० रागदोषे करी उपार्जित कखां, जे अछ
म्मं के० आव प्रकारनां कर्म, तेप्रते गुरुअ
आलोअंतो के० आलोवतो अने आत्मान
निंदंतोके० निंदतो थको खिण्णंके० उतावले
वउ के० सुआवक ते हणइ के० हणे; एट
लां कर्मोने टाले ॥ ३९ ॥ वली एहज वात

कय पावोवि मणुस्सो ॥ आलो
निंदिअ गुरु सगासे ॥ होइ अइरे
लहुउ ॥ उहरिअ जरुव नारवहो ॥

(१७५)

अर्थ—कयपावोविमणुस्सो के० जेणे घणां
 गप कीधां एवो मनुष्य, तेपण जो गुरुसगासेके०
 गुरुआगल आलोइअ के० ते पापने आलोवे, अने
 दिअके० ते पापने निंदे तो होइके० थाय. अइ
 ग के० अतिरेक एटले घणुं निर्मायपणे आ
 गोवतां जीवने घणा पापनो नार लहुउके० हल
 गो थाय. इहां दृष्टांत कहेने. जेम नारवहोके० ना
 नो कपाडनार अथवा वहीतरु करनार—तेना क
 परधी उहरिअनरुव के० नार कतरे थके हलुवो
 याय तेनी परे जाणी लेवुं ॥ ४० ॥

आवस्स एण एएण ॥ सावउ जइवि
 बहुरउ होइ ॥ डुस्काण मंत किरिअं॥
 काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥

अर्थ—एएण के० ए ठप्रकारना आवस्सएणके०
 आवश्यकने करवे करीने जइवि के० जोपण सा
 न के० आवक बहुरउहोइ के० बहुरत्त होय, ए
 अरंज परिग्रहे करी घणां पापसहित हो

(૧૯૬)

ય, તોપણ ડુસ્કાણ કે ૦ ડુઃખોનો અંતકિરિઅંકે ૦
અંત કરે, એટલે વિનાશ કરે. અચિરેણકાલેણ કે ૦
થોડાકાલમાંહે તે પાપોનો વિનાશ તે કાહી કે ૦
કરશે, તે અનુક્રમે મોઢુ પામશે ॥ ૪૧ ॥ હવે ૫
પડિક્કમણુ કરતાં અતિચાર આલોવવાને જે વિસર્જ
ન થયા તે આલોવે છે.

આલોઅણા વહુ વિહા ॥ નયસંનરિ
આ પડિક્કમણકાલે ॥ મૂલગુણ ઉત્ત
રગુણે ॥ તંનિદે તંચગરિહામિ ॥ ૪૨ ॥

અર્થ—આલોઅણાવહુવિહાકે ૦ આલોચવા યં
ગ્ય જે પાપ તે ઘણા પ્રકારે છે. તેમાં પડિક્કમણક
લે કે ૦ પડિક્કમણું કરવાને અવસરે જે નયસંન
રિઆકે ૦ ન સાંનચ્છા, વિસર્જન થયા, એવા જે શ્રાવ
કના મૂલગુણઉત્તરગુણે કે ૦ મૂલગુણ ને ઉત્તરગ
ણ—તેને વિષે જે પાપ લાગ્યાં હોય, તંકે ૦ તે પાપને
નિંદે કે ૦ નિંડું, તથા ગરિહામિ કે ૦ ગરહું ॥
૧ બેંતાલીશ ગાથા બેઠાં થકાં કહેવી; પઠી કર

तो तस्सधम्मस्सकेवल्लिपणत्तस्स एम कही ऊनो
थइ बे हाथ जोडी आठ गाथा कहे. ते कहेने.

तस्स धम्मस्स केवल्लि पस्सत्तस्स॥

अञ्जुठ्ठिउमि आरा,हणाए विरउमि

विराहणाए तिविहेण पडिक्कंतो ॥ वं

दामिजिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥

अर्थ—तस्सधम्मस्स के० ते धर्म केवल्लिपस्सत्त
स्सके० केवली जगवाननो जापेजोने, तेने हुं आरा
हणाएके० आराधवाने अर्थे अञ्जुठ्ठिउके० उद्यमवं
त थयोहुं. विराहणाएके० विराधना थकी विरउमि
के० विरम्योहुं—निवत्त्योहुं—अलगो थयोहुं. शोणे
करी विरम्योहुं? ते कहेने. तिविहेणके० मन वच
न अने कायाए करी पडिक्कंतो के० सर्व पाप प्रति
क्रमण करी ने वंदामि जिणे चउवीसं के० चोवी
स तीर्थकरप्रत्ये वांडुहुं. ॥ ४३ ॥

जावंति चेईआइ० ॥ ४४ ॥

अर्थ—ए गाथामां त्रणे जुवनमांजेटलां शाश्वतां

(१९८)

चैत्यठे तेने वंदना करीठे. एनो अर्थ पूर्वे लखाणोठे.

जावंत केविसाहू० ॥ ४५ ॥

अर्थ—ए गाथामां पन्नर कर्मनूमिमां जे सर्वसाधुठे,
तेने वांडुं. ॥ ४५ ॥ हवे मोक्ष वांढतो प्रार्थना करेठे.

चिर संचिय पाव पणासणीइ नव

सय सहस्स महणीए॥ चनुवीस जिण

विणिग्गया॥ कहाइं वो लंतुमे दिअहा॥ ४६

अर्थ—चिरसंचिय के० घणा कालनां संचित
करेलां जे पावके० पाप, तेने पणासणीइ के० प्र
णाशिनी एटले टालनारी, तथा नवके० संसारना
जे सयसहस्सके० शतसहस्र एटले लाखोगमे
जे नव करवा, तेनी महणीए के० मंथन कर
नारी, एवी चकुवीसजिण के० चोवीश तीर्थकरो
थकी विणिग्गय के० नीकली—प्रगट थइ, एवी जे
कहाइके० चरित्ररूप कथा, ते कथाए करी वो लं
तुके० वो लो अतिक्रमो. मेके० महारा दिअहाके०
दिवसो—एटले चोवीश तीर्थकरोनी कथा करतां म

(૧૯૯)

હારા દિવસો અતિક્રમો. એવી પ્રાર્થના કરીઢે॥૪૬॥
હવે જન્માંતરે બોધબીજ પામવાની પ્રાર્થના કરેઢે

મમ મંગલ મરિહંતા ॥ સિદ્ધા સાદૂ
સુઅંચ ધમ્મોઅ ॥ સમ્મદિઢિઢેવા ॥
દિંતુ સમાહિંચ બોહિંચ ॥ ૪૭ ॥

અર્થ—મમકે૦ મુજને મંગલકે૦ ઇટલાં વાનાં
મંગલનાં કરનાર થાઁ, અરિહંતાકે૦ અરિહંત, સિ
દ્ધાકે૦ સિદ્ધ, સાદુકે૦ સાધુ, સુઅંચકે૦ શ્રુતસિ
દ્ધાંત અગ્યારઅંગ ચતુદપૂર્વ, ધમ્મોઅકે૦ ધર્મ તે
ચારિત્રરૂપ. ઇટલાં વાનાં મુજને મંગલકારી હોજો.
સમ્મદિઢિઢેવાકે૦ સમ્યક્ત્વદૃષ્ટિ જિનનક્ત જે ઢેવો
ઢે, તે મુજને દિંતુકે૦ ઢીઁ—આપો, સમાહિંકે૦ મ
નની સમાધિપ્રત્યે તથા બોહિંચકે૦ વલી બોધબી
જ તે જવાંતરે ધર્મની પ્રાપ્તિ આપો ॥ ૪૭ ॥ હવે
ચાર પ્રકારે અતિચાર લાગે તે કહેઢે. અર્થાત્ જે
ટલા વાનાનું પડિક્કમબું હોય તે કહે ઢે.

पडिसिद्धानं करणे ॥ किञ्चाण मकर
 एअ पडिक्कमणं ॥ असद्वहणेअ
 तहा॥विवरीय परूवणाएअ ॥ ४८ ॥

अर्थ—पडिसिद्धानंके० प्रतिषेध ते निषेधि जे
 वस्तु एवां जे प्राणातिपातादिक अठार पापस्थानक
 तेने करणे के० करवे करी पडिक्कमवुं. किञ्चाण
 के० करवायोग्य जे सामायक, देवपूजा, विनय
 दानादिक, तथा अरिहंतनी नक्ति—तेने अकरणे
 के० अणकरवाथी पडिक्कमवुं. पडिक्कमणं ए
 पदनो अर्थ गायाने ठेडे कहीशुं. असद्वह
 णे के० निगोदादिकना विचारने अणसद्वे
 करीने पडिक्कमवुं. च के० वली तहा के० तेम
 ज विवरिअ के० विपरीत परूवणाएअ के० प
 रूपणा करवे करीने, एटले जे सिद्धांत साथे
 मले नहीं, एवा उत्सूत्रनी परूपणा करवे करीने.
 एरीते ए चार प्रकारे करीने जे पाप लाग्गुं तेहने
 उपशमाववाने अर्थ पडिक्कमणुं करवुं ॥ ४८ ॥

(१०१)

हवे सर्व संसारी जीवने खमावे ठे.
खामेमि सब जीवे॥सबे जीवा खमंतुमे ॥
मितिमे सबजूएसु॥वेरंमञ्जनकेणइ॥४ए॥

अर्थ—खामेमिसबजीवे के० हुं सर्व जीवो
प्रत्ये खमावुं तुं,अने सबेजीवाखमंतुमे के० हे सर्व
जीवो तमे पण महारो अपराध खमजो. मिति
मे सबजूएसु के० जेमाटे माहारे सर्वजूत के०
सर्व प्राणी साथे मैत्रीठे. वेरंमञ्जनकेणइ के० म
हारे कोइनी साथे वैर नथी, पण बधा साथे मै
त्री ठे. ॥ ४ए ॥ हवे मंगलिक गाथा कहे ठे.

एवमहं आलोइअ ॥ निंदिअ गरही
अ दुगंभिअ सम्मं॥ तिविहेणपडि
कंतो ॥ वंदामि जिणेचउवीसं ॥५०॥

अर्थ—एवं के० ए पूर्वोक्त रीते अहं के० हुं
सर्व पापने गुरु आगल आलोइअके० आलोचीने,
अने निंदिअ के० आत्मानो साथे निंदिने अने
गरहीअ के० गुरुनी साथे गरहीने अने सम्मं के०

सम्यक्प्रकारे दुगंढिअ के० दुगंढा करीने एटले
 अमुक में माठां कार्य कछां, एम वारंवार कहीने
 तेने तिविहेणपडिक्कंतो के० मन वचन अने का
 याए त्रिविधे करी पडिक्कमुबुं, एटले ते पापो थ
 की निवर्त्तिने वंदामिजिणेचउवीसं के० चोवीशे
 जिनप्रत्ये हुं मंगलिकने अर्थे वांडु बुं ॥ ५० ॥
 इहां नवमा सामायक व्रतना अर्थमां नीचे लखे
 ली वात रहीगएली ठे ते इहां लखिए ठैए. शि
 प्य पूढे ठे के हे जगवन् सामायक लेइने पढी
 सर्वथा मननो संवर तो करी शकीए नही, अने
 मनने कुव्यापारे सामायकनो जंग थायठे, एकतो
 तेनुं पाप लागे; अने बीजुं सामायक जंग थाय
 तेनुं प्रायश्चित्त फरी करवुं जोइए, माटे सामाय
 क करवाने बदलै नही करवुं तेज नहुं ठे. एवं
 पूढनारने सुगुरु उत्तर आपेठे के, सामायक तो
 अवश्य करवुं. केम के सामायक तो डुविहंति
 विहेणं ए जांगे लेवायठे. एमां मन वचन अने
 कायाएकरी सावद्य व्यापार करुं नही अने करावुं

(૨૦૩)

નહી. એ ઠ નિયમ આવે તો ઠ માં કેવારેક એક નિયમ જંગ થાય,તોપણ પાંચ તો અસ્ખંખિત રહે. અને મનના કુવ્યાપારનુ પાપ અલ્પ હોય તે મિ હામિડુક્કડં દેવાથી બુટીએ પણ એવા કારણથીજો સામાયક કરવાનો ચાજ ટાલીએ તો આ કાલમાં ચારિત્રિય કોઈજ નથી એવું થઈ જાય, તેમાટે સામાયક અવશ્ય લેવું. અને સામાયક લેશને શુદ્ધ પાલવાનો સ્વપ કરવો. કારણ હમણાંની દીક્ષા અને સામાયક પ્રમુખ જેઠે તે સર્વ અન્યાસ માત્રે ઠે. માટે અન્યાસ કરતાં થકાં કોઈ વચ્ચે શુદ્ધ ચારિત્રનું લાજ પણ થશે.ઈતિ વંદિતાસૂત્ર સમાપ્તઃ
પઠી વલી તેમજ બે વાંદણા દેશને ગુરુને અપરાધ સ્વમાવવાને આવીરીતે કહે તે કહે ઠે.

॥ અથ અચુષ્ઠિત્વં ॥ ૩૬ ॥

ઇગકારેણ સંદિસદ્ જગવન્ ॥ અ
ચુષ્ઠિત્વં અપ્રિતર દેવસિચ્ચં ॥ સ્વા
મેત્વં ઇત્વં સ્વાભેમિ દેવસિચ્ચં ॥ જંકિં

चि अप्पत्तियं परप्पत्तियं जत्ते पा
 ए विणए वेआवच्चे आलावे संलावे
 उच्चासणे॥ समासणे अंतरजासाए॥
 उवारिजासाए जंकिंचि ॥ मयविणय
 परिहीणं॥ सुहुमंवा बायरंवा॥ तुप्पे जा
 एह अहं नयाणामि ॥ तस्समिञ्चा
 मिडुकडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

अर्थ—इच्छाकारेण संदिसह के० जो तमारी
 इच्छा होय तो आदेश दीउ. जगवन् के० हे
 ज्ञानवंत, अचुछिउहं के० हुं उजमाल-साव
 धान थयो तुं. अप्रितर देवसिअंखामेउं के०
 दिवस मांहेलो अपराध, स्वभाववाने काजे स
 ज्ञ थयो तुं. तेवारे गुरु कहे. स्वामेह के० स्वा
 मो. तेवारे शिष्य कहे. इञ्ज के० वांनुतुं. त
 मारी आज्ञा प्रत्ये. पढी पंचांग प्रणाम करी मु
 खे मुहपती राखी एम कहे के, स्वामेमि देवसिअं
 के० स्वमावुंतुं. दिवससंबंधी विरुद्ध आचरवुं. ते

कियुं ? जंकिंचिअप्पत्तियं के० जे कांइ अप्रीति उ
 पजावी होय, परप्पत्तियं के० विशेष अप्रीति उ
 पजावी होय, शानेविपे ? नत्ते पाणे के० जात
 पाणीनेविपे विणए के० विनयनेविपे. ते गुरु
 आवे उजा यावुं, गुरुने आसन प्रमुख आपवुं तेने
 विनय कहीए. वेयावच्चेके० आँपथ पथ्य पाणी, वि
 सामणा प्रमुख, जे वैयावच्च तेनेविपे. आलावे
 के० एकवार बोलाववुं, ते आलाप. तेनेविपे अने सं
 लावेके० वारंवार बोलाववुं ते संलाप, तेनेविपे जे
 विनय चूक्यो होय, बली उच्चासणेके० गुरुथी उंचे
 आसने बेसतां समासणेके० गुरुनी पासे सरखा त
 था बराबरना आसने बेसतां बली अंतर नासाएके०
 गुरुना बोलतां वचमां बोली ऊठ्याथी, उवरि ना
 साए के० गुरुबोली रह्या पठी तेज वात पोता
 नी चतुराइए विशेषे बोल्याथी, इत्यादि जंकिंचिम
 प्ल विणय परिहीणं के० जे कांइ में विनयही
 नपणे कीधुं होय, एटले में जे कांइ अविनय कखो
 होय, सुद्धमं के० सूद्ध एटले न्हानो, बायरं वा

(२०६)

के० अथवा बादर एटले मोटो जे अविनय;
 राध मुजथी थयो ते हे ज्ञानवंत बहुश्रुत,
 जाणहके० तमे पंढितपणे करी जाणोवो.
 न याणामि के० हुं मूर्ख हुं माटे जाणतो नश-
 तस्स मिहामिडुक्कडं के० ते सर्व दुष्कृत जे प-
 ते मिथ्या के० फोकट थाउं. ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवज्जाए ॥ ३७ ॥

आयरिअ उवज्जाए ॥ सीसे साह
 मिए कुलगणेअ ॥ जेमे केइ कसा
 या ॥ सवे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥

अर्थ-आयरिय उवज्जाए, सीसे साहमिए इ-
 ल गणेय के० आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, साध-
 र्मिक, कुल (एक आचार्यना संतानने कुल क-
 हेने) अने गण (घणा साधु तथा आचार्योंन
 संतानोने गह्व कहे ने) एउने विषे जे में केइ क-
 साया के० जे कांइ माराथी क्रोधादिक कषाय उ-
 पन्या होय ते सवे तिविहेण खामेमि के० बधा

(१०७)

मन वचन अने कायाए करी खमावुं ॥ १
सवस्स समण संघस्स ॥ जगवउं अं
जलिं करिअ सीसे ॥ सवं खमावइ
ता ॥ खमामि सवस्स अहयंपि ॥ २ ॥

अर्थ—सवस्स समण संघस्स के० पन्नर क
नूमि मांहे जे सर्व श्रमण संघ, ते केवोठे ? तो
जगवउं के० ज्ञानवंत अने यशवंत एवा अनै स
सुरासुर मनुष्यने पूजनिक, तेने अंजलिं करेसी
के० बे हाथ जोडी माथे चडावीने सवं खमा
इत्ता के० बधो अपराध विनय पूर्वक खमावुं
खमामि सवस्स अहयंपि के० ते ते सर्व जीव
बंधी अपराध हुं पण खमुं ॥ १ ॥

सवस्स जीव रासिस्स ॥ जावउं
धम्म निहिअ निअचित्तो ॥ स
वंखमावइत्ता ॥ खमामि सवस्स
अहयंपि ॥ ३ ॥ इति ॥ ३७ ॥

(१०८)

अर्थ—सवस्स जीवरासिस्सके० सघलाचोरा
शीलाख जीवराशीने जावउ धम्मनिहिय निअ चि
त्तो के० जेणे जावेकरी धर्मने विषे पोतानुं चि
त्त थाप्पुं ठे एवो थको हुं, ते सवंग्खमावइत्ताके०
बधानो अपराध खमावीने, खमामि सवस्स अह
यंपिके० हुं पण ते बधानो अपराध खमावुंहुं. ॥ ३५ ॥

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥ ३५ ॥

इत्थामो अणुसद्धिं ॥ नमो खमा
समणाणं ॥ नमोर्हत् ० ॥ नमो
स्तु वर्द्धमानाय ॥ स्पर्द्धमानाय
कर्मणा ॥ तज्जया वाप्त मोह्हाय
॥ परोह्हाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥

अर्थ—नमोस्तुवर्द्धमानाय के० श्रीवर्द्धमान
स्वामिने नमस्कार हो. स्पर्द्धमानायकर्मणाके० श्री
वर्द्धमान केवाढे तो ? के—जे कर्मरूप वैरी साथे
स्पर्द्धा एटले इर्षा करे ठे. एवाढे. तज्जयाके० ते क

(३०ए)

मैरूप वैरीने जीतवे करी वात्समोद्गायके० पाम्यो
ढे मोद्द जेणे. वली परोद्गाय के० वेगला ढे कुती
थीनां के० परदर्शनीउनाथी एवा ढे. ॥ १ ॥

येषां विकचार विंदराज्या॥ ज्यायः क्र
मकमलावल्लिं दधत्या॥ सदृशै रिति
संगतं प्रशस्यं ॥ कथितं संतु शिवा
य ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥

अर्थ—येषांके० जे स्वामिना विकचारविंदराज्या
के० विकस्वर सुवर्णमय कमलनी श्रेणी तेणे स्वा
मिना क्रमकमलावल्लिके० पदकमलनी श्रेणीप्र
त्ये, दधत्या के० धारण करीने सदृशैरितिसंगतं
के० सरशासाथे अमे मत्स्या, ए प्रशस्यंके० अति
शय जलुं थयुं. जेमाटे अमे पण कमल अने स्व
मिना पण तेपण कमल, तो अमने एनासाथे म
लतां अत्यंत जलुं. ते जिनेन्द्राः के० ते जिनेन्द्र
मने शिवायके० मोद्दने अर्थ संतुके० आउ.॥१॥

कषाय तापार्दित जंतुनिवृत्ति ॥ करो

(११०)

तियो जैनमुखांबुदोज्तः ॥ सशु
क्रमासोन्नव वृष्टि संनिन्नो ॥ दधातु
तुष्टि मयि विस्तरोगिरां॥३॥इति॥३॥

अर्थ—कषायरूप तापे करी अर्दित के० पी
डयां एवां जे जंतु के० प्राणी, तेने निर्वृति के०
समाधीप्रत्ये करोति के० करो. योके० जे आग
म, जैनमुख के० जिनना मुखरूपी अंबुद के०
मेघशकी उज्जत के० उपन्युं. सके० ते आगम
श्रुक्रमासो के० ज्येष्ठ महीनाना मेघनी वृष्टी स
न्निन्नो के० सरपो, तुष्टिके० तुष्टिप्रत्ये मयि के०
माहरेविषे गिरां के० वाणीनो विस्तरों के० वि
स्तार, दधातुके० धारण करो ॥ ३ ॥ ३० ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥ ३१ ॥

विशाल लोचन दलं ॥ प्रोद्यदंतां
शु केसरं ॥ प्रातर्वीरजिनैऽस्य ॥ मु
खपद्म पुनातुवः ॥ १ ॥

अर्थ—मुखकमल केबुंढे? विसाललोचनके०

(१११)

विस्तोर्ण लोचनरूपी दलं के० पांढडांठे ज्यां.
वली प्रोद्यत् के० जलहजता दंताके० दांतना
किरणरूपी केंसरं के० परागठे ज्यां, एवा श्रीवीर
जिनेंइस्य के० श्रीवीरजिनेंइनुं मुखपद्मं के० मुख
रूप कमल ते प्रातःके० प्रजातकाले वः के० तमोने
एटले नव्यजीवोने पुनातुके० पवित्र करो ? ॥ १ ॥

येषा मज्जिषेक कर्म कृत्वा ॥ मत्ता ह
र्षनरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि
गणयन्ति नैवनाकं ॥ प्रातःसंतुशिवा
यते ज्जिनेंदा ॥ २ ॥

अर्थ—येषाके० जेमनो अजिषेककर्मकृत्वाके०
अजिषेक महोत्सव करीने मत्ता के० मत्त एटले
पुष्ट थका हर्षनरात् के० हर्षना समूहथी सुखं
सुरेंद्राके० सुख जेम होय तेम देवेंड पण तृणमपि
गणयन्ति नैवनाकं के० तृणप्राये पण देवलोकने
गणतो नथी. तेजिनेंदाके० ते जिनेंइ प्रातःके० प्र
जाते शिवायके० मंगलिकने कार्ये संतुके० थाउ १

(२१२)

कलंक निर्मुक्त ममुक्त पूर्णतं ॥ कुतर्क
राहु ग्रसनं सदोदयं ॥ अपूर्व चंड
जिनचंड नापितं ॥ दिनागमे नौमि
बुधै नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ए ॥

अर्थ—कलंकनिर्मुक्त के० कलंकरहित अमुक्त
पूर्णतं केवारे संपूर्णपणु न मूके, कुतर्कराहुग्रस
नं के० परदर्शनरूप कुतर्कराहुने ग्रसतो, व
ली सदोदयके० सदा सर्वदा उदय पामनारो पण
अस्त न थाय, तेमाटे अपूर्वचंड एवो नापितंके०
जिनेश्वरनापित सिद्धांतप्रत्ये दिनागमेनौमिके०
दिवसने उदए एटले प्रजात समये हुं स्तुं हुं ते
सिद्धांत केवो ठे ? तोके जेने बुधै नमस्कृतंके० पं
मितोए नमस्कार कखो ठे. एवो ठे ॥ ३ ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रुतदेवता स्तुति ॥ ४० ॥

सुअदेवया एकरेमि काउस्सग्गं ॥
सुअदेवया जगवई ॥ नाणावरणी
अ कम्मसंघायं ॥ तेसिं खवेउ सय

(११३)

यां॥जेसिं सुअ सायरे जत्ती॥१॥इति॥४०

अर्थ—श्रुतसिद्धांतनी अधिष्ठायाका जे सरस्वती, तेने आराधना निमित्त काउस्सग करूं. इहां ‘वंदणवत्तिआ’ ए पाठ न कह्यो. अन्नउत्तससिएणं कह्यो. सुअदेवया जगवईके० हे श्रुत देवता के वीठे? तोके जगवती के० महिमावंत ठे, सययं के० निरंतर जेसिं सुअ सायरे जत्ती के० जे जव्य जीवने श्रुतरूप समुझनेविषे जत्तिठे. नाणावरणीय कम्म संघाय के० जे ज्ञानावरणीय कर्म नो संघात एटले समूह तेसिंके० ते जव्य जीवो नो तेप्रत्ये द्वेपवो एटले टालो. ॥ १ ॥

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥ ४१ ॥

जीसेखित्ते साहू ॥ दंसण नाणेहि चरण सहिएहिं॥ साहंति मुक्कमग्गं ॥

सादेवी हरउ डुरिआइं ॥१॥ इति॥४१॥

अर्थ—जीसे खित्ते साहूके० जे देवताना क्षेत्रने विषे साधुउं, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिंके०

(११४)

ज्ञान दर्शन तथा चारित्र आदिगुणे करी युक्त, सा
हंति मुक्कमगं के० मोक्षमार्गने साधे ठे, ते सा
धुउना सा देवी हरइ डुरिआइं के० ते क्षेत्रदेव
ता समस्त डुरित जे कष्ट ते प्रते अपहरो ॥ १ ॥

॥ अथ नवणदेवतानी स्तुती ॥ ४१ ॥

नवण देवयाए करेमि कानुस्सग्गं ॥

यस्याक्षेत्रं समाश्रित्या ॥ साधुनिः

साध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नि

त्यं ॥ नूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

अर्थ—यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य के० जे देवता
नां क्षेत्र ते ठेकाणे आश्रयिने साधुनिः साध्यते
क्रिया के० यतिउए धर्मनी क्रिया साधी जायठे.
साक्षेत्रदेवतानित्यं के० ते क्षेत्रनी अधिष्ठायिका
देवी ते निरंतर नःके० अमने सुखदायिनी के०
सुखनी देनारी नूयात् के० याउ. ॥ १ ॥

ज्ञानादिगुणयुतानां ॥ नित्यं स्वाध्या

य संयम रतानां ॥ विदधातु नुवनदे

वी ॥ शिवं सदा सर्व साधूनां ॥ २ ॥

अर्थ—ज्ञानादिगुणयुतानां के० ज्ञान दर्शन त
या चारित्र गुणे करी युक्त, अने नित्यं के०
निरंतर स्वाध्याय अने सत्तरप्रकारनो संयम, तेने
विषे रतानांके० आसक्त एवा सर्व साधुनांके० सर्व
साधुज, तेमने जुवनदेवता एटले हे जुवननी अ
धिष्ठायिका देवि, शिव के० मंगलिकने सदा के०
निरंतर विदधातु के० नीपजावो ॥ १ ॥ ए जुव
नदेवतानो काकस्सग करवो आवश्यकमां कह्यो
हे. तेमाटे ए मिथ्यात्व समजवुं नही. ॥४१॥

॥ अथ कमलदल स्तुति ॥ ४३ ॥

कमलदल विपुल नयना ॥ कमल
मुखी कमलगर्ज सम गौरी ॥ कमले
स्थिता जगवती ॥ ददातु श्रुतदेवता
सिद्धि ॥ १ ॥ इति ॥ ४३ ॥

अर्थ—कमलदल विपुल नयना, के० कमल
नां दल एटले पत्र तेजनी पठे विपुल एटले मो

(११६)

टां अने तीक्ष्ण लोचन ठे जेनां. कमलमुखीके०
 कमलना जेवुं सुगंधी, वाटलुं, अने सुशोभित ठे,
 मुख जेनुं, कमल गर्जसमगौरी के० कमलनो ग
 र्ज अर्थात् कमलना मध्यनागमां जे गर्ज ठे, तेनास
 रखो गौरवर्ण ठे जेनो एवी, कमलेश्वरिता जगवती
 के० कमलनेविषे बेठेली जगवती एटले जे सरस्वती,
 एवी श्रुतदेवताके० श्रुत देवता एटले सिद्धांतनी अ
 धिष्ठायिका देवी ते, मुजने सिद्धिके० धर्मनी सिद्धि
 ने दधातुके० आपो. अथवा मोक्षनी प्राप्ति करो.

॥ अथ अष्टाङ्गेषु मुनिवन्दन ॥ ४४ ॥
 अष्टाङ्ग ज्ञेसु दीव समुद्देशु ॥ पन्नरस
 सु कम्म जुमीसु ॥ जावंत केवि साहू
 रयहरण गुह पडिग्गह धारा ॥ पं
 चमहवयधारा ॥ अठारस सहस्स सी
 लंग धारा ॥ अस्सयायारचरित्ता ॥
 तेसवे सिरसा मणसा ॥ मण्णएण वं
 दामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

अर्थ-अष्टाङ्केसु दीवसमुद्देशु के० अढीही पनेविषे एटले प्रथम जंबू द्वीप, बीजो घातकीखंन, अने त्रीजो पुष्करवर द्वीपनुं अर्द्ध, अने बे समुद्र एटले लवणसमुद्र अने कालोदधि समुद्र-एउने विषे पन्नरससुकम्मनूमिसु एटले पांच जरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह, ए पन्नर कर्मनूमिने विषे जावंतकेवि साहू के० जेटला कोइ साधुउ ठे, ते रयहरणके० उधो, गुह्य के० पात्रानी जो लीनी उपरनुं उपकरण ते गुह्यो, अने पडिगहके० पतद्ग्रह, ते पात्रु एटलां वानांना धराके० धारण करनारा, एटले साधुवेषे संपूर्ण, तेमज पंच मह वयधराके० पांच महाव्रतना धारण करनारा, अठार सहस्स सीलिंगधराके० अठार हजार सीलिंग रथना धरनार, अस्कयायार चरित्ता के० अखं न आचार तथा चारित्र ठे जेहनां, ते सबे सिर सा मणसा मळएण वंदामिके० ते सर्व साधुउने मस्तके करी तथा मने करी मळएण वंदामि ए वचने करी पंचांग प्रणामे करी वांडुंबु. ॥४४॥

(११७)

॥ अथ वरकनक ॥ ४५ ॥

वरकनक शंख विडूम ॥ मरकत घ
न संनिजं विगतमोहं ॥ सप्तति शतं
जिनानां ॥ सर्वामर पूजितं वंदे ॥१॥

अर्थ—वरके० प्रधान उत्तम जातिवंत एवं क
नकके० सुवर्ण शंखके० शंख विडूमके० परवालुं,
मरकतके० नीलुरत्न, घनके० वरसाद, तेजना सन्नि
जके० सरखा एटले पांचवर्णना शरीरवाला, अने
विगतमोहं के० जीत्योढे मोह जेणे एवा, उत्कृ
ष्टे काले सप्ततिशतं के० एकशोने सिन्हेर जिनानां
के० तीर्थकरो जेउं सर्वामरपूजितंके० सर्व देवताउं
ए पूजिते ते तीर्थकरोने वंदे के० हुं वांडुं॥४५

॥ अथ चउकसाय ॥ ४६ ॥

चउकसाय पडिमल्लु लूरणु ॥ डुळ
य मयण वाण मुसुमूरणु ॥ सरस
पिअंगु वन्नु गयगामिउ ॥ जयउ पा

पासु नुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥

अर्थ— चक्रकसायके० क्रोधादि चार कषाय,
ते रूपीजे पडिमल्ल के० प्रतिमल्ल, एटले वै
री तेना उल्लूखण के० टालणहार, वली डुल्लय
के० दुर्जय एटले दुखे जीताय एवो जे, मयण
के० मदन एटले कंदर्प तेनां तीक्ष्ण बाण, तेनुं मस
मूरणके० उन्मूलन करनार, वली सरसके० रसे
करी सहित एवं पीयंगु के० प्रीयंगुवृक्ष तेना सह
स नीलवर्णजे जेनुं, वली गयगामिय के० हाथी
नीपरे गतिजे जेमनी, एवा जयउपासजवणत्तय
सामिअके० त्रण जगत्ना स्वामि श्री पार्श्वनाथ
ते जयवंता वर्त्तो ॥ १ ॥

जसुतणु कंति कमप्पसिणिद्धउ ॥ सो
हइ फण मणि किरणालिद्धउ ॥ नि
न्नव जलहर तडिल्लय लंठिउ ॥ सो
जिणु पासु पयच्चउ वंठिउ ॥ १ ॥ इति ॥ ४६
अर्थ—जस तणुकंतिके० जेना शरीरनीकांतिनो

(२२०)

कडप्पके० कलाप एटले समूह तेकेवोढे तोकेसिए
 ँउके० स्निग्ध-एवो सोह्दके० शोचेढे.वली फणि
 मणिकिरणा लिँउके० सात फणोनीजे मणिउ ते
 उनी किरण एटले कांतिए करी,आलिँउ एटले
 व्याप्त अएलो, अथवा मिश्रअएलो मलेलो ते नं
 न्नव जलहर तडिछय लंठिउ के० नं एटले जा
 णिए नव जलहर एटले नवीन मेघ ते जेमा
 तडिछय लंठिउ एटले विजलीए करी सहित शो
 चेढे तेनी पठे शोजतो होयना! एवोढे सोजिए पा
 सु पयहउ वंठिअ के० एवा हे श्रीपार्श्वजिन, मा
 हरा वांछित पयहउ एटले प्रत्ये दीउ ॥१॥४६॥

॥ अथ पोसहनुं पञ्चस्काण ॥ ४७ ॥

करेमि जंते पोसहं आहारपोसहं
 देसउ सबउ सरीर सक्कार पोसहं
 सबउ बंनचेर पोसहं सबउ अ
 वावार पोसहं सबउ चउविहे पोसे
 हंगमि जाव दिवसं अहोरत्तं प

(३३१)

जुवासामि छविहं तिविहेणं म
एणं वायाए काएणं नकरेमि न
कारवेमि ॥ तस्सजंते पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि आप्पाणं वो
सिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४७ ॥

अर्थ-करेमि जंते पोसहंके० हे जगवन्, अग्यार
मा पोसह नामे व्रतने अथवा धर्मने पुष्टी करते
पौषध ते प्रते हुं करूंहुं. पोसह एटले अष्टमि अने
चउदश प्रमुखने विषे जे नियम करवोते. नियमचा
र प्रकारेढे. एक आहारपोसहंके० आहारनो नियम
ते, देशउ के० देशथी करूंहुं, सबउ के० सर्वथीक
रूंहुं ; जो देशथी करे तो आहार अथवा पाणी
पोते लिए. अने बीजाने लेवरावे. उपवास तथा ए
कासणादिक तप करे, वली सर्वथी उच्चरे तो चो
ऊविहार उपवास करे. बीजो सबउ सरीर सत्कार
पोसहंके० सर्वथी शरीरनो सत्कार, स्नान, मङ्गन,
वस्त्र, तथा आचरणादिके करी शोजानो नियम तथा

(२२२)

नखकेश रोमनुं संमारवुं, तेज चोलाववुं, पीठीनुं कर
वुं. इत्यादिक सर्व निषेध करे. त्रीजो सबउ बंनचेर
पोसहंके० सर्व थकी ब्रह्मचर्यनी पुष्टी करे, एटले
सर्व प्रकारे स्त्रीनुं सेवन करे नही; चोथुं सबउ अ
वावार पोसहं के० सर्वथी अव्यापारनी पुष्टी करे,
एटले घर प्रमुखना जे पापव्यापार, तेनो सर्व
थी निषेध करे. ए चार प्रकारे पोसहने ठामि एट
ले अंगीकार कहुं. जाव दिवस पङ्कुवासामि
के० ज्यां सुधी दिवसठे त्यां सुधी कह्या जे ए चार
नियम ते निरतिचारपणे पालुं. अथवा जाव अहो
रत्तके० ज्यां सुधी दिवस अने रात्रठे, त्यां सुधी पोस
ह रूप नियम, अने थोडो एक दिवस होए ते
वारे रात्रि पोसह लिएतो आ प्रमाणे पाठनो उच्चार
करवो. जाव दिवस सेसं रत्ति पङ्कुवासामिके० ज्यां
सुधी थोडो दिवस होय. त्यांथी लइने आखीरात्र
सुधी पोसह निरतिचार पालुं. डुविहंतिविहेणंके०
बे प्रकारे अने त्रण प्रकारे मणेंणं वायाए काए
णं के० मन वचन अने कायाए करी न करेमि

(११३)

के० पोते सावद्य करूं नहीं, अने नकरावेमि
के० बीजाने उपदेश आपी तेनी पासे सावद्य करा
वुं नहीं. अने अनुमति मोकलीढे. केमके अनुमो
दनानो नियम गृहस्थथी पळे नहीं. तस्स जंतेके०
सावद्य पाप थकी हे जगवन् पडिक्कमामिके० पडि
क्कमुंहुं. निवर्त्तुंहुं. निंदामिके० आत्मानीसाखे क
री निंहुंहुं. गरिहामि के० गुरूनी साखे गरहुंहुं.
आप्पाणंसिरामि के० पापनो करनार एवो
जे आत्मा ते प्रत्ये वोसिरावुंहुं. ॥४७॥

॥ अथ पोसह पारता गाथा ॥४८॥

सागरचंदोकामो ॥ चंदवमिसो सुदं
सणो धन्नो ॥ जेसि पोसह पडिमा॥

अखंमिआ जीविअंतेवि ॥ १ ॥

अर्थ—सागर चंदो कामोके० सागर चंड अने काम
देवनामे श्रावक, चंदवमिसो सुदंसणोके० चंडावत
सक राजा वलीसुदर्शनशेठ तेने राणीएचूकाव्यो प
ण चूक्योनही. ते, धन्नो के० धन्य एटले जाग्यवंत,

जेसिं पोसहपडिमाके० जेउना पोसहनो पडिमा ए
टले अनिग्रह ते, अखंमिआ जीविअंतेविके० अखं
मित एटले खंमना रहित एवा जेउए मरणांत सु
धी नियम पाव्या एवा पूर्वोक्त पुरुषो ते तथा ?

धन्ना सलाहणिजा ॥ सुलसा आणं
द कामदेवाय ॥ जेसिं पसंसइ जय
वं ॥ दढवयंतं महावीरो ॥ १ ॥

पोसह विधे लीधो ॥ विधे पारिउ
विधि करतां ॥ जेकांइ अविधि हुं
उ होय ॥ ते सवि हुं मन वचन काया
ए करी ॥ मिहामि डुकडं ॥ ३ ॥ इति

अर्थ—धन्नाके० धन्य एटले मोटा जाग्यवं
त सलाहणिजाके० श्लाघनीय एटले प्रशंसा क
रवा योग्य, सुलसा आणंद काम देवाय के०
सुलसा आविका, आणंद आवक तथा कामदेव
आवक जेसिंपसंसइ जयवं के० जेउनी प्रशंसा

(३२५)

श्री जगवाने पोते करेली ठे, दढवयं तं महा वी
रो के० एउ दढ व्रतवाला ठे, एवी रीते श्री म
हावीर जगवाने श्री मुखे वखाण करेलुं ठे. इहां
पोसह, विधे लीधो इत्यादिकनो अर्थ सुगम ठे.

॥ अथ संथारा पोरिसि प्रारंजः ॥ ॥ ४ए ॥

निसिही निसिही निसिही ॥ नमो
खमा समणाणं गोयमाईणं महामु
णीणं॥नमो अरिहंताणं॥करेमि० ॥
अणु जाणह जिठिळा ॥ अणु जाण
ह परम गुरु गुरुगुणरयणेहिं मंदि
य सरीरा बहु पडिपुत्रा पोरिसी राई
अ संठारए ठामि ॥ १ ॥

अर्थ—निसीहीनिसीहिनिसीहि के० नमस्का
रविना बीजो व्यापार निषेधीने नमोखमासम
णाणंके० नमस्कार हो. कृमासहित एवा जे गो
अमाइणंके० गौतमादिक महामुणीणंके० मोहो
टामुनीश्वरने.इहां नवकार कहीने वली करेमिजंते

(११६)

कहीये. एम त्रणवार कहीए. पढी अणुजाणह के० आझा आपो. जिछिझा के० महोटा साधु अणुजाणह परमगुरू के० आझा आपो, एम जे पोशालमां महोटा गुरूढे तेने केहेवुं. ते गुरू के वाढे? तोके गुरूके० महोटा एवा जे गुण रयणेहिं के० गुण तद्रूप रत्नेकरीने मंमित ठे एटले शोनाय मानढे शरीर जेनुं, बहुपडिपुन्नापोरिसिके० अति शय प्रतिपूर्ण यइ पोरिसी राइअसंथारए के० रा त्रीना संथाराने विषे ठामि के० ठाऊं ॥ १ ॥

अणु जाणह संथारं ॥ बाहु वहाणे
ए वाम पासेणं ॥ कुक्कडि पाय पसा
रेणं ॥ अतरंतु पमझएजूमि ॥ २ ॥

अर्थ—अणुजाणह के० आझा आपो मूजने तो हुं संथारंके० संथारो करुं. बाहुवहाणेणके० हाथने उसीके वामपासेण के० मावे पासे कुक्कुडि पायपसारेणं के० कुकडीनी पठे पग पसारी ऊंचा लांबा करी अतरंतुपमझएजूमि के० एम करी न

(११७)

शकुंतो अनुक्रमे नूमी पुंजी पग पसारुं ॥ १ ॥

संकोइअ संमासा ऊवटंतेय कायप
डिलेहा दवाई उवउंगं ॥ णिस्सास
निरुंजणा लोए ॥ ३ ॥

अर्थ—संकोइअसंमासा के० संमासा एटले प
गने संकोचीने सूबुं ऊवटंतेअ के० पासुं पालटुं
तो कायपडिलेहा के० कायानी पडिलेहणा करुं;
अने जागृत अए अके दवाईके० इव्यादिकचारनो
उवउंगंके० उपयोग करुं. संजारुं, एम करतां पण
जो निडा उडी न जाय तो उसासनिरुंजणालोए
के०श्वासोश्वास रूंधीने पढी दिशालोक करुं ॥३॥

जइ मे दुज्ज पमाउ ॥ इमस्स देहस्स
इमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहिदेहं
सवं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थ—जइ के० जो मे के० महारा जीवने दुज्ज
के०होय, पमाउ एटले प्रमाद जे मरण इमस्स

(११८)

देहस्स के०ए देहने इमाइरयणीए के०ए रात्रीने
विषे अर्थात् आ रात्रीनेविषे माहरा देहनुं मर
ए नीपजे तो आहार के०चार प्रकारना आहार
अने उवहके०ऊपधि जे ऊपकरण, तथा देहं के०
शरीर ए सव्वंके०सर्वपरिग्रहने तिविहंके०मन वच
न अने कायाए करी वोसिरिअं के०वोसिरावुंनुं॥४

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सि
द्धा मंगलं साधु मंगलं ॥ केवली प
न्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥

अर्थ—चत्तारिमंगलंके० चार मंगल पडिवजुं.
ते चार मंगलनां नाम कहेवे. अरिहंतामंगलंके०
प्रथम अरिहंत मंगलिक, सिद्धामंगलं के० बीजुं
सिद्धमंगलिक, साधुमंगलं के० त्रीजुं साधु मं
गलिक, केवलिपन्नत्तोधम्मोमंगलं के० चोथुं केवली
नाषित धर्म मंगलिक ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्त

(११९)

मा सिद्धालोगुत्तमा साधु लोगुत्त
मा केवली पन्नत्तो धम्मोलोगुत्तमो ॥६॥

अर्थ—चत्तारिलोगुत्तमा के० चारवानां लोक
मांहे उत्तम ठे. तेमनां नाम कहे ठे. प्रथम लोक थ
की प्रधान गुण ठे, माटे त्रैलोक्यनेविषे अरिहंत
उत्तम ठे, बीजा लोकने अग्रजागे रह्या, अथवा
अष्टकर्म क्हीण कख्या ठे. माटे त्रैलोक्यनेविषे सि
द्ध उत्तम ठे, बीजा ज्ञान, दर्शन तथा चारित्रना
साधनारा ठे ते हेतुमाटे साधु ते पण त्रैलोक्यने
विषे उत्तम ठे, चौथो दुर्गतिमां पडनारा जंतुउने
उद्धार करवापणाना हेतुए केवलीनो परूप्यो ध
र्म तेपण त्रैलोक्यनेविषे उत्तम ठे ॥ ६ ॥

चत्तारिसरणं पवज्जामि ॥ अरिहंते
सरणं पवज्जामि सिद्धे सरणं पवज्जा
मि साधू सरणं पवज्जामि ॥ केवल्लि
पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

(१३०)

अर्थ—चत्वारिसरणं पवक्कामि के० चारे शरण पडिवज्जुं. ते शरणनां नाम कहेहे. एक अरिहं तनुं शरण पडिवज्जुं. बीजुं सिद्धनुं शरण पडिव ज्जुं. त्रीजुं साधुनुं शरण पडिवज्जुं. चोथुं केव लीपरूपित धर्म, तेनुं शरण पडिवज्जुं ॥ ७ ॥

पाणाइ वाय मलिअं चोरिकं मेहु
एणं दविणमुहं ॥ कोहं माणं मायं
लोहं पिज्जं तद्दादोसं ॥ ८ ॥

अर्थ—प्रथम पाणाइवाय के० प्राणातिपात, बीजो मलियंके० अलिकंते मृषावाद, त्रीजुं चोरिकं के० अदत्तदान, चोथुं मेहुण के० मैथुन, पांचमो दविणमुहं के० इव्यादिकनी मूर्छा ते परिग्रह, छठो क्रोध, सातमुं मान, आठमो माया, नवमो लोभ, दशमो प्रेम ते राग, अग्यारमो तद्दा के० तेमज दोसं के० देष, ॥ ८ ॥

कलहं अप्रस्काणं पेसुन्नं रइअरइ

(१३१)

समागतं परपरिवायं माया मोसं
मिञ्चतसद्धं च ॥ ए ॥

अर्थ-बारमो कलह ते वढवाड, तेरमुं अन्या
ख्यान ते आलनुं देवुं, चोदमुं पैशून्य ते चाडी, प
न्नरमुं रति ते अधर्मकरणीनेविषे राग, अने
अरति ते धर्मकरणीनेविषे द्वेष, तेउंएकरी समा
उत्तं के० सहित, सोलमुं परपरिवायं के० परना
अवर्णवाद बोलवा, सत्तरमो माया मृषावाद, च
के०वली अठारमुं मिथ्यात्व शब्द. ॥ ए ॥

वोसिरिसुइमाइं मुक्कमग्ग संसग्ग
विग्घ नूआइं ॥ डुग्गइ निबंधणाइं
अठा रस पावठाणाइं ॥ १० ॥

अर्थ-वोसिरिसुइमाइंके०वोसिरावुंठुं. ए प्रत्यह
जे पूर्व कथां ते अठारे पापस्थानकने. एकेवांठे?तो
के-जीवने मुक्कमग्गसंसग्गके०मोह मार्गना संस
र्ग एटले परिचयने विग्घनूआइंके०विघ्ननूतठे.एट

(१३१)

ले विघ्ननां करनारहे. दुग्गइ के० दूर्गति जे नरक
निगोदादिकनी गति तेनां निबंध्यणइंके० कारणढे.
अछारसपावठाणाइं के० एवा ए अढारे पापस्या
नक प्रत्ये वोसिराबुंढुं ॥ १० ॥

एगोहं नञ्जिमेकोइ नाह मन्नस्स क
स्सई एवं अदीणमणसो ॥ अप्पाण
मणुसासए ॥ ११ ॥

अर्थ—एगोहं के० एकलोहुं नञ्जिमेकोइके० मा
हारो कोइ नथी. नाहमन्नस्सकस्सइ के० हुं अने
रा एटले बीजा कोइनो नथी. एवं के० एम अदी
णमणसो के० अदीन एटले नथी दीन मन जेनुं
एवो वैराग्य मय मन ते अप्पाणमणुस्सासए के०
आपणा आत्माने शीखामण आपे ढे. ॥ ११ ॥

एगोमे सासउअप्पा नाण दंसणसंजु
उ सेसामे बाहिरा जावा ॥ सबे सं
जोग लक्खणा ॥ १२ ॥

(१३३)

अर्थ—एगोमेसासउअप्पाके० एक महारो आत्मा
 ठेते शाश्वतो ठे. तेकेवोठे? तोके—नाणदंसणसंजुउ
 के० ज्ञान दर्शनेकरी संयुक्तठे. सेसा मे बाहिराजावा
 के० शेष थाकतां माहारे सघलांए ऊपकरण ते बा
 ह्यजाव जाणवा. सबेसंजोगलस्कणाके० सर्व संयो
 गादिक पदार्थ ते बाह्यलक्षणठे. संयोग मात्रठे, १ ३

संजोग मूला जीवेण पत्ता डुस्क परंप
 रा ॥ तम्हा संजोग संबंधं सबं तिवि
 हेण वोसिरिअं ॥ १३ ॥

अर्थ—संजोग मूलाजीवेणके० संयोग ठे मूल
 जेनुं, एवी अनेक दुःखनी परंपरा ते जीवे पामी. त
 म्हाके० तेमाटे संसारना संयोगनो जे संबंध ते स
 र्व मन वचन अने काया ए त्रिविधेवोसिराबुंठुं? ३

अरिहंतो महदेवो ॥ जावज्जीवं सु
 साहुणो गुरुणो ॥ जिण पन्नतं तत्तं॥
 इयसमतं मए गहिअं ॥ १४ ॥

(२३४)

अर्थ—अरिहंत महारो देवठे, अने जावजीव लगे सुसाधु महारा गुरुठे, अने जिननुं परूप्युं त त्व जे जीवदया मूल धर्म, ए त्रण तत्वे सहित एवुं सम्यक्त्व ते मए के० में गहिअं के० ग्रह्युं आदखुं ॥ १४ ॥ इति संयारापोरिसी समाप्त.

॥ अथ महावीरस्तुति प्रारंभ ॥ ५० ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे सच्या वि
जोः शैशवे॥रूपालोकन विस्मया हतर
सभ्रांत्याभ्रमच्चक्षुषा॥उन्मृष्टं नयनप्रज्ञा
धवलितं क्षीरोदकाशंकया॥वक्रं यस्य पुनः
पुनःसजयति श्रीवर्धमानोजिनः ॥१॥

अर्थ—स्नातस्यके० नवराव्यो अप्रतिमस्यके० निरुपम, मेरुशिखरेके० मेरुपर्वतना शिखरनेविषे श च्याके० इंद्राणि, विजोके० स्वामिना, शैशवेके० बालावस्थानेविषे, रूपालोकनके० रूपनुं आलोकन ए टले जोवुं, तेथकी उपन्युं जे विस्मयके० आश्चर्य,

(१३५)

तेरूप आहतके० खाधो जे रसके० पारो, तेनी चां
 त्याके० चांते करी चमत् के० नमतां एवांजे
 चहुषा के० चहु जेनां, एवी इडाणीए उन्मृष्टं
 के० मांज्युं लुब्धुं, नयनके० चहुनी प्रजाके०
 कांतीए करी धवलितं के० ऊज्वल कयुं; क्षीरोदक
 के० क्षीरसमुद्रना पाणीनी आशंकया के० शंका
 ए करी वक्र के० मुखप्रत्ये यस्य के० जे नगवं
 तना पुनः पुनः के० वारंवार सके० ते जयति के०
 सर्वोत्कृष्टे वर्तते एवा वर्द्धमानोजिनः के० श्रीवर्द्ध
 मान नामा वीतराग देव ॥ १ ॥

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशङ्गीराणवांचो
 नृतैः ॥ कुंचै रप्सरसांपयोधरनरप्रस्प
 र्क्षिजिः कांचनैः ॥ येषामंदररत्नशैल
 शिखरे जन्मान्निषेकः कृतः सर्वैः सर्वसु
 रासुरेश्वरगणैस्तेषां नतो हंक्रमात् ॥ २ ॥

अर्थ—हंसांसाके० राज हंसपंखीना अंसएटले

(१३६)

पांख तेणेकरी हतके० उमाडया एवा पद्मरेणुके०
 कमलना पराग, तेणेकरी कपिश के० रातु पीजुं
 थयुं एवुंजे क्षीरार्णवांनोके० क्षीरसमुद्रनुं पा
 णी तेणेकरी नृतैः के० नखा एवा कुंनैः के० क
 लश तेणेकरी अप्सरसांपयोधरके० देवांगनानास्त
 न तेना जर के० समूहने प्रस्पर्दिनिः के०
 स्पर्दिना करनार एवा कांचनैः के० कंचन संबंधी
 कलशो तेणेकरी, येपांके० जेमनो मंदर रत्नशैल
 शिखरे के० मेरुपर्वतना शिखरनेविपे जन्मानिपे
 कः रुतः के० जन्म महोत्सव कखो. कोणेकखो? स
 र्वसुरासुरे श्वरके० सर्व देवता अने असुर ते दानव
 तेना इश्वरजे इंद्रो, तेना गणके० समूह तेमणेकखो
 स्तेषांके० ते सर्वजिनोना क्रमान् के० चरणकम
 लप्रत्ये नतोहं के० हुं पण नम्योबुं ॥ १ ॥

अर्द्धध्रुव प्रसूतं गणधर रचितं द्वादशां
 गंविशालं॥ चित्रंबद्धयुक्तं मुनिगण वृष
 नैर्धारितं बुद्धिमद्भिः॥ मोक्षाग्रद्वारचूतं व्र

तचरणफलं ज्ञेयज्ञाव प्रदीपं॥नक्त्यानित्यं
प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारं ३

अर्थ-अहं ऋक् के० अरिहंतना वदनथकी प्र
सूतं के० प्रगट थयो, अने गणधररचितं के० गण
धरे रच्यो एवो, षादशांगके० आचारांगादिक षा
दशांगरूप विशालं के० विस्तीर्ण, अने चित्रं के०
आश्चर्यकारी, बहुअर्थयुक्तं के० घणो अर्थे सहित,
जेने मुनिगणवृषनैर्धारितं के० साधुसमुदायना
नायक एटले स्वामिए धख्यो. ते साधु केवाढे? तोके-
बुद्धिमन्त्रि:के० बुद्धिवंतढे मोक्षाग्रधारनूतं के० मो
क्षरूप गृहना मुख्य बारणा सरखो. वली व्रतचर
णफलं के० व्रत अने चारित्र फल ढे जेनुं, ज्ञेय
ज्ञाव के० जाणवायोग्य पदार्थनेविषे प्रदीपं के०
दीवा सरखो, तेने नक्त्या के० नक्तिए करीने नित्यं
के० निरंतर प्रपद्ये के० अंगिकार करुंहुं. श्रुतके०
सिद्धांतने अहंके० हुं अखिलं के० अखिल एटले
समस्त सिद्धांतने. ते सिद्धां केवो ढे? सर्वलोकै

(१३७)

कके० सर्वलोकनेविषे अद्वितीय सारंके० प्रधानढे.
 निष्पंकव्योमनीलद्युतिमल सदृशं बाल
 चंजानदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेण प्रसृतमदज
 लं पूरयंतं समंतात्॥आरूढो दिव्यनागं
 विचरति गगने कामदः कामरूपी यक्षः
 सर्वानुचूति दिशतुममसदासर्वकार्येषु
 सिद्धि ॥ ४ ॥ इति श्री वीरस्तुतिः ॥

अर्थ-निष्पंक के० वादले रहित व्योम के०
 आकाश, तेना सरखी नीलके० श्याम, द्युति के०
 कांतिढे जेनी, अने अलसदृसं के० मदेधूर्मित ने
 त्रढे जेहनां, वली बालचंजान के० बालचंजमाना
 सरखी दंष्ट्रं के० दाढाढे जेहनी, मत्तं के० मदोन्म
 त्त घंटारवेणं के० घंटाना शब्द साथे प्रसृतके० प्र
 सरंतु जे मदवारी, तेणेकरी पूरयंतं के० पूरयंतं
 समंतात् के० सर्व जगाए आरूढो के० बेगो, दिव्य
 नागंविचरति के० देवरूप हस्तिप्रत्ये विचरे ढे, ग

(१३९)

गने के० आकाशने विषे विचरेढे. कामदः कामरू
पी के० मनोवांछितदायक इष्ठाचारि यद्दः सर्वानु
नूति के० सर्वानुनूति नामा यद्देवता ते दिशतु
के० आपो. ममके० मुजने सदा के०निरंतर सर्व
कार्येषुसिद्धि के० सर्व कार्यनेविषे सिद्धिप्रत्ये आ
पो ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुतिः ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति. ॥ ५१ ॥

श्रीनेमिः पंचरूप त्रिदशपतिकृत प्रा
ज्य जन्मान्निषेक ॥ श्रंचतूपंचाहमत्त
द्विरद मदन्निदा पंचवक्त्रोपमानः॥निर्मुक्त
पंचदेह्या परम सुखमय प्रास्त कर्म प्रपं
चः॥ कल्याणं पंचमीसत्तपसि वितनुतां
पंचम ज्ञानवान्वः ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीनेमिः के० श्रीनेमिनाथने पंचरूपे
करी त्रिदशपति के० इंद्रे तेणे कृत के० कखोढेः
प्राज्यके० महोटी जन्मान्निषेक एटले जन्म महो

तसव जेनो, श्रंचतूके० दीपता एवाजे पंचाहके०
 पांचइंडिय तेरूप जे मत्तके० मदोन्मत्त एवो दि
 रदके० हाथी, तेनो मदके० अहंकार तेनो जिदा
 के० जेदबुं, तेनेविषे पंच वक्रोपमानः के० सिंह
 नुं उपमानठे जेहने एवा, वली निर्मुक्तः पंचदेह्यां
 के० औदारिक प्रमुख शरीरे करीरहित परम सुं
 खमय के० अतेंडिय सुख सहित प्रास्तकर्मप्रपंच
 के० टाव्याठे कर्मना प्रपंच एटले विस्तार जेणे
 एवा पंचमज्ञानवान एटले केवल ज्ञानवंत ते वः
 के० तमने पंचमो सत्तपसिके० पंचमीना जला त
 पने विषे कल्याणके० कल्याण आरोग्य प्रत्ये नि
 र्विघ्न पणे मंगलिकने वितनुतांके० विस्तारो॥१॥

संप्रीणन् सच्चकोरान् शिव तिलक स
 मः कौशिकानंद मूर्तिः ॥ पुण्याब्धि प्री
 तिदायी सित रुचिरिवयः स्वी यगोन्नि
 स्तमांसि ॥ सांजाणि ध्वंसमानः शकल

(૩૪૧)

કુવલયોદ્ધાસમુચ્ચૈ શ્વકાર ॥ જ્ઞાનં
પુષ્યાક્લિનોઘઃ સતપસિ જવિનાં
પંચમી વાસરસ્ય ॥ ૨ ॥

અર્થ—હવે સર્વજિનને ચંદ્રમાની સમાનતા વ
ખાણેઢે. સંપ્રીણનૂ કે૦ સમ્યક્પ્રકારે હર્ષવંત કરે
ઢે. સચ્ચકોરાનકે૦ સત્પુરુષરૂપ ચકોરપ્રત્યે શિ
વકે૦ મોહનેવિષે તિલકસમઃકે૦ તિલકસમાન
ઢે કૌશિકાનંદિમૂર્તિઃકે૦ કૌશિક જે ઇન્દ્ર—તેને આ
નંદકારી મૂર્તિ ઢે જેહની. ચંદ્રપદ્મે કૌશિક કે૦
ધૂઅડ, તેને આનંદકારી મૂર્તિઢે જેની, પુણ્યાબ્ધિપ્રી
તિદાયી કે૦ પુણ્યરૂપ સમુદ્રને પ્રીતિનો કરનાર,
શિતરુચિરિવયઃકે૦ ચંદ્રમાન્વ, ઇટલે ચંદ્રમાનીપરે
ઉપમાનને અર્થે જે જિનનો સમૂહ—તે સ્વીય કે૦
પોતાની ગોનિસ્તમાંસિ કે૦ વાણીરૂપ કિરણે કરા
અજ્ઞાનરૂપ અંધકારપ્રત્યે સાંડાણિ ધ્વંસમાની
કે૦ નિવડપણે ટાલતો ઢે. અને સકલકુવલયોદ્ધા
સંકે૦ સમસ્ત પૃથિવી વલયને ઝલ્લાસપ્રત્યે, અને

(२४२)

चंद्रपद्मे समस्त कुवलय जे चंद्रविकाशी कमल
तेने उच्चाहप्रत्ये उच्चैश्चकार के० अतिशयपणे कर
तो हवो. ज्ञानं के० ज्ञानप्रत्ये पुण्यात् के० पुष्टी
करो. जिनौघः के० जिननो समूह. सतपसि के०
जला तपनेविषे जविनां के० जव्यजीवोने. पंचमी
वासरस्य के० पंचमीना दिवसनेविषे. ॥ २ ॥

पीत्वा नानाविधार्थामृतरसमसमयां
ति यास्यंतिजग्मुः ॥ जीवा यस्मादने
केविधिवतमरतां प्राज्य निर्वाणपुर्ण्यां ॥
यात्वा देवाधिदेवागमदशमसुधा कुं
प्रमानंद हेतु ॥ स्तत्पंचम्या स्तपस्यु
द्यतविशदधियां नाविनामस्तुनित्यां ॥३॥

अर्थ—नानाविधार्थामृतरसके० नानाप्रकारनां
ठे नाम जेहनां, एवा अमृतरस प्रत्ये पीत्वाके०
पान करीने असमं के० उपमारहित यांति के०
जायठे, यास्यंतिके० जज्ञे, जग्मुः के० गया. जी

(१४३)

वाके० जीवः यस्मात्के० जे अर्थरूप अमृतना
पीवाथी अनेकेके० घणा विधिवत्के० विधि पूर्व
क अमरतां के० अजरामरपणाप्रत्ये प्राज्य के०
महोटी एवी निर्वाणपूय्यांके० मोक्ष नगरीनेविषे
यात्वाके० पामीने, देवाधिदेवके० वीतरागना आ
गमके० सिद्धांत-तेरूप दशमसुधाकुंभके० दशमो
अमृतकुंभ, आनंदहेतुके० मोक्षनुं कारण. स्तत्पंच
म्या स्तपसीके० ते पंचमीना तपनेविषे विशदके०
निर्मल एवा धियांके० बुद्धिवंत जविनां के० जव्य
जीवोने नित्यं के० निरंतर अस्तु के० हो. उद्य
त के० उजमाल ॥ ३ ॥

स्वर्णालंकार वलगन्मणिकिरण गण
ध्वस्तनित्यांधकारा ॥ हुंकाराराव दूरी
कृत सुकृतजनव्रात विघ्नप्रचारा॥ देवीश्री
अंबिकारूपा जिनवरचरणांजोजनूं
गीसमाना ॥ पंचम्य न्हस्तपोर्थ वित
रतुकुशलं धीमतां सावधाना ॥ ४ ॥

(१४४)

अर्थ—सुवर्णेना अलंकारनेविषे वल्गन्मणिके०
 बलगेला जे मणि तेनां किरण के० तेज तेना गण
 के० समूह तेणेकरी ध्वस्तके० टाड्युंढे नित्यांधकारा
 के० निरंतर अंधकार जेणीए. हुंकाराराव के० हुं
 कारशब्द, तेणेकरी दूरीकृतके० दूर कीधा नक्त ज
 न समूहना विघ्नसमूह जेणीए, एवी देवीश्रीअं
 बिकाख्याके० अंबिका एवे नामे देवी जिनवरचर
 णांनोजनृंगीसमाना के० वीतरागना चरण कम
 लनेविषे नमरी समान, ते सावधाना के० साव
 धान होतीयकी पंचम्यन्हस्तपोर्यके० पंचमी दि
 वसना तपने अर्थे धीमंता के० पंमितोने कुशलं
 के० कुशल प्रत्ये वितरतुके० दीउ. ॥४॥इति॥५१॥

अथ सकलार्हत् प्रारंभ ॥ ५१ ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान ॥ मधिष्ठानं

शिव श्रियः ॥ नूर्नुवः स्वस्त्रयीशान

मार्हृत्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥

अर्थ—सकलार्हत् के० समस्त अर्हत् पूजनीय

(३४५)

गुणना धणी, अथवा अर्हत् पदवाचक जे अर्ह,
एहवुं जे स्याद्वाद सूत्र, तेहनं प्रतिष्ठानं के० स्था
नक. वली केवुंठे? शिव श्रियः के० मोक्षरूप ल
क्ष्मीनुं अधिष्ठानं के० साधनठे. वली केवुंठे? नूः
के० मनुष्यलोक अने जुवःके० पाताललोक स्वः
के० देवलोक, ए त्रयी के० त्रण, तेहनो ई
शानके० स्वामीठे; एहवो जे आर्हत्यं के० अरिहं
तनो समूह, ते प्रत्ये प्रणिदध्महे के० चित्तमांहे
धरुं ध्यानारूढे करुं. इतिगाथार्थ ॥ १ ॥

नामाकृति इव्यजावैः ॥ पुनतस्त्रि ज
गज्जनं ॥ क्षेत्रे कालेच सर्वस्मि न
र्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥

अर्थ—नामके० नामनिक्षेप ते तीर्थकरनामकमां
दय, आकृति के० आपनानिक्षेप ते जिनप्रतिमा,
इव्यके० जिनना जे जीव आगल याशे ते, जावैः
के० समवसरणनेविषे विराजमान श्री सीमंधरस्वा
मिप्रमुख. ए जे चार निक्षेपा, ते एकरि त्रिजगज्जनं के०

(२४६)

त्रण जगत्ना जनप्रत्ये पुनतः के०पवित्र करताढे.
सर्वस्मिन् क्षेत्रे के०समस्त क्षेत्रनेविषे च के०पुनः
काले के० समस्त कालनेविषे एटले अतीतकाल,
तथा अनागत काल, अने वर्त्तमानकालनेविषे अ
र्हतः के०पूर्वे वखाण्या एवा जे अरिहंत ते प्रत्ये
हुं वंदन, सत्कार, सनमानादिके करी समुपास्म
हे के० अमे सेवाकरीए ठैए. इतिगाथार्थः ॥२॥

हवे वर्त्तमान चोवीशजिनने प्रणाम करे ठे.

आदिमं पृथिवीनाथ मादिमंनिः

परिग्रहं आदिमंतीर्थनाथंच रु

पञ्चस्वामिनंस्तुमः ॥ ३ ॥

अर्थ-आदिमंपृथिवीनाथं के०प्रथम पृथिवीना
राजाप्रत्ये आदिमंनिःपरिग्रहं के०प्रथम साधु ठे,
आदिमंतीर्थनाथंच के०पेला तीर्थनाथ एटले प्रथ
म तीर्थकर ठे. एहवा जे रूपनस्वामिनंके०रूपन
स्वामि तेप्रत्ये तुमः के० स्तवना करीएढीए. मा
ताए स्वप्नमध्ये वृषन दीगो, माटे रूपननाम, अ

अथवा दक्षिण जंघानेविषे वृषननुं चिन्हठे ते माटे.
अनेसर्व तीर्थकरनेचिन्हदक्षिणजंघानेविषेजाणवुं.

अर्हतमजितंविश्व ॥ कमलाकर ना
स्करं ॥ अम्लानकेवलादर्श ॥ सं
क्रांत जिगतंस्तुवे ॥ ४ ॥

अर्थ—अर्हतं के० त्रैलोक्यपूजनीय एहवा अ
जितं के० कर्म जीती न शकीए ते माटे अजीत
नाम, अथवा माताना गर्जेनेविषे रहे ठेते अन्य
राजा जीती न शके, तेमाटे श्रीअजितनाथ. वली
केवाढे ? विश्वकमलाकरनास्करं के० जगतरूप जे
कमलाकर के० कमल जेमां ठे एवुं सरोवर, तेहने
प्रकाशवाने नास्कर एटले सूर्यसमान ठे. अम्लान
के० निर्मल केवल ज्ञानरूप आदर्श के० आरिसो,
तेहनेविषे संक्रमाव्युंढे, एटले प्रतिबिंबित कसुं
ढे, जगत्के० लोका लोक जेणे, एहवा अरिहतं
प्रत्ये स्तुवेके० स्तवना करुं वुं. इति गाथार्थ.॥४॥

विश्वजव्यजनाराम ॥ कुल्यातुल्या

(१४८)

जयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः ॥ श्री
शंजव जगत्पतेः ॥ ५ ॥

अर्थ-विश्व के० जगत्नेविषे अथवा विश्वके०
समस्त नव्यजनरूप जे आराम एटले उद्यान, ते
ने सिंचवाने कुल्या के० नीक, तेहने तुल्या के०
सरखी एहवी जे विख्यात, जयंतु के० जयवंती
प्रवर्त्तो. देशना समये के० उपदेशकाले वाचः
के० वाणी. केहनी वाणी ? श्रीशंजवनाथ जग
त्स्वामिनी. सुख उपजे जेहथी तेहने शंजव
कहीए, अथवा जन्मसमये धान्यना समुदाय वि
शेषे नीपना, तैमाटे शंजवनाथ. इति गाथार्थ ५

अनेकांत मतांजोधि ॥ समुद्भासनचं
दमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं ॥ जगवा
नजिनंदनः ॥ ६ ॥

अर्थ-अनेकांत के० अनेकांत मत जे स्या दारू
प अंजोधि के० समुद् ते अपरंपार. अगाध पाणी

(१४९)

माटे.तेहनो समुद्रास के० उद्गास करवाने चंडमा
सरखा,एटले जेम चंडमा देखी समुद्र वृद्धि पामे,
तेम जगवंतथी नव्यजीव आनंद पामे एवा जे अ
जिनंदनजगवान् जे ते अमंदके० घणो एवोजे आनं
दके० हर्ष तेप्रत्ये दद्यात् के० आपो. इति गायार्थद

द्युसत् किरीट शाणाग्रो तेजितांहि
नखावलिः॥ जगवान् सुमति स्वामी
तनोत्वन्निमतानिवः ॥ ७ ॥

अर्थ—द्युसत् के० देवता, तेना जे किरीटके०
मुकुट, तद्रूप जे शाणाग्र के० अग्रजाग जे खु
णा—तेणे उत्तेजित के० अतिशय तेजवंत कीधा
हे अंहि के० चरणना नखनी आवली के०
श्रेणी जेहनी, एहवा जगवान् श्रीसुमतिस्वामि ते
वःके० तमारा अन्निमतानिके० वांछित प्रत्ये त
नोतुके० विस्तारो. इति गायार्थ ॥ ७ ॥

पद्मप्रज्ञ प्रजोर्देह ॥ ज्ञासःपुष्पंतुवः

(१५०)

श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने ॥ कोपाटो
पादिवारुणाः ॥ ८ ॥

अर्थ—पद्मप्रन के० स्वामिनी माताने रक्तकम
लनी शय्यानुं दोहद थयुं तेमाटे पद्मप्रन एवुं
नाम. पद्मप्रनप्रलुनी देहनासः के०शरीर संबंधी
कांतिठे, ते वःके०तमारी श्रियं के० कल्याणरूप
लक्ष्मीप्रत्ये पुष्टंतु के० पुष्ट करो. पद्मप्रन स्वामि
ना शरीरनेविपे रक्तवर्ण ठे, जेहनी कांतीराति
होए ते उपर कवि नावना करे ठे, अंतरंगारि
के० अंतरंगना जे अरि मोहादिकठे, तेमने मंथ
न करवाने अर्थे एटले दूर करवाने अर्थे कोप ए
टले क्रोधनो आ टोप के० प्रबलता थकीज इव
के०जाणे अरुणा के० राती यई होयना! ॥ ८ ॥

श्री सुपार्श्व जिनेंजाय ॥ महेंद्र महि
तांद्रये ॥ नमश्चतुर्वर्ण संघ ॥ गग
नाजोगनास्वते ॥ ९ ॥

(१५१)

अर्थ—महेंड के० मोटा जे चोसठ इंड, तेम
 एो महित के० पूज्या ठे, अंहि के० चरण जेह
 ना, ते श्रीसुपार्श्वस्वामीने नमस्कार होजो. वली
 सुपार्श्व केहवा ठे? चतुर्वर्ण जे संघ एटले साधु,
 साधवी तथा श्रावक श्राविका—तद्रूप जे गगन ए
 टले आकाश, तेहनो आनोग के० प्रकाश—तेने
 विस्तार करवाने नास्वत् के० सूर्यसमान ठे. ॥ ए ॥

चंडप्रज्ञ प्रज्ञोश्चंड ॥ मरीचिनिचयो
 ज्वला ॥ मूर्तिर्मूर्त सितध्यान ॥ निर्मि
 तेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥

अर्थ—चंडप्रज्ञ प्रज्ञो के० चंडप्रज्ञ प्रचुनुं शरी
 र ठे ते, चंडमरीचिनिचयोके० चंडमानां जे किर
 ए तेनो निचयके० समूह, ते थकी अधिक उज्व
 ल—निर्मल एहवी मूर्तिके० शरीर ठे. मूर्तके० मूर्ति
 वंत जे सितध्यानके० शुक्लध्यान, तेणे करीने ज जाणे
 निर्मिताके० नीपजावी इव के० होयना ! एहवी

(१५१)

जे चंडप्रनमूर्ति ते वःके० तमने श्रिये के० झा
नादि लक्ष्मीने अर्थे अस्तुके० थाउं॥ १० ॥

करामलकवद्विश्वं ॥ कलयन् केवल
श्रिया ॥ अचिंत्य माहात्म्यनिधिः ॥

सुविधिबोधये स्तुवः ॥ ११ ॥

अर्थ-करके० हाथ, तेहनेविषे अमल के०
निर्मल जे, क के० पाणी, तेहनी पठे विश्वंके०
समस्त नव्यप्राणिप्रत्ये केवलश्रियाकलयन् के०
केवलज्ञानरूप लक्ष्मीए करी जाएता ठता अ
चिंत्यके० न चिंतवी शकीए, एहवुं जे माहात्म्य
एटले मोटापणुं, तेहना निधि के० निधान ठेः
एहवा श्रीसुविधिनाथ वःके० तमने बोधये के०
बोधि एटले सम्यक्त्वने अर्थे अस्तुके० थाउं॥ ११

सत्त्वानांपरमानंद ॥ कंदोद्भेदनवां
बुदः ॥ स्याद्वादांमृत निस्पंदी ॥ शी
तलः पातुवो जिनः ॥ १२ ॥

(१५३)

अर्थ—सत्वानां के० प्राणीउने परम के० उ
 त्कृष्ट जे आनंद—चित्त प्रसन्नता लक्षण, तेहनो
 जे कंद एटले अंकूरो, तेहनुं उद्जेदके० प्रगटथ
 वुं, तेहनेविषे नवांबुदः के० नवीनमेघ समान स्या
 दादके० अनेकांत शासन, तद्रूप जे अमृतरस, तेह
 ना निस्पंदी के० ऊरनारा एहवा श्रीशीतलनाथ
 ठे; ते वः के० तमने पातु के० रक्षण करो. अर्थात्
 संसारथी रक्षणकरो. वलीते शीतलनाथ केवा ठे?
 जिनः के० रागादिवैरीने जीतनारा ठे. ॥ १२ ॥

ज्वरोगार्त्त जंतूना मगदंकार द

र्शनः ॥ निश्रेयस श्रीरमणः ॥ श्रे

यांसः श्रेयसे स्तुवः ॥ १३ ॥

अर्थ—ज्व के० संसाररूप जे रोगार्त्त के० ज
 न्म जरा मरण ते रूप जे रोग, तेणोकरी आर्त्त एटले
 पीडायेलो जे जंतु, तेमने अंगदंकार दर्शनः के० वै
 द्यसमान ठे सम्यक्त्व जेहनुं. अथवा दर्शन एटले
 देखवुं ठे जेहनुं. वली केवा ठे? निश्रेयस के० मो

(१५४)

द्वरूप श्री के० लक्ष्मी तेहना रमणः के० नर
तार ठे. एहवा श्रेयांसः के० श्रेयांस जिन ठे, ते
वः के० तमारुं जे श्रेयसे के० कल्याण तेहने अ
र्थे अस्तु के० थाउ. इति गाथार्थ ॥ १३ ॥

विश्वोपकारकीञ्जत ॥ तीर्थकृत् कर्म
निर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो ॥ वा
सुपूज्यः पुनातुवः ॥ १४ ॥

अर्थ— विश्व के० समस्त जगत्ना जीवोने उ
पकारकीञ्जत के० उपकारनो हेतु, एहवुं तीर्थकर
नामकर्म, तेहनी निर्मितिः के० नीप्पत्ति करीठे जेणे.
पंचकल्याणके सुखहेतु. वली केहवा ठे? सुर के०
वैमानिक देवता, असुर के० जवनपत्यादि देवता,
तथा नर के० मनुष्य, तेमणे पूज्य के० पूजवा योग्य
ठे. एवा वासुपूज्य के० वासुपूज्यस्वामी वः के० तम
ने पुनातु के० पवित्र करो. एठले पाप तमारुं टालो.

विमलस्वामिनो वाचः ॥ कतकद्धो

(૧૫૫)

દસોદરાઃ ॥ જયંતિત્રિજગચ્છેતો ॥ જ
લનૈર્મલ્યહૈતવઃ ॥ ૧૫ ॥

અર્થ-વિમલસ્વામિનોવાચઃ કે० શ્રી વિમલ
સ્વામિની જે વાણી છે, તે જયંતિ કે० જયવંતી વ
ર્તે છે. તે વાણી કેવી છે? કતકદ્વોદસોદરાઃ કે० ક
તક ફલનું જે ચૂર્ણ તેને સોદરાકે० સરસી છે. જેમ
કતકફલને યોગે પાણિ નિર્મલ કરીએ, તેમ વિમ
લ પરમેશ્વરની વાણી છે તે ત્રિજગચ્છેતઃ કે० ત્રણ
જગત્નાં જે સંકલ્પે કરી મલિન મનરૂપ પાણી
તેને નૈર્મલ્યહૈતવઃ કે० નિર્મલપણુ કરવાનું હેતું
છે. જેમ કતકફલચૂર્ણે કરી મેલ સહિત પાણી
પણ નિર્મલ થાય, તેમ જગવંતની વાણીએ ક
રી મેલાં એવાં ત્રણ જગત્નાં જે ચિત્ત છે તે નિર્મ
લ થાય છે. ઇતિગાથાર્થ ॥ ૧૫ ॥

સ્વયંન્નૂ રમણ સ્પર્ધિ ॥ કરુણારસ

(१५६)

वारिणा ॥ अनंत जिदनंतांवः ॥ प्र
यत्तुसुखश्रियं ॥ १६ ॥

अर्थ—स्वयंनूरमण जे अंतिमसमुद्र, तेहने स्पर्धा करे एटले तेहथी अधिक एहवो जे करुणारस, एटले सर्व जगत्नेविषे मैत्री; तद्रूप जे वारिके० पाणी—तेणे करी अनंतजित् के० अनंत नाथ परमेश्वरठे; ते अनंतां के० नथी अंत जेहनो, एटले अक्षयपणुंठे जेने विषे, एहवी सुखश्रिय के० मोक्षसुखरूप लक्ष्मी तेप्रत्ये वःके० तमने एटले नव्य जीवोने प्रयत्तुके० आपो ॥ १६ ॥

कल्पद्रुमसधर्माण मिष्टप्राप्तौ
शरीरिणां॥चतुर्धा धर्म देष्टारं॥
धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥

अर्थ—कल्पद्रुमसधर्माण के० कल्पवृक्ष रख्वाठे, पण कोनेविषे? इष्टप्राप्तौ के० वांछित फलनी प्राप्तिनेविषे. कोने? शरीरिणां के० शरीरधारी

(૩૫૭)

પ્રાણીઉને. વલી કેવાઢે? ચતુર્ધા કે૦ ચાર પ્રકારે
ધર્મ તે દાન, શીલ, તપ, તથા જાવ, તેના દેષ્ટારંકે૦
દેશાડણહારઢે. એહવા શ્રીધર્મનાથપ્રત્યે ઝપાસ્મ
હે કે૦ સેવીએઢીએ. ઇતિ શ્લોકાર્થ. ॥ ૧૭ ॥

સુધાસોદર વાગ્જ્યોત્સ્ના ॥ નિર્મલી
કૃત દિગ્મુખઃ ॥ મૃગલક્ષ્મા તમઃ
શાંત્યૈ ॥ શાંતિનાથ જિનોસ્તુવઃ ॥ ૧૮ ॥

અર્થ—સુધા કે૦ અમૃતને સોદરા કે૦ સરસ્વી
જે વાગ્ કે૦ વાણી તદ્રૂપ જે જ્યોત્સ્ના કે૦ ચંદ્રિ
કા—તેણે કરી નિર્મલીકૃત દિગ્મુખઃ કે૦ નિર્મલ
કણાંઢે દિશિવાસી જનનાં મુખ જેણે. વલી કેવા
ઢે? મૃગલક્ષ્મા કે૦ મૃગનુંઢે લાંઢન એટલે ચિન્હ જેમ
ને, એહવા શ્રીશાંતિનાથજિનઢે. તેવઃ કે૦ તમારી એ
ટલે જવ્યજીવોની શાંત્યૈ કે૦ અજ્ઞાનની શાંતિને
અર્થે અસ્તુ કે૦ યાત. ઇતિ શ્લોકાર્થ. ॥ ૧૮ ॥

શ્રીકુંથુનાથો જગવાન્ ॥ સનાથો

(१५७)

तिशयर्दिनिः ॥ सुरासुर नृनाथानां ॥
मेकनाथोऽस्तुवः श्रिये ॥ १९ ॥

अर्थ—श्रीकुंथुनाथ नगवान् ठे तेकेवाठे? अति शयर्दिनिः सनाथः के० चोत्रीश अतिशयरूप जे रुद्रि, तेणेकरी सनाथके० सहितठे. वली केवा ठे? सुरासुर नृनाथानां—सुरके० वैमानिक देवता, असुरके० जवनपत्यादि देवता, नृके० मनुष्य—ते मना नाथ जे इन्द्र, अने उपेंद्र, एटले चक्रवर्त्यादि—तेहनो एकनाथ के० एक एटले अद्वितीयपणे नाथठे; एहवा श्री कुंथुनाथठे. ते वःके० तमारी जे श्रिये के० कल्याणरूप लक्ष्मी, तेने अर्थे अस्तु के० थाउं. इति श्लोकार्थ ॥ १९ ॥

अरनाथ स्तुजगवां ॥ श्रुतुर्थारन
नो रविः ॥ चतुर्थ पुरुषार्थश्री ॥ वि
लासं वितनोतु वः ॥ २० ॥

अर्थ—अरनाथनगवान् ज्ञानादि बार अर्थ

(१५९)

युक्तढे. एटले जग शब्दना चउद अर्थ थायढे.
तेमांथी बार अर्थ परमेश्वरने घटेढे, माटे अहीं
यां बार लीधा ढे. वली चतुर्थार नजोरविः
के० चोथा आरारूप जे नजके० आकाश, तेह
नेविषे रवि एटले सूर्य समानढे. एहवा जे अरना
थ ढे, ते वःके० तमने चतुर्थ पुरुषार्थ के० मो
ह, तेहनी श्रीके० लक्ष्मी, तेनो जे जोग विला
स, तेप्रत्ये वितनोतुके० विस्तारो, ॥ १० ॥

सुरासुरनराधीश ॥ मयूरनववारिदं॥

कर्मडून्मूलनेहस्ति॥मह्मंमह्मिमनिष्टुमः॥

अर्थ—सुरासुर—सुर के० ज्योतिषि वैमानिका
दि देवता, अने असुर के० जवनपति व्यंतरादि
देवता, नरके० मनुष्य—तेहना अधीश एटले इंद, उषेंड,
चक्रवर्त्यादि तडूप जे मयूरके० मोर, तेह
ने उह्वास करवाने वारिदंके० मेघ समान ढे. व
ली केवाढे? कर्म जे ज्ञानावरणादि—तडूप जे
द्रुमके० वृक्ष तेहनं जे उन्मूलने के० उखेडी ना

(३६०)

खबुं एटले दूरकरबुं; तेहनेविषे हस्तिमह्वं के०
ऐरावत हाथी. एहवा मल्लिके० श्रीमल्लिकनाथप्रत्ये
अनिष्टुमः के स्तवना करीएठैए.॥इतिश्लोकार्थ.२१

जगन्महामोहनिडा ॥ प्रत्यूपसम
योपमं॥मुनिसुव्रतनाथस्य ॥ देशना
वचनंस्तुमः ॥ २२ ॥

अर्थ—मुनिसुव्रतनाथस्य के० मुनिसुव्रतस्वामि
संबंधी जे, देशनावचनं के० धर्मोपदेशनानुं जे
वचन तेप्रत्ये स्तुमः के० स्तवी ठैए. पण ते वचन
केबुंठे? जगन्महामोह निडा प्रत्यूप समयोपमंके०
जगत्नेविषे रहेला एहवा जे प्राणीउ, तेमनो जे
महामोहनिडा के० महामोहरूप निडा तेनेदूर कर
बाने प्रत्यूप समयोपमं के० प्रजातकालनीठे उपमा
जेहने. एटले जेम प्रजाते उंघ यकी जागीए तेम
जेमना धर्मोपदेशथी अज्ञानरूप निडा जायठे.

लुउंतो नमतांमूर्ध्नि ॥ निर्मलीकार

(१६१)

कारणं ॥ वारिष्ठवाइवनमेः ॥ पां
तुपादनखांशवः ॥ २३ ॥

अर्थ—नमतांके० नमस्कार करता जे, प्राणी
उ, तेमना मूर्ध्नि के० मस्तकनेविषे लुठंतः के०
पडता जे नमेःपादनखांशवः के० श्री नमिनाथ
स्वामिना पगना नखनी जे कांतिठे, ते पांतु के०
संसारसमुद्धृती रक्षा करो. पण ते पादनखांशव
केवाठे? निर्मलीकारकारणं के० निर्मल एटले पाप
रहितपणानुं कारण एटले हेतुनूतठे. अहीयां वंदन
करनार प्राणीना मस्तक उपरे जगवंतना पादनख
नी कांति जे पडेठे, तेउपर कवि जावना करेठे. वा
रिष्ठवाके० पाणीना प्रवाहज जाणे इवके० होयना!

यडुवंशसमुद्धेंडुः ॥ कर्मकत्तु दुताश
नः ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान् ॥ नूया
द्वोरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥

अर्थ—यडुवंश के० यादववंश तद्रूप जे समुद्र
तेने उद्गास पमाडवाने इंडु के० चंद्रमा सदृश

(૧૬૩)

હે. વલી કેવાહે ? કર્મકદ્દુતાશનઃ કે૦ કર્મ તે જ્ઞાનાવરણાદિ અષ્ટવિધ તદ્રૂપ જે કદ્દુટાણે વનસ્વંમ તેહનેવિષે દુતાશન કે૦ અગ્નિ સદૃશહે. શુક્લધ્યાનાનણે સર્વ કર્મ નસ્મ કહ્યાંહે માટે. એ હવા અરિષ્ટનેમિનગવાનૂહે, તે વઃ કે૦ તમારા જે અરિષ્ટ કે૦ ઉપડવ, તેને નાશકરનાર એવા નૂ યાત્રુ કે૦ યાત્ર. ॥ ઇતિ શ્લોકાર્થ. ॥ ૧૪ ॥

કમઠે ધરણેંડેચ સ્વોચિતંકર્મકુર્વતિ

પ્રત્યુસ્તુલ્યમનોવૃત્તિઃ ॥ પાર્શ્વનાથઃ

શ્રિયેઽસ્તુવઃ ॥ ૧૫ ॥

અર્થ— કમઠે કે૦ કમઠનામે પૂર્વજનવૈરી એ હવો જે મેઘમાલી દેવતા, તેનેવિષે ચ કે૦ વલી ધરણેંડે કે૦ પ્રત્યુ એ જે બલતો ઝગાચો એહવો સર્પ તે મરીને ધરણેંડે અયો. તેનેવિષે તુલ્યમનોવૃત્તિ કે૦ સરખો હે મનનો વ્યાપાર જેમનો; શત્રુ મિત્ર નેવિષે સમાન દૃષ્ટિહે. કેવલ આત્મજાવનેવિષે વતે હે. પણ કમઠ તથા ધરણેંડે કેવાહે ? સ્વોચિતં ક

(૧૬૩)

મેં કુર્વતિકે૦ પોતપોતાને જે યચિત કર્મઢે તે ક
રેઢે. કમઠ ઢે તે ડપસર્ગ કરેઢે, અને ધરણેંડ ડપસ
ર્ગ નિવારેઢે; પણ પાર્શ્વનાથ જગવાન્ ઢે તે પરજા
વમાં વર્તતા નથી. એહવા શ્રીપાર્શ્વનાથઢે, તે વઃ
કે૦ તમારી જે શ્રિયે કે૦ જ્ઞાનાદિ લક્ષ્મી તેહને
અર્થે અસ્તુ કે૦ યાઉ. ઇતિશ્લોકાર્થ ॥ ૧૫ ॥

શ્રીમતે વીરનાથાય ॥ સનાથાય
દ્વુતશ્રિયા ॥ મહાનંદસરોરાજ ॥
મરાલાયાર્હતે નમઃ ॥ ૧૬ ॥

અર્થ- શ્રીમતે કે૦ કેવલજ્ઞાનરૂપ ધન ઢે
જેને, વલી કેવા ઢે? અદ્વુતશ્રિયા સનાથાયકે૦
આઠ મહા પ્રાતિહાર્ય, તથા ચોત્રીશ અતિશયાદિ
જે અદ્વુત લક્ષ્મી, તેણીએ કરી સનાથાય એટલે સહિ
તઢે; એહવા વીરનાથાય કે૦ વીરસ્વામિઢે. વલી
તે વીરસ્વામી કેવા ઢે? મહાનંદસરોરાજમરા
લાય કે૦ મહાનંદરૂપ જે સરોવર તેહનેવિષે ક્રી
ડા કરવાને રાજમરાલાય એટલે ડત્તમ હંસનામા

(૨૬૪)

પક્ષી સદૃશ છે. એહવા અર્હત કે ૦ અરિહંત મહા
રાજને નમઃ કે ૦ નમસ્કાર થાઉં. ॥ ૨૬ ॥

જયતિવિજિતાન્યતેજાઃ ॥ અસુરસુરાધી
શ સેવિતઃ શ્રીમાન્ ॥ વિમલસ્ત્રાસ વિર

હિતઃ ॥ ત્રિચુવન ચૂડામણિર્નગવાન્ ॥ ૨૭ ॥

અર્થ—વિજિતાન્યતેજાઃ કે ૦ વિશેષે કરી જીત્યું
છે અન્યનું તેજ જેણે, અને અસુરસુરાધીશ સેવિતઃ
કે ૦ અસુરને સુરના જે ઇંદ્ર તેમણે સેવેલા છે,
તથા શ્રીમાન્ કે ૦ કેવલજ્ઞાનરૂપ જલ્દીવંત છે, તથા
વિમલઃ કે ૦ નિર્મલ છે. તથા ત્રાસરહિતઃ કે ૦ સ
ત્ત જયે રહિત છે. તથા ત્રિચુવન ચૂડામણિઃ કે ૦ ત્ર
ણ ચુવનને વિષે મુકુટ સમાન એહવા જગવાન્ છે.
તે જયતિ કે ૦ જયવંતા વર્તે છે. ॥ ૨૭ ॥

વીરઃ સર્વ સુરાસુરેન્દ્ર મહિતો વીરંબુ
ધાઃ સંશ્રિતાઃ ॥ વીરેણાન્નિહતઃ સ્વક
ર્મનિચયો વીરાય નિત્યં નમઃ ॥ વીરાત્તી

થર્મિદં પ્રવૃત્ત મતુલં વીરસ્ય ઘોરંત
 પો॥વીરેશ્રી ધૃતિકીર્તિ કાંતિ નિચયઃ
 શ્રીવીરજડં દિશ ॥ ૨૮ ॥

અર્થ—સર્વ જે સુર કે० વૈમાનિક દેવતા અને
 અસુરકે० જવનપત્યાદિદેવતા, તેમના જે ડંડોબે,
 તેમણે મહિત કે० પૂજિત એવા વીર:કે० શ્રીવીર
 સ્વામીબે. વલી પૂર્વોક્ત વિશેષણે કરી યુક્ત જે વીરં
 કે० વીરસ્વામી, તેપ્રત્યે બુધા:સંશ્રિતા:કે० પંદિત પુ
 રુષો આશ્રય કરેબે. તથા વીરેણકે० વીરસ્વામિએ
 સ્વકર્મનિચય:કે० પોતાના કર્મનો જે નિચય એટલે
 સમુદાય બે, તે અનિહત: કે० સમસ્ત પ્રકારે હ
 ણ્યો બે. એવા વીરાયનિત્યંનમ:કે० વીરસ્વામિને નિરં
 તર નમસ્કાર થાઉં. તથા વીરાત્ ઇદંતીર્થં પ્રવૃત્તં
 કે० વીરસ્વામીથી આ પ્રત્યક્ષ ચતુર્વિધ સંઘરૂપ તીર્થ
 અથવા દ્વાદશાંગીશ્રુતરૂપ તીર્થ પ્રવર્ત્યુંબે. પણ તીર્થ
 કેવું બે ? અતુલં કે० નથી ઉપમાન જેહનું. ત
 થા વીરસ્યઘોરંતપ: કે० શ્રીવીરસ્વામિનું જે તપબે,

(१६६)

ते घोर एटले कायरप्राणीए आचरवुं घणुं कठण
 ठे. तथा वीरे के० वीरस्वामिनेविषे श्रीके० केव
 लज्ञानरूप लक्ष्मी, तथा धृति के० धैर्य कीर्त्ति
 के० सर्वव्यापी कीर्त्ति, तथा कांतिके० अद्भुतरूप
 तेनो जे निचय के० समूह ते वर्त्ते ठे. एहवा हे
 श्रीवीर के० हे श्रीवीरस्वामि तमे, नङ्के० कल्या
 णप्रत्ये दिश के० आपो. ॥ १७ ॥

देवौनेक नवार्जितोर्जितमहा पापप्र
 दीपानलो ॥ देवःसिद्धिवधू विशाल
 हृदयालंकार हारोपमः॥ देवोष्टादश
 दोष सिंधुर घटानिर्जद पंचाननो ॥
 नव्यानां विदधातु वाञ्छितफलं श्रीवी
 तरागो जिनः ॥ १८ ॥

अर्थ—अनेक नवकोडाकोडिनेविषे अर्जितके०
 संचेलां, एवां उर्जित के० घणा एहवां जे महा
 पाप, तेनेप्रदीप के० प्रकर्षे करी बालवाने अ
 थैं अनल के० अग्निसदृश ठे. वली देव केवा

(२६७)

ढे ? सिद्धिवधू विशाल हृदयालंकारहारोपम—सि
द्धिवधू के० मोक्षरूप जे स्त्री ते संबंधी जे विशा
लहृदयःके० विस्तीर्णहृदय तेहनेविषे अलंकार हा
रनी ढे उपमा जेमने. वली देव केवाढे ? अष्टा
दश दोष के० अठार दोष तद्रूप जे सिंधुरघटा
के० गजघटा तेहने निर्जेद के० जेदवाने पंचान
नःके० केसरीसिंह समान एहवा श्रीवीतरागदेव
ढे. ते जव्यानां के० जव्यप्राणीने वांछितफलंके०
वांछितफलप्रत्ये विदधातु के० करो. ॥ २९ ॥

ख्यातोष्ठापद पर्वतोगजपदः सम्मे
तशैलान्निधः॥श्रीमान् रैवतक प्रसि
द्धमहिमा शत्रुंजयोमंजपः॥वैचारःक
नकाचलोर्बुदगिरि श्रीचित्रकूटादय ॥
स्तत्रश्रीरुषजादयो जिनवराः कुर्वंतु
वो मंगलं ॥ ३० ॥

अर्थ—ख्यातः के० ख्यातवंत जे अष्टापद

(૨૬૮)

પર્વત છે, તથા ગજપદઃ કે૦ ગજપદ પર્વત છે,
તથા સમ્મેતશૈલાનિધઃ કે૦ સમેત શિખર છે.
તથા શ્રીમાન્ કે૦ લક્ષ્મીવંત રેવતકઃ કે૦ ગિ
રનાર પર્વત છે; પ્રસિદ્ધમહિમા કે૦ પ્રસિદ્ધ છે.
મહિમા જેહનો એહવો શત્રુંજયઃ કે૦ શ્રીસિદ્ધાચલ પ
ર્વત છે. વલીવૈનારઃ કે૦ વૈનારપર્વત છે, તથા કન
કાચલ કે૦ મેરુપર્વત, અર્બુદગિરિ કે૦ આબુપર્વ
ત તથા શ્રીચિત્રકૂટાદિ પર્વતો છે. તત્રકે૦ તે પૂ
ર્વોક્ત પર્વતોને વિષે શ્રીરૂષનાદયો જિનવરા. કે૦
શ્રીરૂષનાદિકો જિનવર કેવા છે? સામાન્ય કેવલી
ને વિષે પ્રધાન એહવા જે તીર્થંકર મહારાજ છે, તે
વઃ કે૦ તમારું મંગલં કે૦ કલ્યાણ તે પ્રત્યે કુ
ર્વંતુ કે૦ કરો. ॥ ૩૦ ॥ ઇતિ શ્લોકાર્થ.

અવનિતલગતાનાં કૃત્રિમાકૃત્રિનાનાં
વરજીવનગતાનાં દિવ્યવૈમાનિકાનાં ॥૬
હમનુજકૃતાનાં દેવરાજાર્ચિતાનાં જિન
વરજીવનાનાં જાવતોહં નમામિ ॥ ૩૧ ॥

(३६९)

अर्थ—अवनितगलतानां के० पृथ्वीतलनेवि
षे रहेला तथा कृत्रिमाकृत्रिमानां—कृत्रिम के०
करेलां अकृत्रिम के० न करेलां एटले शाश्वतां
असाश्वतां चैत्य, तथा वरचुवनगतानां दिव्यवै
मानिकानां—वर के० प्रधान एहवा जवन के०
घर जवनपतिव्यंतरादिकनां तेहनेविषे रह्या,
तथा इहमनुजकृतानां के० आ मनुष्यलोकनेविषे
जरतादिराजा प्रमुखनां करावेलां, तथा देवराजा
र्चितानां के० देवतानो राजा जे इंड तेणे अर्चि
त एटले पूजित ठे, एहवा जिनवर जवनानां के०
सामान्यकेवलीनेविषे प्रधान एहवा जे तीर्थकर
तेमनां जवनानां एटले चैत्य जे जिनप्रतिमा, तेम
ने जावतो के० जावथकी अहं के० हुं नमामिके०
नमस्कार करुंहुं. इति चतुर्विंशति जिननमस्कारः

अथ लघुशांतिस्तव प्रारंभ ॥ ५३ ॥

शांतिशांति निशांतं ॥ शांतिशांता
शिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुःशांति नि

मित्तं ॥ मंत्रपदैः शातयेस्तौमि ॥१॥

व्याख्या—शांतिके० श्रीशांतिनाथ देव प्रत्ये स्तौमिके० स्तवना करुबुं. ते शांतिनाथ केवाढे? शांति निशांत के० मंगलीकनुं निशांत एटले घरढे. वली शांतिनाथ केवाढे? शांताशिवं के० उपशमाव्यो ढे अशिव के० उपडव जेणे एहवा जे, शांतिके० शांतिनाथ स्वामि—ते प्रत्येनमस्कृत्यके० नमस्कार करीने शांतये के० शांतिने अर्थे स्तौमि के० स्तवना करुबुं. स्तोतुः शांतिनिमित्तंके० स्तवना करनारनी शांतिनिमित्ते मंत्रपदैः के० मंत्रना जे पद अक्षरगर्जित, तेणे करी शांतिनाथ स्वामिनी स्तवना करुबुं. इतिश्लोकार्थ. ॥ १ ॥

उमितिनिश्चितवचसे॥नमोनमोजगव
तेर्हतेपूजां शांतिजिनाय जयवते॥य
शस्विने स्वामिने दमिनां ॥ २ ॥

व्याख्या—उँइतिके० उँकार एहबुं निश्चित वचसे के० पंचपरमेष्टि वाचक निश्चय ढे वचन जेम

नुं तथा पूजां अर्हते के० पूजाने योग्य ठे, तथा
 जगवते के० ज्ञानवंत ठे, तथा दमिनां स्वामिने
 के० दम्या ठे एटले वश कखा ठे इन्द्रियो जेमणे, ए
 हवा जे मुनिमहाराज तेमना स्वामि ठे. तथा य
 शस्विनेके० महायशवंत ठे. तथा जयवतेके० जय
 ठे जेमनो; एहवा जे शांतिजिनायके० शांतिजिन
 तेमने नमोनमो के० चारंवार नमस्कार थाउ.

सकलातिशेषकमहा॥ संपत्तिसमन्वि
 तायशस्याय॥ त्रैलोक्यपूजिताय च॥
 नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥

अर्थ—सकलातिशेषकमहा संपत्तिसमन्विता
 य के० समस्त जे अतिशेष के० अतिशय ते रू
 प महा संपत्ति के० मोटी संपदा, तेणे करीने स
 हित, तथा शस्याय के० प्रशंसवा योग्य ठे. च
 के० बली त्रैलोक्यपूजिताय के० स्वर्ग मृत्यु अ
 ने पाताल ते रूप त्रणलोक, तेणे पूजिताय के०
 पूजित ठे एहवा, शांतिदेवाय के० शांतिनाथ सो

(१७१)

लमा तीर्थकर तेमने नमोनमःके० नमस्कार थाउ.

सर्वामरसुसमूह ॥ स्वामिकसंपूजिता

यनिजिताय ॥ जुवनजनपालनोद्य

त ॥ तमायसततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥

अर्थ—सर्वामरसुसमूह के० समस्त देवना स
मूह एटले चारनिकायना देवताना समूह, तेहना
स्वामिक के० स्वामी एटले चोसठ इंड़, तेणे सं
पूजिताय के० सम्यक् प्रकारे पूज्याढे. निजिताय
के० वली नथी जीत्या देवादिके एहवा, तथा जु
वनजनपालनोद्यततमाय के० त्रण जुवनना जे
लोक तेमनुं जे प्रतिपालन करवुं, तेहनेविषे अ
त्यंत उद्यमवंतढे. तस्मै के० ते शांतिनाथ माहा
राजने सततं के० निरंतर नमः के० नमस्कार
थाउ. इति श्लोकार्थ. ॥ ४ ॥

सर्वदुरितौघनाशन ॥ कराय सर्वा

शिवप्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहभूतपि

शाच शाकिनीनांप्रमथनाय ॥ ५ ॥

(१७३)

अर्थ—सर्वके० समस्त जे दुरित के० पाप ते
हनो उंघ के० समूह तेहना नाशन कराय के०
नाशकरणहारठे. वली केहेवाठे, सर्वाशिव के०
सर्व जे अशिव एटले उपडव तेहना प्रशमनाय
के० प्रकर्षेकरी एटले अतिशयपणे समावणहा
रठे. वली केहेवाठे, डुष्टग्रह के० डुष्टग्रह एटले
कुड् आकरा ग्रह मंगल, शनीश्वर, राहु अने केतु इ
त्यादि असुखना करनार तथा नूत के० वृद्धादिक
नेविपे वसनार पिशाच के० राक्षसादि तथा शाकि
नीनां के० शाकिनी ए मंत्राधिष्ठित स्त्री पुरुष तथा
डुष्टदेवाधिष्ठित शाकिनी ए पूर्वोक्त उपडवोने प्र
मथनाय के० प्रकर्षेकरी एटले अतिशयपणे मं
थन एटले नाशकरणहारठे. ॥५॥ इतिश्लोकार्थ.

यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्योपयो
गकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित
मिति च नुता नमत तं शांतिं ॥ ६ ॥

अर्थ—यस्यके० जे जगवंतनो इतिके० एहवो

जे नाममंत्र के० नामरूप जे महामंत्र अने प्रधान के० प्रकृष्टसर्वोत्तम पवित्र जे तद्रूप वाक्योपयोग के० वचननो उपयोग स्मरणरूप तेणे करीने कृततोषाके० कस्योढे. तोष एटले हर्ष जेणे एहवी विजया नामे जे देवीढे, ते जनहितंकुरुते के० नव्यजनना हित प्रते करेढे. इति के० एणे प्रकारे च के० वली नुता के० स्तवेलीढे, तंशांति के० तेशांतिनाथ प्रतेहे नव्यलोको? तमे नमत के० नमस्कार करो. ॥ ६ ॥ इति गायार्थ.

नवतु नमस्ते नगवति विजये सुज
ये परापरेरजिते ॥ अपराजिते जग
त्यां जयतीति जयावहे नवति ॥७॥

अर्थ—ते तुजप्रत्यें नमः के० नमस्कार नवतु के० थाउ. नगवति के० महामहिमावंत शासननी अधिष्टायका विजये के० हेविजया देवी, सुजये के० सुप्रजला यशनी कर्ता एहवी जया देवी तथा परापरेः के० परा अने अपर तेणे अ

(१७५)

जिते एटले प्ररुष्ट बलवंतें नशी जीती एहवी अ
जितादेवी, अपराजिते के० हे अपराजितादेवी,
तुं जगत्यां के० जगतनेविषे जयति के० जयवंती
वर्त्ते. इतिके० एरीते जयावहेके० जयनो आवा
बहन करनार जवतिके० ठे. ॥ ७ ॥ इतिश्लोकार्थ.

सर्वस्या पिचसंघ, स्थनजकल्याणमं
गलप्रददे ॥ साधूनांच सदाशिव
तुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥

अर्थ—सर्वस्यापि के० समस्तने अपिइति सं
जावना संघस्य के० संघ जे चतुर्विधरूप तेहने
जइके० निरुपइवपणं. कल्याण के० ते सर्व प्र
कारनी वृद्धि मंगल ते मंगलीक उत्सवरूप प्रद
देके० ए पूर्वोक्त पदार्थ आपनार एवी हे देवि? तुं
जीयाः के० पृथ्विनेविषे जयवंती वर्त्ते. ॥ ८ ॥

जव्यानां कृतसिद्धे निर्वृत्तिनिर्वाण
जननि सत्त्वानां ॥ अजयप्रदाननिरते
नमोस्तुस्वस्तिप्रदे तुज्यं ॥ ९ ॥

अर्थ—जव्यानांके० जव्यजीवनी कृतसिद्धेके०
करीबे कार्यनी सिद्धि जेणे एहवी, तथा हे निर्वृ
ति के० सुखरूप जे निर्वाण के० मोक्ष सुख ते
हने जननि के० उत्पन्न करणहारी ठे, वली स
त्वानां के० समस्त जीवने अजयप्रदान के० अज
यदान देवाने निरते के० तत्परठे. स्वस्तिप्रदेके० हे
मंगलीकनी आपनारी, हे शासनदेवी? तुभ्यंके० तु
ज प्रत्ये नमोस्तु के० नमस्कार थाउ. ॥ ९ ॥

नक्ताना जंतूना शुजावहे नित्यमुद्य
ते देवि ॥ सम्मग्दृष्टीनांधृति रति
मतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥

अर्थ—नक्तानां जंतूनां के० नक्तिवंत एहवा जे
जीव ठे, तेमनो जे शुजावहेके० शुजमंगलीकनो
आवहकार एहवी अने नक्तनेविषे नित्यंके० निरंत
र उद्यतेके० उद्यमवंत एहवी हे देवी, तमे सम्यग्
दृष्टिनां के० सम्यक्वंत जीवने धृति एटले मन
संतोष, रतिते मन समाधि, मतिते शुज मतिने,

બુદ્ધિ તે નહીંબુદ્ધિ. તેહના પ્રદાનાય કે૦ પ્રકર્ષે એ
ટલે અતિશયપણે દેવાને ઝજમાલ થાઝ. ॥૧૦॥

જિનશાસન નિરતાનાં શાંતિનતાનાં
ચ જગતિ જનતાનાં ॥ શ્રીસંપત્કીર્તિય
શોવર્ધનિ જય દેવિ વિજયસ્વ ॥ ૧૧ ॥

અર્થ—જિનશાસન કે૦ શ્રીવીતરાગના શાસન
ને વિપે નિરતાનાં કે૦ રાગવંતઝે. ચકે૦ વહી શાંતિ
નતાનાં કે૦ શાંતિનાથદેવ તેહને નમસ્કાર કસ્યો
ઢે જેણે, તથા જગતિ કે૦ પૃથ્વીને વિપે જનતાનાં
કે૦ ઉત્પન્ન થણા જે નવ્ય પ્રાણી તેમને શ્રીકે૦
જક્ષીતે સુવર્ણાદિ તથા સંપત્ કે૦ સંપદાતે ધા
ન્યાદિ પ્રકારની તથા કીર્તિ તે એક દિગવ્યાપિ,
યશતે સર્વ દિગવ્યાપિ સર્વત્ર પ્રસિદ્ધ તેહની વર્ધ
નીકે૦ વધારણહારી એહવી જે જયનામે દેવીઢે,
તે વિજયસ્વકે૦ વિજયકરો. ॥ ૧૧ ॥

સલિલાનલવિપવિપધર, હુષ્ટગ્રહ

(१७८)

राजरोगरणजयतः राक्षसरिपुगण
मारीचौरैति श्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥

अर्थ—सज्जितते पाणि, अनजते अग्नि अने विष ते अफीणादि विषधर. तेसर्प दुष्टग्रहके ० दुष्ट स्वजा वना शनि अने राहु तथा केतु प्रमुख तथा राज नय तथा रोगते दुष्ट ज्वरादिकनुं नय रणजयते रण संग्राम इत्यादि नय थकी राक्षस ते जूत पिशाच आदि रिपुगणते वेरी समूह मारी ते दुष्टव्यंतर मर गी जनकारी तथा चोरना नय थकी रक्षरक्षके ० रा ख राख. हे माता रक्षे क्रियापद आगल तेरमा श्लोके आवसे. ते मध्येथी अनुवृत्ति करवी. ॥ १२ ॥

अथ रक्ष रक्ष सुशिवं कुरुकुरु शांतिं च
कुरुकुरु सदेति ॥ तुष्टिकुरुकुरुपुष्टिं कु
रुकुरु स्वस्तिं च कुरुकुरु त्वं ॥ १३ ॥

अर्थ—अथके ० अथा नंतर सुशिवंकुरुकुरुके ० निरूपड्वपणुं ते प्रते करो करो हे माता ! वली शां

(१७९)

तिं कुरुकुरुके० शांतिते पूर्वे उपन्या जे रोग तेह
नी निवृत्ति, कर कर सदाके० सदाकाल इतिके०
एणे प्रकारे तथा तुष्टिंकुरु कुरु के० तुष्टि ते मन
तुं स्वार्थपणुं ते प्रत्ये कर कर तथा पुष्टी कुरुकुरु
के० पुष्टी ते शरीरनुं निरोगतापणुं ते प्रत्ये कर क
र तथा स्वस्तिं कुरु कुरु के० ते महा मंगलीक
पणुंते प्रत्ये कर कर त्वंके० तुं हेजया देवी? शास
न नीरखवाली ॥ १३ ॥

जगवति गुणवति शिवशांतितुष्टिपु
ष्टिस्वस्ती हकुरुकुरुजनानां ॥ उमि
तिनमो नमो हां हीं हं हः यः द्वाः हीं
फुट्फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥

अर्थ-हे जगवति मोटा महिमान्नी धणीआ
णी, हे गुणवंति, सत्व, रजो तथा तमो ए त्रि
गुणयुक्त तुं शिव ते निरुपद्रवपणुं अने शांती ते
सर्व रोगशोकनी उपशांती; तथा तुष्टि ते मनः सं
तोष पुष्टि ते शरीरनुं दृढपणुं, स्वस्ति ते महामंग

(१००)

लीकंपणुं, इह के० इहां पृथ्वीनेविषे कुरु कुरु
के० कर कर कोने, तोके जनानांके० समस्तलोकने
उ३ति के० उँकारए अहुरप्रत्ये नमो नमो के०
नमस्कार थाउ. उँनमो हां हीं ह यः कृः हीं
फुट्फुट् स्वाहा. ए शांतीनो मूलमंत्र जाणवो. ॥ १४

एवंयन्नामाहुर, पुरस्सरं संस्तुता ज
यादेवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां नमो
नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥

अर्थ—एवं के० ए प्रकारे यन्नामाहुर के० जे
ना नामाहुररूप मंत्र पुरस्सरंके० ते पूर्वक संस्तु
ता के० जली रीते स्तवी श्रीशांतिनाथनी अधिष्ठा
यिका, एहवी जे जयानामे देवीछे; ते शांतिनम
तां के० शांतीनाथने नमस्कार करनारा जे जब्य
जीवो तेमनी शांतिप्रते कुरुतेके० करेछे. तस्मैशांत
येके० तेमाटे शांतिनाथ महाराजने नमोनमः के०
वारंवार नमस्कार थाउ. इति श्लोकार्थ. ॥ १५ ॥

इतिपूर्वसूरिदार्शित मंत्रपदविदर्शित

(૩૮૧)

સ્તવઃ શાંતેઃ ॥ સલિલાદિજયવિ
નાશી શાંત્યાદિકરશ્ચ જક્તિમતાં ॥૧૬॥

અર્થ—ફતિકે૦ એ પ્રકારે પૂર્વસૂરિ દર્શિત મંત્ર
પદ કે૦ પૂર્વાચાર્યે દેલાડયો જે મંત્રપદ અક્ષર
રૂપ, તેણેકરી વિદર્જિત કે૦ ગુંથ્યો એહવો જે શાં
તેઃ કે૦ શાંતિનાથનું સ્તવ કે૦ એ સ્તોત્રરૂપ સ્તવ
ન તે સલિલાદિ જયવિનાશી કે૦ પાણિપ્રમુખ સર્વ
જયનો નાશ કરનાર છે. વલી જક્તિમતાં કે૦ જે જ
ગવંત ઉપર જક્તિ રાગવંત છે, તેમને શાંત્યાદિ કરઃ
કે૦ શાંત્યાદિકરણહાર એહવું સ્તોત્ર કહ્યું છે. ॥૧૬॥

યશ્ચૈનં પઠતિ સદા શૃણોતિ જાવયતિ
વા યત્યાયોગ્યં ॥ સદ્દિ શાંતિપદં યાયા
ત્ સૂરિઃશ્રીમાનદેવશ્ચ ॥ ૧૭ ॥

અર્થ—યઃ કે૦ જે પુરુષ ચ કે૦ વલી એનંપઠતિ
સદાકે૦ એ શાંતિ સ્તવન પ્રતે સદા જણે છે, તથા સ
દાશૃણોતિ કે૦ સદાકાલે સાંજે છે, તથા જાવય

(१८१)

तिवाके० मनमांहेजावें थकीस्मरण करे, यथायोग्य
के० यथायोगपणे हिंइति निश्चितं सके० ते पुरु
ष शांतिपदं के० मंगलिकना पदप्रते यायात् के०
पामे. एम श्रीमानदेवसूरि कहेढे. ॥ १७ ॥

उपसर्गाः कथं यांति विद्यंते विघ्नव
ह्नयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति पूज्य
माने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥

अर्थ—उपसर्गाःके० देवादिकृत उपसर्ग जे ठेते
कथंयांतिके० विलयजाएढे, तथा विघ्नवह्नयःवि
द्यंते के० कष्टरूपवेलढे ते पणह्य जायढे. तथा
मनः प्रसन्नतामेति के० मनढे ते प्रसन्नपणाने ए
ति एटले पामेढे. गुं करेथी तो के जिनेश्वर पूज्य
मानेके० जिनेश्वरमाहाराजने पूजे थके. ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीजघु शांति स्तोत्रं समाप्तं ॥ ५३ ॥

॥ अथ नरहेसरनीसद्याय ॥ ५४ ॥

॥ नरहेसर बाहुबली ॥ अनयकुमारोअ ढंढण

(१८३)

कुमारो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो ॥ अश्मुत्तो नाग
दत्तोअ ॥ १ ॥ मेअऊ थूलिनदो ॥ वयररिसि नं
दिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल ॥ पुंमरि
उ केसि करकंमू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण ॥
साल माहासाल सालिनदोअ ॥ नदो दसन्ननदो ॥
पसन्नचंदोअ जसन्नदो ॥ ३ ॥ जंबूपदु वंकचुलो ॥ ग
यसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो ॥
चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अऊगिरि
अऊरकिअ ॥ अऊसुहढी उदाइगो मणगो ॥
कालयसूरी संबो ॥ पऊन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥
पन्नवो विन्दुकुमारो ॥ अदकुमारो दढप्पहारीअ ॥
सिऊंस कुरगमूअ ॥ सिऊंनव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥
एमाइ महासत्ता ॥ दिंतु सुहं गुणगणेहिं संऊत्ता ॥
जेसिं नामग्गहणे ॥ पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥
सुलसा चंदनबाला ॥ मणोरमा मयणरेइ दम
यंति ॥ नमया सुंदरि सीया ॥ नंदा नदा सुनदा
य ॥ ८ ॥ रायमई रिसिदत्ता ॥ पउमावई अंज
णा सिरीदेवी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ ॥ पप्पावइ चि

(१८४)

क्षणा देवी ॥ ए ॥ बंजी सुदरी रूपिणि ॥ रेवइ
कुंती सिवा जयंतीय ॥ देवइ दोवइ धारणि ॥ क
लावई पुप्फ चूलाय ॥ १० ॥ पत्रमावईय गोरी ॥
गंधारी लक्षणा सुसीमाय ॥ जंबूवइ सच्चनामा ॥
रूपिणि कन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जस्काय ज
स्कदिन्ना ॥ नूआ तहचेव नूवदिन्नाय ॥ सेणा वे
णा रेणा ॥ जयणीउ थूनिनदस्स ॥ १२ ॥ इच्चाइ म
हासइउ ॥ जयंतिअकलंक सील कलिआउ ॥ अ
ऊवि वळइ जासिं ॥ जस पडहो तिहुअणे सयले
॥ १३ ॥ इति सता सतीउनी सङ्काय शमाप्तः ॥ ५४ ॥

॥ अथ मन्हजिणाणं सद्याय ॥ ५५ ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं ॥ मिहं परिहरहधर स
मत्तं ॥ ठविह आवसयंमि ॥ उळुत्तोहोइ पइ दि
वसं ॥ १ ॥ पवेसु पोसहवयं ॥ दाणं सीजं तवोअजा
वोअ ॥ सक्षाय नमुक्कारो ॥ परोवयारोअ जयणा
अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिणशुणणं ॥ गुरुशुअ
साहम्मि आणवह्वं ॥ ववहारस्सय सुदि ॥ रह

(१८५)

जुता तिष्ठजुताय ॥ ३ ॥ उवसम विवेक संवरा॥
जासासमिई ठजीवकरुणाय ॥ धम्मिअजण संस
ग्गो॥करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि ब
हुमाणो ॥ पुढ्य लिहणं पनावणा तिष्ठे ॥ सद्धा
ए किच्च मेअं ॥ निच्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ ५५ ॥

॥ अथ तीर्थ वंदना ॥ ५६ ॥

॥ सकल तीर्थ वंडुं करजोड ॥ जिनवरनामे मं
गलकोड ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश ॥ जिन
वर चईत नमुं निसदिस ॥ १ ॥ बीजे लाख
अठावीश कहां ॥ त्रीजे बारलाख स्सदह्यां ॥ चो
थे स्वर्गे अडलख धार ॥ पांचमे वंडुंलाखज च्यार
॥ २ ॥ ठेठे स्वर्गे सहस्स पचास ॥ सातमे चानि
श सहसप्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे ठ हक्कार ॥ नव द
समे वंडुं सतचार ॥ ३ ॥ अग्यारबारमे त्रण
सें सारा॥नवग्रैवेकें त्रणसें अठार ॥ पांचअनूत्तर
सर्वे मली ॥ लाखचोरासि अधिकांवली ॥ ४ ॥
सहस सत्ताणु त्रेवीश सार ॥ जिनवर जुवन तणो

अधिकार ॥ लांबां सो योजन वीस्तार ॥ पंचास
 उचां व्होतेर धार ॥ ५ ॥ एकसो एंसि बिंब प्र
 माण ॥ सनासहित एक चैत्ये झाण ॥ सोकोड
 बावन कोड संजाल ॥ लाखचोराणु सहस चौथ्या
 ल ॥ ६ ॥ सातसें उपर साठ विशाल ॥ सवि बिंब
 प्रणमुं त्रणकाल ॥ सातकोडने व्होतरलाख ॥
 नूवनपतिमां देवल नांख ॥ ७ ॥ एकसो एंसि बिंब प्र
 माण ॥ एकएक चइते संख्या झाण ॥ तेरसेंकोड
 नव्याशि कोड ॥ साठलाख वंडुं करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीसें
 ने उगणसाठ ॥ त्रीगालोकमां चइतनो पाठ ॥ त्रण
 लाख एकाणु हजार ॥ त्रणसें विशते बिंब जुहार
 ॥ ९ ॥ व्यंतरज्योतषिमां वलीजेह ॥ सास्यता जिन वं
 डुंतेह ॥ रिपन चंझानन वारिपेण ॥ वर्द्धमान नामेगु
 णपेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंडुजिनवीश ॥ अष्टापदवं
 डुं चोवीश ॥ विमलाचलने गढ गिरनार ॥ आबुउ
 पर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ संखेस्वर केशायो
 सार ॥ तारंगे श्री अजीत जुहार ॥ अंतरीक
 वरकांणोपास ॥ जीरावलोने थंनणपास ॥ १२ ॥

गाम नगर पुर पाटण जेह ॥ जिनवरचैत्य नमुं
गुणगेह ॥ वेहेरमान वंडुं जिनवीश ॥ सिद्धअनंत
नमुं निसदीस ॥ १३ ॥ अढीढीपमां जे अणगार ॥
अठारसहस सिलांगनाधार ॥ पंच महाव्रत समि
तिसार ॥ पाछे पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अ
जिंतर तप उजमाल ॥ तेमुनिवंडुं गुण मणिमाल ॥
नितनित ऊठीकिरतीकरूं ॥ जीवकहे नवसायरतरूं ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन ठेढ़ ॥ ५७ ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो ॥ अरी क्रो
धने मंनथी दूरवारो ॥ संतोष व्रति धरो चित्तमां
हिं ॥ रागद्वेषथी दुर याउ उठांहिं ॥ १ ॥ पडग्रामो
हना पासमां जेह प्राणी ॥ छुट तत्त्वनी वात तेणे
नजाणी ॥ मनुज जन्मपामी वृथा कां गमोढे ॥ जै
नमार्ग ठंढी छुला कां नमोढे ॥ २ ॥ अलोनी अमानी
निरागी तजोढो ॥ सलोनी समानी सरागी नजो
ढो ॥ हरी हरादी अन्यथी छुं रमोढो ॥ नदीगंगमु
की गलीमां पडोढो ॥ ३ ॥ केइ देवहार्ये अशी चक्र ॥ ४ ॥

रा॥केईदेवघालेगले रुंममाला॥केईदेव उठंगि राखेठ
 वामा॥केईदेव साथे रमे व्रंद रामा॥४॥केईदेव जप्पे
 लेईजप्पमाला॥केई मांसनह्नी महा वीकराला॥के
 ई योगणी नोगणी नोग रागे॥ केई रुडणी ठागनो
 होम मागे॥५॥ ईस्या देव देवीतणी आश राखे॥त
 दा मुक्तिनां सूखने केमचाखे ॥ जदा लोनना थोक
 नो पार नाव्यो ॥ तदामदनो बिंडुओ मंनजाव्यो ॥
 ॥६॥ जेहदेवलां आपणी आशराखे ॥ तेहपिंमने
 मंनसूले अचाखे॥दीन हीननी नीडते केम नाजे॥
 फुटो ठोलहोए कहोकेम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मुंठ
 चाता नजो मोहूदाता॥अलोनी प्रभुनें नजो वि
 श्व ख्याता ॥ चिंतामणी सारीखो एह साचो ॥
 कलंकी काचनापिंमशुंमत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि
 शुं जेह प्राणीकहेठे॥सवीधर्म एकत्व नूलोनमेठे॥
 किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं ॥ किहां कायराने
 किहां शूरवीरं ॥ ९ ॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंज
 खंमं ॥ किहां कोडवाने किहां खीरमंमं ॥ किहां
 खीरसिंधू किहां खारनीरं ॥किहां कामधेनुं किहां

(१८९)

ठाग खीरं॥१०॥ किहां सत्यवाचा किहां कूडवाणी॥
 किहां रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने
 किहां देवजोगी ॥ किहां इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी
 ॥ ११ ॥ किहां कर्मघाती किहां कर्मधारी ॥ नमो
 वीरस्वामी नजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्न
 श्री राज्यपामी ॥ राचेमंदबुद्धि धरीजेह स्वामी॥१२
 अथिरसुख संसारमां मनमाचे ॥ तेह मुढमां
 श्रेष्ठ शुं इष्ट ठाजे ॥ तजो मोहमाया हरो दंनरो
 सी ॥ सजो पुन्यपोसी नजो ते अरोसी ॥ १३ ॥
 गतीचार संसार अपारपामी ॥ आव्या आशधारी
 प्रनूपायस्वामी ॥ तुंही तुंही तुंही प्रनू पर्मरागी ॥ नव
 फेरनी श्रृंखला मोह नागी ॥ १४ ॥ मानीएवीरजी अ
 र्जवे एक मोरी ॥ दीजें दासकुं सेवनाचर्णतोरी ॥ पु
 न्यउदयहुउ गुरु आज मेरो ॥ विवेकें लह्यो में प्रभु द
 र्श तेरो ॥ १५ ॥ इति श्री महावीरजिनबंद ॥ ५७ ॥

॥ अथ गणधरस्तवलिख्यते ॥ ५८

॥ एकादश गणधरनां नाम ॥ प्रहज्जतीने करूं प्रणा

(१७०)

म ॥ इंद्रुति पहेलोते जाण ॥ अग्निचुती बीजो
गुणखाण ॥ १ ॥ वायुचुती त्रीजोजगसार ॥ गण
धरचोथो व्यक्त उदार ॥ सासनपती सूधर्मासार ॥
मंमीतनामे ठो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्रते सातमो
जेह ॥ अकंपीत अष्टम गुणगेह ॥ मुनिवरमांही जेह
प्रधान ॥ अचलत्रात नवमोए नाम ॥ ३ ॥ ना
मथकी होय कोड कव्याण ॥ दशमो मेतारज अ
विरलवाण ॥ एकादशमो प्रनास कहेवाय ॥ सुख
संपति जसनामे थाय ॥ गाया वीरतणा गणधा
र ॥ गुणमणिरयणतणा जंमार ॥ उत्तमविजय
गुरुनोशीश ॥ रत्नविजय वंदे निसदीश ॥ ५ ॥ इति ०
॥ अथ जक्तामरस्तोत्र प्रारंभ वसंततिलका वृत्तम् ॥

॥ जक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रनाणामुद्योतकंद
लितपापतमोवितानं ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयु
गं युगादा, बालंबनंजवजले पततां जनानां ॥ १ ॥
यः संस्तुतः सकलबाहुमयतत्वबोधाडूतबुद्धिप
टुनिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तरु
दारैः स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनें ॥ २ ॥

बुध्याविनापि विबुधार्चितपादपीठः, स्तोतुं समुद्य
 तमतिर्विगतत्रपोहं ॥ बालं विहाय जलसंस्थित
 मिंदुबिंबमन्यः कश्चिदिति जनः सहसागृहीतुं ॥ ३ ॥
 वक्तुंगुणान् गुणसमुद्देशांककांतान्, कस्ते ह
 मः सुरगुरुप्रतिमोपि बुध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्
 तनक्रचक्रं, कोवा तरीतुमजमंबुनिधिं जुजान्यां
 ॥ ४ ॥ सोहं तथापि तव नक्तिवशान् मुनीश,
 कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यम
 विचार्य मृगोमृगेंडं, नान्येति किं निजशिशोः परि
 पालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास
 धाम, त्वन्नक्तिरेव मुखरीकुरुते बज्रान्मां ॥ यत्को
 किलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु चाभ्रक
 लिकानिकरैकहेतोः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन नव
 संततिसंनिबद्धं, पापं कृणात् क्वयमुपैति शरी
 रजाजां ॥ आक्रांतलोकमजिनीलमशेषमाशु सू
 र्यांशुनिन्नमिव शार्बरमंधकारं ॥ ७ ॥ मत्वेति
 नाथ तव संस्तवनं मयेदमारन्यते तनुधियापि
 तव प्रजावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीद

(३९१)

लेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते
प्रज्ञैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशनांजि ॥ ९ ॥
नात्यद्भुतं नुवननूषण नूतनाथ नूतैर्गुणैर्नुवि नवं
समनिष्ठवंतः ॥ तुल्यानवंति नवतो ननु तेन किंवा,
नूत्याश्रितं यद्दृष्टं नात्मसमं करोति ॥ १० ॥ दृ
ष्ट्वानवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुप
याति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिं दु
ग्धसिंधोः क्षारं जलं जलनिधेरशितुं कश्चेत् ॥
॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुनिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामनूत ॥ तावंतएव खलु
तेष्वणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूप
मस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं कृते सुरनेरोगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्रितयोपमानं ॥ बिंबं कलंकम
लिनं क्व निशाकरस्य, यद्वा रसे नवति पांशुपलाश
कल्पं ॥ १३ ॥ संपूर्णममलशशांककलाकलापशुभ्रा
गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रिजग

(१९३)

दीश्वरनाथमेकं कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टं
॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनानिर्नी-
तं मनागपि मनोन विकारमार्गं ॥ कल्पांतकालमरु-
ता चलिता चलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं
कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्दूमवार्त्तिरपवर्जिततैलपूरः
कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोपि ॥ गम्यो न जातु
मरुताचलिताचलेन दीपोपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्र-
काशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि नराहुग-
म्यः स्पष्टीकरोपि सहसा युगपज्जगंति ॥ नानोधरो
दरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासिमु-
नींल्लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहां-
धकारं; गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ॥ विन्ना-
जते तवमुखाब्जमनल्पकांति, विद्योतयज्जगद-
पूर्वशशांकबिंबं. ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनान्धि-
विवस्वता वा युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कि-
यज्जलधरैर्जलनारनध्रैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि
विनाति कृतावकाशं नैवं तथा हरिहरादिषु नायके

(१९४)

षु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु
काचशकले किरणाकुलेपि. ॥ १० ॥ मन्ये वरं हरिह
रादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु त्वदयं त्वयि तोषमेति ॥
किं वीक्षितेन ज्वता जुवि येन नान्यः कश्चिन्मनो
हरति नाथ जवांतरेपि ॥ ११ ॥ स्त्रीणां शतानि
शतशो जनयन्ति पुत्रा, नान्यं सुतं त्वदुपमं जननी
प्रसूता ॥ सर्वादिशो दधति जानि सहसरश्मिं, प्रा
च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ १२ ॥ त्वामा
मनन्ति मुनयः परमं पुमांसमादित्यवर्णममलं त
मसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलन्य जयन्ति मृ
त्युं, नान्यः शिव. शिवपदस्य मुनींश्च पंथाः ॥ १३ ॥
त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं ब्रह्माण्मी
श्वरमनंतमनङ्केतुं ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमे
कं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥ १४ ॥ बु
द्धस्त्वमेव विबुधाचित बुद्धिबोधात्त्वं शङ्करोसि जु
वनत्रयशङ्करत्वात् ॥ धातासि धीरशिवमार्गविधेर्वि
धाना ह्यक्तं त्वमेव जगवन् पुरुषोत्तमोसि. ॥ १५ ॥
तुभ्यं नमस्त्रिजुवनार्तिहराय नाथ तुभ्यं नमः

(१९५)

कृतितलामलनूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः प
रमेश्वराय, तुभ्यं नमोजिननवोदधिशोषणाय. ॥
॥ १६ ॥ कोविस्मयोत्र यदिनाम गुणैरशेषै
स्त्वंसंश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपा
त्तविविधाश्रयजातगर्वैः स्वप्नांतरेपि न कदाचिद
पीडितोसि. ॥ १७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितम
न्मयूख मानातिरूपममलं जवतोनितांतं ॥ स्पष्टो
द्वसत्किरणमस्ततमोवितानं बिंबं रवेरिव पयो
धरपार्श्ववर्त्ति. ॥ १८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशि
खाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं ॥
बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुंगोदयादि
शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ १९ ॥ कुंदावदातचलचा
मरचारुशोचं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं ॥
उद्यद्भृशांकशुचिनिर्जरदारिधारमुच्चैस्तटं सुरगिरे
रिव शातकौंचं. ॥ २० ॥ तत्रत्रयं तव विजाति
शशांककांतं, मुच्चैःस्थितं स्थगितजानुकरप्रतापं ॥
मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोचं, प्रख्यापयत्रिजग
तः परमेश्वरत्वं ॥ २१ ॥ उन्निद्धेमनवपंकजपुंजकां

(३९६)

ती पर्युल्लसन्नखमयूखशिखा निरामौ॥ पादौ पदानि
तव यत्र जिनेऽ धत्तः पद्मानि तत्र विबुधाः परि
कल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विनूतिरनू
ज्जिनेऽ धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ या
दृक् प्रजा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृकुतोऽग्र
हगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥ श्रव्योत्तन्मदाञ्जलि
लोलकपोलमूलमत्तत्रमद्भ्रमरनाद विवृद्धकोपं ॥
ऐरावतानमिन्नमुद्धतमापतंतं दृष्ट्वा जयं जवति
नो जवदाश्रितानां ॥ ३४ ॥ निन्नेनकुंजगलदुज्ज्वल
शोणिताक्त मुक्ताफलप्रकरनूषितनूमिनागः॥ बद्ध
क्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोपि नाक्रामति क्रमयु
गाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धत
वन्दिहकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वल मुत्फुलिंगं॥
विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्त्तन
जलं शमयत्यशेषं ॥ ३६ ॥ रक्तेक्ष्णं समदकोकि
लकंठनीजं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतं॥
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकस्त्वन्नामनागदम
नी हृदियस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गुचतुरंगजगर्जित

नीमनाद माजैबलं बलवतामपि नूपतीनां ॥ उद्य
 दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्त्तिनात्तमश्वाद्यु
 निदामुपैति. ॥ ३७ ॥ कुंताग्रनिन्नगजशोणितवा
 रिवाह वेगावतारतरणातुरयोधनीमे ॥ युद्धे जयं
 विजितदुर्जयजेयपक्षास्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो
 लज्जन्ते. ॥ ३८ ॥ अंनोनिधौकुजितनीषणनक्रच
 क्रं, पाठीनपीठनयदोब्बणवाडवाग्रौ ॥ रंगत्तरंगशि
 खरस्थितयानपात्रास्त्रासं विहाय नवतः स्मर
 णाद्व्रजन्ति. ॥ ४० ॥ उद्भूततनीषणजलोदर
 नारचुग्राः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या नवन्ति
 मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृ
 खलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिवृष्टजंघाः ॥
 त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः सद्यः स्वयं
 विगतबंधनया नवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेन्द्रमृगरा
 जदवानलाहि संग्रामवारिधि महोदरबधनोद्धं ॥ त
 स्याद्युनाशमुपयाति नयं न्रियेव यस्तावकं स्तवमि
 मं मतिमानधीते. ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्त्रजं तव जिनै

(१९८)

इगुणैर्निबद्धां, जक्तया मयारुचिरवर्णविचित्रपु
ष्पां ॥ धत्ते जनो य इहकंठगता मजस्त्रं, तं मानतुंग
मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इतिसमाप्तः ॥

अथ ॥ अजितशान्तिस्तवन प्रारंभः ॥

॥ अजिअं जिअसव्वजयं संतिं च पसंतसव्वजय
पावं ॥ जयगुरु संतिगुणकरे दोवि जिणवरे प
णिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववजयमंगुलनावेतेहंवि
उलतवनिम्मलसहावे ॥ निरुवममहप्पनावे ओ
स्सामि सुदिठसप्पावे ॥ गाहा ॥ २ ॥ सव्वडुःख
प्पसंतीणं सव्वपावप्पसंतिणं ॥ सया अजियसंती
णं नमोअजियसंतिणं ॥ सिलोगो ॥ ३ ॥ अजि
अजिण सुहप्पवत्तणं तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं
॥ तह्य धिइमइप्पवत्तणं तव य जिणुत्तम संति
कित्तणं ॥ मागहिआ ॥ ४ ॥ किरिआविहिसंचि
अकम्मकिलेसविमुक्कयरं ॥ अजिअं निचिअं च
गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य सं
तिमहामुणिणोविअ संतिकरं ॥ सययं मम निवु
इकारणयं च नमंसणयं ॥ आलिंगणयं ॥ ५ ॥

(३९९)

पुरिसाजइडुस्कवारणं जइ अ विमग्गहसुस्ककार
णं ॥ अजिअं संतिं च नावउं अजयकरे सरणं
पवक्कहा ॥ मागहिआ ॥ ६ ॥ अरइरइतिमिरवि
रहिअमुवरयजरमरणं ॥ सुरअसुरगरुजजुयगवइ
पययपणिवइअं ॥ अजिअमहमविअसुनयनयनि
उणमजयकरं ॥ सरणमुवसरिअ जुविदिविजमहि
अंसययमुवणमे ॥ संगययं ॥ ७ ॥ तं च जिणुत्तममु
त्तमनित्तमसत्तधरं ॥ अक्कवमद्वखंतिविमुत्तिसमा
हिनिहिंसंतिकरं पणमामि दमुत्तमतिब्बरं ॥ संति
मुणिं मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ सोवाणयं ॥
॥ ८ ॥ सावड्ढिपुव्वपड्ढिवं च वरहड्ढिमव्वयपसड्ढ
विड्ढिन्नसंथिअं थिरसरिड्ढवड्ढं मयगयलीजायमा
णवरगंधहड्ढिपड्ढाणपड्ढिअं संथवारिहं ॥ हड्ढिह
ड्ढवाडु धंतकणगरुयगनिरुवहयपिंजरं पवरजस्क
णोवचियसोम्मचारुड्ढवं ॥ सुइसुहमणाजिराम
परम रमणिक्कवर देवडुंडुहिनिनायम दुरयरसुज
गिरं ॥ वेड्ढउं ॥ ९ ॥ अजिअं जिआरिगणं
जिअसव्वजयं नवोहरिउं ॥ पणमामि अहं प

यत् पावं पसमेत् मे नयवं ॥ रासजु-६३ ॥ १० ॥
 कुरुजणवयहन्निणात्तरनरीसरो पढमं तत् महा
 चक्रवट्टिनोए महण्णनावोजो बाहत्तरि पुरवरसह
 स्सवरनगरनिगमजणवयवई बत्तीसारायवरसह
 स्साणुआयमग्गो चत्तद्वसवररयणनवमहानिहिच
 उत्तसत्तिसहस्सपवरजुवईणसुंदरवई चुलसीहयगय
 रहसयसहस्ससामी तन्नवङ्गामकोडिसामी आ
 सीज्जो नारहम्मि नयवं ॥ वेद्धत्त ॥ ११ ॥ तं
 संतिं संतिकरं संतिस्सुंत्तवजया ॥ संतिंशुणामि
 जिणं संतिं विहेत्त मे ॥ रासानंदिअयं ॥ युग्मं
 ॥ १२ ॥ इत्थाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणि
 वसहा । नवसारयससिस कलाणण विगयतमा
 विद्दुयरया ॥ अजित्तमतेअ गुणेहिं महामुणि
 अमिअ बजा विज्जकुजा । पणमामि ते नवज
 यमूरण जगसरण मम सरणं ॥ चित्तलेहा ॥ १३ ॥
 देवदाणविंदचंदसूरवंद हत्तुत्तजिहपरमलच्छव धं
 तरुण्णपट्टसेयसु-६नि-६धवलदंतपंति संति सत्तिकि
 त्तिमुत्तिज्जुत्तिगुत्तिपवर दित्ततेअवंद धेअ सबलोअ

नाविश्रप्पजावणेअ पइस मे समाहिं ॥ ना
 रायउ ॥ १४ ॥ विमलससिकलाइरेअसोम्मं ।
 वितिमिरसूरकराइरेअतेअं ॥ तिअसवङ्गणाइरेअ
 रूवं । धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ कुसुमलया ॥
 ॥ १५ ॥ सत्ते अ सया अजिअं । सारीरे अ ब
 ले अजिअं ॥ तवसंजमे अ अजिअं । एस अहं
 शुणामि जिणं मजिअं ॥ जुअगपरिगिअं ॥ १६ ॥
 सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी तेअगु
 णेहिं पावइ न तं नवसरयरवी ॥ रूवगुणेहिं
 पावइ न तं तिअसगणवई सारगुणेहिं पावइ न
 तं धरणिधरवई ॥ खिज्जिययं ॥ १७ ॥ तिब्बवरप
 वत्तयं तमरयरहियं धीरजणशुअच्चिअं चुअकलि
 कलुसं ॥ संतिसुहपवत्तयं तिगरणपयअो सं
 तिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ ललिअयं
 ॥ १८ ॥ विणअोणयसिररइअंजलिरिसिगणसंशु
 अं अिमिअं ॥ विबुहाहिवधणवइनरवइशुयमहिअ
 च्चिअं बहुसो ॥ अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअ
 सप्पजं तवसा ॥ गयणंगणविहरणसमुअचारणवं

दिञ्चं शिरसा ॥ किसलयमाला ॥ १९ ॥ असुरग
 रुलपरिवंदिञ्चं किंनरोगनमंसिञ्चं ॥ देवकोडिस
 यसंश्रुयं समणसंघपरिवंदिञ्चं ॥ सुमुहं ॥ २० ॥
 अचयं अणहं अरयं अरुञ्चं अजिञ्चं अजिञ्चं
 पयञ्चो पणमे ॥ विक्कुविलसिञ्चं ॥ २१ ॥
 आगया वरविमाणदिव्वकणगरहतुरयपहकरसये
 हिं दुलिञ्चं ॥ ससंनमोअरणकुनिअलुलिञ्चच
 लकुंमलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥ वेद्धउ ॥
 ॥ २२ ॥ जं सुरसंधा सासुरसंधा वेरविउत्ता न
 त्सुजुत्ता आयरनूसिअसंनमपिंमिअसुहुसुविम्हि
 असव्वबलोधा ॥ उत्तमकंचणरयणपरूविअनासुर
 नूसणनासुरिञ्चंगा गायसमोणयनत्तिवसागयपंज
 लिपेसिअसीसपणामा ॥ रयणमाला ॥ २३ ॥
 बंदिकण थोकण तो जिणं तिगुणमेव य पुणो
 पयाहिणं ॥ पणमिकण य जिणं सुरासुरा पमुइ
 आ सनवणाइं तो गया ॥ खित्तयं ॥ २४ ॥ तं
 महामुणि महं पि पंजली रागदोसनयमोहवज्जि
 ञ्चं ॥ देवदाणवनरिंदवंदिञ्चं संति मुत्तम महात

वं नमे ॥ खित्तयं ॥ १५ ॥ चतुर्निःकलापकं ॥
 अंबरंतरविआरणिआहिं ललिअहंसवहुगामिणि
 आहिं ॥ पीणसोणीथणसालणिआहिं सकलकम
 लदललोअणिआहिं ॥ दीवयं ॥ १६ ॥ पीएणि
 रंतरथणनरविणमिअगायलयाहिं । मणिकंचण
 पसिठिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ॥ वरखिंखि
 णिनेउरसतिलयवलयविनूसणिआहिं । रइकरचउं
 रमनोहरसुंदररदंसणिआहिं ॥ चित्तस्करा ॥ १७ ॥
 देवसुंदरीहि पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते
 सुविक्कमा कमा अण्णणोनिडाजएहिं मंण्णोडुण
 पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंगतिलयपत्तलेहना
 मएहिं चिह्नएहिं संगयंगयाहिं नत्तिसंनिविष्ठवंद
 णा गयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणोपुणो ॥ नारा
 यओ ॥ १८ ॥ तमहं जिणचंदं अजिअं जि
 अमोहं धुयसव्वक्खिलेसं पयओ पणमामि ॥ नं
 दिअयं ॥ १९ ॥ धुयवंदिअस्सा रिसिगणदेव
 गणेहिं तो देववहूहिंपयओ पणमिअस्सा ॥ ज
 स्सजगुत्तमसासणयस्सा नत्तिवसागयपिंमिअया

हिं देववरह्वरसाबहुआहिं सुरवररङ्गुणपंमिअआ
 हिं ॥ नासुरयं ॥ ३० ॥ वंससद्वतंतितालमेजिए तिउ
 स्करानिरामसदमीसए कए अ सुइसमाणणे अ
 सुइसङ्गगीअपायजालवंटिआहिं ॥ वलयमेहला
 कलावनेउरानिरामसदमीसए कए अ ॥ देवनट्टि
 आहिं हावनावविप्रमपगारएहिं नच्चिकण अंग
 द्वारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्रमा कमातयं
 तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं ॥ पसंतसव्वपावदोस मे
 सहं नमामि संति मुत्तमं जिणं नारायउ ॥
 ॥ ३१ ॥ ठत्तचामरपडागजूवजवमंमिआ जयव
 रमगरतुरयसिरिवह्व सुलंठणा दीवसमुद्धमंदर
 दिसागयसोहिआ सच्चिअवसहसीहरहचक्कवरंकि
 आ ॥ लज्जिअयं ॥ ३२ ॥ सहावल्ला समण्यइ
 छा अदोसडुछा गुणेहिं जिछा ॥ पसायसिछा तवे
 ण पुछा सिरीहिं इछा रिसीहिं जुछा वाणवासिया
 ॥ ३३ ॥ ते तवेण धुयसव्वपावया सव्वल्लोअहि
 अमूलपावया ॥ संशुआ अजिअसंतिपायया हुं
 तु मे सिवसुहाणदायका अपरांतिका ॥ ३४ ॥

(३०५)

एवं तवबलविउलं ॥ शुअं मए अजिअसंतिजिण
जुयलं ॥ ववगयकम्मरयमलं ॥ गयं गयं सासयं वि
उलं ॥ गाहा ॥ ३५ ॥ तं बहुगुणप्पसायं ॥ सुक्खसु
हेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं ॥ कुण
उ अ परिसा वि अ पसायं ॥ गाहा ॥ ३६ ॥ तंमो
एउ अ नंदिं ॥ पावेउ अनंदिसेण मज्जिनंदिं ॥ परि
सा विअसुहंदिं ॥ मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ गा
हा ॥ ३७ ॥ पस्किअचाउम्मासिअ ॥ संवत्तरिए
अवस्सजणिअव्वो ॥ सोयव्वो सव्वेहिं ॥ उवसग्गनिवार
णो एसो ॥ गाहा ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसु
णइ ॥ उन्नउकालंपि अजिअसंतिथयं ॥ न दु दुंति
तस्स रोगा ॥ पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ गाहा ॥ ३९ ॥ ज
इ इब्बह परमपयं ॥ अहवा कित्तिं सुविब्बमं सुवणे ॥
ता तेलुक्कुअरणे ॥ जिणवयणेआयरं कुणह ॥ ४० ॥
॥ इति अजित शांतिस्तोत्रं संपूर्णं ॥ ६० ॥
॥ अथ श्री कल्याणमंदीर स्तोत्र प्रारंभः ॥ ६१ ॥
ॐ नमः सिद्धम् ॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यजेदि

जीतानयप्रदमनिंदितमंत्रिपद्मं ॥ संसारसाग
 रनिमज्जदशेषजंतु पोतायमानमजिनम्यजिनेश्वर
 स्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशोः स्तो
 त्रं सुविस्तृतमतिर्नविजुर्विधातुं ॥ तीर्थेश्वरस्यकमठ
 ह्मयधूमकेतोस्तस्याहमेषकिलसंस्तवनंकरिष्ये ॥ २ ॥
 सामान्यतोपि तववर्णयितुं स्वरूपमस्मादृशाः कथ
 मधीश नवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदिवा
 दिवांधो रूपं प्ररूपयति किं किलधर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मो
 हद्वयादनुजवन्नपि नाथ मर्त्यो नूनं गुणान् गणयि
 तुं न तव ह्रमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोपि य
 स्मान्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अन्यु
 द्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोपि कर्तुं स्तवं लसदसं
 ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोपि किं न निजबाहुयुगं वित
 त्य विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशोः ॥ ५ ॥ ये
 योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश वक्तुं कथं नवतु
 तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेवमसमीकृतकारिते
 यं जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोपि ॥ ६ ॥
 आस्तामचित्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते नामापिपाति

नवतो नवतोजगंति ॥ तीव्रातपोपहत पांथजना
 न्निदाघे प्रीणातिपद्मसरसः सरसोनिलोपि ॥ ७ ॥
 ह हर्तिनित्वयिविजोशिथिलिजवंति जंतोः क्षणेन
 निबिडात्रपि कर्मबंधाः ॥ सद्योभुजंगममयाश्व
 मध्यजाग मन्यागतेवनशिखंमिनिचंदनस्य ॥ ८ ॥
 मुच्यंतएवमनुजाः सहसाजिनेंश्च रौद्रैरुपश्वशतै
 स्त्वयिवीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनिस्फुरिततेजसि
 दृष्टमात्रे चौरैरिवाशुपशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥
 त्वंतारकोजिनकथं नविनांतएव त्वामुद्धंतिह
 दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वादृतिस्तरतियज्जलमेषनू
 नमंतर्गतस्यमरुतःसकिलानुजावः ॥ १० ॥
 यस्मिन्हरप्रचृतयोपिहतप्रजावाः सोपित्वयार
 तिपतिःक्षुपितःक्षणेन ॥ विध्यापिताहुतभुजःप
 यसाथयेन पीतंनकिंतदपिदुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥
 स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपिप्रपन्ना स्त्वांजंतवःक
 थमहोहृदयेदधानाः ॥ जन्मोदधिंलघु तरंत्यतिजा
 घवेन चिंत्योनहंतमहतांयदिवाप्रजावः ॥ १२ ॥
 क्रोधस्त्वयायदिविजोप्रथमंनिरस्तो ध्वस्तास्तदा

बतकयंकिलकर्मचौराः श्लोषत्यमुत्रयदिवा शिशि
 रापिलोके नीलद्रुमाणिविपिनानिनकिंहिमानि
 ॥ १३ ॥ त्वांयोगिनोजिन सदापरमात्मरूप म
 न्वेषयन्तिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मलरुचे
 र्यदिवाकिमन्य दहस्यसंजविपदंननुकर्णिकायाः
 ॥ १४ ॥ ध्यानाङ्गिनेशनवतोजविनःरूपेण दे
 हंविहायपरमात्मदशां व्रजन्ति ॥ तीव्रानलाडुपल
 जावमपास्यलोके चामीकरत्वमचिरादिवधातुजे
 दाः ॥ १५ ॥ अंतःसदैवजिनयस्यविनाव्यसेत्वं । न
 वयैःकथं तदपिनाशयसेशरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथमध्य
 विवर्त्तिनोहिय द्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुजावाः ॥ १६ ॥
 आत्मा मनीषि निरयं त्वद जेदबुद्ध्याध्यातो जिनें ज
 वतीह जवत्प्रजावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्य
 मानं किं नामनो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥
 त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि नूनं विनो हरिहरा
 दिधिया प्रपन्नाः ॥ किं चाचकामलिजिरीशसितोपि
 शंखो नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥
 धर्मोपदेशसमये सविधानुजावा दास्तां जनो जवति

(३०९)

तेतरुरप्यशोकः ॥ अन्युजतेदिनपतौसमहीरुहो
पि किंवाविबोधमुपयातिनजीवलोकः ॥ १९ ॥
चित्रंविनोकयमवाङ्मुखवृंतमेव विष्वक्पतत्य
विरलासुरपुष्पवृष्टिः ॥ त्वज्जोचरेसुमनसांयदिवामु
नीश गह्वंतिनूनमधएवहिबंधनानि ॥ २० ॥
स्थानेगनीर हृदयोदधिसंनवायाः पीयूषतांतव
गिरःसमुदीरयंति ॥ पीत्वायतःपरमसंमदसंगजा
जो नव्याव्रजंतितरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥
स्वामिनसुदूरमवनम्यसमुत्पतंतो मन्येवदंतिशुच
यः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मैनतिंविदधतेमुनिपुंगवा
य तेनूनमूर्ध्वगतयःखलुशुद्धजावाः ॥ २२ ॥
श्यामंगनीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न सिंहासनस्थमिह न
व्यशिखंमिनस्त्वां ॥ आलोकयंतिरजसेननदंतमु
च्चैश्चामीकरादिशिरसीवनवांबुवाहं ॥ २३ ॥
उज्ज्वतातवसितियुतिमंदलेन लुप्तदद्विरशो
कतरुर्बनूव ॥ सांनिध्यतोपियदिवातववीतराग
नीरागतांव्रजतिकोनसचेतनोपि ॥ २४ ॥ जोजोः
प्रमादमवधूयजजध्वमेन मागत्यनिर्वृतिपुरींप्रति

सार्थवाहं ॥ एतन्निवेदयतिदेवजगत्रयाय मन्ये
 नदन्ननिननःसुरडुंडुनिस्ते ॥ १५ ॥ उद्योतितेषुन
 वताञ्चुवनेषुनाथ तारान्वितोविधुरयंविहताधिका
 रः॥ मुक्ताकलापकलितोद्धसितातपत्र व्याजात्त्रि
 धाधृततनुर्ध्रुवमन्युपेतः ॥ १६ ॥ स्वेनप्रपूरितजगत्त्र
 यपिंमितेन कांतिप्रतापयशसामिवसंचयेन ॥ मा
 णिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन शालत्रयेणनगवन्न
 नितोविनासि ॥ १७ ॥ दिव्यस्त्रजोजिननमत्त्रि
 दशाधिपाना मुत्सृज्यरत्नरचितानपिमौलिबंधान् ॥
 पादौश्रयंतिनवर्तायदिवापरत्र त्वत्संगमेसुमन
 सोनरमंतएव ॥ १८ ॥ त्वंनाथजन्मजलधेर्विपरा
 डमुखोपि यत्तारयस्यसुमतोनिजष्टलग्रान् ॥
 मुक्तंहिपार्थिवनिनस्यसतस्तवैव चित्रंविनोयदसि
 कर्मविपाकशून्यः ॥ १९ ॥ विश्वेश्वरोपिजनपा
 लकडुर्गतस्त्वं किंवाह्यप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमी
 श ॥ अज्ञानवत्यपिसदैवकयंचिदेव ज्ञानंत्वयि
 स्फुरतिविश्वविकाशहेतुः ॥ २० ॥ प्राग्जारसंनृत
 ननांसिरजांसिरोषा दुब्बापितानिकमतेनशठेनया

नि ॥ ऋयापितैस्तवननाथहताहताशो अस्तस्त्व
 मीनिरयमेवपरंडुरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्जडुस्त्रितय
 नौधमंदन्ननीमं चश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारं ॥
 दैत्येनमुक्तमथदुस्तरवारिदध्रे तेनैवतस्यजिनदुस्त
 रवारिकृत्यं ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिम
 र्त्यमुंम प्रालंबनृन्नयदवक्रविनिर्घदग्निः ॥ प्रेत
 ब्रजःप्रतिजवंतमपीरितोयः सोस्यानवत्प्रतिजवंज
 वदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएवक्षुवनाधिपयेत्रि
 संध्य माराधयंतिविधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ न
 तयोद्धसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः पादद्वयंतवविजो
 क्षुविजन्मजाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारजववारिनि
 धौमुनीश मन्येनमेश्रवणगोचरतांगतोसि ॥ आ
 कर्णितेपितवगोत्रपवित्रमंत्रे किंवाविषद्विषधरीस
 विधंसमेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपितवपादयुगंनदे
 व मन्येमयामहितमीहितदानदहं ॥ तेनेहज
 न्मनिमुनीशपराजवानां जातोनिकेतनमहंमयि
 ताशयानां ॥ ३६ ॥ नूनंतमोहतिमिरावृतलोचनेन
 पूर्वविजोसकृदपिप्रविजोक्तोसि ॥ मर्माविधौवि

(३१२)

धुरयंति हि मामनर्थाः प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथै
ते ॥ ३७ ॥ आर्कणितोपिमहितोपि निरीकृतोपिनू
नं नचेतसिमयाविधृतोसि नक्तया ॥ जातोस्मि ते न ज
नबांधवदुःखपात्रं यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न जा
वशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखि जनवत्सल हेशरण्य
कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ नक्तयानते मयि म
हेशदयां विधाय दुःखांकुरोदलनतत्परतां विधेहि
॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्य मासा
द्यसादितरिपुप्रथितावदातं ॥ त्वत्पादपंकजमपि
प्रणिधानवंध्यो वध्योस्मि चेद्भुवनपावनहाहतो
स्मि ॥ ४० ॥ देवेंद्वंद्यविदिताखिलवस्तुसार
संसारतारकविनोचुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्वदेवकरु
णाद्ब्रह्ममांपुनीहि सीदंतमद्य नयदव्यसनांबुराशेः
॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ नवदंघ्रिसरोरुहाणां नक्तेः
फलं किमपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरण
स्य शरण्यनूयाः स्वामी त्वमेव चुवनेऽत्र चुवांतरेपि
॥ ४२ ॥ इह संमाहितधियोविधिवज्जिनेंश्च सां
शोद्धसत्पुलककंचुकितांगनागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मल

(३१३)

मुखांबुजबद्धलङ्काः येसंस्तवंतवविबोरचयंतिन
व्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचंद् प्रनास्वराः
स्ववर्गसंपदोञ्जुक्त्वा ॥ तेविगलितमलनिचयाश्चि
रान्मोहं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ इतिकुमुदचंद्वाचार्यवि
रचितंकल्याणमंदिरस्तवनंसंपूर्ण ॥ ६१ ॥ ॥

॥ अथ शान्तिकरस्तवनं लिख्यते ॥६२॥

॥ संतिकरंसंतिजिणं ॥ जगसरणंजयसिरी
इदायारं ॥ समरामिजत्तपालग निवाणीगरुडक
यसेवं ॥ १ ॥ उँसणमोविप्पोसहि,पत्ताणं संतिसा
मिपायाणं ॥ कौँस्वाहामंतेणं सव्वासिवडुरिअ हर
णाणं ॥ २ ॥ उँसंतिनमुक्कारो खेजोसहि माइल
दिपत्ताणं ॥ सौँद्रींसनमोसवो सहिपत्ताणंचदेइ
सिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिदुअणसामिणि सिरिदेवी
जस्करायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा सया
विरस्कंतुजिणजत्ते ॥ ४ ॥ रस्कंतुममंरोहिणि प
न्नत्ती वळ्ळसिंखलायसया ॥ वळ्ळंकुसि चक्केसरि,न
रदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥ गौरीतह गंधारी

(३१४)

महाज्जलामाणवी य वऽरुट्टा ॥ अञ्जुत्ता माणसि
या मह माणसियाउदेवीउ ॥ ६ ॥ जस्कागोमु
हमहज, र्कतिमुहजस्केसुतुंबुरुकुसुमो । मायंगवि
जय अजिया बंनो मणुएसरकुमारो॥७॥ हम्मुह
पयाल किन्नर गरुडोगंधव तहय जस्किंदो॥ कूबर
वरुणोजिउडी । गोमेहो पास मायंगा ॥ ८ ॥ दे
वीउ चक्केसरि अजिया डुरिआरि कालि महाका
ली ॥ अञ्जुअसंता जाला सुतार यासोयसिरिव
हा ॥ ९ ॥ चंदा विजयं कुसि पन्नइ तीनिवाणि
अञ्जुआ धरणी ॥ वऽरुट्टदत्तगंधारी अंबपउमाव
ईसिदा ॥ १० ॥ इयतिहरस्केणरया अन्नेविसुरा
सुरीइचउहावि ॥ वंतर जोयणि पमुहा कुणंतु र
स्कंसयाअम्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिठिसुरगण सहिउ
संघस्ससंतिजिणचंदो ॥ मस्सविकरेउरस्कं मुणि
सुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इयसंतिनाहसम्म
दिठीरस्कं सरइतिकालंजो ॥ सवोवद्ववरहिउ सल
हइसुहसंपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगढगयणदिणयर
जुगवर सिरिसोमसुंदरगुरूणं ॥ सुपसायलङ्गण

(३१५)

हर विष्णुसिद्धिं न एतसीसो ॥ १४ ॥ इति शं
तिकरस्तोत्रं संपूर्णं ॥ ६२ ॥

॥ अथ तिजयपदुत्तस्तवो लिख्यते ॥ ६३ ॥

तिजयपदुत्तपयासय । अष्टमहापाडिहेरजुत्ताणं ॥
समयखित्तिविश्राणं । सरेमिचक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥
पणवीसायअसीया ॥ पनरसपन्नासजिणवरसमू
हो ॥ नासेउसयलडुरिअं । नवियाणं नत्तिजुत्ताणं
॥ २ ॥ वीसापणयालाविअ । तीसापन्नत्तरीजि
णवरिंदा ॥ गहनूअरक्कसाइणि । घोरुवसग्गंप
णासंतु ॥ ३ ॥ सित्तरिपणतीसाविय । सछीपंचे
वजिणगणोएसो ॥ वाहिजलजलणहरिकरि । चो
रारिमहानयंहरउ ॥ ४ ॥ पणपन्नायदसेवय ।
पन्नछीतहयचेवचालीसा ॥ रक्कंतुमेसरीरं । देवासु
रणमिआसिद्धा ॥ ५ ॥ उँहरहुंहःसरसुंसःहरहुं
हःतहचेवसरसुंसः ॥ आलिहियनामगप्पं । चक्कं
किरसवउन्नदं ॥ ६ ॥ उँ रोहिणिपन्नत्तीवक्कसिख
लातहयवक्कअंकुसिआ ॥ चक्केसरीनरदत्ता । का

(३१६)

जिमहाकाजितहागोरी ॥ ७ ॥ गंधारिमहाजाला ।
माणविवइरुदृतहयअत्तुत्ता ॥ मानसिमहमाणसि
या । विक्कादेवीउरस्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदसकम्मनू
मिसु । उप्पन्नंसत्तरिंजिणाणसयं ॥ विविहरयणा
इवन्नो । वसोहियंहरउडुरियाइं ॥ ९ ॥ चउती
सअतिसअजुआ । अछमहापाडिहेरकयसोहा ॥
तिब्बयरागयमोहा । जाएअवापयत्तेणं ॥ १० ॥
उं वरकणयसंखविदुम ॥ मरगयघणसंन्निहंविगय
मोहं ॥ सत्तरिसयंजिणाणं ॥ सवामरपूइयंवंदे ॥
स्वहा ॥ ११ ॥ उं जुवणवइवाणमंतर ॥ जोइसवा
सीविमाणवासीय ॥ जेकेइडुठदेवा । तेसव्वउवस
मंतुममस्वाहा ॥ १२ ॥ चंदणकप्पूरेणं । फजिहे
लिहिऊणस्वालिअंपीअं ॥ एगंतराइगहउअ । सा
इणिमग्गंपणासेइ ॥ १३ ॥ इयसत्तरिसयजंतं । सम्मं
मंतं डुवारिपडिलिहिअं ॥ डुरिआरिविजयजंतंनिप्पंतं
निच्चमच्चेव ॥ १४ ॥ इति तिजयपहुत्तस्तवःसमाप्तः
॥ अथ नमिउण स्तवो लिख्यते ॥ ६४ ॥
नमिउणपणयसुरगण । चूडामणिकिरणरंजिअंमु

(३१७)

णिणो ॥ चलणजुअलंमहानय । पणासणंसं
थवंबुद्धं ॥ १ ॥ सडिअकरचरणनदमुह । निवू.म
नासाविवन्नलायन्ना ॥ कुळमहारोगानलफुलिंग
निदद्वसवंगा ॥ २ ॥ जेतुहचलणाराहणसलिलं
जलिसेअबुद्धिउच्चाहा ॥ वणदवदद्वगिरिप्पा, यव
वपत्तापुणोलहिं ॥ ३ ॥ ड्वायखुनिअजलनिहि ।
उप्पडकल्लोलनीसणारावे ॥ संनंतनयविसंतुल,
निक्कामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअजाण
वत्ता खणेणपावंतिइत्थिअंकूलं ॥ पासजिणचल
णजुअलं । निच्चंविअजेनमंतिनरा ॥ ५ ॥ खरप
वणुधूअवणदव, जालावलिमिलिअसयलडुमगह
णे ॥ मसंतमु.मयवहु, नीसणरवनीसणंमिव
णे ॥ ६ ॥ जगगुरुणोकम्मजुअलंनिवाविअसय
लतिहुअणानोअं॥जेसंनरंतिमणुआ नकुणइजल
णोनयंतेसिं ॥ ७ ॥ विलसंतनोगनीसण, फुरि
आरुणनयणतरलजीहालं ॥ उग्गजुअंगंनवजल,
यसब्बहंनीसणाअारं ॥ ८ ॥ मन्नंतिकीडसरिसं ।
दूरपरिबूढविसमविसवेगा ॥ तुहनामस्करफुडसि,

(३१८)

ध्रुमंतगुरुआनराजोए ॥ ९ ॥ अडवीसुनिन्नत
करपुलिदसहूलसदनीमासु ॥ नयविदुरबुन्हका
यरउधूरिअपहिअसत्तासु ॥ १० ॥ अविजुत्तवि
हवसारातुहनाहपणाममित्तवावारा ॥ ववगयवि
ग्घासिग्घं, पत्ताहियइत्तियंछाणं ॥ ११ ॥ पज्ज
लिआनलनयणंदूरवियारियमुहंमहाकायं ॥ नह
कुलिसघायविअलिअ गइंदकुंनत्तलानोयं ॥ १२ ॥
पणयससंजमपत्तिवनहमणिमाणिकपडियपडिम
स्स ॥ तुहवयणपहरणधरासीहं कुं पिनगणंति
॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलंदीहकरुत्तालबुद्धि
उत्ताहं ॥ महुपिंगनयणजुअलंससलिलनवजलह
रारावं ॥ १४ ॥ नीमंमहागइंदं अच्चासन्नंपितेन
विगणंति ॥ जेतुंमहचलणजुअलं मुणिवइतुंगंसम
ह्वीणा ॥ १५ ॥ समरंमितिस्खग्गा । निग्गायप
विइउहुअकबंधे ॥ कुंतविणिनिन्नकरिकल,हमुक्क
सिक्कारपउरंमि ॥ १६ ॥ निस्सियदप्पुहररिउ ।
नरिंदनिवहानडाजसंधवलं ॥ पावंतिपावपसमि
ण । पासजिणतुहप्पजावेण ॥ १७ ॥ रोगजल

(३१९)

जलणविसहर । चोरारिमयंदगयरणनयाई ॥
पासजिणनामसंकि,तणेण पसमंतिसवाइं ॥ १ ॥
एवंमहानयहरं । पासजिणंदस्ससंथवमुआरं ॥
नवियजणाणंदयरं । कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥ १ ॥
रायनयजस्करकस । कुसुमिणडुःस्समिणरिक्कपी
डासु ॥ सक्कासुदोसुपंथे । उवसग्गेतहयरयणी
सु ॥ २० ॥ जोपढइजोअनिसुणइ । ताणंकइणो
यमाणतुंगस्स ॥ पासोपावंपसमे,उ सयलजुव
णच्चिअच्चलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंतेकमछा । सुरं
मिजाणाउ जोनसंचलिउ ॥ सुरनरकिन्नरजुवई,
हिंसंशुउजयउपासजिणो ॥ २२ ॥ एअस्सम
क्षयारे । अछारसअस्करेहिंजोमंतो ॥ जोजाणइ
सोजायइ,परमपयडुंडंपासं ॥ २३ ॥ पासहसम
रणजोकरइसंतुठियहियएण अछुत्तरसयवाहि
नयनासइतस्सदूरेण ॥ २४ ॥ इतिश्रीनमिउंण
वानयहरस्तवःसंपूर्णः ॥ ६४ ॥ ॥ ॥

॥ अथ वृद्धशांतिस्मरणंलिख्यते ॥ ६५ ॥

नोनोनव्याःशृणुतवचनं प्रस्तुतंसर्वमेतत्तूयेयात्रा

यां त्रिभुवनगुरोराहतांजकिजाजः ॥ तेषांशांतिर्न
 वतुजवतामर्हदादिप्रजावादारोग्य श्रीधृतिमतिक
 रीक्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ नोनोनव्यलोका इह
 हिनरतैरावतविदेहसंजवानां समस्ततीर्थकृतां ज
 न्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिनाविज्ञाय सौधर्माधि
 पतिः सुयोषाघंटाचालनानंतरं सकलसुरासुरैः
 सह समागत्यसविनयमर्हद्भट्टारकंगृहीत्वाच गत्वा
 कनकाङ्गि श्रृंगे विहितजन्मानिषेकःशांतिमुद्घोषय
 ति ॥ यथाततोहंकृतानुकार मितिकृत्वा महाज
 नोयेनगतःसंपथाः इतिनव्यजनैःसहसमेत्यस्नात्र
 पीतेस्नात्रंविधाय शांतिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजाया
 त्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरमितिकृत्वाकर्णदत्वानि
 शम्यतां निशम्यतांस्वाहा ॐपुण्याहंपुण्याहं प्रीयंतां
 प्रीयंतां जगवंतोर्हंतःसर्वज्ञाःसर्वदर्शिनःस्त्रिलोकना
 थास्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकवंद्यास्त्रि
 लोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्योतकराः ॥ ॐऋषभ १ अजित
 २ संजव ३ अजिनंदन ४ सुमति ५ पद्मप्रज ६ सुपा
 र्श्व ७ चंडप्रज ८ सुविधि ९ शीतल १० श्रेयांस

(३२१)

११ वासुपूज्य १२ विमल १३ अनंत १४ धर्म
 १५ शांति १६ कुंभ १७ अर १८ मन्त्रि १९ सु
 निसुव्रत २० नमि २१ नेमि २२ पार्श्व २३ वर्ध
 मानांता २४ जिनाः शांताः शांतिकरा नवंतुस्वा
 हा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्निहकांता
 रेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतुवो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्री धृ
 ति मति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या सा
 धनप्रवेशनिवेशनेषु सुगृहीत नामानो जयंतु ते जिने
 षाः ॥ ॐ रोहिणी १ प्रहसती २ वज्रश्रृंगवला ३
 वज्रांकुशी ४ अप्रतिचक्रा ५ पुरुषदत्ता ६ काली
 ७ महाकाली ८ गौरी ९ गांधारी १० सर्वास्त्रा
 महाज्वाला ११ मानवी १२ वैरोट्या १३ अङ्गु
 स्ता १४ मानसी १५ महामानसी १६ षोडशवि
 द्यादेव्यो रक्षंतुवो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्या
 यसाधुप्रनृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्न
 वतुतुष्टिर्न वतुपुष्टिर्न वतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्र १ सूर्यो २ गा
 रक ३ बुध ४ बृहस्पति ५ शुक्र ६ शनैश्चर ७ रा
 हु ८ केतुसहिताः सलोकपालाः सोम १ यम २ व

रुण ३ कुबेर ४ वासवाऽदित्यस्कंदविनायकोपेता
 येचान्येऽपिग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयःस्तेसर्वे प्रीयंतां
 प्रीयंतां ॥ अक्षीणकोष्ठागारानरपतयश्चनवंतुस्वा
 हा ॥ ॐपुत्रत्रातृमित्रकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधु
 वर्गसहिताः नित्यंचामोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च
 जूमंमलायतननिवासि साधु साध्वी श्रावक श्रावि
 काणां रोगोपसर्गव्याधिदुःख दुर्निहृदौर्मनस्योपश
 मनायशांतिर्नवतुस्वाहा ॥ ॐतुष्टिपुष्टिद्विष्टिद्विमांग
 ब्योत्सवाः सदाप्रादुर्भूतानिपापानि शाम्यंतुदुरिता
 निशत्रवः पराङ्मुखाचनवंतुस्वाहा ॥ श्रीमतेशांतिना
 थायनमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश
 मुकुटान्यर्चितांग्रये ॥ १ ॥ शांतिःशांतिकरःश्रीमा
 न्शांतिंदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेषांयेषांशांति
 र्गृहेगृहे ॥३॥ उन्मृष्टरिष्टदृष्टग्रहगतिदुःखप्रदुर्निमि
 तादि ॥ संपादितहितसंपन्नामग्रहणंजयतिशांतेः
 ॥४॥ श्रीसंघजगज्जनपदराजाधिपराजसन्निवेशानां ॥
 गोष्ठिकपुरमुख्यानांव्याहरणैर्व्याहरेह्वान्तिः ॥ ५ ॥
 श्रीश्रमणसंघस्यशांतिर्नवतु ॥ श्रीपौरजनस्यशांति

(३१३)

र्नवतु ॥ श्रीजनपदानांशांतिर्नवतु ॥ श्रीराजाधि
पानांशांतिर्नवतु ॥ श्रीराजसन्निवेशानांशांतिर्नवतु
श्रीगोष्ठिकानांशांतिर्नवतु ॥ श्रीपुरमुख्याणांशांतिर्नव
तु ॥ श्रीब्रह्मलोकस्यशांतिर्नवतु ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ
स्वहा ॥ ॐ श्रीपार्थनाथाय स्वाहा एषांशांतिप्रतिष्ठा
यात्रास्नात्रावसानेषुशांतिकलशंगृहीत्वा कुंकुम चं
दन कर्पूरगरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः स्नात्रच
तुष्पिकायांश्रीसंधसमेतः शुचिः शुचिवपुःपुष्पवस्त्र
चंदनानरणालंकृतः पुष्पमालांकंठेकृत्वा शांतिमु
द्घोषयित्वाशांतिपानीयंमस्तकेदातव्यमिति ॥ नित्यं
चनित्यंमणिपुष्पवर्षसृजंति गायंतिचमंगलानि ॥
स्तोत्राणिगोत्राणिपठंतिमंत्रान् कल्याणनाजोहि
जिनानिपेके ॥१॥ शिवमस्तुसर्वजगतः परहितनि
रतान्वंतुनूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतुनाशंसर्वत्र सु
खीनवंतुलोकाः ॥२॥ अहंतिह्यरमायासिवादेवीतु
म्हनयरनिवासिनी ॥ अम्हसिवंतुम्हसिवंअसिवोष
समंसिवंनवतुस्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयंयाति
विद्यंतेविघ्नवह्नयः ॥ मनःप्रसन्नतामेतिपूज्यमानेजि

(३१४)

श्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यंसर्वकल्याणकारणं ॥
प्रधानंसर्वधर्माणां जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥ इति
श्रीवृद्धशान्तिस्तवस्मरणं संपूर्णं ॥ ६५ ॥

॥ अथ श्रावकना पद्धिक अतिचारः ॥ ६६ ॥

नाणंमि दंसणंमिअ चरणंमि ॥ तवंमि तह
यविरयंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इयएसोपंचहा
जणित्ठं ॥ १ ॥ ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार
तपाचार विर्याचार ॥ एपंचविध आचारमांहे ॥
अनेरो जे कोइ अतिचार ॥ पद्धदिवसमांहे ॥ सु
द्धाबादर जाणतां अजाणतां ॥ दुउहोयते सविद्धं म
ने वचने कायाएकरी ॥ तस्समिह्वामिडुक्कडं ॥ १ ॥
तत्रज्ञानाचारना आवयतिचार ॥ कालेविणए ब
हुमाणो ॥ उवहाणेतहय निन्हवणे ॥ वंशणअ
वतडुनए ॥ अठविहोनाणमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान
कालवेजामांहे पडित्ठं गुणीत्तनहीं ॥ अकालेजण्यो
॥ विनयहिन बहुमानहिन योगउपधानहिन ॥
अनेराकने जणी अनेरो गुरुकह्यो ॥ देवगुरुवंद

(३१५)

एो पडिकमणे ॥ सिक्कायकरतां नणतां गणतां ॥
कुडोअहूर कानें मात्रे अधिकोउठो नण्यो ॥ सू
त्रकुडुंकहुं, अर्थकुडोकह्यो ॥ तडुनयकुडांकह्यां, न
णीनेंविसाख्यां ॥ साधुतणे धर्मकाजे काजोअणउ
धख्यो मांमोअणपडिलह्यो ॥ वसतिअणसोधि ॥
असजाय अणोजामांहे ॥ श्रीदशवैकान्तिकधि
विरावलि उपदेशमाला प्रमुख ॥ सिद्धांतन
ण्यो गुण्यो ॥ ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी,
कवली नोकरवाली सांपडा सांपडी दस्तरी वहि उं
लियां प्रमुख प्रते पग लाग्यो, खुंकेकरीअहूर मांज्यो,
उंसीसेंधख्यो ॥ कन्हेंठतां अहार निहारकीधो ज्ञान
इव्यनकृता उपेक्षाकिधी ॥ प्रज्ञापराधे विणसतो
विनाश्यो विणस्तोउवेख्यो ॥ ठतीशक्तिए सारसं
जालनकिधी, ज्ञानवंतप्रते द्वेष मत्सरचिंतव्यो ॥
अवज्ञा आसातनाकिधी. कोईप्रते नणतां गणतां
अंतरायकिधो ॥ आपणा जाण पणा तणो ग
र्व चिंतव्यो ॥ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान,
मनपर्यवज्ञानने केवलज्ञान ए पंचविध ज्ञानतणी

असदेहणाकिधी ॥ कोइ तोतडो बोलडोहस्यो,
वितक्यो, अन्यथा परपणाकीधी ॥ ज्ञानाचार वि
पडउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्क दिवस० ॥

१ दर्शनाचारनाअतिचार॥ निस्संकिय निक्कंखिय
निवितिगिह्वा अमूढदिहीअ ॥ उववूहयिरीकरणे व
हलपनावणेअव ॥३॥ देव गुरु धर्मतणेंविपे निः
संकपणुं न कीधुं॥ तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म
संबंधिया फल तणेंविपे निःसंदेह बुद्धी धरीनहीं॥
साधु साध्वीनां मलमलिन गात्रदेखी डुगह्यानीपजा
वी ॥ कुचारित्रियादेखी चारित्रियाउपर अनावहुउं.
मिथ्याखितणी पूजा प्रनावनादेखी मूढदृष्टिपणुंकी
धुं॥ संघमांहेगुणवंततणी अतुषट्ठहणाकिधी ॥ अ
स्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीतीअनक्तिनिपजावी॥
अबहु मान कीधुं॥ तथा देवइव्य, गुरुइव्य साधारण
इव्य नक्कित् उपेक्कित् प्रज्ञापराधे विणासुं विणस
तांउवेखुं॥ ठती शक्तीए सार संजाल नकीधी ॥ तथा
साधर्मिकसाथे कलह कर्मबंध कीधो, अधोतिअष्टप
ड मुख कोश पखें देवपूजाकीधी, बिंबप्रते वासकुंपी

धुपधाणुकलश तणोठवकोलाग्यो॥बिंब हाथथकी
 पडयो,उसास निसास लाग्यो॥देहरे अपासरे मल
 श्लेष्मलोह्यो॥ देहरां मांहे हाश्य खेल केलि कुतुह
 ल आहार निहार कीधो; पान सोपारी निवेदीआं
 खाधां ठवणहारिहाथथकीपाडयो,पडिलेहवोविसा
 ख्यो ॥ जिनचुवनेचोरासी आसातना, गुरू गुरूणी
 प्रते तेत्रीश आसातना किधीहोय ॥ गुरुवचन त
 हत करीपडिवज्जुनहिं ॥ दर्शनाचार विपश्च अने
 रो जेकोइअतिचार पढ दिवस ॥

३ चारित्राचारनाआठअतिचारा॥पणिहाणजोगजु
 तोपंचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥एसचरित्तायारो
 अछविहोहोइनायवो ॥ इयांसमितितेअणजोए हिं
 मया,नापासमितिते सावद्य वचन बोड्या,एसणास
 मिति तृण मगल अन्नपाणी असुज्जुतुंजीधुं॥आदान
 नंममत्तनिखेवणासमिति असन, शयन, उपगरण
 मातरुं प्रमुख अणपुंजी नूमीकाएमुक्कयुं लीधुं ॥प
 रिष्ठापनिका समिति मल मूत्र श्लेषमादिक अणपुं
 जी जीवाकुलनूमीकाए परठव्युं ॥ मनो गुप्ति मन

मां आर्त्त रोद्ध्यान ध्याया ॥ वचनगुप्ति सावद्यव
चन बोद्ध्या ॥ कायगुप्ति शरीरअणपडिलेह्यं हला
व्युं, अणपुंजेवेता ॥ एअष्टप्रवचन माता सामाय
क पोसह लीधे रूडीपेरे पाढ्यांनही ॥ खंमणा वि
राधनाहुइ ॥ चारित्राचार विषइउ अनेरोजेकोइ
अतिचार पढ्दिवसमांहिं ॥ ३ ॥ ॥ ॥

विशेषतःश्रावकतणेंधर्मे श्रीसम्यक्त मूलबारग्रत॥
सम्यक्ततणा पांचअतिचारा॥संका कंख विगिह्ता ॥
शंका श्रीअरिहंततणा ॥ बल अतिशय ज्ञानल
क्ष्मी गांनिर्यादिकगुण शास्वतिप्रतिमा चारित्रया
नाचारित्र श्रीजिनवचनतणो संदेहकीधो ॥ आ
कंहा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्रपाल गोगो आस
पाल पादरदेवता गोत्रदेवता ग्रहपूजा विनायक
हनुमंत सुग्रीव वाली नाह इत्येवमादिक देश,नगर,
गाम गोत्र जूजूआ देवदेहेरानाप्रनावदेखी रोगी अ
त्यंतकष्टआवे इहलोकपरलोकार्थे पूज्या मान्या ॥
सिद्धविनायक जीराउलाने मान्युं, इठ्युं, बोध सां
ख्यादिक सन्यासी, जरडा, जगत, लिंगीया जोगी

(३१९)

दरवेश अनेरा दर्शनियातणो कष्ट मंत्र चमत्कार
देखी परमार्थ जाण्याविना जूलाव्या, मोह्या.
कुशास्त्रशिख्यां सांजव्यां ॥ श्राद्धसंवहरी, होलि, ब
लेव, माहिपुनिम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरत्रीज,
विनायक चोथ, नागपांचम, जिलणाठठ, शीलसातम
झोआठम, नोलिनोम, अहवादशम, व्रतइग्यारस, व
हबारस, धनतेरस, अनंतचउदशनेअमावास्या॥ आ
दित्यवार उत्तरायण नैवेद्यकीधां, नवोदक याग जोग
उतारणाकीधां, कराव्यां अनुमोद्यां पिपलेपाणीया
व्यां, घलाव्यां. घरबाहिर क्षेत्र, खले, कुवे, तलावे,
नदी समुद्र कुंभ पुन्यहेतु स्नानकीधां, कराव्यां. अनु
मोद्यां दानदीधां ॥ ग्रहण शनैश्चर माहामासे नव
रात्री नाहायां अजाणनाथाप्या, अनेरांही व्रतव्रतो
लां कीधां कराव्यां वितिगिह्वा धर्मसंबंधीआफलत
णोविषे संदेहकीधो. जिनअरिहंत धर्मना आगर,
विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गनादातार इत्यागुणज
णी नमान्या, नपूज्या. महासतिमाहात्मानां इहलो
क परलोकार्थे जोगवांठितपूजाकीधी. रोगअंतकक

ष्ट आवे, खीन्नवचन जोग मान्यां माहात्मानाजात
पाणी मल शोना तणी निंद्याकीधी, कुचारित्रिया
देखी चारित्रियाउपर कुजाव हुउ. मिथ्यात्वितणी
पूजा प्रनावनादेखी प्रसंसाकिधी प्रीतमांघी दाहि
णलगेतेहनोधर्ममान्यो ॥ श्रीसम्यक्तविषड अने
रोजे कोऽ अतिचार पढ्दिवसमांहि० ॥

१ पेहेले स्थुलप्राणातिपात विरमण व्रते पांच
अतिचार ॥ बहबंधठविद्ये ॥ छीपद चतुष्पद प्रते
रीसवसे, गाढोघाव घाव्यो, गाढेबंधनेबांध्यो, अधि
क चार घाव्यो. निर्जीवनकर्मकीधां, चारा पाणी त
णीवेलाये सारसंजालनकीधी, लेहेणे देणे कि
णहीप्रते लंघाव्यो, तेनीनूखे आपणजम्या. कन्हे
रहीमराव्यो, बंधीखाने घलाव्यो, सव्यांधानताव
डे नारव्यां, दलाव्यां, जरडाव्यां. सोधी नवावस्थां;
इंधण ठाणांअणसोथ्यां बाव्यां तेमांहे, साप, विंठि
खजूरा, सरवला, माकड, जुथ्या साहतां मुथ्या,
डुहव्या, रुडेस्थानके नमुक्या. किडीमकोडिना
इमांविठोह्यां, जीखफोडि, उदेहीकीडी, मकोडी, घी

मेल,कातरा,चुडेल,पतंगिया,देडकां,अलसीयां,इअ
 ल,कुंता,मांस,मसा,बगतरा,माखीअनेतीड प्रमुख
 जीवविणाठा मालाहलावतांचलावतां पंखीचकलां
 तथा कागतणां इमां फोडयां. अनेरा एकेंडियादि
 कजीव विणास्या,चांप्या डुहव्यां कांइ हलावतां च
 लावतां पाणी ठांटतां अनेराकांइ काम काजकरतां
 निहंसपणुंकीधुं. जीवरुहा रुडीनकीधी,संखारोसुक
 व्यो रुडुंगलणुंनकीधुं. अणगलपाणीवावसुं. रुडिज
 यणानकीधी,अणगलपाणीएजीब्या, लुगडांधोयां,
 खाटला तावडे नाख्या, जाटक्या,जीवाकुल चूमी
 लीपी वासीगारराखी॥दलणे,खांमणे,लीपणे रुडी
 जयणानकीधी आठम चउदसना नियम जांग्या.धु
 णीकरावी ॥पहेजेस्थुलप्राणातिपातविरमणव्रतवि
 षइउ अनेरोजेकोइअतिचारपद्धदिवसमांहे० ॥

१बीजेस्थुलमृषावाद विरमणव्रतेपांचअतिचार॥
 सहस्सारहस्सदारे॥सहसात्कारे कुणहि प्रतेंअधि
 कुंआलअन्याखानदीधुं,स्वदारामंत्रजेदकीधोअनेरा
 कुणहिनो मंत्र आलोच मर्म प्रकास्यो कुणहिने अ

नर्थ पाडवा कुडिबुद्धिदीधी, कुडो लेख लख्यो, कुडि
 शाखनरी, थापणमोसोकीधो, कन्या गौ नूमी संबंधी
 छेहेणेदेणे व्यवसाय वाद वढवाडकरतां वधारे जु
 तुंबोव्या, हाथ पग तणीगालदीधी, कडकडामोडया,
 मर्मवचन बोल्या ॥ बीजे स्थुल मृपावादविरमण
 व्रतविषड अनेरोजेकोड्यतिचार पद ॥

३ त्रीजेस्थुलअदत्तादान विरमणव्रते पांच अति
 चार ॥ तेनाहडपयोगे ॥ घर बाहिर खेत्र खळे प
 राडवस्तु अण मोकली लीधी, वावरी, चोरोड, वस्तु
 वोहरी, चोरधाडप्रते संकेतकीधो तेने संबल
 दीधुं, तेहनीवस्तुलीधी, विरुड राज्यातिक्रम की
 धो, नवा पुराणा सरस विरस सजीव निर्जीव व
 स्तुना नेलसंजेलकीधा, कुडेकाटले तोले, माने मा
 पे वोहखां, दाणचोरीकीधी, कुणहिने लेखे वरास्यो,
 साटेलांच लीधी, कुडोकरहोकाढयो, विस्वाशघात
 कीधो, परवंचनाकीधी, मात पिता पुत्र कलत्र वंची
 कोडने दीधुं, गांठकीधी, थापणउलवी कुणहिने
 लेखे पलेखेनोलव्युं, पडीवस्तु उलवी लीधी ॥ त्री

जे स्थूलश्चदत्तादान विरमणव्रत विपश्च अनेरो
जेकोऽतिचार पद् ० ॥

४ चोथेत्वदारासंतोष परस्त्रीगमनविरमणव्रतेंपां
चअतिचार ॥ अग्रिग्रहियाइतर ॥ अग्रिग्रहिता
गमन इत्तर परिग्रहिता गमन विधवा वेस्या पर
स्त्री कुलांगना स्वदाराशोकतणेंविपेइष्टि विपर्याशि
कीधो, सरागवचनबोल्यां, आठम चउदश अनेरा
एपर्वतिथें नियम जांग्या, घरघरणांकीधां कराव्या, व
र बहु वखाण्यां, कुविकल्पचितव्या. अनंगक्रीडा की
धी, स्त्रीनाअंगोपांगनिरख्यां, परायाविवाहजोड्या,
ढिंगलाढिंगली परणाव्या, कामनोगनेविषेतिव्रथ
जिलाषकीधो, कुस्वप्न लाधां, नटविटस्त्रिप्रत्येहासुंकि
धुं, चोथाव्रतविपश्च अनेरो जेकोऽतिचारपद् ० ॥

५ पांचमेस्थूलपरिग्रहपरिमाण विरमणव्रते पांच
अतिचार ॥ धणधन्नखित्तवहु ॥ धन, धान्य, खेत्र, वास्तु
रूपसुवर्ण, कुप, विपद चतुःपदनवविधपरिग्रहतणा
नियमउपरांत वृद्धिदेखी मूर्च्छालगे संक्षेपनकीधो. मा
तापिता पुत्रस्त्रीतणेंलेखेकीधो, परिग्रहपरिमाणजेइ

पठिउंनहिं पढुं, विसाखुं, अलीधुं, मेळुं, नियम
विसाखो ॥ पांचमे परिग्रह परिमाणव्रत विषइउ
अनेरोजेकोइ अतिचार पढू ॥

दठठेदिग्परिमाणव्रते पांचअतिचार॥ गमणस्स
यपरिमाणे ॥ उर्द्धदिशि अधोदिशि तिर्यग्दिशि
जावाआववातणानियमलइजांग्या, अनानोगवि
स्मृतजगें अधिक जूमीगया, पाठवणी आवी पाठी
मोकली, जूमीका एक गमा संक्षेपी बीजी गमा
वधारी ॥ ठठे दीगविरमणव्रत विषइउ अनेरोजे
कोइ अतिचार पढू ॥

७सातमे नोगोपनोगविरमणव्रते जोजन आश्री
पांचअतिचार ॥ अनेकर्महुंती, पंदर एवं, वीस अ
तिचार ॥ सच्चित्तेपडिबंछ ॥ सचित्त नियमलीधे अ
धिकसचित्तलीधुं ॥ अपकाहार दुपकाहार तुब्बोप
धितणुंनरुणकीधुं; उंजा, उंबी, पुंक, पापडी कीधां
सच्चित्तदवविगइवाहणह तंबोल वडकुसुमेसु वाहा
णसयण विखेवण बंनदिशिनाणनत्तसु ॥ ए चौद
नियम दिनप्रते लीधा नहीं, लेइनेजांग्या, बावीस

अजक बत्रीश अनंतकायमांहि आड, मुला, गा
 जर, पिंमपिंमानू, कचुरो, सूरण, कुलि, आंब
 लि, गजो तथा वाधरडां खाधां, वासीकठोज पो
 लि रोटली त्रणदिवसनुं दंहीलीधुं मधु; महुडां,
 मांखण, माटी, वेंगण पीळुं पीचुं पंपोटा, विप,
 हिम, करा, घोळवडां, अजाण्यांफल टिंबरु, गुंदां,
 बोर, अथाणुं, आमणबोर, काचुंमीतुं, तिज, ख
 सखस तथा कोठिबडांखाधां, रात्रिनोजन, कीधां,
 लगनग वेजाए वालुंकिधुं; दिवसविणचगे सीरा
 व्या. तथा कर्मतःपन्नरकर्मादान ॥ इंगालकम्मे
 वसुकम्मे साडिकम्मे जाडिकम्मे फोडिकम्मे दंत
 वाणीळ्ळ लखवाणीळ्ळ रसवाणीज्यळ्ळ केशवाणी
 ळ्ळ विस वाणीळ्ळ जंतपिलणकम्मे निलंछणकम्मे
 दवगि दावणया सरदहतलाव सोसणया ॥ अ
 सइ पोसणया एपांचकर्म, पांचवाणीज्य, पांच
 सामान्य एवंपन्नरकर्मादान बहुसावद्य महारंज
 रिंगणी लीहालाकराव्या. इंटनिबाहपचाव्यां, धा
 णी चणानां पकवानकरी वेच्यां, वासी माखण

तपाव्यां. तिल वोह्या, फागुणमास उपरांत रा
ख्या दलीदोकीधो, अंगीठा कराव्या, श्वान बीला
डा सुडा सालहिपोस्या. अनेरा जे कांइ बहुसाव
द्य खरकर्मादिक समाचख्या, वासीगारराखी. ली
पणे गुपणेमाहारंनकीधो, अणसोध्याचुला संधु
क्या. घी, तेल, गोल तथा ठास तणा जाजन उ
घामा मुक्या, तेमांहि माखी, कुंति, उंदर, के गि
रोली पडी, कीडीचडी, तेनीजयणानकीधी ॥ सा
तमे नोगोपनोग विरमणव्रतविषइउअनेरोजेकोइ
अतिचारपद्धदिवसमाहि० ॥

८ आठमेअनर्थदंन विरमणव्रतेपांचअतिचार ॥
कंदपेकुक्कइए॥कंदर्पलगे विट चेष्टा, हाश्य,खेलकुतू
हल कीधा; पुरुष स्त्रीना हावजाव,रूपशृंगार विषयर
सवरखाण्या.राजकथा,नक्तकथा,देशकथा तथा स्त्री
कथा कीधी. पराइवातकीधी तथा पैशून्यपणुकीधुं.
आर्त्तरौइध्यानध्याया;खामां कटार,कोश,कुहाडा,र
थ,उखल,मुशल,अग्नि,घरटी,निसाहतथा दातरडां
प्रमुखअधिकरण मेलीदाहिणलगेमाग्यांआप्यां,पा

पोपदेशदीधो, अष्टमी चतुर्दशीए खांमवा दलवा त
 णानियम जांग्या, मुखपणांलगे असंबंधवाक्यबो
 द्या, प्रमादाचरणसेव्या. अंधोले, नाहणे, दातणे प
 गधोअणे खेल पाणि तेजठाट्यां, जीजणेजीव्या,
 जूवटेरम्या, हिंचोलेहिंच्या, नाटिक प्रेक्षक जो
 यां कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, कर्कसवचन बो
 द्या आक्रोसकीधा, अबोजालिधा, करकडामो
 ड्या, मल्लरधस्यो संजेडालगाड्या सरापदिधा जेंसा
 सांम हड कुकडा स्वानादिकफुजताजोया खादिल
 गें अदेखाइ चिंतवी, माटी, मीतुं, कण, कपासीया
 काजविणचांप्या; तेउपरवेठा. आलिवनस्पतिखुं
 दी. सूइशस्त्रादिक निपजाव्यां घणीनिंझा कीर्धी, रा
 ग द्वेष लगे एकने रुद्धिपरिवारवांढीने एकने मृत्यु
 हानिवांढी ॥ ए आठमें अनर्थदंम विरमणव्रत वि
 षड् अनेरोजे कोइ अतिचार पद्धदिवस मांहि०
 ए नवमे सामायकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे
 डुपणिहाणे ॥ सामायकलीधे मनआहट्ट दोहट्टचिं
 तव्युं. सावद्य वचन बोद्या. शरीर अणपडिलेखुं,

हलायुं, ठतीवेलाए सामायक नलीधुं, सामायक
 लेइ उघाडे मुखे बोल्या, उंघआवी, वात विकथा
 घरतणी चिंता कीधी, बीज दीवातणी उळेहिहुइ,
 कण, कपासीया, माटी, मीतुं, खडी, धावडि अरणे
 टो पापाण प्रमुखचांप्या. पाणि, निज, फूल, सेवा
 ल, हरीकाय, बीयकाय इत्यादिक आनडयां, स्त्री
 तिर्यचना निरंतर परस्पर संघट्टहुआ. मुहपतियो
 संघटी सामायक अणपुग्युंपायुं, पालवुं विसा
 खुं, नवमे सामायक व्रतविषइउं अनेरोजे कोइ
 अतिचार ॥ पद्धदिवशमांहि० ॥

१० दशमेंदेशावगासिकव्रतें पांचअतिचार ॥ आ
 एवणेपेशवणे ॥ आणवणेपउंगे पेसवणेपउंगे
 सदाणुवाई रुवाणुवाई बहियापुगगलपस्केवे नि
 यमितनूमिकामांहि बाहेरथीकांइअणाव्युं ॥ आप
 ए कन्हे थकि बाहेरकांइमोकड्युं, अथवारूपदेखा
 डी कांकरोनांखी सादकरी आप पणुं ठतुं जणाव्युं.
 दशमेंदेशावगासिकव्रतविषइउं अनेरो जे कोइ अ
 तिचार पद्धदिवसमांहि० ॥

११ इग्यारमेंपोषधोपवासव्रतेंपांचअतिचार ॥ सं
 थारुचारुविहि ॥ अण्डिलेहिय डुण्डिलेहिय
 सिक्कासंथारण अण्डिलेहिय डुण्डिलेहिय उ
 च्चारपासवण नूमी पोसहलिधे संथारातणी नूमी
 नपुंजी, बाहिरला लहुडां वडां स्थंमिजदिवसेसो
 ध्यांनहीं, पडिलेहांनहीं, मातरुंअणपुंज्युंहलायुं,
 अणपुंजीनूमिकांयेपरवयुं, परवतां अणुजाणह
 जसगो न कह्यो, परव्यापुठेंवारत्रणवोसिरे वो
 सिरेन कह्यो, पोसहसालमांहिपेसतांनिसहि निसर
 तां आवसहि वारत्रणनणीनहीं, पुढवी अण्य ते
 उ वाउ वनस्पति त्रसकायतणा संघट परिताप
 उपडव दुआ संथारापोरसीतणोविधि नणवो
 विसाख्यो, पोरसीमांहेउंघ्या, अविधे संथायुं, पा
 रणादिकतणी चिंताकिधी, कालवेलाए देव न वां
 द्या, पडिकमणुंनकिधुं, पोसोअसुरोलीधो, सवेरो,
 पाव्यो पर्वतियेंपोसहलीधोनही ॥ इग्यारमेंपोषधो
 पवासव्रतविषइउ अनेरो जे कोइअतिचारपहु०॥

१२ बारमें अतिथिसंविजाग व्रतें पांच अति

चार॥सञ्चितेनिकवणे॥सचित वस्तु हेतें उपर ठतां
 माहात्मा माहासतिप्रतें असुज्जतुं दान दीधुं देवानी
 बुद्धे असुज्जतुं फेडी सुज्जतुं कीधुं, देवानी बुद्धे परायुं फे
 डि आपणुकिधुं अणदेवानी बुद्धे सुज्जतुं फेडि असुज्ज
 तुं किधुं, अणदेवानी बुद्धे आपणुं फेडि परायुं कीधुं वो
 होरवा वेला टलिरह्या, असुरेकरी माहात्मा तेड्या,
 मत्तरधरी दानदिधुं गुणवंत आवे नक्ति नसाचवी, ठ
 ति शक्तें स्वामी वात्सअनकिधो, अनेराधर्मक्षेत्र सि
 दाता ठति शक्ति एउधस्यां नहि, दीन क्षीणप्रतें अनुकं
 पादान नदिधुं ॥ बारमें अतिथिसंविजाग व्रतविषइ
 उ अनेरोजेकोइ अतिचार पद्धदिवसमाहि० ॥

संज्ञेपणातणापांचअतिचार॥इहलोएपरलोए॥
 इहलोगासंसपउगे परलोगासंसपउगे जीवियासं
 सपउगे, मरणासंसपउगे, कामनोगासंसपउगे, इह
 लोके धर्मेनाप्रजावजगे राजकुडि सुख सौजाग्य
 परिवारवांठयो, परलोके देव देवेंइ विद्याधर चक्रव
 र्त्तितणी पदवीवांठी, सुखआवे. जीवतव्यवांठयुं, दुख
 आवे मरणवांठयुं, कामनोगतणी वांठाकिधी ॥ सं

लेषणाव्रत विषइउ अनेरो जेकोइ अतिचार पद्ध
दिवस मांदि० ॥

तपाचारना बारजेद ठवाह्य ठअन्यंतर अणसण
मूणोइरिआ ॥ अणसणनणी उपवास विशेषपर्व
तिथें ठतिशक्ते किथोनहीं, उणोदरीव्रत कोलियापां
च सात उंणारह्यानहि व्रतिसंक्षेप ते इव्यनणी सर्व
वस्तुनोसंक्षेप किथो नहि, रसत्याग तथा विगयत्या
ग नकिथो, कायक्लेश लोचादिक कष्ट कष्टां नहीं, सं
जिनता अंगोपांग संकोची राख्यां नहिं, पञ्चस्काण
जांग्यां पाटलो मगतो फेडयो नहिं गंतसी साढपोर
सी पुरिमद्ध एकासणुं बेआसणुं नीवि आंबिल प्रमु
खपञ्चखाणपारवुं विसाखुं, बेसतांनोकारननण्यो,
उठतांपचखाण करवुंविसाखुं, गंतसहिउंजाग्युं.
नीवि आंबिलउपवासादिकतपकरी काचुंपाणीपीधुं
वमनहुउं बाऊतपविषइउ अनेरोजेकोइअतिचार०

अन्यंतरतप पायठितंविणउ ॥ मनसुद्धेगुरुकन्हे
आलोअण जीधी नहिं, गुरुदत्त प्रायश्चित्ततपलेखा
श्रुद्धेपहुचाड्यांनहिं, देवगुरु संघ साहमीप्रते विन

यसाचव्योनहिं, बालवृद्धग्लानतपसीप्रमुखनोवेया
वचनकिधो, वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा
धर्मकथालक्ष्ण पंचविधस्वाध्याय नकिधुं धर्मध्यान
सुक्लध्यान नध्यायां, आर्त्तध्यान तथा रौद्रध्यान
ध्यायां. कर्मकृत्यनिमित्ते लोभस्स दश वीशनो का
उसग्ग नकिधो ॥ अन्यंतर तप विषइउ अनेरोजे
कोइ अतिचार पद्धदिवसमांहि ॥

विर्याचारना त्रणअतिचार ॥ अणगुहिअबल
विरीउ ॥ पढवे, गुणवे, विनयवेयावच्च, देवपूजा
सामायक, पोसह, दान, शील तप जावनादिक ध
र्मकृतनेविपे मनवचनकायातणुं ठतुं बल वीर्य गो
पव्युं, रुडापंचांग स्वमासमणनदिधां, वांदणातणा
आवर्त्तविधिसाचव्यानहिं, अणोचित्तनिरादरपणे बे
ठा उतावलुं देववंदन पडिकमणुंकिधुं ॥ वीर्याचार
विषइउ अनेरोजेकोइअतिचार पद्ध ॥

नाणाइअअठ पइवय समसंलेहणपन्नरकम्मेसु ॥
बारस तवविरिअ तिगं चउवीसंसयअईयारा ॥ १ ॥
पडिसिद्धाणंकरणे, प्रतिपेइ अजह् अन्नंतकाय बहु

बीजनक्षणे महारंजपरिग्राहादिककीधुं, जीवाजी
 वादिक सुद्धविचार सरदह्यानहिं, आपणीकुमति
 लगे उत्सूत्रप्ररूपणाकिधी तथा प्राणातिपात, मृ
 षावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, मा
 या, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैश्रून्य र
 ति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्व
 सत्य एअठारपापस्थानक किधां, कराव्यां, अनुमो
 द्यांहोय दिनकृत प्रतिक्रमण विनयवेयावच्चनकी
 धो अनेरुं वीतरागनी आज्ञाविरुधकिधुं कराव्युं
 अनुमोद्युंहोय. एचिहुं प्रकारमांहे अनेरो जेकोइअ
 तिचार पद्धदिवसमांहि सुद्धवादर जाणतां अजा
 णतां हुउंहोय ते सविहुं मने वचने कायायेंकरी
 तस्स मिडामि डुक्कडं ॥

एवंकारे श्रावक तणे धर्मे श्रीसमकितमूल
 बार व्रत एक सो चोवीश अतिचारमांहि अनेरो
 जेकोइअतिचार पद्धदिवसमांहि सुद्धवादर जाण
 तां अजाणतां हुउंहोय तेसविहुं मने वचने काया
 येकरी तस्स मिडामि डुक्कडं ॥ ॥ इति श्रीश्रावक

पखिः चोमासी संवत्सरिअतिचार ॥ समाप्तं॥

॥ अथ सीमंधरजिननुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर परमात्मा, शिव सुखना दाता ॥ पु
पुष्कल वइ विजयें जयो,सर्व जीवना ताता ॥१॥
पूर्व विदेह पुंमरी गिणी, नयरीए सोहे ॥ श्रीश्रे
आंसराजा तिहां, नविअणनां मन मोहे ॥ २ ॥
चौद सुपन निर्मलजही, सतकी राणि मात ॥
कुण्डुं अरजिन अंतरे, सीमंधर जिन जात ॥ ३ ॥
अनुक्रमे प्रभु जनमिया, वलि यौवन आवे ॥
मातपिता हरपेकरी, रुकमणी परणावे ॥४॥ जो
गवी सुख संसारनां, संयम मन लावे ॥ मुनिसु
व्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रनूपावे ॥ ५ ॥ घाति
कर्म नो ह्य करी, पाम्या केवल नाण ॥ रूपन
लंठनतें शोनता, सर्व नावना जाण ॥ ६ ॥ चौरा
शी प्रभु गणधरा, मुनिवर एकसोकोडि ॥ त्रय्य
नूवन में जोयतां, नहिंको एहनि जोडि ॥७॥ द
श लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार ॥ ए
क समे त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥८॥ उ

दय पेढाल जिनांतरेए, याशे जिनवर सिद्ध ॥ जश
विजय गुरु प्रणमतां, गुन वंढित फललिद्ध ॥ ए ॥
॥ अथः श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिजुवन
हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो
आदिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर श्रृंग मंढ
ण प्रवरगुणगण नूधरं ॥ सुर असुर किन्नर को
डि सेवित, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ २ ॥ करति
नाटिक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं ॥
निर्जरावलि नमे अहनिस, नमो आदि जिनेश्व
रं ॥ ३ ॥ पुंढरीक गणपति सिद्धि साधि, कोडि
पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरीवर श्रृंग
सिद्धा, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ ४ ॥ निज साध्य
साधन सुर मुनिवर, कोडिनंतए गिरीवरं ॥ मुक्ति
रमणी वखा रंगे, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ ५ ॥
पाताल नर सुरलोक मांदि, विमल गिरीवर तो
परं ॥ नहिं अधिक तीर्थ तिर्थपति कहे, नमो
आदि जिनेश्वरं ॥ ६ ॥ एम विमल गिरीवर शिखर

(३४६)

मंदण, दुःख विहंगण ध्याइये ॥ निजसुखसत्ता सा
धनार्थे, परम ज्योति निपाइये ॥७॥ जितमोह को
ह विठोह निडा, परम पदस्थित जयकरं ॥ गिरी
राज सेवा करण तत्पर, पद्म विजय सुहितकरं ॥८॥

॥ अथ श्री पंचपरमेष्टि चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ बारगुण अरिहंतदेव, प्रणमियें जावें ॥ सिद्ध
आठगुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १ ॥
आचार्य गुण ठत्रीश, पचवीश उवजाय ॥ स
त्तावीश गुण साधुना, जपतां सुखथाय ॥ अष्टो
तर सय गुण मलिए, एम समरो नवकार ॥ धिर
विमल पंडित तणो, नय प्रणमे नितसार ॥ २ ॥
॥ अथ श्री वीशस्थानक नाम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ पहेले पद अरिहंतनमो, बीजे सरव सिद्ध ॥ त्रि
जे प्रवचन मनधरो, चोथे आचार्यसिद्ध ॥ १ ॥
नमो थेराणं पांचमे, पाठक गुण ठेठे ॥ नमो
लोए सब साहूणं, जे ठे गुण गरिठे ॥ २ ॥ न
मो नाणस्स आठमे, दरशन मन जावो ॥ विनय
करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो

(३४७)

बंजवय धारिणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तव
स्स चौदमे, गोयमनमो जिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र
ज्ञान सुअस्सनेंए, नमो तीढस्स जाणी ॥ जिन
उत्तम पद पद्मनें, नमतां होय सुख खाणी ॥ ५ ॥
॥ वीशस्थानक तपना काउसग्गनुं चैत्यवंदन जि० ॥

॥ चोवीश पन्नर पिस्तालीश, ठत्रीश नो करिये; ॥
दश पचवीश सत्तावीशनो, काउसग्ग मन धरिये.
॥ १ ॥ पंच सडसठि दश वल्ली, सितेर नव पण
वीश; ॥ बार अडवीश लोगसतणो, काउसग्ग धरो
गुणीश. ॥ २ ॥ वीश सत्तर एकावन्न, षादशने
पंच ॥ एणि पेरे काउसग्ग जो करे, तो जाये न
वसंच ॥ ३ ॥ अनुक्रमे काउसग्ग मनधरो, गु
णि लेजो वीश; ॥ वीश स्थानक एम जाणिए,
सद्धेपथी लेश. ॥ ४ ॥ नावधरि मनमां घणो,
जो एक पद आराधे; ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें.
नमि निज कार्य साधे ॥ ५ ॥ इति श्री वीशस्था
नक तपना काउसग्गनुं चैत्यवंदन संपूर्णे. ॥

(३४८)

॥ अथः बीजनं चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ इविध धर्म जेणे उपदेश्यो ॥ चोथा अग्नि
नंदन; ॥ बीजे जनम्या ते प्रज, नवडुःख निकंद
न ॥ १ ॥ इविध ध्यान तुम्हे परिहरो, आद
रो दोय ध्यान; ॥ एम परकाश्यं सुमति जिनें,
ते चवीया बीजदिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग
द्वेष, तेहने नवि तजीये; ॥ मुजपरें शीतल जिन
कहे, बीज दिन शिव नजीये. ॥ ३ ॥ जीवा
जीव पदार्थनुं. करो नाणसुजाण; ॥ बीज दिनें
वासुपुज्यपरें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्च
य नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहिण; ॥ अर
जिन बीज दिनें चवी, एम जिन आगल कहिए
॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण ॥
बीज दिनें केइ पामिया; प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥
एम अनंत चोवीशीए. दुआ बहुकल्याण; ॥ जिन
उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥
॥ अथः ज्ञान पंचमि चैत्य वंदन लिख्यते ॥ ८ ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीर जिन, जाखे नविजिन आ

(३४९)

गे. ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं लोकजन, नि सुणोम
न रागे ॥ १ ॥ आराहो नलि जातसें, पांचम
अजुवाली; ॥ ज्ञान आराधना कारणे. एहज तीथि
निहाली ॥ २ ॥ ज्ञानविना पशु सारिखा, जा
णो एणे संसार; ॥ ज्ञान आराधनथी लहे, शि
वपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रीया
कही, कास कुसुम उपमान; ॥ लोकालोक प्र
काश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी श्वा
सो श्वासमां, करे कर्मनो तेह; ॥ पुर्व कोडि व
रसां लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराध
क कहि क्रीया, सर्व आराधक ज्ञान; ज्ञान तणो
महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥ पं
चमास लवू पंचमी, जावजीव उत्कष्टी; ॥ पंच वर
स पंच मासनी, पंचमि करो गुन वृष्टी ॥ ७ ॥
एकावनही पंचनोए, काउसग लोगस केरो ॥
उजमणुं करो जावगुं, टाजे नव फेरो ॥ ८ ॥ ए
णी परें पंचमि आराहिए, आणी जाव अपार; ॥
वरदत्त गुण मंजरी परें, रंग विजय लहो सार ॥ ९ ॥

(३५०)

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ माहाशुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो ॥
तेम फागण शुदि आठमे, संनव चवी आयो ॥ १ ॥
चैत्रवदिनी आठमे, जनम्या रूपन जिणंद ॥ दि
क्षा पण ए दिन लहि, दुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माघव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कक्षां दूर ॥
अजिनंदन चोथा प्रनू, पाम्यासुख जरपूर ॥ ३ ॥
एहिज आठम उज्जि, जनम्या सुमति जिणंद ॥
आठ जाति कज्जों करी, न्हवरावे सुरइंद ॥ ४ ॥
जनम्या जेठ वदि आठमे, मुनि सूत्रत स्वामि ॥
नेमि असाठ शुदि आठमे, अष्टमगति पामि ॥ ५ ॥
श्रावणवदिनी आठमे, नमि जनम्या जगनाण ॥
तेम श्रावणशुदि आठमे, पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥
जाइवा वदि आठम दिने, चविया स्वामि सुपास
॥ जिनउत्तमपद पद्मने, सेवार्थी शिववास ॥ ७ ॥

॥ अथ एकादशिनं चैत्य वंदन लिख्यते ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो;
संघचतुरविधस्थापवा, महसेनवनआयो ॥ १ ॥

(३५१)

माघव सीत एकादशी, सोमलक्ष्मीज यज्ञ ॥ ६६
नूति आदे मय्या, एकादश विज्ञ ॥ १ ॥ एका
दशर्षे चउगुणा, तेहनोपरिवार ॥ वेद अरथ अ
वलो करे, मन अनिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवा
दिक संसे हरीए, एकादश गणधार ; ॥ वीरेस्थ्या
प्या वंदिए, जिन सासन जयकार. ॥ ४ ॥ मल्ली
जन्म अरमलीपास, वर चरण विलाशी; ॥ कृष
न अजित सुमति नमी, मल्लि धनधाति विनाशी
॥ ५ ॥ पद्म प्रनू शिववास पास, नव नवना तो
डि; ॥ एकादशीदिन आपणी, रिख सवली जोडि
॥ ६ ॥ दशक्षेत्रे त्रिहुंकालनां, त्रणर्षे कल्याण; ॥
वरस इग्यार एकादशी, आराधो वरनाण ॥ ७ ॥
अगियार अंग लखाविये. एकादश पाठां; ॥ पुंज
णिष्ठवणि विंटीणी; मसी कागल काठां ॥ ८ ॥ अ
गियार अव्रतठांनवाए. वहो पडिमा अग्यार; ॥ खि
मा विजयजिन सासनं, कखो सफल अवतार. ॥
॥ अथः तिर्थेकर राशिनूं चैत्यवंदन लिख्यते ॥
॥ शांति नमि मल्ली मेषणे, कुशुं अजित वृष

(३५१)

जाति; ॥ संजव अजिनंदन मिथुन, धर्म करक
सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पञ्च प्रनूनेमवीर, पा
स सुपास तुलाए ॥ सशी वृश्चक धन रूपनदेव,
सुविधि शीतल जिनराय ॥ ३ मकर सुव्रतश्रेयां
सने, बारमां घट मीन लील; ॥ विमल अनंतअ
र नामथी, सुखिया श्रीगुजवीर ॥ ३ ॥

॥ अथ ॥ रोहणी तपनुं चैत्यवंदन तिरव्यते ॥
॥ रोहणी तप आराधिये, श्री श्रीवासुपूज्य; ॥
डुःख दोहग डुरेंटले, पुज्यक होए पूज्य ॥ १ ॥
पहेला कीजें वास द्वेप, प्रहउठीनें प्रेम; ॥ मथ्या
न्हें करी धोतियां, मन वचकाय खेम; ॥ २ ॥ अ
ष्ट प्रकारनी रचीए, पूजा नृत्य वाजित्र; ॥ नावें
नावना नावियें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रीहुं
कालें लेइ धूपदीप, प्रन् आगल कीजे; ॥ जिनवर
केरी नक्तिसुं, अविचल सुखलीजे ॥ ४ ॥ जिनव
र पूजा जिनस्तवन, जिननोकिजें जाप; ॥ जिन
वर पदने ध्याइए, जेमनावे संताप ॥ ५ ॥ को
ड कोड गुण फल दिये, उत्तरोत्तर नेद; ॥ मा

(३५३)

न कहे ए विधकरो, होय तो नवनो ठेद ॥ ६ ॥

॥ अथ बीज तिथीनी स्तुती लिख्यते ॥

॥ दिन शकल मनोहर, बीज दिवश सु विशेष ॥
रायराणा प्रणमे, चंडतणी ज्यां रेख ॥ तिहां चं
५ विमानें, शास्वत जिनवरजेह ॥ हुंबीज तणे
दिन ॥ प्रणमुं आणिनेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चं
दन, शीतल शीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमति
जिन, वासुपुज्यशिव साथ ॥ इत्यादिक जिनव
र; जन्म ज्ञान निरवाण ॥ हुंबीज तणे दिन,
प्रणमुं तेसुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजे, ड
विध धर्म नगवंत ॥ जेम विमला कमला, विभ
ल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनोपम, जि
हां निश्चे व्यवहार ॥ बीजे सवि कीजे, पातकनो
परिहार ॥ ३ ॥ गज गामिनी कामिनी, कमल सु
कोमल चीर ॥ चक्केशरी केशरी. सरस सुगंध श
रीर ॥ करजोडी बीजे, हुं प्रणमु तस पाय; ॥
एम लब्धि विजय कहे, पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥
॥ अथ श्रीसंखेश्वर पार्श्वजिनो ठंद लिख्यते ॥

॥ सेवो पास संखेश्वरो मन सुदे ॥ नमो नाथ
 निश्चे करि एक बुदे ॥ देवि देवतां अन्यने शुं
 नमोठो, अहो नव्य लोको नूलाकां नमोठो ॥ १ ॥
 त्रिलोकना नाथने शुं तजोठो, पड्या पासमां नू
 तनें कां नजोठो ॥ सुर धेनु ठंमि, अजा शुं
 अजोठो, महा पंथ मूकी कुपंथे ब्रजोठो ॥ २ ॥
 तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण रा
 सन ते हस्ति साटे ॥ शुर द्रूम उपाडि कोण
 आक वावे, महामुंड ते आकुलां अंत पावे ॥ ३ ॥
 किहां काकरो ने किहां मेरू श्रृंगं, किहां केसरीने
 किहां ते कुरंगं ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य
 देवा, करो एक चित्ते प्रनूपास सेवा ॥ ४ ॥ पुजो
 देव प्रजावती प्राणनाथं, सहू जीवने जे करेढे
 सनाथं ॥ महा तत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, ते
 नां दूख दारिद्र्य दूरे पलावे ॥ ५ ॥ मनूजन्म पा
 मि वृथाकां गमोढे, कुशीलें करी देहने कां दमो
 ठो ॥ नहिं मुक्ति वासं विनावीतरागं, नजो नगवं
 तं तजो दृष्टि रागं ॥ ६ ॥ उदेरत्ननाखे सदा दे

(३५५)

त आणी, दया नाव कीजे प्रनूदास जाणी ॥
आज माहरे मोतिडे मेह वृष्ठा, प्रचुपास संखे
श्वरो आप तूष्ठा ॥ ७ ॥

अथः पंचमिनीस्तुति लिख्यते.

॥ श्रावण शुद्धिदिन पंचमिए, जनम्या नेम जि
णंदतो ॥ श्यामवरण तन शोजतुंए, मुखसारद
कोचंदतो ॥ सहस वरस प्रभु आयुषेए, ब्रह्मचारि
नगवंततो ॥ अष्ट करम हेले हणिए, पोहोता मुक्ति
महंततो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजिनए, पहोता
मुक्तिमोक्षारतो ॥ वासुपुज्य चंपापुरीए, नेम मुक्ति
गिरनारतो ॥ पावा पुरी नगरीमां वलिए, श्री वीरत
णुं निर्वाणतो ॥ समेत शिखर वीशसिद्ध दुआए,
शिवहुं तेहनी आणतो ॥ २ ॥ नेमनाथ झानि
हुवाए, नाखे सारवचनतो ॥ जीवदया गुण वेल
डीए, कीजे तास जतनतो ॥ मृषा नबोलो मान
विए, चोरीचित्त निवारतो ॥ अनंत तिर्यंकर एम
कहेए, परहरिए परनारतो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे ज
हू नजोए, देविश्री अंबीका नामतो ॥ सासन सा

(३५६)

निथ्य जे करेए, करे वलि धर्मनां कामतो; ॥ तप
गढ नायक गुण निलोए, श्री विजयसेन्य सूरिरा
यतो ॥ रिखब दास पाय सेवतांए, सफल करो अ
वतारतो ॥ ४ ॥ इति श्री पंचमिस्तुति संपूर्ण. ॥

॥ अथः अष्टमिनी स्तुति लिख्यते ॥

॥ मंगल आव करी जश आगल, जावधरि सुर
राजजी ॥ आव जातना कलश करीने, न्हवरावे
जिनराजजी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म मोहोत्सव, क
रतां शिव सुख साधेजी ॥ आवमनुं तप करतां
अमघेरे, मंगल कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अष्ट कर
म वयरी गज गंजन, अष्टा पदपरे बलीयाजी ॥
आवमें आवसुरूप विचारी, मद आवे तस गली
याजी ॥ अष्टमी गतिपरे पहोता जिनवर, फरस
आव नहिं अंगजी ॥ आवमनुं तप करतां अमघ
र, नित्यनित्य वाधे रंगजी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आ
व बिराजे, समवसरण जिनराजेजी ॥ आवमें आ
वसो आगम जांखी, नवि मन संसय जांजेजी ॥
आवे जे प्रवचननी माता, पाळे निरती चारोजी ॥

आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीवदया चित्त धारो
 जी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारे पूजा करीने, मानव न
 वफलजीजेजी ॥ सिद्धाद् देवी जिनवर सेवी, अष्ट
 महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां जीजे,
 निर्मल केवल ज्ञानजी ॥ धीर विमल कवि सेव
 क नयकहे, तपथी कोड कव्याणजी ॥ ४ ॥ इति

अथः ॥ एकादशीनी स्तुति लिख्यते. ॥

॥ एकादशी अतिरुअडी, गोविंद पूढे नेम ॥ कोण
 कारण ए परवमोटुं, कहो मुजशुं तेम ॥ जिनवर
 कव्याणक अतिवणां, एकसोने पंचाश ॥ तेणे का
 रण ए परवमोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अ
 गिअार श्रावकतणि प्रतीमा, कहेते जिनवर देवा ॥
 एकादशी एम अधिकसेवो, वन गजाजिमरेव ॥
 चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जेशा सुरतरु चं
 ग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहबुं, करो जिन सुरंग
 ॥ २ ॥ अगीअार अंग लखाविए, अगीयार पाठां
 सार ॥ अगिअार कवली विंटणां, ठवणी पुंजणी
 सार ॥ चाबखी चंगी विविधरंगी, शास्त्र तणे अ

नुसार ॥ एकादशि एम उजवो. ज्यम पामिये न
वपार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी,
कमल सुकोमल काय ॥ जुज मंम चंम अखंम जे
हने, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मनव
शी, गणि हर्ष पंमित शीस ॥ सासन देवी विघन
निवारो, संघ तणां निस दिश. ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ अथः श्री सिद्ध जगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोजारेशी कहुं, (ए आंकणी) सिद्ध
जगत शिर शोजता, रमता आतम राम ॥ लक्ष्मि
लिलानी लेहेरमां, सुखियाळे शिव ठाम ॥ सिद्ध०
॥ १ ॥ माहानंद अमृत पद नमो, सिद्धि केवळ
नाम ॥ अपुनर्नव ब्रह्म पद वली, अक्षय सुख
विश्राम ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥ संश्रेय निश्रेय अक्षरा,
दुख समस्तनी हाण ॥ निर्वृत्ती अपवर्गता, मो
क्ष मुक्तिनिरवाण ॥ सिद्ध० ॥ ३ ॥ अचल महो
दय पद लक्षुं, जोतां जगतना ठाठ ॥ निज निज
रूपेरे जूजूआं, वीत्यां कर्म ते आठ ॥ सिद्ध० ॥ ४ ॥
अगुरु लघु अवगाहना, नामे विकशे वदन्न ॥ श्री

(३५९)

शुजवीरने वंदतां, रहिए सुखमां मगन्ना ॥ सिद्ध ० ॥ ५ ॥

॥ अथः बीज तिथी तपनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ फत मल पाणीडांने जाय ॥ ए देशी. ॥

॥ प्रणमी सारद माय, शासन वीर गुंह करुंजी ॥ बी
ज तिथी गुण गेह, आदरो नवियण सुंदरुजी ॥ १ ॥

एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणोजी ॥
माहा शुदि बीजे जाण, जन्म अन्ननंदन तणो

जी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमतिच
व्या सुरलोकथीजी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस

पद सेवे सुरथोकथीजी ॥ ३ ॥ समेत शिखर शु
न ठाण, दशमा शीतल जिन गणुंजी ॥ चैत्र व

दिनी हो बीज, वखा मुक्ति तस सुख घणुंजी
॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मा

सनी जी ॥ अरनाथ तस घवन, कर्म क्ये तव
पासनीजी ॥ ५ ॥ उत्तम माघज मास, शुदि बीजे

वासु पुज्यनोजी ॥ एहिजदिन केवल नाण, स
रण करो जिन राजनोजी ॥ ६ ॥ करणी रूप

करो खेत, समकित रूप रोपो तिहांजी ॥ खातर

किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां
 जी ॥ ७ ॥ उपशम तदरूपनीर, समकित ठोड
 प्रगट होवेजी ॥ संतोष करि अहो वाड, पञ्चखाण
 व्रत चोकि सोहेजी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, स
 मकित वृद्ध फळ्युं तिहांजी, ॥ मांजर अनुभव
 रूप, उतरे चारित्र फल जिहांजी ॥ ९ ॥ शांति
 सुधारश वारी, पान करी सुख लिजीएंजी ॥ तंबो
 ल सम द्यो स्वाद, जीवने संतोष रश किजीएंजी
 ॥ १० ॥ बीज करो बावीशमास, उत्कृष्टी बावी
 श मासनीजी; ॥ चोविहार उपवास, पालिये शी
 ल वसुधासनीजी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोयवार,
 पडिलेहण दोय लिजीएंजी ॥ देववंदन त्रण का
 ल, मन वच कायाए किजीएंजी ॥ १२ ॥ उ
 जमणु शुनचित्त, करी धरीये संयोगथीजी ॥
 जिन वाणी रश एम, पिजीए श्रुत उपयोगथीजी
 ॥ १३ ॥ एणि विध करिये हो बीज, रागने ढेष
 डुरे करीजी ॥ केवल पद लहितास, वरे मुक्ति उल
 ट धरीजी ॥ १४ ॥ जिन पूजा गुरुनक्ति, विनय

(३६१)

करी सेवो सदाजी ॥ पद्म विजयनो शिष्य, चक्ति
पामे सुख संपदाजी ॥ १५ ॥ इति० ॥ ॥

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमी तप तमे करोरे प्राणी, जेम पामो निर्मल
ज्ञानरे, ॥ पेहेजुं ज्ञानने पठि क्रिया, नहिं कोइ ज्ञान
समानरे. पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान व
खाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकाररे ॥ मति श्रुत अ
वधि ने मन पर्यव, केवल एक उदाररे. ॥ पं
चमी० ॥ २ ॥ मति अछावीश श्रुत चउदेवीश,
अवधिठे असंख्य प्रकाररे ॥ दोय जेदे मन पर्य
व दाख्यो, केवल एक उदाररे. ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥
चंड सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपा
ररे ॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकालोक प्र
काशरे. ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने,
म्हारी पूरो उमेदरे, ॥ समय सुंदर कहेहुं पण
पामुं, ज्ञाननो पांचमो जेदरे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते. ॥

॥ हारे मारे ठाम धरमना, साडा पचवीश देश

(३६१)

जो ॥ दीपेरे त्यां देश मगध सद्गुमां सिरेंरे लो. ॥
हारे मारे नगरी तेहमां, राजग्रही सुविशेष जो ॥
राजेरे त्यां श्रेणिक, गाजे गजपरेंरे लो ॥ १ ॥
हारे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथजो ;
विचरंता तिहां आवि वीर समोसखारेंलो ॥
हां ॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथजो;
सुधारे तप संयम शियले अलंकखारें लो ॥ १॥
हां ॥ फुल्या रस जर फुल्या अंब कदंबजो ; जा
णुरे गुणशिलवन हसि रोमंचीउरेंलो ॥ हां ॥ वा
यावाय सुवाय तिहां अविजंब जो ॥ वासेरे प
रिमल चिहुं पासे संचिउरें लो. ॥ ३ ॥ हां ॥
देव चतुरविध आवे, कोडा कोड जो; त्रिगडुंरे
मणि हेम रजतनुं ते रचेरेंलो. ॥ हां ॥ चोस
छसुरपति सेवेहोडाहोडजो ॥ आगेरे रस लागे
इंझाणि नचेरेंलो ॥ ४ ॥ हां ॥ मणिमय हेम
सिंहासन बेठा आपजो; ॥ ढालेरे सुर चामर म
णि रत्ने जडखारेंलो ॥ हां ॥ सुणतां डुंदजी ना
द टले सवि तापजो. ॥ वरसेरे सुर फूल सरस

(३६३)

जानुं अडयारे लो. ॥ ५ ॥ हां० ॥ ताजे तेजे गा
जे घन ज्यम लूंबजो, राजेरे जिनराज समाजे
धर्मनेरे लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जन
मन लूंबजो ॥ पोषेरे रस नपडे घोषें नर्ममारे
लो; ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणि जिननो श्रे
णिक रायजो ; ॥ आव्योरे परिवच्यो ह्यगय रय
पायगेरे लो. ॥ हां० ॥ दइ प्रदक्षिणा वंदिबेजो
ठाय जो ॥ सुणवारे जिन वाणी मोटे जायगेरे
लो. ॥ ७ ॥ हां० ॥ त्रिचुवन नायक लायक तव जग
वंत जो ॥ आणीरे जिन करूणा धर्म कथा कहेरे
लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जंतजो,
सुणवारे जिनवाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालिम वहेलारे आवजो एदेशी ॥
वीरजिनवर एम उपदेशे, सांजजो चतुर सूजाण
रे ॥ मोहनि निंदमां कां पडो, उलखो धर्मनां
ठाणरे ॥ विरति ए सुमतिधरी आदरो ॥ १ ॥
परिहरो विषय कषायरे, बापडा पंच परमादथी;
कांपडो कुगतिमां धायरे ॥ वि० ॥ २ ॥ करी श

को धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेशरे ॥ स
 र्वकालेंकरी नविशको ॥ तोकरो पर्व सु विगेषरे
 ॥ वि० ॥ ३ ॥ जू जूआ पर्व पटनां कल्यां, फल
 घणां आगमे जोयरे ॥ वचन अनुसारें आराध
 तां, सर्वथा सिद्धी फल होयरे ॥ वि० ॥ ४ ॥
 जीवने आयु परजव तणुं, तिथिदिनें बंध हो
 य प्रायरे ॥ तेह नणि एहआराधतां, प्राणिउं
 सदगति जायरे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमि फल ति
 हां, पूढे गौतम स्वामरे ॥ नविक जीव जाणवा
 कारणे, कहे वीरप्रभु तामरे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अ
 ष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृ
 द्धिरे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ
 गुण सिद्धिरे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लाज होय आठ प
 डिहारनो, आठ पवयण फल होयरे ॥ नास
 अठ करमनो मूलथी, अष्टमिनुं फल जोयरे ॥
 वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दिक्का तणो, अ
 जितनो जन्म कल्याणरे ॥ चवन संजव तणो
 एह तिथे, अजिनंदन निर्वाणरे ॥ वि० ॥ ९ ॥

(૩૬૫)

સુમતિ સુવ્રત નમિ જનમીયા, નેમનો મુક્તિ
દિન જાણે ॥ પાસ જિન એહ તિથે સિદ્ધજ્ઞા,
સાતમા જિન ચવન માણે ॥ વિ૦ ॥ ૧૦ ॥ એ
હ તિથિ સાધતો રાજિઉં, દંન વીરજ લહ્યો મુ
ક્તિરે ॥ કર્મહણવા નણિ અષ્ટમી, કહે સૂત્ર નિર્ધુ
ક્તિરે ॥ વિ૦ ॥ ૧૧ ॥ અતિત અનાગત કાલના,
જિન તણાં કેડ કલ્યાણે ॥ એહ તિથે વલી ઘ
ણાં સંઘમી, પામજો પદ નિર્વાણે ॥ વિ૦ ॥ ૧૨ ॥
ધર્મ વાસિત પશૂ પંચિઆ, એહ તિથે કરે ઉપવા
સરે ॥ વ્રતધારિ જીવ પોશોકરે, જેહને ધર્મ
અન્યાસરે ॥ વિ૦ ॥ ૧૩ ॥ નાપિયો વીરે આઠ
મ તણો, નવિકહિત એહ અધિકારે; ॥ જિન મુ
ખે ઉચ્ચરે પ્રાણિયા, પામજો નવ તણો પારે ॥ વિ૦
॥ ૧૪ ॥ એહથી સંપદા સવિ લહે, ટલે કષ્ટ ના
કોડરે ॥ સેવજો શિષ્ય બુદ્ધ પ્રેમનો, કહે કાંતિ
કરજોડરે ॥ વિ૦ ॥ ૧૫ ॥

॥ કલ્પશ ॥ એમ ત્રિજગ નાસણ અચલ સાસ
ન, વર્ધમાન જિનેશ્વરૂ ॥ બુદ્ધ પ્રેમ ગુરુ સુ પસા

(૩૬૬)

ય પામિ, સંથૂણ્યો અલવેસરૂ ॥ જિન ગુણ પ્રસંગે
નણો રંગે, સ્તવન એ આત્મ તણાં ॥ જે નવિક
નાવે સુણે ગાવે, કાંન્તિ સુખ પાવે ઘણાં ॥ ૧ ॥

॥ અથ: એકાદશીનું સ્તવન લિખ્યતે: ॥

॥ જગપતિ નાયક નેમિ જિણંદ, દારિકા નગ
રી સમોસઘ્યાં; ॥ જગપતિ વંદવા કૃષ્ણ નરિંદ, યા
દવ કોડ સું પરિવઘ્યાં ॥ ૧ ॥ જગપતિ દિગુણ
ફૂલ અમૂલ, નક્તિ ગુણે માલા રચિ; ॥ જગપતિ
પૂજી પૂઠે કૃષ્ણ; ॥ દ્વાયિક સમકિત શિવ રૂચી
॥ ૨ ॥ જગપતિ ચારિત્ર ધર્મ અશક્ત, રક્ત આરં
ન પરિગ્રહે ॥ જગપતિ મુજ આત્મ ઉદ્ધાર ॥
કારણ તુમ વિણ કોણ કહે ॥ ૩ ॥ જગપતિ ત
મ સરીઘો મુજનાથ, માથે ગાજે ગુણનિલો ॥ જ
ગપતિ કોય ઉપાય બતાવ, જેમ કસ્યે શીવ વધુ
કંતલો ॥ ૪ ॥ જગપતિ ઝજલ માગશિર માસ,
આરાધો એકાદશી ॥ નરપતિ એકસોને પંચાશ,
કલ્યાણક તિથી ઝલ્લશી ॥ ૫ ॥ નરપતિ દશ દ્વેત્રે
ત્રણકાલ, ચોવીશી ત્રીશે મલી ॥ નરપતિ નેવું

(३६७)

जिननां कल्याण, विवरि कहुं आगल वली ॥६॥
नरपति अर दिहा नमिनाण, मल्लि जन्म व्रत के
वली ॥ नरपति वर्तमान चोवीशि, मांहे कल्याण
कह्यां वली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणो उपवा
स, दोढशो जप मालागणो ॥ नरपति मन वच
कायपवित्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥ ८ ॥ न
रपति दाहिण धातकीखंम, पश्चिम दिशिइहूका
रथी ॥ नरपति विजय पाटणअनिधान, साचो
नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥ नरपति नारी चंडाव
ति तास, चंडमुखि गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठि
शुर विख्यात, शीयल सलिला कामिनी ॥ १० ॥
नरपति पुत्रादिक परिवार, सार लुषणचिवर धरी ॥
नरपति जाए नितु जिनगेह, नमन स्तवन पूजा
करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामा
यक पोषध वरे ॥ नरपति देव वंदन आव श्यक,
काल वेलाए अनुसरे ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत सा
धु तणारी; ॥ विनये वीनवे शेठ, सुनिवर करा

करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुजदिन एक, थोडो पु
 न्य कीयोरी ॥ वाधे जिम वड बीज, गुन अनुवं
 धी थयोरी ॥ २ ॥ मुनि नापे माहा नाग्य, पाव
 न पर्व घणारी ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सु
 ण सुमनारी ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास
 अग्यार लगेरी; ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी त
 पसु वगेरी ॥ ४ ॥ सांजलि सदगुरु वेण, आनं
 द अति उलझयोरी, तपसेवी उजविय, आरण स्व
 र्म वझयोरी. ॥ ५ ॥ एकवीश सागर आय, पाली
 पुन्य वसेरी ॥ सांजल केशवराय, आगल जेहथ
 सेरी ॥ ६ ॥ सोरी पुरमां शेव, समृद्धदत्त वडोरी ॥
 प्रीति मति प्रीया तास, पुन्ये जोग जडयोरी ॥ ७ ॥
 तस कुंखे अवतार, सुचित गुन स्वपनेरी ॥ जन
 म्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह सुकनेरी ॥ ८ ॥ ना
 लनिखेप निधान, जुमीथि प्रगट हवोरी, ॥ गर्जदो
 हद अनुजाव, सुव्रत नाम ठव्योरी ॥ ९ ॥ बुद्धि
 उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक नण्योरी. ॥ यौवन
 वय अगीआर, रूपवती परण्योरी ॥ १० ॥ जिन पू

(३६९)

जन मुनिदान, सुव्रत पचखाण धरेरी ॥ अगीअर
कंचन कोड, नायक पुन्य नरेरी ॥ ११ ॥ धर्म घो
ष अणगार, तिथी अधिकार कहेरी ॥ सांनजि
सुव्रतशेठ, जाति स्मरण लहेरी ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय
मुनि शाख, नके तप उचरेरी ॥ एका दशी दिन
आठ, पोहोरो पोशो धरेरी ॥ १३ ॥

॥ दाल त्रीजी ॥ पत्ति संयुक्ते पोसह लीधो, सुव्र
त शेठे अन्यदाजी ॥ अवसर जाणि तस्कर आ
व्या, घरमां धन लूटे तदाजी ॥ १ ॥ सासन न
के देवी शक्ते, अंजाणाते बापडाजी ॥ कोला
हल सुणि कोटवाल आव्यो, नूप आगलधख्यारं
कडाजी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावं
त लेइ नेटणाजी ॥ रायने प्रणमि चोर मुकावी,
शेठे कीधां पारणांजी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वा
नल लागो, सोरीपुरमां आकरोजी ॥ शेठजी पो
सह समरश बेठा, लोक कहे हठ कां करोजी ॥ ४ ॥
पुण्ये हाट वखारो शेठनी, उगरी सौ प्रसंसा करेजी ॥
हरखे शेठजी तप उजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे

जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो चार जलावी, संवेगी सि
 र सेहरोजी ॥ चउनाणी विजय शेखर सूरी, पासे
 तपव्रत आदरेजी ॥ ६ ॥ एक खट मासी चार
 चोमासी, दोसय ठठ सो अछम करेंजी ॥ बीजां
 तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशि व्रत धरे
 जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्या दृष्टी, देवता सु
 व्रत साधुनेजी ॥ पुर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगे
 वधारे व्याधिनेजी. ॥ ८ ॥ कर्म नडीउ पापे ज
 डीउ, सुरकहे जाउ उषध नणीजी ॥ साधु न
 जाए रोस नराये, पाटु प्रहारे हण्यो मुनिजी ॥ ९ ॥
 मुनि मन वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे
 कर्मनेजी ॥ केवल पामी जिन पद रामि, सुव्रत
 नेम कहे श्यामनेजी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयं पे नेमनेए, धनधन
 यादव वंश, जिहां प्रभु अवतल्याए ॥ मुज मनम।
 नसहंस, जयोजिन नेमनेए ॥ १ ॥ धन
 शिवादेवी मायडीए, समुझ विजय धन्यतात,
 सुजात जगतगुरुए, रत्न त्रि अवदात ॥ जयो०

॥ ३॥ चरण विराधी उपनोए,हुंनवमुं वासु देव ॥
 तिणो मन नवि उलश्येए, चरण धरमनी सेव ॥
 जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गव्योए, जाणुं
 उपादेय हेय, तोपण हुं नकरी शकुंए, डुष्ट क
 र्मेनो जेया॥जयो० ॥४॥ पण सरणो बलियातणो
 ए, किजे सीजेकाज, एहवां वचन ने सांनलिए ॥
 बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे
 एकादशिए, समकित युत्त आराध, थइश जिनव
 र बारमोए, नावि चोवीशि लाध ॥ जयो० ॥६ ॥

॥कलश॥इय नेमिजिनवर नित पुरंदर,रैवताचल
 मंमणो॥बाण नव मुनि चंद वरसे,राज नगरे संशु
 एयो ॥ संवेगरंग तरंग जल निधि,सत्य विजय गुरु
 अनुसरी॥कपूर विजय कविह्निमाविजयगणि, जि
 नविजय जय सिरीवरी ॥ १ ॥ इतिश्री० ॥

॥ अथः श्रीवीरप्रभुनुंदीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोहनोरे, केवल ज्ञान निधान॥
 नाव दया सागर प्रनुरे,परउपगारी प्रधानोरे॥१॥
 ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारोरे,

(३७१)

हवेइण नरतमां ॥ कोण करओ उपगारोरे ॥ वी
र० ॥ १ ॥ नाथ विहूणी सैण ज्युंरे, वीर विहूणारे
जीव ॥ साधे कोण आधारथीरे, परमानंद अ
नंगोरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणो बाज ज्युंरे,
अरहो परहो अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडारे,
आकुल व्याकुल थायरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संसय
वेदक वीरनोरे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दी
वे सुख उपजेरे, ते विण केम रहेवायोरे ॥ वी०
॥ ५ ॥ निरजामिक नव समुझनोरे, नवअडवि
सबवाह ॥ ते परमेश्वर विण मजेरे, केम वा
धे उच्चाहोरे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां प
ण श्रुत तणोरे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां
श्रुत आधारवेरे ॥ अहो जिनमुझा सारोरे ॥
वीर० ॥ ७ ॥ त्रण काजें सवि जीवनेरे, आगम
थी आणंद ॥ सेवो ध्यावो नवि जनारे, जिन प
डिमा सुखकंदोरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आ
चार्य मुनिरे, सहूने एणीपरे सिद्धि ॥ नव नव
आगम संगथीरे, देवचंइ पद लीधरे ॥ वीर० ॥ ९ ॥

॥ अथ सार बोलनी सजाय लिख्यते ॥

॥ सरसति सामिनी पयप्रणमेव, सहगुरुनाम
सदा समरेव ॥ बोलिश एणि परें आचार, जो
६ छेजो जाण विचार ॥ १ ॥ पंढित तेजे नासैं
गर्व, झानी तेजे जाणे सर्व ॥ तपस्वि ते जे ना
णे क्रोध, कर्म आव जीते ते जोध ॥ २ ॥ उ
त्तम तेजे बोले न्याय, धर्म तेजे मन निरमाय ॥
ठाकुर तेजे पाळे वाच, सह गुरू तेजे जापे सा
च ॥ ३ ॥ गिरूत तेजे गुण आगलो, स्त्री परिहार
करे ते नलो ॥ मेलो तेजे निंद्या करे, पापी ते
हिंसा आचरे ॥ ४ ॥ मूर्ति तेजे जिनवर तणी, कि
र्ति तेजे बीजे सुणी ॥ लब्धि तेगौतम गणधार, बुद्धि
अधिक अनय कूमार ॥ ५ ॥ श्रावक तेजे छे नवतत्व,
कायर तेजे मूके सत्व ॥ मंत्र खरो ते श्रीनवकार, देव
खरो मुक्ति दातार ॥ ६ ॥ पदवी ते तीर्थकर त
णी, मति तेजे उपजे आपणी ॥ समकीत तेजे
साचुं गमे, मिथ्या मतिते नूलो नमे ॥ ७ ॥ मो
टो जे जाणे परपीड, धनवंतो जे नांगे जीड ॥

મનવશ આણે તે બલવંત, આલસથી અલગો પુન્ય
 વંત ॥ ૭ ॥ કામી નરતે કહિયે અંધ, મોહ જા
 લતે મોટો બંધ ॥ દારીદ્રી જે ધર્મે હીન, ડુર્ગતિ
 માંહે રુલે તે દીન ॥ ૮ ॥ આગમ તે જ્યાં બોલી
 દયા, મુનિવર તેજે પાલે ક્રિયા ॥ સંતોષી તે સુ
 સ્વિયા થયા, ડુસ્વિયા તેજે લોજે ગ્રહ્યા ॥ ૯ ॥
 નારી તેજે હોએ સતી, દર્શન તે ડઘો મુહપતી ॥
 રાગ દેષ ટાલે તે યતી, સુધૂં જાણે તે જિનમ
 તી ॥ ૧૦ ॥ કાયા તેજે શીઝે પવિત્ર, માયાર
 હિત હોએ તેમિત્ર ॥ વૃદ્ધ પણું પાલે તે પૂત્ર, ધ
 મ્મ હાણ પાડે તે શત્રુ ॥ ૧૧ ॥ વેરાગીતે વિરમે
 રાગ, તારૂ તે નવ તરે અથાગ ॥ રૌરવ નરક ત
 ણો એ માગ, ઠાગહણીને માગે ત્યાગ ॥ ૧૨ ॥
 દેહ માહિં તે સારી જીહ, ધર્મ થાય તે લેખે દીહ ॥
 રશ માંહી ઉપશમ રશ લીહ, શુભી નહ મુનિવર
 માં સિંહ ॥ ૧૩ ॥ સાચું તેજે જિનનું નામ, જિ
 નનું દેરું જ્યાં તે ગામ ॥ ન્યાયવંત કહિયે તે રામ,
 યોગી તેજે જીતે કામ ॥ ૧૪ ॥ એહ બોલ બોલ્યા

(३७५)

मे खरा, सार नथी एथी उपरा ॥ कहेपंमित ल
क्ष्मी कल्लोल, धर्म रंग मन धरजो चोल ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री मंधरजिननुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ वंडुं जिनवर विहरमान, श्रीसीमंधर स्वामी॥
केवल कमला कांतदांत, करूणा रश धामी॥१॥
कंचन गिरीसम देहकांत, वृष लांठन पाय ॥ चौ
राशी लक्ष् पूर्व आय, सेवित सुर राय ॥२॥ ठठ
नत्त संजमलियोए, पुंमुरिकिणी नाण ॥ प्रभु द्यो
दरशन संपदाए. कारण परम कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमीए मनरंग ॥ नी
लवरण अश्वसेननंद, निरमल निस्संग ॥ १ ॥
कामित दायक कल्पशाप, वामासुत सार ॥ श्री
गवडीपुर स्वामनाम, जपीए निरधार ॥ २ ॥ त्रि
नूवन पति त्रेवीशमोए, जेनी अखंमित आण ॥
एक मनेथी आराधतां, लहिये कोड कल्याण॥३॥
अथः॥सामायक बत्रीश दोषनी सवाय लिख्यते.॥

॥चोपाइ ॥ सुज गुरु चरणें नामी शीश, सामा

यकना दोष बत्रीश ॥ कहिहुं त्यां मनना दश
 दोष, दुष्मन देखी धरतो रोश ॥ १ ॥ सामाय
 क अविवेके करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन
 उद्देग ईहे यश घणो. नकरे विनय वडेरा तणो ॥
 ॥ २ ॥ नय आणे चिंते व्यापार, फल संसय नी
 आणो सार ॥ हवे वचनना दोष निवार, कुवचन
 बोल करे ठुंकार ॥ ३ ॥ लइ कुंची जा घर उघा
 ड, मुखे लवी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बो
 ले गाल, मोह करी दुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करेवि
 कथाने हशे अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥
 काया केरां दूषण बार, चपलाशन जोवे दिशि
 चार ॥ ५ ॥ सावध काम करे संघाथ, आलश
 मोडे उंचेहाथ ॥ पगलांवे बेसे अवनीत, उठिंग
 एव्ये थांजो जींत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज ख
 णाय, पगउपर चढावे पाय ॥ अति उघाडुं
 मेलुं अंग, ठांके तेमवली अंग उपंग ॥ ७ ॥ निंझा
 ये रस फलनवि गमे, करहा कंटक तरूएं जमे ॥
 ए बत्रीशो दोष नीवार, सामायक करजो नरनार

॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर
हुवो केवली ॥ श्रीसुनवीर वचन पालती, स्वर्गे
गइ सुरसा रेवती ॥ ९ ॥ इति सजाय संपूर्णः ॥
॥अथः मुहपतिनांपचाशबोलनी सजाय निख्यते॥

॥ ढाल ॥ सिरि जंबूरे विनयनक्ति शिरनामिने
॥ करजोडीरे पूढे सोहमस्वामिने ॥ जगवंतारे क
हो शिवकांता केममले ॥ कहे सोहमरे मिथ्या
त्रम दूरेंटले ॥ त्रुटक ॥ डुरेंटले विषगरज ईहा,
उनय मार्ग अनुसरी ॥ एक ज्ञान दूजी करत क्रि
या, अचेदारोपण करी ॥ ज्यम पंगु दर्शित च
र्ण कर्षित, अंध बिहुं निज पुरगया ॥ त्यम सत्व
सजता तत्वजजता, नविक कइ सुखिया यया. ॥१॥

॥ ढाल ॥ वैकलज्युंरे कष्ट ते करवुं सोहिलुं॥
पण जंबूरे जाण पणुं जगदोहिलुं ॥ तेणे जाणी
रें आवश्यक किरिया करो, ॥ उपगरणेरे रज हरणो
मुहपतिधरो ॥ त्रुटक ॥ मुहपति स्वेतें मानोपे
ते, सोल निज अंगुल नरी ॥ दोयहाथ जाली
दृग निहाली, इष्टि पडि लेहण करी ॥ त्यां सूत्र

(३७८)

अर्थ सुतत्व करीने, सदहुं एम जाविये ॥ नचा
वच्चा रूप तिगतिग, पखोडा पट लाविये ॥ १ ॥
॥ ढाल ॥ समकित मोहनरी मीश्र मिथ्यात्वने
परिहरुं, काम रागरे स्नेह इष्टिराग संहरुं ॥ एसा
तेरे बोल कह्या हवे आगलें, अंगुली वचेरे त्रण
वधू टक कर तले ॥ तूटक ॥ करतले वामें अंजलीध
रि, अखोडा नव कीजिए ॥ प्रमार्जन नव त्यम
ज करियें, तिग तिगंतर लीजिए ॥ सु देव सु
गुरु सुधर्म आदरुं, प्रति पक्षि परिहरुं ॥ वलि
ज्ञान दर्शन चरण आदरुं, विराधक त्रिक अपह
रुं ॥ ३ ॥ ॥ ढाल ॥ ॥ मनो गुप्तीरे वचन
काय गुप्ती जजुं, मनो दंमरे वचन काय दंम त
जुं ॥ पचवीशेरे बोल ए मुहपतिना लह्या, हवे
अंगनारे परिहरुं एम सघला कह्या ॥ ॥ तूटक ॥
कह्या वधू टक करि परस्पर, वाम हाथे त्रिक क
रो, ॥ हाश्य रतीने अरती ठंमी, इतर कर त्रिक
अनुसरो ॥ नय शोक दुर्गह्वा तजीने, पयाहिणो
आचरो ॥ रुस लेश्या नील कापोत, निजाडे

(३७९)

त्रिक परिहरो ॥ ४ ॥ ढाल ॥ रश गारवरेरूद्धि
शाता गारवा, मुख हैडेरे त्रण त्रण एम धारवा ॥
माया सत्तरे नियाण मिथ्या टालिये, वाम खं
धेरे क्रोध मान दोय गालिये ॥ त्रुटक ॥ गाली
ये माया लोन दक्खण, खंध उर्द्ध अधोमली ॥
त्रिक वाम पादे पुढविने अप, वली तेउनी रक्खा
करी॥ जमणे पगें त्रण वाउ वणसई, त्रश कायनी
रक्खाकरुं॥ पंचाश बोले पडी जेहण, करत ज्ञानी
नव हरू ॥ ५ ॥ ढाल ॥ ॥ एह मांहेथीरें चा
लीश बोलते नारीने, शिस हृदयनारें खंध बोल
दशवारीने ॥ इणविधशुंरें पडिलेहणथी शिव ल
ह्यो, अविधि करीरे ठकायनो विराधक कह्यो॥ त्रु
टक ॥ कह्यो किंचित्त आवश्यकथी, तथा प्रवच
न सारथी ॥ जावना चेतन पावना कही, गुरुव
चन अनुसारथी ॥ शिव लहे जंबूरहे जो, शुन
वीर विजयनी वाणिए, मन मांकडुं वनवास रमतुं,
वशकरी घर आणिए॥ ६ ॥ इति सत्ताय संपूर्ण ॥

॥ अथः काय उपर सजाय ॥

॥ कायारे वाडी कारमी ॥ सिचंतारे सूके ॥ उं
ठ कोड रोमावली, फल फूल न सूके ॥ का०
॥ १ ॥ ॥ काया माया कारमी, जोवंता जा
से ॥ मारग लेजो मोहनो, जीवडो सुख पासे
॥ का० ॥ २ ॥ अरिहंत आंबो मोरीयो, सामा
यक थाणे ॥ मंत्र नवकार संजारजो, समकित
सुख ठाणे ॥ का० ॥ ३ ॥ वाडि करो विरतां त
णी, सवि लोन निवारो ॥ शील संयम दोनुं ए
कठा, नज्जी परें पालो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच पुरु
ष देशावरी, बेठा एणी माली ॥ फल चुटीने चो
रीआं, नकरी रखवाली ॥ का० ॥ ५ ॥ इण वा
डि एक सूवटो, सुख पिंजर बेठो ॥ बहुत जतन
करी राखीउं, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥ ६ ॥
कांनोज पणे नव हारियो, मतमोडी संजाली ॥ रत्न
चिंतामणी सारीखी, कांड गांठां नवाली ॥ का० ॥
॥ ७ ॥ रत्न तिलक सेवक नणे, सुणजो वनमाली, वा
डनजी परें पालजो. करजो ढंगवाली ॥ का० ॥ ८ ॥

(३०१)

॥ अथः ॥ श्री अगीअर गणधर नी सऊ
य ॥ अजीत जिणंदसुं प्रीतडी ॥ एदेशी ॥

॥ वीरपटोधर वंदीए, गणधार हो गुरु गौतम
स्वामि ॥ रिद्धि वृद्धि सुख संपदा, नवे निधी होप्रग
टे जश नाम ॥ वी० ॥ १ ॥ अग्नि नूति वायु नूतिसुं,
पनर सत्तहो लहे संजमजार ॥ व्यक्त सुधर्मा स
हससुं, तरियाहो श्रुतदरीया संसार ॥ वी० ॥ २ ॥
मंमीत मौरीय पुत्रजी, साडात्रण हो सत्त संय
म लीध ॥ अकंपिततिसत्तसुं, अचल चाता हो
त्रण सत्त प्रसिद्ध ॥ वी० ॥ ३ ॥ मेतारज प्रजा
सना, सुद्ध साधुजी हो त्रण त्रण सत्त ॥ चउद
सहस मुनि वंदिये, साहुणीहो ठत्रीश सहस महं
त ॥ वी० ॥ ४ ॥ वीर विमल कहेविधिसुद्धगुं, विसु
द्ध वंदोहो एवा अणगार ॥ तरण तारण तरी स
मा, समरथ हो सासन सणगार ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ अथः ॥ श्री सोल सतियोनी सऊाय ॥

॥ सोलसतीनां लीजे नाम, जेथी मन वंढीत गुन
काम ॥ नक्ति नाव अति आणी घणो, नावधरीने

(३०१)

नवियण सुणो ॥ १ ॥ ब्राह्मी चंदन बाला नाम,
राजिमति झौपदी अजिराम ॥ कौशल्याने मृगा
वती, सुजसा सिता ए महासती ॥ २ ॥ सतीसु
जडा सोहामणी, पोल उघाडी चंपातणी ॥ शिवा
नाम जपो जगवती, जगीश आपे कुंती सती ॥ ३ ॥
शीलवती शीले शोचती, जजोनावे ए निर्मल मती ॥
दमयंतीनें चूलासती, प्रजावतीने पद्मावती ॥ ४ ॥
सोलसतीनां नाम उदार, जणतां गणतां सिव
सुखकार ॥ शाकिनी माकिनी व्यंतर जेह, सति
नामे न पराजवे तेह ॥ ५ ॥ आधि व्याधि सवि
जाये रोग, मन गमता सवि पामे जोग ॥ संक
ट विकट जाए सवि दूर, तिमिर समूह ज्यमउगे
सूर ॥ राज रिद्धि घरें होए बहु, रायराणा ते
माने सहु; वाचक धर्म विजय गुरुराय, रत्न विज
य जावें गुणगाय ॥ ७ ॥ इति श्री० ॥

॥ अथः श्री आत्मसीख सजाय लिख्यते ॥

॥ प्यारी ते पीउने एम प्रीठवे, पेखी नजिक प्रया
एरें ॥ पंथीयडा, वटाउड्यारे ॥ आजनो वासोरे तुंतो

५६॥ ॥ वस्यो. कालनां क्यां होसे मेलाणरे ॥ पंथी
 यडा ॥ वटाउडारे ॥ आ० ॥ १ ॥ च्यारदिशें रे फ
 रे चोरटा. ॥ जीवन सुतो जागरे, पंथीयडा ॥ चर
 णो चारित्र धर्मरायने, जागिशके तो जागरे ॥ पं
 थीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ २ ॥ रांघण आदे माहा
 रोगजे, लागाळे ताहरी लाररे ॥ पंथीयडा ॥ ते
 आवेळे तेडुं तेडां उपरे, बहुकालनुं ताहरे बाररे
 ॥ पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ३ ॥ परदेशी
 आणां पाठां नहिंफरे, सासरवासो सळारे ॥ पंथी
 यडा ॥ सायचलंतो जगवंतने, नजी शकेतो नळ
 रे पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ माथेनगरांवा
 जे मरणनां, हाथते आवडो साथरे, पंथीयडा ॥ स्वा
 से कुटंब खुंखाराकरी. बाकी ते ताहरी आथरे ॥ पं
 थीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ मदनो ठक्योरे न
 लहे तुं मने, मग मग दैवनी मांगरे ॥ पंथीयडा ॥
 जोतुं वारेतोजाणुं खरो, खोया नवना खांगरे ॥ पं
 थीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ सुखतुं माणेळे धर
 णी सेजमां, धणते धुतारीळे धीठरे ॥ पंथीयडा ॥

गरथ खाइने गणिकानी परें, आखरहोसे अदिठ
 रे ॥ पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ७ ॥ ममता वा
 ह्योरे तुं आइशमां, तुं परसुं मांमेठे प्रीतरे ॥ पंथीय
 डा ॥ आप स्वरूपनवि ओलखे, अनेकचलावे अनीत
 रे ॥ पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ८ ॥ नूत नूत मांहि
 जाशे नली, दाट्यो रहेगे दामरे ॥ पंथीयडा ॥ बा
 ह्य कुटंब मढ्युंठे बहू, पण कोइ नआवे कामरे ॥
 पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ९ ॥ चेतन निज पीउं
 ने चेतना, बाला बुजवे एमरे ॥ पंथीयडा ॥ अचे
 तन साथें एहवी आशकी, कहोने कीजें केमरे
 ॥ पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ १० ॥ उदय वदेरे अरि
 हंतना, आसक होसे अतीवरे ॥ पंथीयडा ॥ पड
 से नहीं जे मोहना पासमां, मुक्ते जाशेते जीवरे
 ॥ पंथीयडा ॥ वटा० ॥ आ० ॥ ११ ॥ इति आत्म
 शिखसजाय संपूर्ण ॥

(३८५)

॥ अथः पोसानां चोवीश मंमल लिख्यते. ॥
“ वडिनीत्य ” लघुनित्यादीपरछवण, योग्य जग्या
प्रतीक्षेणनिमित्तेपोसहमां मंमल करवां ते कहेते.

॥ प्रथम संथारापासेनी जग्या ए ॥

- १ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.
- २ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.
- ३ आघाडे मळे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
- ४ आघाडे मळे पासवणे अणहियासे.
- ५ आघाडे डुरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
- ६ आघाडे डुरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयना बारणांना मांहेनी तरफनां.॥

- १ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे
- २ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे.
- ३ आघाडे मळे उच्चारे पासवणे अहियासे.
- ४ आघाडे मळे पासवणे अहियासे.
- ५ आघाडे डुरे उच्चारे पासवणे अहियासे.
- ६ आघाडे डुरे पासवणे अहियासे.

॥ हवे उपाश्रयनांवारणाबाहिर नजिक रहीनेकरे ॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे.

२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.

३ अणाघाडे मळे उच्चारे पासवणे अणहियासे.

४ अणाघाडे मळे पासवणे अणहियासे.

५ अणाघाडे डुरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.

६ अणाघाडे डुरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयथी सो हाथ आशरे डुरेरहेते करवां ॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे.

२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे.

३ अणाघाडे मये उच्चारे पासवणे अहियासे.

४ अणाघाडे मये पासवणे अहियासे.

५ अणाघाडे डुरे उच्चारे पासवणे अहियासे,

६ अणाघाडे डुरे पासवणे अहियासे.

॥ इति श्री मंमल बोल चोवीश समाप्त ॥

॥ अथ नमुक्कार सहि आदि पञ्चस्काण प्रारंभ ॥

॥ अर्हीआं गुरुवचन पञ्चस्काइ, अने कर्त्तानुं

वचन पञ्चस्कामि, तथागुरुवचन वोसिरे अने कर्त्ता
नुं वचन वोसिरामि, जाणवुं.

॥ प्रथम नमुक्कारसहिनुं पञ्चस्काण ॥

॥ उग्गए सूरें नमुक्कारसहिअं पञ्चस्काइ चउ
विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न
हणा नोगेणं सहसागारेणं वोसिरे.

अर्थ—उग्गएसूरेके० सूर्यना उदयश्चकी मांमीने
बे घडी प्रमाण एटले रात्रीनोजननो दोष निवार
वाने अर्थे बे घडी पढी नमुक्कारसहिअंके० नवकार
सहित एटले नवकार कहीने पारुं एवीरीते पञ्च
स्कामिके० पञ्चस्काण करुंनुं, एटले नियम लउंनुं.
अहींअं नवकार कहीने पञ्चस्काण पारवुंने, मा
टे नोकारसी कहीए. अहीं गुरु पञ्चस्काइ कहे
तेवारे शिष्य पञ्चस्कामिकहे एम सर्वपञ्चस्काणो
नेविपे जाणी लेवुं.

हवे शानुं पञ्चस्काण करे ते कहेने; चउविहं
पिआहारं के० चारप्रकारनो आहारनकरवो तेनुं
पञ्चस्काण करे तेनां नाम कहेने, प्रथम असणं

के० शालि, जुवार, तुवर, क्षीर, मोदक, रोटली
 अने सूरणादिक कंद प्रमुख ए सर्वने अशन क
 हिए. बीजो पाणं के० चोखा, यव, काकडी प्र
 मुखनुं धोवण अने सर्वजातनुं जल. वलीसाकर
 वाणी, झाकवाणी प्रमुख ए सर्वने पाणी कहिए,
 त्रीजो खाइमं के० शेकेलुं धान, गोल, पापड, ख
 जूर, झाक, सुखडी, खारेक तथा कोपरां प्रमुख
 ने खादिम कहिए. चोथो साइमंके० सुंठ, हरडे,
 पीपलीमूल, मरी, सोपारी, लविंग, एलची अने
 चीनीकबाब प्रमुखने स्वादिम कहिए. ए चारे प्र
 कारना आहारनो नियम लउंनुं. हवे ए नियम
 जंग यवाना जयने लीधे अहींअं नोकारसीना प
 च्चस्काएने विषे वे आगार मोकला मूकेछे, ते कहेछे.

एक अन्नब्रह्मणा जोगेणंके० अनानोगे एटले
 अत्यंत विशर्जन यइ गयाथीअना उपयोगे कोइ
 वस्तु मुखमां प्रक्षेपवाथी पच्चस्काए जंग नथाय.
 पण वचमां जेवारे सांजरीआवे तेवारे तरत शुकी
 नाखे, एम करतां पच्चस्काए जंग नथाय.

(३८९)

बीजो सहसागारेणके० गाय, जेश प्रमुख
दोहोतां तथा घृतादिक मथतां अथवा घृतादिक
नुं तोल करतां, तथा मेह वृष्टिकांए ठांटो उडी
मुखमां पडे तो पञ्चस्काण जंग नथाय. ए पञ्च
स्काणमां बे घडी सुधी चउविहार होए माटे बे
घडी वीत्या पढी नवकार गणेतो पोहोचे, पण
बे घडी वीत्यानी अगाउ नोकार गणेतो नपोहो
चे. जो पेहेली बे घडीमां अने पाठली बे घडी
पढी जमे तो रात्रीनोजननो दोष लागे. एरीते उ
क्त बे प्रकारना आगारे करि वोसिरामिके० बे घ
डी सुधी चारे आहारने वोसिरावुं. एटले अपञ्चा
स्काणी आत्माने ठांमुं, अहींआं वोसिरे एगुरु
नुं वचनठे, अने वोसिरामि ए शिष्यनुं वचनठे.

॥ नमुक्कारसहिअं मुठसहिनुं पञ्चस्काण. ॥

॥ उग्गाएसूरे नमुक्कारसहिअं मुठसहिअं पञ्च
स्काइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा
इमं अन्नठणानोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारे
णं सव्वसमाहिवत्ति आगारेणं वोसिरे.

(३९०)

अर्थ-एना अर्थमां मुठसहिअं के० मुठ स हित, एटले ज्यांसुधी मुठ होय त्यांजगे पञ्चस्काण अने नोकारगणी मुठ मोकली मुकुं तेवारे पञ्चस्का ए मोकलुं आय. बीजो अर्थ सर्व ए पञ्चस्काणो मांज प्रसंगे आवज्ञो त्यांथी जाएवो.

॥ पोरिसिं साढपोरिसिंनुं पञ्चस्काण ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहिअं पोरिसिं साढपोरि सिं मुठ सहिअं पञ्चस्काइ उग्गएसूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नढुणानोणे णं सहसागारेणं पञ्चन्नकालेणं दिसामोहेणं साढु वयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे. ए पञ्चस्काणमां मुठसहित लीधी तेथी एक आगार वध्योढे. इति ॥

अर्थ-पोरिसिं के० प्रहर दिवस सुधी अने साढपोरिसिं के० दोढ प्रहरसुधी पञ्चस्कामि के० नियम लउंनुं. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी ठाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेने पोर सी कहिए. अथवा पुरुष जमणा काने सूर्यनुं

(३९१)

बिंब राखीने, दक्षुणायनना प्रथम दिवजें ठींचण
नी ठाया जे वखते बे पगलां होय, ते वखते
पोरिसी थाय. जेमाटे श्री उत्तराध्ययनमां कळुं
ठे के ॥ आसाढेमासे डुपाया, पोसेमासे चऊपाया
चित्तासोएसुमासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥ १ ॥
हानी वृद्धि ते ए प्रमाणे जाणवी. अंगुल सत्तरत्ते
ए, परकेणं तुडुअंगुलं, वद्धएहाय एवावि, मासे
एचउरंगुलं ॥ २ ॥ एटले पोरिसी एक प्रहरनी
थइ. अने मुठसहिअंनो अर्थ पूर्वे लख्योठे.

असणं पाणं खाइमंसाइमंके० अशन, पान, खा
दिम अने स्वादिमनोनियम. हवे आगार कहेठे, ए
क अन्नब्रणानोगेणंके० अनाजोगे अजाणते विसा
रवा थकी, बीजो सहसागारेणं के० सहसात्कारे.

त्रीजो पञ्चन्नकालेणं के० प्रञ्चन्नकालते सूर्य
वादले अथवा रज प्रमुखे करी ढंकाइ जाय तेणे
करी वखतनी घराबर खबर नपडे. एवां अजाण
पणांए करी अधूरी पोरिसीयें पञ्चखाण पालवा
मां आवे. तो तेथी जंग नहीं, अने कदापि एरीते

अधूरी पोरिसीए जमवा बेगो ठतां एटलामां तावडो जोयो अने जाणुंजे हजी सवारढे, पोरिसीनो व खत पूर्ण थयो नथी, तेवारे जे मुखमां कोलीउं हो य ते राखमां परवनीने बेसी रहे, अने पोरसी पूर्ण थया पढी जमवा बेसे तो पञ्चस्काण नांगे नहीं

चोथो दिसामोहेणं के० दिशिने मूढपणे एट ले अजाणते पूर्वने पश्चिम करी जाणे, एम अ जाणतां वेहेलुं पलायतो पञ्चस्काण जंगनहीं, अने थोडुं जम्या पढी कोइना कहाथी जाणवामां आवे तो, मुखमानो कोलीउं थुकी नाखे. एरीते दिग्मोह टव्या पढी, अर्ध जम्यो बेसी रहे तो जंग नहीं.

पांचमो साधु वयणेणं के० साधुना वचने पोरिसी जणी, सांचली ने पाछे तो पञ्चस्काण जंग नहीं, पढी ज्यारे जाणवामां आवे के साधुतो ठ घडीनी पोरिसी जणेढे तेवारे तेमज बेसीरहे तो पञ्चस्काण नांगे नहीं. ए बे आगार च्रमतानाढे.

ठछो सबसमाहिवत्ति आगारेणं के० सर्व प्रका रे शरीरमां असमाधि रहे. एटले पञ्चस्काण कखा

(૩૯૩)

પઠી, તીવ્ર શુભાદિક રોગ ઉપન્યે થકે અથવા સ
ર્પાદિકે મંસ્યોહોય, એમ અકસ્માત્ મરણાંત અસ
માધિ ઉત્પન્ન થાય, તેવારે ઔષધાદિકને કારણે
પાલતાં પચ્ચસ્કાણ જંગ નથાય. અને સમાધિ થયા
પઠી તેમજ પાઠલો વિધિ કરે. ઇહાં પણ ગુરુ કહે
વોસિરે, અને શિષ્ય જે પચ્ચસ્કાણનો કરનારતે
વોસિરામિ કહે.

એ પચ્ચસ્કાણમાં મુઠ્ઠસહિઅં સાથે લીધી. તેથી
મહત્તરાગારેણ એ આગાર વધ્યોઢે, તેનો અર્થ આમ
ઢે કે, મહત્તરકે મ્હોટે કાર્યે એટલે જેટલો પચ્ચસ્કા
ણમાં નિર્જ્જરાનો લાજ થાયઢે; તે કરતાં પણ અત્યં
ત મ્હોટો નિર્જ્જરાનો લાજ જે કાર્યમાં થતો હોએ,
અર્થાત્ કોઈ ગ્લાન, પ્રાસાદ, સંઘ અથવા દેવના
વૈયાવચ્ચને, અર્થે કોઈ બીજા પુરુષથી તે કાર્ય ન
થઈ શકતું હોય ત્યારે ગુરુ તથા સંઘના આદેશથી
મુઠ્ઠ સહીનો વચ્ચત પૂર્ણ થયા વિના જો પાલવામાં
આવે તો પચ્ચસ્કાણ જંગ નથાય. અને તે કાર્ય
પૂર્ણ થયા પઠી પાઠલોજ વિધિ સમજવો.

॥ अथ ॥ पुरिमठ अवढनुं पञ्चस्काण ॥

॥ सूरेउग्गए नमुक्कारसहिअं पुरिमठं अवढं सु
 ऋसहिअं पञ्चस्काइ सूरेउग्गए चउव्विहंपि आहारं
 असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नबणानोगेणं सह
 सागारेणं पठन्नकाजेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं
 महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे.

अर्थ—सूरेउग्गए के० सूर्यना उदयथी मांमीने
 पुरिमार्दके० पहेजा बे प्रहरसुधी पुरिमठ कहिए,
 अने जो अवढनुं पञ्चस्काण लेवुं होए तो उपर
 सूत्रमां अवढनुं नाम कहिए. अयह एटले त्रीजा
 प्रहर सुधी अशनादिक चार आहार पञ्चखुंबुं, ए
 ना आगारोनो अर्थ प्रथम लखाइ गयोठे.

॥ अथ ॥ विगइनिविगइनुं पञ्चस्काण ॥

॥ विगइउं निविगइअ पञ्चस्काइ अन्नबणा नोगेणं
 सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहबुसंसणेणं उस्किन्न
 विवेगेणं पडुच्च मस्किएणं पारिठावणियागारेणं म
 हत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे.

अर्थ॥ नोजन करतां जे थकी कामादिक उन्मा

(३९५)

दरूप विकार थाय तेने विगइ कहिए, ते विगइ ठ प्रकारनीछे. एक डध, बीजुं दहीं, त्रीजुं घृत, चोशुं तेल, पांचमो गोल, अने ठहुं पकवान ए ठ प्रकारनी विगइमांथी एकपण विगइनुं जे पञ्चस्काण करवुं तेने विगइउ पञ्चस्काण कहिए. अने समस्त विगइनुं जे पञ्चस्काण करवुं तेने निविगइअ पञ्चास्कामि के० नीवी पञ्चस्कुबुं एटले नीवीनुं पञ्चस्काण कहिए.

आवकने नीवीमांहे नीविआता लीधा कल्पे नहीं, जो लागट तप मांमयो होए तो तेमांहे त्रण दिवस पढी नीवियाता लीधा कल्पे.

अने साधुने तो एक नीवीमांहे नीवीयाता लीधा कल्पेछे अने विगिइआता तथा निवियाता नो नियम लीए तो, तेवारे आंयंबिल पञ्चस्के ते थी आंयंबिल मांहे जे कल्पे ते वस्तु टालीने बी जी सर्व वस्तुनो नियम लीए. हवे पञ्चस्काण जंग ना जयथी जे आगार मोकला मूकेछे ते कहेछे.

एक अन्नन्नणानोगेणं अने बीजो सहसागारे णं ए बे आगारनो अर्थ प्रथम लखाइ गयोछे

(३९६)

त्रीजुं लेवालेवेणं के० लेपालेप ते आवीरीते
के घृत प्रमुख जे विगयनो नियम साधुने होय ते
वी घृतादिक विगयथी गृहस्थनो हाथ खरडेलो हो
य पडी तेने लुठी नाख्यो होए, तेवा हाथथी अ
थवा खरडेला चाटुवाने लुठीने ते चाटुवाथी व
होरावे अथवा पीरसे तो पञ्चस्काणजंग न थाय.

चोथुं गिहबसंसंछेणंके० गृहस्थनुं जे वाटकी प्र
मुख नाजन ते विगय प्रमुखे खरडयुं होय तेवा ना
जनथी जे गृहस्थ अन्न आपे ते अन्न विगय प्रमुखे
मिष्ट होए ने ते अन्न जमे तो पञ्चस्काण जांगे नहीं.

पांचमुं उस्किन्नविवेगेणंके० गाढी विगयजे गो
ल पकवानादिक तेना कटका रोटली उपर नाखी
करी उपाडी परहां कख्यां होए तेवी रोटली प्रमुख
लेतां पञ्चस्काण जंग नथाय.

ढठुं पडुच्चमस्किणंके० रोटला प्रमुखने लगारे
क सुंहाला राखवाने अर्थे मोणदीधुं होए, अथवा
लगारेक हाथ चोपडी कीधी होए तेरेचवाली रोटली
प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पञ्चस्काणजंग नथाय:

(३९७)

सातमुं पारिष्ठावणियागारेणं. आठमुं महत्तरा
गारेणं नवमुं सवसमाहिवत्ति आगारेणं ए त्रण
आगारनो अर्थ बीजापच्चस्काणोमां जखायोढे.

॥अथ:-वेआसणातथाएकासणानु एवेपच्चस्काण॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साठपोरि
सिं पुरिमहं मुठसहिअं पच्चस्काइ उग्गएसूरे चउव्वि
हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नञ्च
एानोगेणं सहसागारेणं पच्चन्नकालेणं दिसामोहे
णं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्ति
आगारेणं वेआसणं पच्चस्काइ तिविहं पिआहारं
असणं खाइमं साइमं अन्नञ्चएानोगेणं सहसागा
रेणं सागारि आगारेणं आउंटण पसारेणं गुरुअ
प्पुछाणेणं पारिष्ठावणि आगारेणं महत्तरागारेणं स
वसमाहि वत्तियागारेणं पाणस्स लेवेणवा अलेवेण
वा अळेणवा बहुलेणवा ससिळेणवा असिळेणवा
वोसिरे इति एकासण वेयासणनुं पच्चस्काणसंपूर्णं॥

अर्थ-उग्गएसूरे इत्यादिकनो अर्थ प्रथमना ष
च्चस्काणोमां जखाइ गयोढे अने ज्यां एकवार अश

નકે૦ નોજન કરવું તેને એકાસણુ કહિએ; અથવા જ્યાં એકજ આશનઠે તે એકાશણુ કેહેવાયઠે, અને બે વાર અશન એટલે નોજન કરીએ તેને બેયાશણુ કહિએ; તે પચ્ચસ્કામિકે૦ પચ્ચસ્કુંબું એટલે નિયમ લેવુંબું. ઇહાં જો હિવિહંપિઆહારં કરેતો બે આહાર તે એક અશન અને બીજો સ્વાદિમ ઠાંમે, એટલે જ મ્યા પઢી એક પાણી અને બીજું સોપારી પ્રમુખ સ્વાદિમ વસ્તુ લીએ, તેવારે અસણં સ્વાઈમંનો પાઠ કહિએ અને જો તિવિહંપિઆહારં કરેતો ત્રણ આહાર તે અશન, સ્વાદિમ અને સ્વાદિમ એ ત્રણ આહારનું પચ્ચાસ્કાણકરે પણ જમ્યા પઢી એક પાણી મોકલું રાખે તેવારે અસણં સ્વાઈમં સાઈમંનો પાઠ કહિએ તથા ચત્તિવિહંપિ આહાર કરેતો જમ્યા પઢી ચારે પ્રકારના આહારનોત્યાગ કરે હવે એના આગારકહેઠે.

એક અન્નઢળા નોગેણં બીજો સહસાગારેણં એ બે અગારના અર્થ પ્રથમ લેવાઈ ગયાઠે.

ત્રીજો સાગારિ આગારેણંકે૦ સાધુ જમવા બેઠા પઢી ત્યાં સાગારિકજે ગૃહસ્થ તે જોવા આ

(३९९)

व्यो, ते कोइ रीते जोतो रहे नहीं, एम गृहस्थनी नजर पडे तो साधु उठीने बीजे स्थानके जइ आहार लीए. केमके, गृहस्थने देखतां जमे तो महा दोष सिद्धांतमां कह्योते. ए साधु आश्री कह्यो, अने गृहस्थ आश्रीतो गृहस्थ एकाशणु करवा बेठा पठी जेनी दृष्टीपडतां अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टी पडे अथवा सर्प आवे, चोर आवे, बंदीवान आवी उजोरहे, अकस्मात् अग्निलागे, घर पडवा मां मे तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे थके इत्यादि क कारणे ते स्थानकंथी उठीने बीजे स्थानके जइ एकाशणु करता थकां पञ्चस्काण जंग आय नहीं.

चोथुं आउटण पसारेणंके० पञ्चस्काणे बेठा पठी हाथ पग जंघादिक अंगोपांग पसारतां तथा संकोचतां कांइ आशन चलायमान आय तो पञ्चस्काण जंग न आय.

पांचमुं गुरुअष्टाणोणंके० पञ्चस्काणे जमवा बेठा ठतां गुरुजे आचार्य, उपाध्याय तथा साधु आवे थके तेमनो विनय साचववाने अर्थे बे पगने

तामे राखी उठवुं पडे तो पञ्चस्काण जंग न थाय.

उठुं पारिछावणि आगारेणंके० वधेलो आहार परठववो पडे तेवारें गुरुनी आझाए एकाशणा दिकथी मांमीने उपवास जगे पञ्चस्काण वालो ते वधेलो आहार लीए तो पञ्चस्काण जंग न थाय, माटेज पञ्चस्काण निर्युक्तिमां कसुंठे. विहिगहिअं निहिचुत्तं उद्धरिअं जंनवे असणमाइअं गुरुणाणु न्नायंकप्पइ आंबिलाईणं ॥ १ ॥ ए आगार यति ने होय पण श्रावकने न होय तथापि आलावो जुटे तेमाटे पाठ कहेतां दोष नथी.

सातमु महत्तरागारेणं अने आठमु सव्वसमाहिव तिआगारेणं ए बे आगारना अर्थ लखाइ गयाठे.

हवे पाणस्स आगार कहिए ठैए. जो तिविहारे तथा चउविहारे करी एकासणु प्रमुख पञ्चस्काण कसुं होय तो अवश्य पाणस्सना आगार कहिए अने जो डुविहारे करी. एकासणु प्रमुख पञ्चस्काण कसुं होए अने तेमां अचित्त नोजी अचित्त पाणी पीवामां लीए तो पण पाणास्सना

आगार कहीए. अने डुविहार पञ्चस्काणमांहे स चित्त आहार लीए तथा सचित्तपाणी पीए, तेवारें पाणस्सना आगार न कहीए. पाणस्सके० पाणी तेपाणी केहेवुं?तोके लेवेणवाके० जेणेकरीनाजना दिक खरडाए, ते उंसामण गलीने पीए तो पञ्च स्काण जंग न थाय. ए पाणी लेप युक्त कहीए:

बीजुं अलेवेणवाके० अलेपकृत पाणी ते कां जी प्रमुखनुं तेने गली पीए तो पञ्चस्काण न जांगे.

त्रीजुं अलेवेणवा के० अब निर्मल उकाट्यां पाणी प्रमुखने पीए तो पञ्चस्काण जंग न थाय.

चोथुं बहुलेणवाके० बहु दोहोलुं चोखा प्रमुखनुं धोवण तेने गलीने पीए तो पञ्चस्काण जांगे नहीं.

पांचमुं ससिन्हेणवाके० सिद्धसहित दाथरा प्रमुख नुं धोवण तेने गलीने पीए तो पञ्चस्काण न जांगे.

ठहुं असिन्हेणवा के० सिद्धरहित कणक प्रमुं खे हाथ खरड्यो होए तेनुं धोवण गली पीए तो पञ्चस्काण जांगे नहीं, ए ठ आगार पाणीना कहा, ते टाली बीजा पाणीने वोसिरामिके० वोसिरावुं.

अथ ॥ एकलताणानुं पञ्चस्काण एकासणा प्र
माणेते पण तेमांसात आगारते, माटे एक आठं
टणपसारेणं ए आगार नकहेवो.

॥ अथ आयंबिल पञ्चस्काण लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरसिंसाद्धपोरसिं
मुत्तसहिअं पञ्चस्काइ उग्गएसूरे चउव्विहंपि आहा
रं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नबणानोगेणं
सहसागारेणं पञ्चन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुव
यणेणं महत्तरागारेणं सबसामाहिवत्तियागारेणं
आयंबिलंपञ्चस्काइ अन्नबणानोगेणं सहसागारेणं
लेवालेवेणं गिहब्बसंसठेणं उखित्तविवेगेणं पारि
ठावणीआ गारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति
यागारेणं एगासणंपञ्चस्काइ तिविहंपि आहारं अ
सणं खाइमं साइमं अन्नबणानोगेणं सहसागारेणं
सागारिआगारेणं आउटण पसारेणं गुरुअप्पुठाणे
णं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहि
वत्तियागारेणं पाणस्सलेवेणवा अलेवेणवा अत्ते

एवा बहुलेणवा ससिन्हेणवा असिन्हेणवा वोसि
रे ॥ इतिआयंबिलं पञ्चस्काण समाप्तः ॥

अर्थ ॥ आयंबिलं पञ्चस्कामि के० आंबिल
पञ्चकुंडुं. एक अन्नढणा नोगेणं बीजुं सहसागरे
णं त्रीजुं लेवालेवेणं के० तेमां जे विगय तथा
शाकादिकने सस्नेहले आंगुली तथा नाजनादि
क खरडयुं होय तेने लेप कहिए. अने तेनेज घ
णी सारीरीते लुंठी नारुयुं होय ने जेमां विगयादि
कना अवयव कांइपण देखाय नहीं तेने अलेप
कहिए. एवा लेप अलेप वाला नाजन होय अ
थवा हाथ लेपालेप वाला होए, एवा कांइ लेप
अलेपवाला नाजने तथा हाथे पीरसवा थकी प
ञ्चस्काण जंग नथाय एने लेपालेप आगार कहिए.

चोथुं गिहळ संसठेणं के० गृहस्थे पोताने
अर्थें हाथ तथा चाटुआदिकने विगयेंकरी खर
डया होय, तेवा हाथे अथवा चाटुवादिके आपे
ते अन्न जमतां थकां आंबिल जंग नथाय.

पांचमुं उखित्तविवेगेणं के० गाढी विगय जे

गोल पकवानादिक ते रोटली उपर मूकीने फरी
परहिं करी होय ते रोटली नीवी आंबिलमां लेतां
पञ्चस्काण जंग नथाय.

ठतुं पारिछावणि आगारेणं के० परठव
तो आहारलेतां एटले कोइए अधिक वोहोछुं हो
ए अने ते तेने परठववानुं होय ते परठवतां घ
णीज अजयणा लागे अने तेज विगय प्रमुखनुं पो
ताने पञ्चस्काण होए अथवा पोते उपवासादिक
तप कछुं होए तेम ठतां पण, गुरुनी आझाये
तेवा आहारने लेवा अकी पञ्चस्काण जंग नथाय.

सातमुं महत्तरागारेणं के० महोटी निर्झराने
लाजे पञ्चस्काण जांगे नहीं. आठमुं सवसमाहिवत्ति
आगारेणं के० सर्व प्रकारे शरीर असमाधिए पञ्च
स्काण जांगे नहीं; वोसरामि ए अर्थ सुज्जने.

॥ अथ ॥ चउविहार उपवासनुं पञ्चस्काण ॥

॥ सूरेउग्गाए अजत्तठं पञ्चस्काइ चउविहंपि आ
हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नब्रणानोगेणं

सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं
सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥

अर्थ—सूर्यना उदयथी मांमीने अन्नत्तठंपञ्च
स्कामिके० अन्नकार्थनो नियम लउंभुं, चउविहंपि
आहारं के० चारे आहारनो नियम लउंभुं तेनां
नाम कहेढे. एक अशन, बीजो पान, त्रीजो खा
दिम अने चोथो स्वादिम हवे एना आगार कहेढे.

एक अन्नढणानोगेणं, बीजो सहसागारेणं, त्री
जो पारिठावणीआगारेणं, चोथो महत्तरागारेणं
अने पांचमो सवसमाहिवत्तिआगारेणं ए बधाना
अर्थ पूर्वे लखाइ गयाढे,

तथापि पारिठावणिआगारेणंनुं विशेष एटलुंज
ढे के, पाणी अने आहार ए बे वाना वापरवा
नां होए तो गुरुनी आझाये आहार कीधो कल्पे
पण एकजो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते
आहार कीधो कल्पे नहीं, केमके चउविहारमां
पाणीनो नियमढे अने पाणीविना मुख शुद्ध न
थाय माटे पाणी अने आहार ए बेवाना कोइ प

रुवतो होय तो चउविहार उपवासमां लीधा कढ्पे अने तिविहार उपवासमांतो पाणी मोक जुंढे, माटे एकलो आहार कोइ पररुवतो होय तो पण गुरुनी आझाये लीधो कढ्पे.

अथ ॥ तिविहार उपवासनुं पञ्चस्काण ॥

॥सूरेउग्गए अन्नतठं पञ्चस्काइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नञ्जणानोगेणं सहसागारेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सब समाहिवत्तियागारेणं पाणहारपोरसिं साढपोरसिं मुठसहिअं घर सहिअं पञ्चस्काइ उग्गएसुरे पुरि मढं अवढं पञ्चस्काइ अन्नञ्जणानोगेणं सहसागारेणं पञ्चन्नकालेणं दिसामोहेणं साढुवयणेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्सले वेणवा अलेवेणवा अहेणवा बहुलेवेणवा ससि हेणवा असिहेणवा वोसिरें ॥ इति

अर्थ—सूरेउग्गए के० सूर्यना उदयथी आरं नीने अन्नतठंके० अन्नकार्थ एटले उपवास प्रत्ये पञ्चस्कामिके० पञ्चस्कुंढुं, तिविहंपिआहारंके० त्रि

विहारे एटले एक पाणीनो आहार मोकलो, बा
कीना असणं के० अशन अने खाइमंके० खा
दिम तथा साइमं के० स्वादिम ए त्रण आहार
न करवा. हवे एना आगार कहेवे.

एक अनड्डणानोगेणं, बीजो सहसागारेणं,
त्रीजो पारिष्ठावणिआगारेणं, चोथो महत्तरा
गारेणं, पांचमो सबसमाहिवत्ति आगारेणं एना
अर्थ लखाणा ठे.

ए पञ्चस्काणमां पाणहार के० पाणीनो आ
हार मोकलोवे तेनी अवधि तथा आगार कहे
वे. उगगएसूरे के० सूर्यना उदयथी प्रारंजीने पो
रिसिं के० प्रहर लगे साढपोरिसिं के० दोढ प्रह
र लगे मुछसहियं के० नोकार गणी मुठ मोकली
मुके तेवारे पञ्चस्काण मोकलुं याय. घरसहिअं
के० पोताने घेर. जई नवकार गणि पञ्चखाण पारुं.

उगगए सूरे के० सूर्योदयथी प्रारंजीने पुरिमडुंके०
वे प्रहर लगे अवडुं के० अवडुलगे पञ्चस्कामि के०
पञ्चखुं. हवे पाणी न पीवाना वखत सुधीना आ

गार कहेढे. एक अन्नन्नणानोगेणं, बीजो सहसागा
रेणं, त्रीजो पन्नकालेणं, चोथो दसामोहेणं, पांच
मो साहुवयणेणं, ठछो महत्तरागारेणं, सातमो
सवसमाहिवत्ति आगारेणं. एना अर्थ लखाणाढे.

॥ हवे पाणस्स के० पाणी पीवाना ठ आगार
ढे ते कहेढे. ॥ लेवेणवा के० लेपजलते खज्जुर
नुं तथा आठण, बीजो अलेवेणवा के० अलेप ज
ल ते उंसामण, त्रीजो अलेवेणवा के० निर्मल उल्ल
पाणी, चोथो बहुलेवेणवा के० मोहलुं एटले अन्न
नुं धोअण, पांचमो ससिन्हेणवा के० सीथ सहित
पीठानुं धोअण, ठछो असिन्हेणवा के० सीथ रहित
फासूजल एटलां टाली बाकीनां पाणीने वोसिरा
मि के० वोसिरावुं तुं. ॥

॥ चउन्नत्तनुं पच्चरकाण ॥

अर्थ ॥ सूरैउग्गए के० सूर्यना उदय थकी
चउन्नत्त के० चार जातनुं अन्नत्तं के० अन्न
कार्थ ते पच्चरकामिके० पच्चरकुं, बुसूरैउग्गए ठछ

જતંઅજતં પચ્ચસ્કામિ સૂરેઝ્ગાએ અઠમજતં
અજતં પચ્ચસ્કામિ; એના અર્થ સુલજઢે.

અંહીં પચ્ચસ્કાણને પ્રસંગે દશ વિગય માંહેલા
ઢ જદ્દ વિગયઢે, તે પ્રત્યેકના પાંચ પાંચ નિવીતા
કરતાં ત્રીશ નિવીતા યાયઢે તે કહેઢે.

પ્રથમ દુધ વિગયના પાંચ નિવીતા કહેઢે. એ
ક કાંજીમાં દુધ નાસવીએ તે દુધ ઘણું હોય અ
ને ચોસા થોડા હોય તેને પેયા કહેઢે, બીજો સ્વા
ટી ઢાશ સહિતજે દુધ, અર્થાત્ દુધમાં સ્વટાશ ના
સવી પચાવીએ તેને દુધ્દહી કહેઢે. ત્રીજો ડાહ્યાદિક
નાસવીને રાંધેલો જે દુધ તેને પયસાડી કહેઢે. ચોથો
ચોસાનો થોડો લોટ નાસવીને રાંધેલું જે દુધ તેને
અવલેહી કહેઢે. પાંચમો ચોસા ઘણા અને દુધ
થોડું, એરીતે રાંધેલું હોય તેને સ્વીર કહેઢે.

હવે દહીંના પાંચ નિવીતા કહેઢે. એક દહીંને
ઘોલીને અથવા ઝકાલીને તેમાં વડાં ઘાલે તેને ઘો
લવડાં કહેઢે. બીજું દહીં ઘોલીને વસ્રમાંથી ગાલી
એ તેને મધ્યું અથવા ઢાણું દહીં કહેઢે. ત્રીજું દહીં

ने हाथथी मथन करी तेमां खांम अथवा शाकर जेजीए तेने शिखरणी अथवा शीखंम कहेले. चो शुं दहीं अने रांधेला चोखा एकठाकरीए तेने क रबो कहेले, पांचमुं लुण नाखीने जे दहीं मथन करेलुं होय तेने सलवण कहेले.

हवे घृतना पांच निवीता कहेले. एक औष धे करी पकावेलुं घृत तेने पक्कघृत कहेले. बीजुं घृतनी कीटी जे मल थायले ते वघारि प्रमुख. त्रीजुं जे घृतमां कोइ औषधी पकावी होय तेना उपरनी तरीनुं घृत तेने पक्कौषधी घृत कहेले. चोशुं पकवान तरतां बलेलुं घृत तेने निप्रांजण क हेले, एटले त्रण घाण तव्या पढीनुं रहेलुं घृत अथवा सीरादिक उपरनुं घृत जाणवुं. पांचमुं दहींनी तरीमां घहुनो लोट नाखीने जे तावडे पकावीए तेने वीसंदण कहेले.

हवे तेलना पांच निवीता कहेले. एक तिल कुटी मांहे जो घोलादिक इव्य जाजुं होय तो. बीजी तेलनी मली. त्रीजुं लाक्षादिक इव्येकरी

પકાવેલું તેલ. ચોથું પાકેલા ઔષધની તરી. પાંચમું ઘાણ પઢવાડેનું બલેલું તેલ.

હવે ગોલ વિગયના પાંચ નિવીતા કહેઢે. એક અર્ધો કાઢેલો સેલડીનો રસ, બીજો ગુલવાણું, ગોલની રાબ, ગોલના પાણીમાં લોટ નાખે તે, ત્રીજો શાકરની જાત. ચોથો સ્વામની જાત સર્વ જાણવી, પાંચમો ગોલની પાતી.

હવે કઢાવિગયના પાંચ નિવીતા કહેઢે. જો એક સ્વાજાં વડે કઢાડ જરાડ ગડ હોય તો તેથી બીજું સ્વાજું નિવીયાતું થાયઢે, પણ તેમાં માત્ર બીજું ઘૂત નાખવું ન જોયેં, તેજ ઘૂત વડે પકાવી યે તેને પ્રથમ નિવીયાતો કહીએ. બીજું એકની ડપર એક નાખીએ એમ ત્રણ ઘાણ ડપરાંત તેજ ઘૂતમાં જે બીજો પકાવીએ તે બીજો નિવીયાતો જાણવો. ત્રીજો ગોલધાણી પ્રમુખનો નિવીયાતો જાણવો. ચોથો પાણી ગોલ ઘૂત એકઠાં ડકાલી પઢી તે પાણીમાં લોટ નાખી રાંધેલી લાપશીનો નિવીયાતો જાણવો. પાંચમો નિવીયાતે કરી ચોપડી

काहाडेला तावडानी उपर पुडला प्रमुख करे ते,
पांचमो निवीयातो जाणवो.

॥ अथ ठठ अठमादिक तप करेने बीजा दिव
शादिके पाणी वावरवुं होय त्यारे पाणहारनुं प
ञ्चस्काण करे ते कहेढे.

॥ पाणहार पोरसिं मुठसहिअं पञ्चस्काऽअन्नढणा
नोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिव
त्तिआगारेणं पाणसलेवेणवा अलेवेणवा अहेणवा
बहुलेणवा ससिडेणवा असिडेणवा वोसिरे इति
अथ ॥ गंतसहिअं आदि अनिग्रहोनुं पञ्चस्काण ॥
॥ गंतसहिअं वेढसिअं दिपसहिअं थिबुगहिसअं मु
ठसहिअं पञ्चस्काऽअन्नढणा नोगेणं सहसागारेणं
महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥
॥ अथ ॥ नियमधारनारने देसावगासिकनुं पञ्चस्का
ण ॥ देसावगासिअं उवजोगं परिजोगं पञ्चस्काऽअ
न्नढणा नोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव
समाहिवत्तिया गारेणं वोसिरे. इति ॥

अर्थ—देसावगासिअं के० दिशिना अवकाशनुं

व्रत अथवा बधा नियम आश्रीतो देस के० थो डामां अवकाश आणे ते देशावगासिक व्रत क हीए. एटले इहां एकली दिशिनुंज पञ्चस्काण क रे, तेवारे उवजोग परिजोगनो पाठ न कहिए तेने देसावगासिअं पञ्चस्कामिज कहिए. उवजोग के० ए कवार जोगवीए एवा आहार तथा विलेपनादिक तेने उपजोग कहिये. अने परिजोग के० वारंवार जोगविए एवी वस्तु जे आनरण वस्त्रादिक तेनुं प्रमाण करे एटले जे चौद नियम संजारे तेने ए पाठ कहिए; एना आगारोनो अर्थ सुजजठे.

अथ ॥ चउदनियमनी गाथा कहेले. ॥

सचित्त दव्व विगई॥वाहणह तंबोल वड कुसुमेसु॥
वाहण सयणविलेवण बंजंदिसि न्हाणजत्तेसु॥१॥

अर्थ—पेहेलुं सचित्त के० पाणी, फल, बीज, दातण, कण प्रमुख सचित्त चीजनुं प्रमाण करे. बीजुं दव्व के० जे वस्तुनो निन्न स्वाद ते इव्व कहीए, तेनुं मान करे. त्रीजुं विगई के० घृत प्रमुख ठ विगयमां जेटली खावाने मोकली राखवी

होय तेनुं मान करे, उपरांत निषेध करे. चोथो वाहणह के० उपानकते पगरखानुं मान करे. पांचमुं तंबोल के० पान सोपारी प्रमुख सर्वनें तंबोल कहीए तेनुं मान करे. ठहुं वड के० वस्त्र जे पोताना शरीरे वापरवानां होए तेनुं मान करे. सातमुं कुसुमेसुके० फूलनुं मान करे. आठमुं वाहण के० वाहनते अश्व, पालखी, मोली, गाडां प्रमुख जे वाहन तेनुं मान करे. नवमुं सयण के० सय्या तथा आशन प्रमुखनुं मान करे. दशमुं विलेवण के० चंदन तेल प्रमुख विलेपन करवानी वस्तुनुं मान करे. अगीआरमुं बंन के० ब्रह्मचर्य पालवाने मैथुननी मर्यादा करे. बारमुं दिसि के० दिशिविदिशिनुं मान करे. तेरमुं न्हाण के० स्नान कंकोडी प्रमुखे नावुं तथा अंगोलीनुं मान करे. चौदमुं जत्तेसु के० जात पाणीनुं मान करे. इति चौद नियम गायार्थ. ॥

॥अर्हीयां बीजा नियमठे ते प्रसंगे लखीयेथैये॥

पन्नरमुं पृथ्वीकाय आश्री माटी, मीतुं, खडी

प्रमुख पोताने निमित्ते वावरे तो तेनुं प्रमाणकरे.

सोलमुं अप्पकाय आश्री पाणी पीवामां अथवा
न्हावा प्रमुखमां वापरवामां आवे तेनुं प्रमाणकरे.

सत्तरमुं तेउकाय आश्री पोताना शरीरना
नोगोपनोगमां चूला, चाडी, सघडी, अंगीठी प्रमुख
नुं रांध्युं, नीपज्युं, तपाव्युं, शेक्युं तेनुं प्रमाण करे.

अठारमुं वायुकाय आश्री पंखा, हिंचोला, प
डदा लुगडादिकथी पवन करवानुं प्रमाण करे.

उंगणीसमुं वनस्पतिकाय आश्री लीलां फल फूल,
शाक, दातण प्रमुख खाधा वावरवानुं प्रमाण करे

वीशमुं त्रशकाय जे त्रास पामे एवाजीव ते
कीडी, कीडा, विंठी, गाय, मल्ल, पद्दी, मनुष्य, देव
नारकादिक मांहेला कोइ जीवने विना अपराधे
संकल्प करी मारुं नही, तेनो नियम करे.

एकवीशमुं असी ते तरवार, जाला, तीर, बुरी
कोश, कोदाल, पावडा, घरटी प्रमुख जीव घात क
रनार वस्तुनो नियम करे.

बावीशमुं मसी ते शाइना खडीया कलम प्रमुं
ख वापरवानुं प्रमाण करे.

त्रेवीशमुं कूसी ते जमीन खोदवादिक घर, हाट,
क्षेत्र प्रमुख तलाव कुपादिकने खोदवा तथा तेना श
स्त्रनो नियम करे ए चौदे नियमादि त्रेवीश बोलजे
ठे, ते जेवीरीते पोताथी पळे तेवीरीते अवश्य पाले.

॥ अथ सांजना पञ्चस्काण ॥

॥ बेआसण एकासण निविगइ आर्यंबिल उपवा
स ठठ अठमादि तपकरनार उभजल वावरे ते
सांजेपञ्चस्काण करे ते पाणहारनुं पञ्चस्काणलीए.

॥ अथ पाणहार दिवसचरिमनु ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चस्काइ अन्नढणा
जोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहि
वत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥

॥ अथ राते चौविहार करवो तेनुं पञ्चस्काण ॥
॥ दिवसचरिमं पञ्चस्काइ चउविहंपि आहारं असणं
पाणं खाइमं साइमं अन्नढणा जोगेणं सहसागारे
णं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे.

अर्थ॥दिवसचरिमं के०दिवसना ठेडाथी मांमीने
नवो सूर्य उगे त्यांसुधी पञ्चस्कामि के० पञ्चकुबुं.
चउविहं पिआहारं के० चउविहार तेचार प्रकार
ना आहारने पञ्चकुंभुं; एना बीजा अर्थ सुलजने.

॥ अथः रात्रे तिविहार एटले एक पाणी मो
कजुं राखे तेनुं पञ्चस्काण ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चस्काइ तिविहंपि आहारं असणं
खाइमं साइमं अन्नढणानोगेणं सहसागारेणं
महत्तरागारेणं सवसामाहि वत्तिया गारेणं वोसिरे.

॥ अथ रात्रे डुविहार एटले पाणी अने स्वा
दिम मोकजुं राखे तेनुं पचखाण ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चस्काइ डुविहं पिआहारं अस
णं खाइमं अन्नढणा नोगेणं सहसागारेणं मह
त्तरागारेणं सवसामाहि वत्तियागारेणं वोसिरे. इति॥

॥ अथः पञ्चस्काणना आगारनी गाथा ॥

॥ दोचेव नमुक्कारे, आगारा ठचेव पोरसिए
उ ॥ सत्तेवइ पुरिमहे, एकासणंमि अठेव ॥ १ ॥
सत्तेमठाणसुअ, अठेवय अंबिलंमि आगारा, पंचे

वयनत्तठे, ठप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंचचउ
रो अनिगहो, निव्वीएअठ नव आगारा, अप्पाउर
णे पंचउ ॥ हवन्तिसेसेसुचत्तारि ॥ ३ ॥

हवे ठ प्रकारे पञ्चस्काण सुख होयठे ते कहेठे.
॥ फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्ठिअं,
आराहिअं, जंच नआराहिअं, तस्समिहामिडुक्कडं
अर्थः—पञ्चस्काण विधेकखुं उचित वेलायें जे प्राप्त
अयुं तेने फासिअं कहिए. पञ्चस्काण वारंवारउ पयोग
देइने संनारबुं तेने पालिअं कहिए. प्रथम गुरुने
आहारपाणी देइ आकतुं नोजन करबुं तथा अ
तिचार न लगाडबुं तेने सोजित कहिए. तीरिअं
के० पञ्चस्काण पुगा पढी पण थोडो अधिक काल
अये पालबुं, निर्मल करबुं. किट्ठिअं के० नोजन
वेलाए अबुक्क माहारे पञ्चस्काणठे, एम संनारबुं.
आराहिअं के० पञ्चस्काण जेरीते कीयुं तेरीते आरा
ध्युं. ए ठ सुधी जाणवी. जंचनाराहिअं के० जेमें
पञ्चस्काण न आराध्युं होए, अतिचार लगाडया
होए. तस्समिहामि डुक्कडं के० ते माहारुं पाप

(४१९)

मिथ्या थाउ. एवा पचस्काणोने विषेज विवेकी
पुरुषे उद्यम करवो; केमके शुद्ध धर्मने प्रजावे
जीव मोक्ष प्रमुखनां सुख पामे.

अथःसाधुजीने चौदप्रकारना दाननी निमंत्र
णा करवी ते लखीए ठैए. ॥

॥ पञ्चस्काण कस्या पढी वे ढांचण अने मस्तक
नूमिए लगाडी, मावे हाथे मुखे मुहपति देइ
जमणो हाथ गुरुने पगे लगाडी आवीरीते कहे.

॥ इहाकारि जगवन् पसायकरी फासुअंसणिके
एणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वडपडिगह कंबल
पायपुडणेणं पाडिहारिअ पीढ फलग सिद्यासंधार
एणं उसह जेसकेणं जयवं अणुगहो कायवो.

अर्थ—इहाकारी जगवन्, पसाय करी प्राशुकएट
ले अचित्त एसणिकेणं के० एसणिकते सुजतो ए
टले जे साधुने कल्पे एवो आधाकर्मादिक दोष रहि
त अशन, पाणी, खाइमं के० सुखडी, साइमं के०
सुंठ हलदर, प्रमुख वड के० वस्त्र चोलपटादिक
पडिगह के० पढगादिक पात्रा प्रमुख, कंबल

के० कांबली, पायपुच्छणेणं के० बेसवानुं पोंठणु,
 पाडिहारि के० अण वोहोरी वस्तुजे गृहस्थनाज
 अकां वावरीने पठी गृहस्थने पाठी अपायठे. ते
 वी वस्तुजे पीठ के० बाजोट, फलग के० पाटीउं,
 सिवा के० वस्ति; एटले रहेवानुं उपाश्रय संशार
 एणं के० पाट अथवा मान प्रमुख वली उसह
 के० औषध जे काथ, चूर्ण, गोली प्रमुख एकज
 वस्तु होए ते जेसङ्केणं के० त्रिगडू, त्रिफला प्र
 मुख ए पूर्वोक्त वस्तुए करी जयवं के० हे जगव
 न गुरुजी अणुगहो कायवो के० अनुग्रह करवो
 एटले जे जोइए ते वोहोरजो.

॥ अथ पञ्चखाण पारवानो विधी ॥

॥ प्रथम इरियावहियाए पडिकमीयें जावत् ज
 गचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीराराय सुधि करवुं.

पठी मन्हजिणाणंती सप्तायकही मुहपत्ति प
 डि लेहेवी. इहामी० इह्याका० पञ्चखाणपारुं, य
 थाशक्ति इहामी० इह्याका० पञ्चखाण पाखुं, तह
 ति एमकही जमणो हाथ कटासणा चवला उपर

थापी एक नवकार गणी पञ्चखाण कस्युं होय ते कही पारवुं ॥ ते लखिए ठैए. ॥

उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरसिं साढपोरसिं गंतसहिअं मुवसहिअं पञ्चस्काण कस्युं चौविहार आंबिलनीवि एकासणु बेआसणु कस्युं, तिविहार पञ्चखाणफासिअं पानिअं सोहिअं तीरिअं किट्ठिअं आराहिअं जंचन आराहिअं तस्सभिह्वामिडुक्कडं.

॥ अथ सामायकलेवानोविधी ॥

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तकप्रमुख मुकीनें श्रावक श्राविका कटासणुं मुहपति चवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र जग्या पुंजी. कटासण उपर बेसी, मुहपति मावा हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी सनमुख राखी एकनवकार गणि पंचिंदिअ कही, इह्वामि खमासमण देइ इरियाव हिया, तस्सउत्तरी, अन्नत्तउस सिएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्सकही, खमासमण देइ, इह्वाकारेण संदिसह जगवन्, सामायक मुहपति

(४२२)

पडिलेवं इहं एमकहिं मुहपति अंगनी पडिलेह
 एना पचाश बोलकही, मुहपति पडिलेहीएं. ख
 मासमणदेइ ॥ इह्वाकारेण संदिसह जगवन् सामा
 यक संदिसाहुं. इहं वली खमासमणदेइ, इह्वा०
 सामायक ठावं, इहं एमकहि बे हाथ जोडी
 एक नवकार गणी, इह्वाकारी जगवन्, पसायकरी
 सामायक मंमक उच्चरावोजी. वडिल करेमिजंते
 कहे. पठी खमासमणदेइ इह्वा० बेसणे संदिसाहुं
 ॥ खमा० ॥ इह्वा० ॥ बेसणे ठावं. खमा० ॥ इ
 ह्वा० ॥ सजाय संदिसाहुं ॥ खमा० ॥ इह्वा० ॥
 सजायकरुं इहं ॥ एमकहि त्रण नवकार गणवा,
 पठी बेघडी सजाय धर्म ध्यान करवुं ॥ इति सा
 मायक लेवानो विधिसमाप्तम्. ॥

॥ अथ सामायक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमणदेइ इरियावहि पडिक्कमाथी
 जावत् लोगस्ससुधी कही खमा० ॥ इह्वा० ॥
 मुहपति पडिलेहुं कही, मुहपति पडिलेहि, खमा
 समणदेइ, इह्वा० ॥ सामायक पारुं: यथासक्ति

वली खमासमणदेइ, इब्ता० ॥ सामायक पाखुं;
तहत्ती कही, पठी जमणोहाथ चवलाउपर अथ
वा कटासणाउपर थापी, एक नवकार गणी सामा
इय वयजुत्तो कहियें. पठी जमणो हाथथापना
सन्मुख संवलो राखी ने एक नवकार गणीयें.

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिय कही इरिया वहियाए
स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं.
पठी तस्सुत्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार
नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही
उत्ते पगें बेसी, मुहपति, कटासणु, चवलो, उत्त
रासण, धोतीउं, कंदोरो आदे पडिलेहवां, पठी
काजो काहाडी जीव कलेवर सचित आदे जोवुं.
पठी काजो काहाडनार थापनाजी सन्मुख उजो
रही इरियावहि पडिक्कमे, पठी काजो परठववा
जग्या सोधि त्रण वार अणुजाणह जस्सग्गो
कही काजो परठवे, पठी त्रण वार वोसिरे कहे.
॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहि पडिकमवाथी मांझीने जावत् लोगस्स कही, पढी उत्तरासण नांखीने चैत्य वंदन नमुत्तुणं कही, जयवीअराय आ नव मखं मासुधी अर्धो कहे. वली बीजुं चैत्यवंदन करी, नमुत्तुणं कही जावत् चार थोयो कहीये. वली नमुत्तुणं कही यावत् बीजी चार थोयो कहीए त्यांसुधी बंधुं केहेबुं, पढी नमुत्तुणं तथा बे जावं तीकही, एटजे जावंति चेइयाइं तथा जावंत केविसाहु ए बे कही. उवसग्गहरं अथवा स्तवन कही, अर्धो जय वीअराय आनव मखंमासुधि कही, पढी चैत्यवंदन कही नमुत्तुणं कही संपूर्ण जय वीअराय केहेवा. प्रजाते देववांदवा तेहमां मन्हजिणाणंती सजाय केहेवी, मध्यान्हे तथा सांजे देव वांदे तेहमां सजाय नकहे ॥ इति ॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधी प्रारंजः ॥

॥ प्रथम सामायक लिजे. पढी पाणी वावसुं होयतो मुहपती पडिजेहेवी, अने आहार वाव

खो होयतो वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां
 आवसीआए ए पाठ न केहेवो. यथा शक्ति पञ्च
 स्काण करवुं. स्वमासमण देइइहाकारेण कही,
 वडेरा अथवा पोते चैत्य वंदन कहिने पढी जिंकिं
 चि नमुत्तुणं कही, उजा यईने अरिहंतचेईयाणं
 कहिने एक नवकारनो काउस्सग्न करी नमोऽर्ह
 त० कहिने प्रथम थोय केहेवी. पढी जोगस्स,
 सबजोए, अरिहंतचेईयाणं कहिने एक नवकारनो
 काउस्सग्न पारीने बीजी थोय केहेवी. पढी पुस्क
 रवरदी कही, सुअस्स जगवउं करेमि काउसग्नं
 वंदण० एक नवकारनो काउसग्न पारी त्रीजी
 थोय केहेवी. पढी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्च
 गराणं० करेमि काउसग्नं अनत्त० ॥ पढी एक
 नवकारनो काउसग्नपारी, नमोऽर्हत० कही,
 चोथी थोय केहेवी. पढी बेसीने नमुत्तुणं केहेवुं.
 पढी चार स्वमासमण देवां पुर्वक जगवान्, आ
 चार्य, उपाध्याय सर्वसाधुन्यः प्रत्ये वंदन करीये.
 पढी इहाकारेण० ॥ देवसि प्रतिकमणे ठाउं एम

कहि, जमणोहाथ चवला कटासणाउपर थापीने
 इहं सवसवी देवसिअ० केहेवुं. पढी उजायइ
 करेमिजंते इहामि ठामि काउसगं जोमें देवसि
 उं तस्सउत्तरी० कही, पढी आठ गाथानो काउ
 सग करवो. ॥ आठ गाथा न आवडे तो आठ न
 वकारनो काउसग करवो ते पारीने, पढी लोगस
 कहेवो. ॥ बेसीनें त्रीजा आवश्यकनी मुहपती प
 डिलेहीने वांदणा बे देवां. पढी उजा यइने इहा
 का० देवसिअं आलोउं इहं आलोएमि जोमेदेव
 सिउं कहीने, पढी सातलाख कहेवा. पढी अठा
 र पापस्थानक आलोइने सवस्सवि देवसिअं
 कहीने बेसवुं. बेसीने एक नवकार गणी पढी
 करेमिजंते इहामि पडिक्कमिउं कहीने, वंदितु कहे
 वुं, पढी वांदणां बे देवां. पढी अप्पुठित्ठं अप्पि
 तर देवसिअं स्वामीने वांदणां बे देवां. पढी उजा
 यइ आयरीय उवस्साए कहीने, करेमिजंते इहा
 मि ठामि काउसगं जोमें देवसिउं० तस्सउत्तरी०
 कही, पढी बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकार

नो काउसग्गपारीने पढी लोगस्स प्रगट कहेवो. प
 ठी सव्वलोए, अरिहंतचेईयाणं, वंदणवत्तिआए
 कही, एकलोगस्स अथवा चार नवकारनो काउ
 सग्ग पारीने, पुखरवरदी० सुअस्सजगवउ० करे
 मि० वंदण० एक लोगस्स अथवा चार नवका
 रनो काउसग्ग पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही
 सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं एक नवकारनो
 काउसग्ग पारी नमोऽर्हत० कही, पुरुषे सुअदे
 वयानी पेहेली थोय कहेवी, अने स्त्रीये कमलद
 लनी पेहेली थोय कहेवी. पढी खेत्रदेवयाए क
 रेमि काउसग्गं० एक नवकारनो काउसग्ग पारी
 नमोर्हत० कही क्षेत्र देवयानी बीजी थोय स्त्रीये
 तथा पुरुषे बनेने कहेवी. पढी प्रगट एक नव
 कार गणी बेसीने, ठठा आवश्यकनी मुहपती प
 डिलेही, बे वांदणां आपीए. पढी सामायक चउ
 विसठो, वंदण, पडिक्कमणुं, काउसग्ग अने पच्च
 स्काण ए ठ आवश्यक संजारवां. पढी इत्तामो
 अणुसठिं कही, नमो खमासमणाणं कही, नमोऽ

हेत० कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अ
 ने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पढी
 नमुत्तुणं कही स्तवन कहेवुं. पढी वरकनक कही
 जगवान् आदे वांदवा. पढी जमणो हाथ उपधी
 उपर थापी अट्टाईजेसु कहेवुं. पढी देवसिअ पा
 यच्चित्तनो काउसग्ग चार लोगस्सनो अथवा सो
 ल नवकारनो करवो पढी ते काउसग्ग पारी, प्र
 गट लोगस्स कही, बेसीने खमासमण वे देइ
 सस्सायनो आदेश मागी, एक नवकार गणी स
 वाय कहीए, पढी एक नवकार गणीए, पढी ड
 र्कखउं कम्मखउं नो काउसग्ग चार लोगस्सनो
 संपूर्ण अथवा सोल नवकारनो करवो. एक व
 डेरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हत् कही जघुशां
 ति कहेवी, पढी प्रगट लोगस्स कहेवो, पढी इ
 रियावही कही तस्सउत्तरी एक लोगस्स अथवा
 चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स
 कहेवो. पढी चउकसाय कही, नमुत्तुणं, जावंति
 वे कही, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही, मुह

पति पडिलेहेवी. इहामि० ॥ इह्याका० ॥ सामय
क पारवुं. यथाशक्ति इह्यामि० ॥ इह्याका० सामा
यक पाखुं तहत्ति कही, पढी जमणोहाथ उपधी
उपर थापी एक नवकारगणीने सामाइअ वय
जुत्तो कहेवो. पढी थापना होयतो एक नवकार
गणी उठे. ॥ इति ॥ देवसि प्रतिक्रमण विधी क
ही, बाकी अंतरविधी वडेराथी समजवी.

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ प्रथम पूर्वनीरीते सामायकलीजे ॥ पढी कु
सुमिण डुसुमिणनो काउसग चार लोगसनो अ
थवा सोल नवकारनो करी, पारी प्रगट लोगस
कहेवो, पढी खमासमण देइ जगचिंतामणीनुं
चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं. पढी चार
खमासमण पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय
सर्व साधु प्रत्ये वांदवा, खमासमण वे देइ, सज्ञा
यनो आदेश मागी एक नवकार गणीने जरहेसर
नी सज्ञाय कहीने फरी एक नवकार गणवो.
पढी इह्याकर सुहराइनो पाठ केहेवो, पढी इह्या

का० राइ प्रतिक्रमणे ठाउं कहीने जमणो हाथ
 उपधी उपर स्थापीने इहंसवसवी राइय डुचिंती
 य० कही ॥ नमुबुणं करेमि जंते कही, इहामि
 ठामि काउसग्गं० तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स
 अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग पारीने. प्रग
 ट लोगस्स कही, सबलोए० अरिहंत० कही,
 एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउसग्ग
 पारी पुस्करवरदी० सुअस्स० वंदण० कही, अ
 तिचारनी आठगाथानो अथवा आठ नवकारनो
 काउसग्ग पारी, सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने, त्रीजा
 आवश्यकनी मुहपति पडिलेही वांदणां बे देवां.
 त्यांथी ते अप्पुच्छित्तां स्वामि वांदणां बे दीजे, त्यां
 सुद्धि देवसिनीरीते जाणवुं. पण जे ठामें देवसि
 अं आवेठे ते ठामे राइयं केहेवुं. पठी आयरिअ
 उवस्साए० करेमिजंते इहामि ठामि काउसग्गं त
 स्सउत्तरी कही, तप चिंतामणि करतां न आव
 डेतो चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो
 काउसग्ग करवो. ते पारी प्रगट लोगस्स कही, प

ठी ठछा आवश्यकनी मुहपती पडिलेहीने वांद
 णां बे देवां, ते पठी तीर्थवंदन करवुं, पठी यथा
 शक्तियें पञ्चस्काण करवुं. पठी इह्माकारेण संदिस
 ह नगवन् सामायक, चउविसठो, वंदण, पडिक्क
 मणु, काउसग्ग अने पञ्चस्काण एआवश्यक सं
 नारवां. पञ्चस्वाण कखुं होयतो कखुं ठेजी कहेवुं,
 अने धाखुं होयतो धाखुं ठेजी एम कहेवुं. पठी
 इह्मामोअणुसठिं नमोखमासमणाणं नमोऽर्हत्तुं
 पठी विशाल लोचन, नमुबुणं, अरिहंतचेईयाणं
 एटला कहीने एक नवकारनो काउसग्ग पारीने
 नमोऽर्हत्तुं कही कख्याणकंदनी थोय प्रथमकहे
 वी. लोगस्स, पुस्करवरदि, सिद्धाणंबुद्धाणं, कही
 अनुक्रमे चार थोयो कहीयें ठैए त्यांसुधी सर्व
 कहेवुं. पठी नमुबुणं कही, नगवान् आदि चार
 ने चार खमासमणे वांदवां. पठी जमणोहाथ
 उपधी उपर थापी अह्माइक्केसु कहेवुं. पठी श्री
 सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जय वीयरा
 य, काउसग्ग थोय पर्यंत करवुं. पठी खमास

मण पुर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन,
जयवीरराय, काउसग्ग थोयसुधी करवुं. पढी सा
मायक पारवानाविधीनी रीते सामायक पारवा
सुद्धी कहेवुं.॥इति राइप्रति क्रमणनोविधी समाप्त॥

॥ अथः पस्कि प्रतिक्रमणनो विधी लिख्यते ॥

॥ देवसि प्रति क्रमणमां वंदितुं कहि रह्यां
त्यां सुधी कहेवुं, पण चैत्यवंदन सकलाऽर्हतनुं
केहेवुं ने थोयो स्नातस्यानी कहेवी. पढी खमा
समण देइने इहा कारेण संदिसह जगवन्, देव
सिअ आलोइ अपडिकंता इहाका० पस्कि मुहप
ति पडिलेहुं, एम कही मुहपति पडिलेहियें. पढी
वांदणां बे दीजे पढी इहा का० संबुद्धा स्वामणेणं
अप्पुविउहं अप्पिन्तर पस्किअं स्वामेउं इहं स्वामेमि
पस्किअं पन्नरस दिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिं
चि अपत्तिअं० कही इहाका० कही पस्किअं आलो
एमि इहं आलोएमि जोमे पस्किउं अइ आरो कउ
कही इहाका० कही पस्कि अतिचार आलोउं एम
कहीने अतिचार कहिये. पढी एंवकारे श्री श्राव

क तणो धर्मे श्रीसमकित मूल बारवत एकसो चो
 वीश अतिचार मांहें जे कोइ अतिचार पढ़ दिव
 स मांहे सुक्य बादर जाणतां अजाणतां दुउ
 होय, ते सविहुं मने, वचने अने कायाए करी
 मिहामिडकडं. सबसवि, पस्किअ, डुचिंतिअ, डुप्रा
 सीअ, डुचिठिअ, इह्वाकारेण संदिसह नगवन्, त
 स्समिहामि डुकडं० इह्वाकारि नगवन्, पसाउ करी
 पस्कि तप प्रसाद करोजी. एम उच्चारकरीने आवी री
 ते कहिए. चउठेणं एक उपवास, बे आर्यबिल त्रण
 निवि, चार एकाशणा, आठ बियासणा, बे हजार स
 जाय यथाशक्ति तपकरी प्रवेश कस्यो होय तो पइवी
 कहिए. करवो होय तो तहत्ति कहिये. ने न करवो
 होय तो अण बोझ्या रहिये. पढी बे वांदणां दीजे;
 पढी इह्वाका० पत्तेय खामणेणं अप्पुठिउहं अप्पिं
 तर पस्किअं स्वामेउ इहं स्वामेमि पस्किअं पन्नरस
 दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं
 पढी वांदणां बे दीजे, पढी देवसिअं आलोइअ प
 डिकंता इह्वाकारेण संदिसह नगवन्, पस्किअ पडि

कसुं समंपडिक्कमामि इहं एम कही करेमिजंते
 सामाइयं कही इहामि पडिक्कमिउं जोमे. पस्किउ
 कह्या पढी खमासमण देइ इह्वाकारेण कही पस्किसू
 त्र पढुं. एम कही त्रण नवकार गणीसाधु होय तो प
 स्किसूत्र कहे, अने साधु न होय तो त्रण नवकार ग
 णीने श्रावक वंदित्तु कहे, पढी सुअ देवयानी थोय
 कहेवी. पढी हेग बेसी जमणो ढींचण उजो कर
 वो. एक नवकार गणी करेमिजंते इहामि पडिक्कमि
 उं कही, वंदित्तुं केहेवुं. पढी करेमिजंते इहामि ठामि
 काउसग्गं जोमें पस्किउ, तस्स उत्तरी, अन्नत्तं
 कहीने बार लोगस्सनो काउसग्ग करवो. ते
 लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा, अथवा
 अडतालीश नवकारनो काउसग्ग करीने पारवो.
 पालीने प्रगट लोगस्स केहवो. पढी मुहपत्ति पढी
 लेहिने, वांदणा बे दिजे. पढी इह्वाका० समाप्त
 खामणेणं अप्पुठित्तं अप्पित्तर पस्किअं खामेउं इहं
 खामेमि पस्किअं एक पस्काणं पन्नरस दिवसाणं प
 न्नरस राइयाणं जंकिंचि अपत्तिअं० कही पढी

(૪૩૫)

સ્વમાસમણ દેહ ને હજ્જાકાળ કહી, પસ્કિસ્વામણા
સ્વામું એમ કહીને સ્વામણા ચાર સ્વામવા. પઠી દે
વસિ પ્રતિક્રમણમાં વંદિતું કહ્યા પઠી વાંદણાં બે
દેહને ત્યાંથી સામાયક પારિયેં, ત્યાં સુધી દેવ
સિની પેઠે જાણવું; પણ સુઅદેવયાની થોયોને તે
કાણે જ્ઞાનાદિકની થોયો કહેવી, સ્તવન અજિ
તશાંતિનું કહેવું, સચાયને તેકાણે ઝવસગ્ગહરં ત
થા સંસાર દાવાની ચાર થોયો કહેવી. અને લઘુ
શાંતને તેકાણે મોટી શાંત કહેવી. ॥ ઇતિ પસ્કિ
પ્રતિક્રમણવિધી સંપૂર્ણ ॥

॥ અથ: ચતુમાસી પ્રતિક્રમણ વિધિ ॥

॥ એ ઉપર લખેલા પસ્કિના વિધી પ્રમાણેજઠે,
પણ એટલું વિશેષ જે બાર લોગસ્સના કાઝસગ્ગ
ને તેકાણે વીશ લોગસ્સનો કાઝસગ્ગ કરવો, અ
ને પસ્કિના આગારને તેકાણે ચોમાસીના કહેવા.
તથા તપને તેકાણે ઠઠેણં બે ઉપવાસ, ચાર આં
બિલ, ઠ નિવી, આઠ એકાસણં, સોલ બિઆસણં,

चार हजार सजाय एरीते कहेवुं. ॥ इति चउमा
सी प्रतिक्रमणविधी ॥

॥ अथः संवत्सरी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ ए पणउपर लखेजा पस्किना विधी प्रमाणेढे, त
थापि बार लोगस्सना काउसग्गने ठेकाणे चालीश
लोगस्स अथवा एकसोने साठ नवकारनो काउ
सग्ग करवो, अने तपने ठेकाणे अछम नत्तं
एटले त्रण उपवास, ठ अंबिल, नव निवि, बार
एकासणा, चोवीश बे आसणा, अने ठ हजार सझा
य एरीते कहेवुं. पस्किना आगारने ठेकाणे संवत्स
रीना आगार कहेवा. ॥ इति संवत्सरी प्रतिक्रमण ॥

॥ अथः सामायकना बत्तीश दोष लिख्यते. ॥

॥ तेमा प्रथम मनना दश दोष कहेढे. १ वैरी
देखी रीश करे, २ अविवेक चिंतवे, ३ अर्थ न
चिंतवे, ४ मनमां उद्वेग धरे, ५ यशनी वांढा क
रे, ६ विनय न करे, ७ जय चिंतवे. ८ व्यापार
चिंतवे, ९ फलनो संदेह राखे, १० नियाणुं करे.
हवे वचनना दश दोष कहेढे. १ कुवचन बोले,

(४३७)

१ हुकारा करे, ३ पाप आदेस दीए, ४ लवारो करे, ५ कलह करे, ६ आवो जावो कहे, ७ गाल बोले, ८ बालक रमाडे, ९ विकथा करे, १० हांशी करे. हवे कायाना बार दोष कहेवे. १ आशन चपल, २ चारे दिशाए जुवे, ३ सावद्य काम करे, ४ आलश मरडे, ५ अविनयें बोले, ६ उतुंलेइ बेरो, ७ मेल उतारे, ८ खरजरखणे, ९ पग उपर पग चढावे, १० अंग उघाडुंमूके, ११ अंग ढांके, १२ उंधे ॥ ए सर्व मली बत्रिश दोष जे ठे, ते सामायकमां अयत्ताए लागेवे ते निवारवानो खप करवो एज विनंतीवे. ॥

॥अथ मुहपतीनी पचीश तथा शरीरनी पचीश मलीने पचाश पडिलेहेणा विवरीने लखिये ठैये.॥

॥सुत्तढतत्तदिछी, दंसण मोहयतिगंच रागतिगं ॥
देवाई तत्ततिगं, तहय अदेवाइ तत्ततिगं ॥ १ ॥
नाणाइतिगंच तव्वि, राहणयंतिन्निगुत्ति दंमतिगं ॥
इअमुहणंतग पडिले, हणाइ कमसोविचिंतिक्का
॥२॥ हासोरइ अरइतिगं, नय सोग डुगंठयायवज्झि

ज्ञा ॥ जुअजुअलंपेहंतो, सीसेअ पसळ लेसतिगं
॥ ३ ॥ गारवतिगंचवयणे, उअरि सलतिगं कसा
य चउ पिछे ॥ पयजुअल ठ जीव वहं ॥ तणु पेहा
ए विजाणविणं ॥ ४ ॥ जइविपडि छेहणाए ॥ हे
उळिअरस्करणं जणाणाय ॥ तहवि इमंमण म
कड निजंतणत्वं मुणिंबिति ॥ ५ ॥

अर्थ-सुत्तळ के० मुहपतिने पहेले पाशे सूत्र
अने बीजे पाशे अर्थ तत्तके० सम्यक् प्रकारे तेनुं
तत्व हृदयने विषे धरुं; ए प्रथम दिछी के० दृष्टी
पडिलेहण जाणवी.

पठी त्रणवार खंखेरिए, त्यां शुं चिंतवीए? ते क
हेढे. दंसणमोहयतिगं के० सम्यक्त्व मोहनी, मि
श्रमोहनी अने मिथ्यात्व मोहनी, ए त्रण मोहनी
ठांमुं. रागतिगं के० काम राग, स्नेह राग अने दृ
ष्टी राग ए त्रण राग ठांमुं. एवं सात थइ पठी मुहप
तिये एक पड वालीने आंगुलनी वच्चे मुहपति
नरावीने हाथ उपर पखोडा अखोडा करें, त्यां
जे चिंतवे तें कहेढे. देवाइतत्ततिगं के० देवादि

(४३९)

क तत्व त्रण एटले देवतत्व, गुरुतत्व ने धर्मतत्व. ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोडा हाथ उपर त्रण वार खंखेरीए एवं दश अइ. तहय के० तेमज वली अदेवाइतत्ततिगं के० अदेवादिक तत्व त्रण एटले कुदेव, कुगुरु ने कुधर्म ए त्रण तत्व ठांहुं, ए त्रण पखोडा हाथ उपर पुंजीयें एवं तेर अइ. नाणाइतिगं के० ज्ञान, दर्शन ने चारित्र ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोडा हाथ उपर त्रणवार खंखेरीए. चके० वली तविराहणयं के० तेनीज विराधना एटले ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना अने चारित्र विराधना ए त्रण विराधना ठांहुं. ए त्रण पखोडा हाथ उपर मुहपतिये करी त्रण वार पुंजीए; एवं उगणीश अइ. तिन्निगुत्ति के० मनगुत्ति, वचनगुत्ति अने कायगुत्ति आदरुं ए त्रण अखोडा हाथ उपर त्रणवार खंखेरीए. दंमतिगं के० मनदंम, वचनदंम ने कायदंम ए त्रण दंम ठांहुं. ए त्रण पखोडा हाथ उपर त्रण वार मुहपतिए पुंजीये इअमुहणंतगपडि

लेहणाइ के० ए मुस्कानंतक एटले मुहपति तेनी
पचीश पडिलेहणा कही ते कमसोविचिंतिझाके०
पूर्वोक्त अनुक्रमे करी मनमां चिंतववी.

हवे शरीरनी पचीश पडिलेहणा कहेठे. तेमां
प्रथम बे चुजानी पडिलेहणा कहेठे; हासोरइ अर
इतिगं के० हाश्य, रति अने अरति ए त्रण परि
हरं. अहीं मावा हाथनी चुजा त्रणवार पुंजीएं
अने नय सोग डुगंठ यायवझिजा के० नय, शोक
ने डुगंठा ए त्रण वर्जु. अहीं जमणा हाथनी चु
जा त्रणवार पुंजीये. ए चुअचुअलं के० चुजा जु
गलने पेहंतो के० पडिलेहतो थको ए ठ बोल क
ह्या ते चिंतवे. हवे सिसे के० मस्तकनी त्रण पडि
लेहणा करतो थको अपसबलेसतिगं के० अप्र
शस्त जे त्रण लेश्या एटले रुझ, नील ने कापोत
ए त्रण माठी लेश्याने ठांमुं; एवं नव अइ. हवे
वयणे के० वदन जे मुख तेनी पडिलेहण कर
तो थको गारवतिगं के० रुद्धि गारव, रस
गारव अने साता गारव ए त्रण गारवने ठांमुं.

अने उअरि के० हृदयनी पडिलेहणा करतो थ को हृदय थकी सलतिगं के० माया शव्य, नि याणा शव्य अने मिथ्यात्व शव्य एत्रण शव्य का दु; एवं पंदर थइ. तथा कसाय चउ के० क्रोध, मा न, माया अने लोन ए चार कषाय ते पिछे के० पुठे बे पाशानी पडिलेहणा करतो ठांमुं. अने पय जुअल के० वे पगने पडिलेहतो थको ठ जीववहं के० पृथ्विकायादिक जीवोनी जे ठ निकायठे, तेनी जयणा करुं; एवं पचीश. ते तणुं के० शरीरनी पेहाए के० पडिलेहणा करतो थको विजाणवि णं के० मन ठामे राखवाने एवीरीते मनमां चिंत वे. जइविपडिलेहणाए के० जोपण ए पडिलेहणा जे ठे ते जिअरस्कणंके० जीव रहानो हेऊके० का रण नव्य जीवनेठे. एम जिणाणाय के० तीर्थक रनी आझाठे, तहवि के० तोपण ए ध्यानते म णमक्कड के० मनरूप मांकडाने निज्जंतणंठे के० वश राखवाने अर्थेठे, इमं के० एरीते मुणिबिंति के० पूर्वाचार्य कहेठे.

એ શરીરની જે પચીશ પડિલેહણા કહી તેમાં
 થી સ્ત્રીનું મસ્તક ઢાક્યું હોય માટે મસ્તકની ત્ર
 ણ તથા હૃદય ઢાક્યું હોય માટે હૃદયની ત્રણ ત
 થા બે પાશાં ઢાક્યાં હોય માટે બે પાશાંની ચાર,
 એરીતે દશ પડિલેહણા શરીરની ઝંઘી આયઠે.

અને સાધ્વીનું તો મસ્તક ઝઘાડું હોય માટે મ
 સ્તકની ત્રણ પડિલેહણા કરે, તેવારે સાધ્વીના શ
 રીરની અઢાર પડિલેહણા અઠ્ઠ શકેઠે. ॥ ઇતિ મુહ
 પતિ પડિલેહણ વિચાર સમાપ્તઃ ॥

॥ હવે ઠ આવશ્યકનાં નામ કહેઠે. ॥

॥ એક કરેમિનંતે એ સામાયક નામા પહેલોઆ
 વશ્યક, બીજો ચોવીસઠો નામા આવશ્યક, ત્રી
 જો મુહપતિ પડિલેહી ને વાંદણાં બેદેવાં તે વંદનાવ
 શ્યક, ચોથો દેવસીયં આલોઃ એ સૂત્રકહી યાવ
 ત્ અપ્પુઠિઝ્ઝામી તે પડિકમણા આવશ્યક,
 પાંચમો. બે વાંદણાં દેઝને આયરિય ઝવઝાયના ત્ર
 ણ્ય કાઝસગ્ગ કીથે કાઝસગ્ગ નામે આવશ્યક થા

ય. ઠઠો પચ્ચસ્કાણનું સંજારવું. તે પચ્ચસ્કાણ ના મા આવશ્યક, એ ઠ આવશ્યકના નામ કહ્યા. અ હીં પાંચી ચોમાસી અને સવંતસરી એ પઢિકમણા નામે ચોથા આવશ્યક માંહે અંતરજૂત થાયઢે.

॥ હવે એ ઠ આવશ્યકના સંક્ષેપે અર્થ કહેઢે ॥

॥ જે અવશ્ય કરવું તેહને આવશ્યક કહીયેં, અ ને સર્વજીવો સાથે જે સમતા જાવ તથા સર્વ સા વધ વ્યાપારથી વિરમવું તે સામાયક કહીયેં, “સમ આયાતિ સામાયક” ઇતિવચનાત્. ચોવીશ જિનના સ્તવનથી દર્શન મોહનીય કર્મનો ક્ષયોપશમ થ ઇને સમકેત સુઢથાય, તે ચોવીસ ઢો. તથા ગુરુવં દનથી જ્ઞાનદર્શન નિર્મલ થાય. તે વંદનાવશ્યક. અને પરિકમણાથી શ્રાવકના એકસોને ચોવીશ અતિચારની આજોવણા થાય. કાઝસગ્ગથી સબ લ કષાયનું જીતવું થાય, અને જ્ઞાન દર્શન ચારિ ત્રાદિકની સુઢીથાય. પચ્ચસ્કાણ આવશ્યકથી ત પ પચ્ચસ્કાણનું સંજારવું, તથા પચ્ચસ્કાણાનું લેવું

થાય- એરીતે ઠ આવશ્યકના સંદેષે અર્થકહ્યા,
વિસ્તારે ઘંથાંતરથી જાણવા.

॥ હવે પઢિકમણાના બાર અધિકાર કહેઢે. ॥

૧ નમુત્તુણં માંહે સમોસરણને વિષે બિરાજ
માન તીર્થકર જે જાવજિન તેને વાંદે.

૨ જે અઙ્ગાસિક્ષા એ ગાથાએ અતિત અનાગ
ત ના ડવ્યજિન ને વાંદે.

૩ અરિહંતચેઙ્ગાણં એ ગાથાએ ડગચેઙ્ગતવણ
જિણે ઇતિ વચનાત્ ઇહાં આપના જિનને વાંદે.

૪ લોગસસ માંહે નામ જિનને વાંદે.

૫ સવ્વલોએ અરિહંત ચેઙ્ગાણં માંહે ત્રણલો
કની સાસવતિ અસાસવતિ જિન પ્રતિમાને વાંદે.

૬ પુસ્કરવરદિ માંહે વીશ વહેરમાન જિનનેવાંદે.

૭ તમતિમિર માંહે સિક્ષાંતને વાંદે.

૮ સિક્ષાણં બુદ્ધાણં માંહે સર્વ સિક્ષને વાંદે.

૯ જો દેવાણંવિદેવો એ ગાથાર્યે કરી, શ્રીવીરપ્ર
જ્ઞ જે વર્તમાન શાસનના નાયકઢે તેમને વાંદે.

૧૦ ડક્કાયંત સેલસિહરે એગાથાએ શ્રીનેમિશ્વર

जगवानना कल्याणकनुं स्थानक जे श्रीगिरनार तीर्थठे तेहनी स्तुति करे.

११ चतारिअठ दस ए गाथाए अष्टापद उपरें नरत महाराजे करावेला प्रासादनी स्तुति करे.

१२ वैआवच्चगराणं मांहे मुनि संघ तथा चै त्योना वैआवच्च करनार सम्यक्दृष्टी देवोने संजारे.

॥ हवे ठ आवश्यकें सात नय फलावीयेंठैयें ॥

॥ प्रथम सामायक आवश्यकें सात नय.॥

१ नैगमनये एक जीव अथवा घणा जीव तेने सामायक कहीए. अने मोक्षना कारणठे तेथी मोक्ष पण कहीयें; केमके कारणे कार्योपचार ठे माटे.

२ संग्रहनयें जीवनो गुण तेज सामायक, तद्भेद आत्मा ए आश्री जे आत्मातेज सामायक.

३ व्यवहारनय समता अने यत्नायें प्रवर्त्ते ते वारे सामायक वंत आत्मा जाणवो.

४ उपयोग रहीत बाह्य यत्नाहोय. ते समयनो जे सामायकवंत आत्मा ते स्थूल सूक्ष्म सूत्रनो मतठे; अने उपयोगयुक्त बाह्य यत्नावंतने ते समय जे सा

માયક કહેવું તે સૂક્ષ્મ રૂઝુ સૂત્રનો મત જાણવો.

૫ શબ્દનયેં પાંચ સમિતિ તથા ત્રણ ગુણિ પાલે
અને સાવચથી નિવર્તે, ક્રોધાદિકનો ત્યાગ કરે.
તેવારે તે આત્માને સામાયક માનેહે.

૬ સંમજિરૂઢ નય અપ્રમાદિ ચકા જે જે ગુ
ણ ઉત્પન્ન થાયહે તે તે ગુણને વાક્યજેદે કરી
જિન્ન જિન્ન સામાયક માને હે.

૭ એવંજૂતનય મતે ત્રિવિધ ત્રિવિધે મન, વચન
કાયાના અશુદ્ધ જાવ જે સાવચયોગ તેને નિષે
ધી ને જે નિશ્ચલ શુદ્ધસ્વજાવ તે સામાયકજાણવું.

॥ ચોવીસ ઢા ઉપર સાત નય ફલાવેહે.

૧ નૈગમનયે અનુપયોગી સર્વ ડ્યાત્માની સ્તુતિ
કીધે મોહ હોય તે સામાન્ય નૈગમનો મતહે અને
અરિહંતના ચાર નિદ્દેપાને સ્તવને મોહ માનવું અ
થવા ચોવીશ ઢા માનવું તે વિશેષ નૈગમનો મતહે.

૨ સંગ્રહનય આત્માનું સ્તવન કીધે મોહપ્રાપ્તિહે.

૩ વ્યવહારનય જૂતનાવિ જે ચોવીશ જિનમાં
હે વ્યક્ત ગુણહે માટે તેહની સ્તવનાયેં મોહ હોય.

૪ રૂઝુસૂત્રમતે વર્તમાનકાલે ચોવીશ જિન નાં કિર્તન, વંદન, પૂજન જે સમય કરવાં તે સમય મોક્ષના કારણઠે, એ સ્થૂલ રૂઝુસૂત્રનો મત, તથા ચોવીશ જિન જે સમય મોક્ષે ગયા તે સમય નું જે કાલ ઇવ્ય તે સૂક્ષ્મ રૂઝુસૂત્રનો મતઠે.

૫ શબ્દનય મતે સમોસરણે બિરાજમાન અરિ હંતને અથવા સિદ્ધ અવસ્થા પામ્યા તેહને પણ ના વિજિન કહિએ. માટે તેની સ્તવનાએ ચોવીસઠો.

૬ સમનિરૂઢ નયમતે જે જીવ મોક્ષના પર્યાય અનુનવે તેહની સ્તવના કરવે ચોવીસ ઠો.

૭ એવંનૂતનયે અરિહંતપણો તીર્થકરની રૂઢિ જોગવી, સંસારથી નીકળી, અઘાતિ ચાર કર્મદ્વય કરી સિદ્ધસિલાઉપર રહ્યા તેમની સ્તુતિયેમોક્ષ.

॥ વંદનાવશ્યક ઉપર સાતનય. ॥

૧ નૈગમ અને સંગ્રહ એ બે નયને મતે સર્વજીવ માંહે જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્રાદિની સત્તાઠે માટે જીવને વાંદવાથીજમોક્ષહોય, એ વિનયવાદીમતઠે.

૩ વ્યવહાર નય મતે જેહમાં સાધુની આચર
ણા દેખીએ તેહને વાંદવું તે વંદનઠે.

૪ રુઝુસૂત્ર આશ્રી જે કાયાયે કરી ચારિત્ર
પાલે તે વાંદવા યોગ્ય એ સ્થૂલ રુઝુસૂત્રનો મતઠે
અને જે સમય શ્રુત જ્ઞાન સહિત ક્રિયાપાલે તે સમ
ય વાંદવાથી મોક્ષ પ્રાપ્તિ. એ સૂક્ષ્મ રુઝુસૂત્રનોમત.

૫ શબ્દાદિ ત્રણ નય આશ્રી શુદ્ધ જ્ઞાન, દર્શન
નો અનુનવ કરનારને વાંદવાથી મોક્ષપ્રાપ્તિ ઠે.

॥ પ્રતિક્રમણાવશ્યક ઉપર સાત નય. ॥

૧ નૈગમ તથા સંગ્રહને મતે જે જીવ તે પડિકમણુ.

૨ વ્યવહારનય આશ્રી પડિકમણાની ક્રિયા
કરતો હોય તે જીવને પડિકમણો કહીએ.

૪ ઉપયોગવિના જે સમય ડ્વચ પડિકમણુ
કરે તે સ્થૂલ રુઝુસૂત્ર મતે પડિકમણુઠે અને ઉ
પયોગ સહીત જે સમયે પડિકમણાની ક્રિયા ક
રવી તે સૂક્ષ્મ રુઝુ સૂત્રમતે પડિકમણુ જાણવું.

૫ શબ્દાદિ ત્રણે નયે જે શુદ્ધ જ્ઞાન દર્શન તેજ
પડિકમણું જાણવું.

(४४ए)

॥ काउस्सगनामा आवश्यक उपरनय. ॥

१ नैगम तथा संग्रह नयें जीव ते काउसग्ग.

३ व्यवहारनयें सु-६ किरिया ए, काया स्थिर मुझायें राखवी तेने काउसग्ग कहेते.

४ जे समये उपयोग विना काउसग्गते स्थूल ऋजुसुत्रनो मत, अने जे समय उपयोग सही त काउसग्ग ते सूक्ष्म ऋजुसुत्रनो मतते.

५ शब्दादि त्रणनये जे ज्ञान तेहिज काउसग्ग.

॥ हवे पञ्चस्काण आवश्यक उपर नय. ॥

१ नैयगम तथा संग्रह नये जे आत्मातेजपञ्चस्काण.

३ व्यवहारनयमते अशनादि चारुं लोक लाजे जे पञ्चस्काण करवुं तेने पञ्चस्काण कहेवुं.

४ जे उपयोगविना पञ्चस्काण लेवुं ते स्थूल ऋजुसूत्रनामते पञ्चस्काणते, तथा उपयोग सहीत सु-६ पञ्चस्काणते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनामते पञ्चस्काणते.

५ शब्दादि त्रणनय आश्रीतो ज्ञान दर्शन रूप परिणाम तेने पञ्चस्काण कहिए.

॥ हवे ए पडावश्यके कालादि पांच कारण उतारेढे.

१ जे कालें ठ आवश्यकनी क्रिया करवाथी ठ आवश्यक नीपजे, ते काल कारण.

२ जीवने पडिकमणुं करवानो स्वजावढे, माटेज पडिकमणुं करेढे. ते बीजो स्वजाव कारण.

३ जेथकी अवश्यकार्य थाय ते त्रीजो निश्चय कारण, ठ आवश्यक निश्चेथवाना होयतो थाय.

४ पुण्यपापादिक ते कर्म कहेवायढे, ते अहीं मोहादिक कर्मनो कृत्योपशम होय तो ठ आवश्यकनो उदय आवे; ते चोथुं कर्मनामा कारण.

५ तेबधां कारण मळे पण ए ठ आवश्यकमांहे जे उद्यम फोरववो ते उद्यमनामा पांचमुं कारणढे.
॥हवेठआवश्यके उत्पादव्ययध्रौवनुं ढारदेखाडेढे॥

१ सामायककरवाथी सावद्ययोगथी विरमवा पणानो गुण उपजे, चौवीसव्हाथी सम्यक् गुण उपजे, वंदनाथी विनयगुण उपजे, पडिकमणाथी पापथी उपरातोथवारूप गुण उपजे, काउसगथी ज्ञान दर्शन रूप शुद्धगुण उपजे, पञ्चस्काणथी आ

श्रव निरोधगुण उपजे, ए व्यवहारनये करी गुण
नुं उत्पादक पणुं देखाड्युं.

१ ए ठ ए आवश्यकथी अशुनकर्मनो नाश
थायने, ते माटे अहीं अशुनकर्मनो व्यय जाणवो.

३ अने ए ठ ए आवश्यकथी जीव निर्मल स्वजा
व मांहे ध्रौवपणे रहेते, तेअहीं ध्रौवपणुं जाणवुं.

॥ हवे पडावश्यके हेय, ज्ञेयने उपादेय देखाडेते ॥

१ ठ आवश्यकनेविषे जे नय निक्षेपानुं ज्ञान
ते ज्ञेयते, एटले जाणवा योग्यते. केमके रूपक श्रे
णी चढवाने अनुपयोगीते काम नावे माटे.

२ नाम, स्थापना अने इव्य ए त्रण निक्षेपा
मोक्षार्थे हेयते एटले ठांफवा योग्यते.

३ चोथो नाव निक्षेपो ते मोक्षार्थे उपादेयते
माटे ते आदरवा योग्य ते.

॥ हवे ठ आवश्यकें पडइव्यनो व्यवहार आ
त्मा साथे अशुद्ध निश्चय नयमते युक्तिदेखाडेते ॥

जे वेलायें जीव चाले तेवारे धर्मास्तिकाय पो
तानी साथे बांध्यो, आयत कीधो पण बीजा इव्य

બુટાઢે. એમ અધર્માસ્તિકાય, આકાશ તથા કાલ
અને પુજ્જ જાણવા. પણ શુદ્ધ નિશ્ચયનય મતેતો
આત્મા વંધાય ઢોડાયનહીં, પુજ્જવંધાય ઢોડાયઢે.

॥ હવે એ ઢ આવશ્યક માંહે કયો કયો આવ
શ્યક કયા કયા તત્વમાં ઢે, તે દેઁઁડવાનું ઢાર.॥

સામાયકમાંહે જે શુનાશ્રવ યાય તેહનો સં
વર તત્વમાંહે અંતરજાવ યાયઢે, માટે સામાયક
સંવર તત્વ ઢે. ચોવીસઢોતે મોઢ્ઢતત્વમાં અંતરજૂ
તઢે અને વંદના, પઢિકમણું, કાઁસગ્ગ અને પચ્ચ
સ્કાણ એ ચાર આવશ્યક શુનાશ્રવમધ્યેઢે; તથાપિ
વિજોપે આત્માની પરણતિએ પડાવશ્યક સાચવ
તો નિર્કેરા તત્વમાંહે અંતર જૂત યાયઢે.

॥ હવે એ ઢ આવશ્યકેં સપ્તજંગી કહેઢે. ॥

૧ સામાયક સંવરરૂપે અસ્તિઢે, ચોવીસઢો કિર્તિ
નરૂપે અસ્તિઢે, વાંદણા ગુણવત્ પ્રતિપત્તિરૂપે અસ્તિ
ઢે, પઢિકમણું આલોયણારૂપે અસ્તિઢે, કાઁસગ્ગ,
જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્ર, આરાધનરૂપે સ્યાત્ અસ્તિ
ઢે, અને પચ્ચસ્કાણ તે વ્રત ધારણરૂપે અસ્તિઢે એ પૂ

वोक्त गुणरूप पडावश्यक स्यात् अस्तिरूपेणे.

२ ए पडावश्यक अशुन बंधपणे नथी, माटे एमां अशुन बंधीनी नास्तिने तेथी स्यात् नास्तिपणुंढे.

३ ए पडावश्यक स्वकीय एटले पोताने ड्व्य, क्षेत्र, काल जावें अस्तिरूपेणे तेअस्तिनांगोणे, अने एहिज ड्व्य ते परड्व्यना ड्व्य, क्षेत्र, काल, जाव प णे नथी ते नास्ति नामा नांगो णे, माटे जे समय आस्तिने ते समयेज नास्ति जंग पणुंढे; ए स्यात् आस्तिनास्ति नामे त्रीजो जंग थयो.

४ ए पूर्वोक्त त्रिजंगीए करी ठ आवाश्यकनुं स्वरूप जाणीयें पण ए समय समकाले कहेवाय नहीं, केमके वचननुं क्रमे प्रवृत्तनढे माटे ए अव क्तव्य नामा चोथो जंग जाणवो.

५ ए पडावश्यक मांहे एक समयने विपे अस्ति पणाना अनंता धर्म णे, ते जाणे खरो पण एक समये कहेवाय नहीं केमके एक अक्षर उच्चारतां असंख्याता समय लागे णे; माटे स्यात् अस्ति अवक्तव्यं एवेनामे पांचमो जंग जाणवो.

६ ए षडावश्यक मांहे एक समयने विषे ना स्तिपणाना अनंताधर्म रह्यावे, ते जाणे खरो पण एक समय मांहे वचने करीकह्या जाय नहीं माटे स्यात् नास्ति अवक्तव्यं नामा ठगो जंग जाणवो.

७ ए षडावश्यकना पोताना रूपे अस्तिपणे एक समयने विषे अनंता धर्मते, अने पररूपे ना स्तिपणे पण अनंताधर्म एक समयने विषे ते, पण ते एकसमये वचने करी कह्या जाय नहीं; माटे ए स्यात्अस्ति, स्यात्नास्ति युगपत् अवक्तव्यं नामा सातमो जंग जाणवो.

हवे ए प्रत्येक आवश्यके चार निक्षेपा तथा खेत्र अने काल ए ठ वाना जुदां जुदां विवरीने कहेवे. ॥ त्यां प्रथम सामायकावश्यके ठ वाना कहेवे ॥

१ सामायक एहबुं नाम ते नाम सामायक.

२ सामायकनी क्रिया, रचना, विशेष सूत्रनी स्थापना ते स्थापना सामायक ते वे जेदे वे.

३ सूत्रना सुखश्चरनो उच्चार ते इव्यसामायक.

૪ સંકલ્પ વિકલ્પ રહિત શુજનાવના જે આત્મના અધ્યવસાય તેહને જાવસામાયક કહીયે.

૫ જે ક્ષેત્રે સામાયક કરિયે તે ક્ષેત્ર સામાયક.

૬ અંતર મૂઢુર્ત પ્રમાણ તે કાલ સામાયક.

॥ હવે ચોવીસઢાનામા બીજા આવશ્યક ઉપર. ॥

૧ રૂપનાદિ ચોવીશ જિનનાં નામ તે નામ ચોવીસઢો કહીએ.

૨ જિનની કાષ્ટમય ચિત્રિત પુતલી તથા પિત્તાદિકની મૂર્તિ તે સ્થાપનાના બે જેદઢે. એક જે સ્થાપનાનાં અંગોપાંગ તાદૃશ્ય દેશાય તે સજાવ સ્થાપના, અને સંઘ પ્રમુખે જે ગુરુની સ્થાપના કરીયે તે અસદ્જાવ સ્થાપના. એ સ્થાપના ચોવીસઢો.

૩ જીવજિન તે દ્વ્ય ચોવીસઢો કહીએ.

૪ સમવસરણસ્થ જિનતેજાવ ચોવીસઢો.

૫ જે ક્ષેત્રે તે ક્ષેત્ર ચોવીસઢો.

૬ જેકાલે તેકાલ ચોવીસઢો.

॥ વંદનાવશ્યક ઉપર ઢ વાના. ॥

૧ વાંદણા એહબું નામ તે નામ વાંદણું.

१ कोष्क वांदणाने काष्ट चित्रादिकनेविषे स्थापे जे जे आ में वांदणुं स्थाप्युंते, ते स्थापना वांदणुं.

२ आव्रत बार तथा पचीश आवश्यकादिक शुद्ध उपयोग विना करवां ते इव्य वंदन कहियें.

४ जावपूर्वक उपयोग सहित वांदणुं ते जाव वंदन.

५ जे क्षेत्रे वांदणुं ते क्षेत्र वंदन.

६ जे काले वांदणुं ते काल वंदन.

॥ पडिकमणा आवश्यक उपर ठवाना ॥

१ पडिकमण एवुं नाम ते नाम पडिकमणुं.

२ जीवाजीवनी इच्छायें काष्ठादिक स्थापीये ते स्थापना पडिकमणुं.

३ जे उपयोग विना करणुं ते इव्य आलोचना.

४ जावथी उपयोग सहित ते जाव आलोचना.

५ जे क्षेत्रे करणुं ते क्षेत्र पडिकमणुं.

६ जे कालें करणुं ते काल पडिकमणुं.

पडिकमणानीपरे काउसगग तथा पञ्चस्काण ए वंने आवश्यकना नामादिक ठ बोल जाणी लेवा.

